छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

षष्ठम् विधान सभा — द्वितीय सत्र

बुधवार, दिनांक 14 फरवरी, 2024

(माघ 25, शक सम्वत् 1945)

[अंक 08]

Webcopy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

बुधवार, दिनांक 14 फरवरी, 2024

(माघ-25, शक संवत् 1945)

विधान सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई।

{अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए}

<u>तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर</u>

<u>शासन द्वारा नगरीय क्षेत्रों में निवासरत भूमिहीनों को पट्टा देने का प्रावधान</u>

[राजस्व एवं आपदा प्रबंधन]

1. (*क्र. 1326) श्री दलेश्वर साहू : क्या राजस्व मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- क्या छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा नगरीय क्षेत्रों में निवासरत भूमिहीनों को पट्टा देने का प्रावधान है ? यदि हां, तो राजनांदगांव जिला के नगर पंचायत, डोगरगांव में किन-किन योजना/अधिनियम के तहत कितने पट्टों का वितरण किया गया है ? क्या यह सत्य है कि राजीव गांधी आश्रय योजना के आवासीय पट्टा क्रमांक 087899 खसरा नंबर 365/2/1 रकबा 990 वर्गफीट के संबंध में अन्य व्यक्ति द्वारा असत्य आधारों पर भूमि का अंतरण/बेनामी प्रतिवेदन प्रस्तुत कर 690 वर्गफीट पर दो मंजिला पक्का मकान निर्माणाधीन था ? यदि हाँ, तो क्या उसे माननीय सर्वोच्च/उच्च न्यायालय द्वारा अवैध निर्माण घोषित करते हुये जनहित में ध्वस्त किये जाने आदेश पारित किया गया था ? यदि हाँ, तो पारित आदेश पर दिनांक 20.01.2024 तक क्या कार्यवाही की गई ? यदि नहीं तो कार्यवाही नहीं किये जाने का क्या कारण है एवं कब तक कार्यवाही की जायेगी ?

राजस्व मंत्री (श्री टंक राम वर्मा) : जी हां। राजनांदगांव जिला के नगर पंचायत डोंगरगांव में मुख्यमंत्री आबादी पट्टा योजनान्तर्गत 816, राजीव गांधी आश्रय पट्टा योजनान्तर्गत 660, एवं पट्टाधृति अधिकार अधिनियम, 2023 के अंतर्गत 110 पट्टों का वितरण किया गया है। जी हां, आवासीय पट्टा क्रमांक 087899 खसरा नंबर 365/2/1 रकबा 990 वर्गफीट के संबंध में अन्य व्यक्ति द्वारा असत्य आधारों पर भूमि का अंतरण/बेनामी प्रतिवेदन प्रस्तुत कर 690 वर्गफीट पर दो मंजिला पक्का मकान निर्माणाधीन था। निर्माण को अवैध निर्माण घोषित करते हुए जनहित में ध्वस्त किये जाने संबंधी माननीय सर्वोच्च/उच्च न्यायालय का कोई आदेश प्राप्त नहीं हुआ है। अतएव ऐसे आदेश के विषय में कार्यवाही का प्रश्न उपस्थित नहीं होता।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री दलेश्वर साहू :- अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न यह है कि नगर पंचायत डोंगरगांव में किन-किन योजना/अधिनियम के तहत कितने पट्टों का वितरण किया गया है? क्या यह सत्य है कि राजीव गांधी आश्रय योजना के आवासीय पट्टा क्रमांक 087899 खसरा नंबर 365/2/1 रकबा 990 वर्गफीट के संबंध में अन्य व्यक्ति द्वारा असत्य आधारों पर भूमि का अंतरण/बेनामी प्रतिवेदन प्रस्तुत कर 690 वर्गफीट पर दो मंजिला पक्का मकान निर्माणाधीन था?

अध्यक्ष महोदय, यहां तक तो स्वीकार कर लिया गया कि यहां पर दो मंजिला भवन बन रहा है। मैं इसमें थोड़ी-सी भूमिका बताना चाहता हूं। एक्च्युल में उस स्थान पर 55 वर्ष से निवासरत एक अत्यंत निर्धन, निराश्रित, हरिजन महिला को राजीव आश्रय के अंतर्गत पट्टा मिला, जो एक छोटा-सा जीवनयापन करने वाली महिला है । पहले तहसीलदार ने वर्ष 2015-16 में इसको अतिक्रमण घोषित किया। उसके बाद उस महिला ने अपील की। अपील करने के बाद अनुविभागीय अधिकारी ने उस अपील को निरस्त कर दिया। उसके बाद उस महिला ने दुर्ग संभागायुक्त में अपील की परंतु दुर्ग संभागायुक्त ने उसको मान्यता देते हुए यह कहा कि आपने 55 वर्ष तक इस जमीन में जीवनयापन किया है, इसलिये उनको वहां पर रहने के लिये न्यायसंगत मानते हुए आदेश पारित कर दिया। फिर चार व्यक्तियों द्वारा, जो सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं, मैं इस सदन में उनका नाम नहीं लेना चाहूंगा, उन लोगों ने इसके खिलाफ फिर से अपील की कि इनके पट्टे को निरस्त माना जाये। कलेक्टर ने उस अपील को निरस्त कर दिया, फिर उन्होंने अनुविभागीय अधिकारी के पास भी उस महिला के पट्टे को निरस्त करने की अपील की। अधिकारियों से लेन-देन की बड़ी रकम का मामला रहा होगा, यह लोग सफल हो गये और सफल होने के बाद फिर प्रश्नोत्तरी में जो दो मंजिला भवन बनाने का उल्लेख है, उसके लिये वही आदमी आपत्ति करता था कि इनके पट्टे को निराधार माना जाये। यह लोग फिर इनके पट्टे निरस्त करने लिये बीच में अपने अभियोजन में सफल हो गये। उसके बाद फिर से अनुविभागीय अधिकारी ने उस जमीन को, अभिलेख खसरा नंबर को एक छोटा झाड़, जंगल, चाराखोर का दर्जा देते हुए सर्वोच्च न्यायालय के एक प्रकरण एच.टी.एन. गोदावर्धन के निरूपल का हवाला देते हुए यह कहा कि उन्हें इस जमीन को बदलने का अधिकार नहीं है, न ही उनको इस जमीन में पट्टा देने का अधिकार है।

अध्यक्ष महोदय :- आपकी 04 मिनट की भूमिका हो गयी। आप प्रश्न कब करेंगे ? प्रश्न तो करिये।

श्री दलेश्वर साहू :- सर, कर रहा हूं। यह प्रकरण इतना गंभीर है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं समझ गया। आप 04 मिनट में भूमिका रख रहे हैं, आपका प्रश्न कितना लंबा होगा।

श्री दलेश्वर साहू : अध्यक्ष महोदय, अनुविभागीय अधिकारी ने उस पट्टे की भूमि को बेनामी अंतरण किया जाना पाया गया और उसको अपात्र होना पाया गया। इस व्यावसायिक परिसर को अवैध

निर्माण घोषित करते हुए उक्त जमीन को जनहित में देने का आदेश पारित कर दिया। जब उस अनुविभागीय अधिकारी ने सब कुछ निर्णय ले लिया। पहले उन्होंने उसे मान्यता दे दी, कलेक्टर ने मान्यता दे दी, फिर दुर्ग संभागायुक्त ने भी मान्यता दे दी। क्या अधिकारी जैसा चाहे वैसा करते रहे ? उसके बाद आज के दिनांक तक वह दो मंजिला मकान बन चुका है। फिर हमारे राजनांदगांव के अपर कलेक्टर ने उस निर्णय को स्टे ऑर्डर दे दिया है। अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से प्रश्न कर रहा हूं कि क्या छत्तीसगढ़ भू-राजस्व संहिता 1949 की धारा 52 एवं धारा 51 के तहत अनुविभागीय अधिकारी राजस्व के आदेश पर रोक लगायी गई है? वहां किस स्तर के राजस्व न्यायालय द्वारा स्टे ऑर्डर दिया गया ? यह मेरा पहला प्रश्न है। यदि इसमें स्टे ऑर्डर दिया गया है तो उसकी अवधि क्या है ? यह स्टे ऑर्डर किन-किन शर्तों के आधार पर दिया गया है ? इसमें कार्यवाही कब तक पूर्ण कर ली जावेगी। मेरे 3 प्रश्न है, उन तीनों का जवाब देंगे।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी ।

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो जानकारी मांगी है कि छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा नगरीय क्षेत्रों में निवासरत भूमिहीनों को पट्टा देने का प्रावधान है ? यह उनका पहला प्रश्न था तो नगरीय क्षेत्रों में भूमिहीनों को पट्टा देने का प्रावधान है और इसी प्रावधान के तहत, अभी जिनका प्रकरण आया है, उनको पट्टा दिया गया था और यह जो जगह दी गई थी, फिर बाद में चिन्हांकित होने के बाद झाड़-झरोखा, वन भूमि मद में होने के कारण उस पट्टे को निरस्त कर दिया गया। इसे एस.डी.एम. के द्वारा निरस्त किया गया है। इसके खिलाफ में अपर कलेक्टर के यहां यह प्रकरण विचाराधीन है। जब तक वहां पर इसमें कुछ निर्णय नहीं होगा तब तक यह मामला लंबित है।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपना दूसरा प्रश्न करिये।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने उस जगह में उस पट्टे को तो अवैध कर दिया। उस जगह में दो मंजिला पक्का मकान निर्माणाधीन होने की बात बतायी है। जिन 4 लोगों ने पट्टा निरस्त करने की बात कही, उनहीं लोगों ने भवन बना लिया। मेरे कहने का मतलब यह है कि आपने उस भवन के निर्माण को अवैध घोषित भी कर दिया। आप उस भवन को तोड़ने का काम कब करेंगे ? और आपने क्यों, किस आधार पर कितने दिनों के लिए स्टे ऑर्डर दिया है और इसमें कब तक निर्णय लेंगे। यह मेरा प्रश्न है।

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें समय-सीमा नहीं बतायी जा सकती। क्योंकि यह न्यायालय का प्रकरण है और जब तक न्यायालय में निर्णय नहीं होगा कि उस मकान को कब तक तोड़ेगे, उसमें क्या कार्यवाही होगी..।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां तक अवधि की बात है तो आपको निर्णय करना है? आपने गलत विचारधारा के आदमी को स्टे ऑर्डर दे दिया, वही आदमी ने उस पट्टे को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

निराधार करने के लिए अपील की। उसके बाद उनकी भी बात सुन लिये। उस गरीब की भी बात सुन लिये तो वह महिला कब तक पिसती रहेगी। वहां पर दो मंजिला पक्का मकान निर्माणाधीन था। आप उसकी निर्धारित समय-सीमा नहीं बता रहे हैं। उनको एक अपर कलेक्टर स्टे ऑर्डर देता है और यह कार्य कब तक हो जाएगा, यह बता दें ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रकरण न्यायालय में है इसलिए इसमें समय-सीमा बताना संभव नहीं है।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रकरण न्यायालय में है, इसका मतलब आप कुछ भी करते रहेंगे ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नहीं। जब तक इसमें न्यायालय से निर्णय नहीं आएगा, तब तक उस मकान को तोड़ने, हटाने की कार्यवाही नहीं की जा सकती। इसमें जैसे ही आदेश आएगा, हम इस पर कार्यवाही करेंगे।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा हूँ कि इसकी समय-सीमा, अवधि क्या है, आपने उन्हें किन-किन शर्तों, कुछ तो शर्तों पर पट्टा दिया होगा ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो नगरीय क्षेत्रों में पट्टा देने की पात्रता रखते हैं जो गरीबी रेखा में है जो इंकम टैक्स पेयधारी नहीं हैं, वहां के मतदाता हैं, जो आवासहीन हैं। पात्रता की सूची में आने के बाद, उनको पट्टा दिया गया था। बाद में जब उसकी इंक्वायरी की गई तो वह जमीन झाड़ झरोखा, वन भूमि थी और दूसरा उसमें बताया गया कि उसमें किसी का हस्तांतरण बेनामा हुआ है तो उसमें शिकायत आने के बाद एस.डी.एम. ने निरस्त कर दिया। उसके बाद उन्होंने अपर न्यायालय में आवेदन लगाया, जहां पर अभी यह मामला लंबित है।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो प्रकरण संभागीय आयुक्त से जो निर्णय लिया गया और वहां से आये प्रकरण को आपने कौन सा आधार मानकर उस पर स्टे ऑर्डर दे दिया, अगर आपने स्टे ऑर्डर दे दिया तो उसमें जल्दी निर्णय कर दीजिएगा, उसमें क्या दिक्कत है?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने इस पर स्टे का आधार बता दिया।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय मंत्री जी, एक तो आप उस प्रकरण में आपके संभागीय आयुक्त का भी इंवाल्वमेंट रहा। उनको मान्य किया गया। कलेक्टर के द्वारा उसे फिर निरस्त कर दिया गया। फिर अनुभागीय अधिकारी के द्वारा उसे निरस्त कर दिया गया, उसके बाद अपर कलेक्टर की तो सीमा होगी ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह एक ही बार निरस्त हुआ है। उसे एस.डी.एम. ने एक ही बार निरस्त किया है।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा हूँ कि उनने अपील की है और वह सामर्थवान व्यक्ति और कहीं पर जाएगा और कहीं से स्टे ऑर्डर ले आएगा ? आप ऐसी चीजों को पनाह देते रहेंगे तो यह शहर तो पूरे अतिक्रमण से घिर जाएगा। आप इसे कब तक करेंगे ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी भू राजस्व संहिता के अधिनियम के तहत 6 माह के अंदर इस प्रकरण का निपटारा करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया। श्री अनुज शर्मा जी।

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा इसी में एक प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- आप इसमें प्रश्न करना चाहती हैं ? डोंगरगांव कहां और कहां भानुप्रतापपुर है। चलिये, आप छोटा सा प्रश्न कर लीजिए ।

श्रीमती सावित्री मनोज मंडावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भानुप्रतापपुर क्षेत्र अंतर्गत वार्ड क्रमांक 1, 3 और 15 में लगभग 500 गरीब परिवार 40 वर्षों से निवासरत हैं। वहां पर छोटे-बड़े झाड़, चारागाह भूमि रिकार्ड में दर्ज होने के कारण उनको आवास योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगी कि इस विषय पर थोड़ा सा सख्ती से जांच करवाकर वहां निवासरत परिवारों को पट्टा प्रदान किया जाये ताकि उन लोगों को भी आवास योजना का लाभ मिल सके।

श्री टंक राम वर्मा :- चलिये, दिखवा लेते हैं, फिर आपको बतायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- श्री अनुज शर्मा जी।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मेरा इसी से संबंधित प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- आपके 10 मिनट हो गये हैं। गाड़ी आगे बढ़ गई है।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट और चाहता हूं। मैंने इसी प्रश्नोत्तरी में प्रश्न लगाया है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत कितने अतिक्रमण धारी हैं, कितने शासकीय को और कितने प्राइवेट को, उसका भी निराकरण नहीं हुआ है। आप ही के विभाग का प्रश्न है। आप लोग ऐसे ही प्रश्रय देते रहेंगे तो फिर हमारी शासकीय जमीन का क्या होगा? ऐसी-ऐसी जमीन है, 20-25 एकड़ में अवैध कब्जा करके कोई रिसोर्ट बना रहे हैं, कोई होटल बना रहे हैं। ऐसी चीजों का का भी आपके इसमें प्रकरण दर्ज है, आप प्रश्नोत्तरी में देख लीजियेगा। अगर आप इसको ऐसे ही प्रश्रय देते रहेंगे तो भविष्य में शासकीय जमीन का क्या होगा, यह आप चिंतन करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप चिंतन करेंगे। अनुज शर्मा जी।

विधानसभा क्षेत्र धरसींवा अंतर्गत अवैध प्लाटिंग की प्राप्त शिकायतों पर कार्यवाही

[राजस्व एवं आपदा प्रबंधन]

2. (*क्र. 1108) श्री अनुज शर्मा : क्या राजस्व मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** धरसींवा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत माह जनवरी, 2021 से माह दिसम्बर, 2023 तक कृषि भूमि को आवासीय भूमि में परिवर्तन के कितने प्रकरण प्राप्त हुये ? कितने प्रकरण लंबित हैं तथा कितने प्रकरणों का निपटारा किया जा चुका है ? **(ख)** क्या कृषि भूमि को आवासीय बता कर विक्रय किये जाने की शिकायतें विभाग को प्राप्त हुयी हैं ? यदि हां, तो इन प्रकरणों में विभाग द्वारा क्या कार्यवाही की गई? **(ग)** क्या उक्त दिनांक तक विभाग को विधानसभा क्षेत्र धरसींवा अंतर्गत अवैध प्लाटिंग की कोई शिकायत प्राप्त हुई है ? यदि हां, तो विभाग द्वारा कितने प्रकरणों में कार्यवाही की गई?

राजस्व मंत्री (श्री टंक राम वर्मा) : (क) धरसींवा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत माह जनवरी 2021 से माह दिसम्बर 2023 तक कृषि भूमि को आवासीय भूमि मे परिवर्तन के 232 प्रकरण प्राप्त हुये हैं। जिसमें सभी 232 प्रकरणों का निपटारा किया जा चुका है। **(ख)** धरसींवा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत कृषि भूमि को आवासीय बताकर विक्रय किये जाने के संबंध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुआ है। **(ग)** विधानसभा क्षेत्र धरसींवा के अंतर्गत अवैध प्लॉटिग की 19 शिकायत जिला स्तर पर प्राप्त हुई है, प्रकरण दर्ज कर छत्तीसगढ़ पंचायत राज अधिनियम, 1993 एवं इसके अंतर्गत बने नियमों के अनुसार कार्यवाही किया जा रहा है।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने सवाल पूछा था कि धरसीवां विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत माह जनवरी 2021 से माह दिसंबर 2023 तक कृषि भूमि को बिना आवासीय भूमि में परिवर्तित किये कॉलोनी निर्माण किया जा रहा है, इस विषय में मैंने ऐसे प्रकरणों जानकारी नहीं थी। इस विषय में मेरा एक सवाल यह है क्या प्राप्त 19 शिकायतों में से एक भी शिकायत कृषि भूमि के डायवर्सन के बिना बेचे जाने की नहीं है ? दूसरा इसी विषय में मेरा प्रश्न यह है कि अवैध प्लाटिंग की शिकायत मिलने पर क्या विभाग कार्य को तुरंत रोकने हेतु किसी प्रकार की कार्रवाई करता है ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधान सभा क्षेत्र धरसींवा में अवैध प्लाटिंग की शिकायतें आई हैं। इसमें रायपुर अनुभाग से 14 और तिल्दा अनुभाग से 5 शिकायतें प्राप्त हुई हैं। इसमें ग्राम पंचायत स्तर पर एस.डी.एम., कलेक्टर और नगरीय निकाय क्षेत्र में आयुक्त इसकी कार्रवाई के लिए जिम्मेदार अधिकारी होते हैं। अभी अवैध प्लाटिंग की जो शिकायतें मिली हैं, उसमें भू-राजस्व की जो संहिता है, अनाधिकृत कॉलोनी निर्माण के संबंध में आवश्यक कार्रवाई की जा रही है और कार्रवाई से माननीय विधायक महोदय को अवगत कराया जायेगा।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरे प्रश्न का जवाब ही नहीं मिला है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप प्रश्न पूछ लीजिए।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय मंत्री जी, मैंने प्रश्न पूछा है कि अवैध प्लाटिंग की शिकायत मिलने पर तुरंत रोकने के लिए क्या कार्रवाई की जाती है ? इसका जवाब नहीं आया। मैंने आपसे 19 शिकायतों के संबंध में पूछा है, मुझे जो जवाब आया है, उसमें मैंने सवाल पूछा था कि क्या कृषि भूमि को आवासीय बताकर विक्रय किये जाने की कोई शिकायत प्राप्त हुई है ? इस पर विभाग ने मुझे जवाब दिया है कि धरसींवा विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत कृषि भूमि को आवासीय बताकर विक्रय किये जाने के संबंध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। माननीय अध्यक्ष जी, जो शिकायत की गई है, उसका यह पत्र रहा। यह पत्र दिनांक 06.07.2022 का है। इसमें स्पष्ट लिख गया है कि ग्राम धरसींवा के खसरा नंबर 12/2, 15, 13/2, 14/3 अन्य में अवैध प्लाटिंग तो हो रही है साथ ही इनके द्वारा शासकीय भूमि खसरा नंबर पर बने वर्षा जल निकासी किसान आपासी के लिए बने टारनाली की जमीन को कब्जा कर समतलीकरण के कारण कच्ची सड़क बना दी गई है। खसरा नंबर 12/1 है जिसका पटवारी जांच प्रतिवेदन इस पत्र के साथ संलग्न है। यह पूरे खसरा नंबर के साथ शिकायत की गई है कि ग्रीनलैण्ड को आवासीय रूप में बेचा जा रहा है। माननीय अध्यक्ष जी, मुझे जो जवाब दिया गया है, उसमें कहा गया है कि एक भी शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। ऐसी 3 शिकायत की कापी मेरे पास हाथ में रखी हुई है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इसको प्रश्न संदर्भ समिति में रखा जाये जो भी अधिकारी, कर्मचारी इस तरह से सदन को गुमराह करने में शामिल हैं, क्या उनको निलंबित किया जायेगा ? उन पर क्या कार्रवाई करेंगे ?

श्री टंकराम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसा कि माननीय विधायक बता रहे हैं कि धरसींवा विधान सभा क्षेत्र में कृषि भूमि को आवासीय बताकर विक्रय किये जाने की बहुत सी शिकायतें प्राप्त हुई हैं। यदि ऐसा है, शिकायत मिली है तो उसकी जांच करायेंगे और जो अधिकारी दोषी हैं, उस पर उचित कार्रवाई की जायेगी।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बहुत अच्छा। मोतीलाल साहू जी।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, इसमें एक और सवाल है।

अध्यक्ष महोदय :- आप जैसा चाहते थे, वैसे ही वह कार्रवाई के लिए बोल दिए हैं।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, एक और बात थी।

अध्यक्ष महोदय :- आपने जो मांग किया था, वह पूरा हो गया।

श्री अनुज शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, एक और छोटी सी बात थी।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, पूछ लीजिए।

श्री अनुजा शर्मा :- मंत्री जी, ऐसे कालोनियों पर क्या रेरा, टी. एंड सी. का बोर्ड लगाये जाने का compulsion है। क्या विभाग के द्वारा ऐसा कोई निर्देश है? यदि ऐसा है तो क्या इसका पालन किया

जाता है? यदि इसका पालन नहीं किया जाता है तो क्या आप इसके कार्रवाई के लिए क्या आगे निर्देश जारी करेंगे?

श्री टंक राम वर्मा :- अध्यक्ष महोदय, इसके लिए कई जगह निर्देश दिये गये हैं कि जहां पर अवैध प्लाटिंग हो रही है, वहां पर अवैध प्लाटिंग का बोर्ड लगाया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- आप फिर से निर्देश जारी कर दीजिए।

श्री टंक राम वर्मा :- अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार ने 5 डिसमिल से कम जमीन की रजिस्ट्री शुरू की है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बहुत अच्छा। श्री मोतीलाल साहू।

नवीन मुख्यमंत्री निवास भवन, नवा रायपुर में उद्यानिकी कार्य हेतु स्वीकृत राशि

[लोक निर्माण]

3. (*क्र. 962) श्री मोतीलाल साहू : क्या उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) नवीन मुख्यमंत्री निवास भवन, नवा रायपुर में उद्यानिकी कार्य हेतु शासन से कितनी राशि की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई थी, जिसके विरूद्ध कितनी राशि व्यय की गई ? (ख) नवीन मुख्यमंत्री निवास भवन, नवा रायपुर उद्यानिकी कार्य हेतु टेंडर के माध्यम से कितनी राशि का कार्य संपादित कराया गया है तथा विभिन्न अनुबंधानुसार कितनी राशि का कार्य संपादित कराया गया ?

उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) (श्री अरूण साव) : (क) एवं (ख) जानकारी **संलग्न प्रपत्र**[1] अनुसार है।

श्री मोतीलाल साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न लोक निर्माण विभाग से है। मेरा माननीय मंत्री जी से आग्रह है कि नवीन मुख्यमंत्री निवास भवन, नवा रायपुर में उद्यानिकी कार्य हेतु 80 लाख 68 हजार रूपये की राशि आकस्मिक निधि से स्वीकृत हुई थी, जिसका तीन टेण्डर किया गया और तीनों कार्य में जो स्वीकृत होना था, वह न होकर कार्य का नाम एक था, कार्य स्थल एक था, स्वीकृत राशि आकस्मिक निधि से एक था। इसके विपरीत जो कार्य हुए हैं, वह कार्य नवीन मुख्यमंत्री निवास भवन, नवा रायपुर में उद्यानिकी कार्य था, लेकिन जो टेण्डर हुए हैं, वह हुए हैं Horticulture work at various V.I.P. bunglows of sector-24 Nava Raipur, Atal nagar under sub division no. 3 । यह कार्य का मद कुछ और था, कार्य कहीं और होना था और कार्य कहीं और हुआ है। इस प्रकार से इसमें काफी आर्थिक अनियमितता एवं भ्रष्टाचार नजर आ रहा है।

---

[1] परिशिष्ट "एक"

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न कर लीजिए।

श्री मोतीलाल साहू :- अध्यक्ष महोदय, मेरा माननीय मंत्री जी से निवेदन है कि आप कृपा करके बतायें कि क्या इस प्रकार का प्रावधान है?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, जवाब दीजिए।

श्री मोतीलाल साहू :- क्योंकि स्वीकृत राशि किसी और मद के लिए हो और कार्य कहीं और के लिए हो।

अध्यक्ष महोदय :- आपने मुख्यमंत्री आवास की चिंता की है। मुख्यमंत्री जी आपको धन्यवाद देंगे। आपका प्रश्न बहुत वाजिब है। मंत्री जी, जवाब दीजिए।

श्री मोतीलाल साहू :- जी। धन्यवाद।

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नवा रायपुर में नवीन राजभवन, मुख्यमंत्री जी का निवास, माननीय मंत्रीगण का आवास, वरिष्ठ अधिकारियों के निवास निर्माण हेतु छत्तीसगढ़ शासन द्वारा दिनांक 10.04.2018 को 591.75 करोड़ रूपये की प्रशासकीय स्वीकृत प्रदान की गई थी। उस समय पी.एफ.आई.सी. की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार उस प्रशासकीय स्वीकृति में उद्यानिकी कार्य शामिल नहीं था। परंतु लोक निर्माण विभाग के मेनुअल के वाल्युम 1, पैरा 2.027 के प्रावधान के अनुसार अधीक्षण अभियंता को यह अधिकार है कि कंटेंनजेंसी मद में एक प्रतिशत राशि स्वीकृत कर सकते हैं, उसी के अनुसार दिनांक 06.07.2022 को अधीक्षण अभियंता ने 80 लाख 68 हजार की अनुमति प्रदान की और वहां On going काम था। इसलिए तीन अलग-अलग टेण्डर, अलग-अलग तिथि में निकाले गये। काम नियमानुसार हुआ है। काम में किसी प्रकार की कोई अनियमितता नहीं पाई गई है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप प्रश्न पूछ लीजिए।

श्री मोतीलाल साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा चिंता का विषय यह था कि कार्यस्थल एक जगह था, नवीन माननीय मुख्यमंत्री जी का भवन, जिसमें हार्टीकल्चर का कार्य होना था, लेकिन जो वर्कआर्डर जारी हुआ है, इसमें लिखा गया है कि various V.I.P. bunglows of sector-24 Nava Raipur, Atal nagar। यह चिंता का विषय यह है कि आखिर यह कार्य कहां पर हुआ है?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, बता दीजिए।

श्री मोतीलाल साहू :- मुख्यमंत्री निवास में हुआ है या बाहर काम हुआ है?

अध्यक्ष महोदय :- उनको शंका है कि वहां काम हुआ है या नहीं हुआ है?

श्री अरूण साव :- अध्यक्ष महोदय, वहां पर कार्य पूर्ण हो चुका है।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। अटल श्रीवास्तव जी।

प्रश्न संख्या 04 : XX XX

जिला-जशपुर में जल-जीवन-मिशन के अंतर्गत सम्पादित कार्य के संबंध में जानकारी

[लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी]

5. (*क्र. 408) श्रीमती गोमती साय : क्या उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) जिला जशपुर में वर्ष 2020-21 से 2023-24 में 31.12.2023 तक भारत सरकार के महत्वपूर्ण योजना जल-जीवन-मिशन के अंतर्गत किन-किन ग्रामों के कार्य पूर्ण हो चुके हैं ? किन-किन ग्रामों के कार्य अपूर्ण हैं? (ख) उपरोक्त वर्षानुसार कितनी-कितनी राशि ग्रामवार स्वीकृत की गई है? (ग) किन-किन ठेकेदारों द्वारा निर्माण कार्य किया जा रहा है, निर्माण में गुणवत्ता की क्या स्थिति है? (घ) किन-किन ठेकेदारों द्वारा गुणवत्तापूर्ण कार्य की अवहेलना की गई है तथा समय पर निर्माण कार्य पूर्ण नहीं किया गया है? क्या ऐसे ठेकेदारों को विभाग द्वारा ब्लेहक लिस्टेड किया जा रहा है? विवरण प्रदान करें।

उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) (श्री अरूण साव) : (क) जिला जशपुर में वर्ष 2020-21 से 2023-24 में 31.12.2023 तक भारत सरकार के महत्वपूर्ण योजना जल जीवन मिशन के अंतर्गत कराये गये पूर्ण कार्यो का ग्रामवार विवरण पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-अ अनुसार है। अपूर्ण कार्यो का ग्रामवार विवरण पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-अ अनुसार है। (ख) उपरोक्त वर्षानुसार स्वीकृत की गयी राशि का ग्रामवार विवरण पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-अ अनुसार है। (ग) ठेकेदारों द्वारा निर्माण कार्य की जानकारी पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-ब अनुसार है। निर्माण कार्य जल जीवन मिशन अंतर्गत निर्धारित मानक अनुसार किया जा रहा है। (घ) किसी भी ठेकेदार द्वारा गुणवत्तापूर्ण कार्य की अवहेलना नहीं की गयी है। समय पर निर्माण कार्य पूर्ण नहीं करने वाले ठेकेदारों की जानकारीपुस्तकालय में रखे प्रपत्र-स अनुसार है । जी नहीं। शेषांक प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है।

श्रीमती गोमती साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जशपुर में वर्ष 2020-21 से 2023 तक जल जीवन मिशन के अंतर्गत किये जा रहे कार्यों की वर्षवार जानकारी मांगी थी । चूंकि जशपुर जिला अंतर्गत 754 गांव में से केवल 17 गांवों का कार्य पूर्ण हुआ है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय उप मुख्यमंत्री जी से यह जानना चाहती हूं कि जिला जशपुर के 737 गांव के कार्य जो कि अपूर्ण हैं वह कब तक पूर्ण कर लिये जायेंगे तथा क्या जल जीवन मिशन के निर्माण कार्यों की गुणवत्ता के संबंध में राज्य स्तरीय कमेटी बनाकर जांच करायेंगे ?

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसा पता है कि हर घर जल देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी की अतिमहत्वाकांक्षी योजना है कि हर एक व्यक्ति को नल के माध्यम से शुद्ध जल मिले । जशपुर जिले में कुल 754 योजनायें स्वीकृत हैं, 17 ग्रामों की योजनाएं पूर्ण हैं और यह ग्राम हैं जो हर घर नल जल से प्रमाणित हैं । 737 गांव में घरेलू नल कनेक्शन

उपलब्धता की जानकारी निम्नानुसार है । 90 प्रतिशत से अधिक 130 ग्रामों में हो चुका है, 80 प्रतिशत से 90 प्रतिशत के बीच 113 ग्रामों में हो गया है, 70 प्रतिशत से अधिक 97 ग्रामों में हो गया है, 50 प्रतिशत से लेकर 70 प्रतिशत के बीच 168 ग्रामों में हुआ है, 20 प्रतिशत से अधिक 125 ग्रामों में हुआ है इस प्रकार जल जीवन मिशन के काम तेजी से किये जा रहे हैं । 23 एजेंसियां जिन्होंने काम में अति विलम्ब किया उनके अनुबंध निरस्त कर फिर से निविदा कर उस काम में तेजी लाने का प्रयास किया जा रहा है । यह भारत सरकार की समयबद्ध योजना है, अतिमहत्वाकांक्षी योजना है । हमारा विभाग इस काम को पूरी गंभीरता से, पूरी गुणवत्ता से समय पर पूरा करने की हरसंभव कोशिश कर रहा है । जशपुर जिला तो आज हमारी और भी प्राथमिकता का जिला है ।

श्रीमती गोमती साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिला जशपुर में लोकस्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कुल 17 अभियंता के पद स्वीकृत हैं । जिसमें कई वर्षों से मात्र 03 अभियंता ही कार्य कर रहे हैं । क्या उपमुख्यमंत्री जी यह बताने का कष्ट करेंगे कि अभियंता के रिक्त पद की पूर्ति कब तक कर ली जायेगी ?

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम रिक्त पदों की भर्ती की कार्यवाही लगातार कर रहे हैं । अभी-अभी 12 तारीख को 135 हैण्डपम्प टेक्निशियनों को हमने एक-साथ सामूहिक रूप से बुलाकर नियुक्ति पत्र दिया है तो भर्ती की कार्यवाही हम लगातार कर रहे हैं । (मेजों की थपथपाहट) इस बात की हमें पूरी तरह से चिंता है । जशपुर जिले में गुणवत्ता को लेकर किसी तरह की शिकायत नहीं है और इसलिये अभी कमेटी बनाने का कोई प्रश्न उत्पन्न नहीं होता है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, प्रबोध मिंज जी ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- आपका क्षेत्र नहीं है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न जल जीवन मिशन के अंतर्गत ही है ।

अध्यक्ष महोदय :- यह जशपुर का सवाल है इसमें आप उतर आयी हैं ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्षेत्र का मामला है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप पृथक से प्रश्न लगाईये न ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रश्न लगा था लेकिन इसमें आया नहीं है । मेरा केवल एक ही प्रश्न है कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत प्रदेश में स्वीकृत कितने प्रतिशत कार्य निश्चित समय पर पूर्ण कर दिये गये हैं और क्या इसकी समय-सीमा में वृद्धि की गयी है ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बता दीजिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो कार्य पूर्ण नहीं हुए हैं तो क्या उसकी समय-सीमा में वृद्धि की गयी है ?

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नयी सरकार बनने से पहले जल जीवन मिशन के बारे में पूरे प्रदेश में क्या चर्चा थी, क्या हालात थे यह सभी को पता है और माननीय सदस्य जी को तो पता ही है । हमारी सरकार बनने के बाद हम तेज गति से काम कर रहे हैं, यह अतिमहत्वाकांक्षी योजना है । जैसा मैंने कहा कि आज की स्थिति में हम बहुत आगे चले गये हैं । आज प्रदेश में हमारा 77 प्रतिशत काम पूरा हो गया है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, समय-सीमा पर जो कार्य पूर्ण नहीं हुए हैं । मेरे विधानसभा में ऐसे 214 काम हैं, उसमें से जो 151 कार्य हैं वह तारीख बढ़ाने के बाद भी अपूर्ण हैं तो मैं आपसे यह निवेदन कर रही हूं और जवाब भी चाह रही हूं कि निर्धारित समय पर कार्य पूर्ण नहीं होने पर क्या उन ठेकेदारों पर पेनाल्टी लगाया जायेगा या कार्रवाई की जायेगी?

अध्यक्ष महोदय :- यह प्रश्न उद्भूत नहीं हो रहा है। मंत्री जी, नये संदर्भ में उसी प्रश्न का जवाब देंगे जो उनको नोटिस में मिलता है। आपने अलग जिले का एक प्रश्न कर लिया, यह ठीक है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय जी, यह पूरे प्रदेश का मामला है, पूरे जल जीवन मिशन का मामला है। हमारी सरकार में भी मैंने प्रश्न उठाया था। क्योंकि गर्मी का दिन आ रहा है। हम निवेदन करते हैं कि उन ठेकेदारों पर पेनाल्टी लगाया जायेगा या कार्रवाई की जायेगी, जिन्होंने अभी तक कार्य पूर्ण नहीं किया है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, ठीक है। आपका सुझाव ठीक है। आप बैठिए। प्रबोध मिंज जी।

<u>सरगुजा वन वृत्त में कैम्पा मद के कार्यो का श्रमिकों को भुगतान</u>

[वन एवं जलवायु परिवर्तन]

6. (*क्र. 648) श्री प्रबोध मिंज : क्या वन मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** क्या यह सही है कि सरगुजा वन वृत्त अंतर्गत जून, 2020 से अक्टूबर ,2023 के मध्य कैम्पा मद अंतर्गत लेन्टाना उन्मूलन एवं नरवा विकास कार्य के प्रमानकों में दर्शित समस्त श्रमिकों को बैंक के माध्यम से मजदूरी भुगतान नहीं हुआ? **(ख)** क्या यह भी सही है कि प्रमानकों में दर्शित श्रमिकों में से केवल एक श्रमिक के नाम से ही राशि हस्तांतरित की गयी ? **(ग)** क्या यह भी सही है कि परिक्षेत्र अधिकारियों द्वारा प्रमानकों में दर्शित श्रमिकों में से भिन्न व्यक्तियों के नाम से राशि का आहरण किया गया ? **(घ)** क्या शासन उक्त प्रकरण की जाँच पुलिस आर्थिक अपराध अनुसंधान ब्यूरो से कराकर दोषियों को कड़ी सजा दिलवायेगी? यदि हाँ तो कब ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वन मंत्री (श्री केदार कश्यप) : (क) जी हां। **(ख)** जी नहीं।**(ग)** नहीं। **(घ)** प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है।

श्री प्रबोध मिंज :- धन्यवाद, माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा सवाल वन मंत्री जी से है कि क्या अभी जो कैम्पा मद के अंतर्गत जून, 2020 से 2023 के मध्य में लेंटाना उन्मूलन और नरवा विकास कार्य के प्रमानकों में दर्शित समस्त श्रमिकों को बैंक के माध्यम से भुगतान हुआ है या नहीं और दूसरा यह था कि उसमें जो प्रमानक श्रमिकों के नाम दर्शित किये गये हैं, क्या उसमें उन्हें राशि हस्तांतरित की गई है और तीसरा यह था कि उस परिक्षेत्र अधिकारियों द्वारा प्रमानकों में दर्शित श्रमिकों में से भिन्न व्यक्तियों के नाम से राशि आहरण की गयी है और चौथा यह था कि क्या शासन उक्त प्रकरण की जांच पुलिस आर्थिक अपराध अनुसंधान ब्यूरो से कराकर दोषियों को कड़ी सजा दिलवायेगी? परंतु अध्यक्ष महोदय, इसमें जवाब इतना शार्ट में आया है, जी हां। जीं नहीं। नहीं और प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। और इतना गंभीर विषय है। ये कैम्पा मद का फंड है और वन को दुरूस्त करने का विषय है और उसमें ये काम भी उस समय हुए हैं जब कोविड काल चल रहा था और कोविड काल में जब सारी चीजें बंद थीं, उस समय इन कामों को वहां करना और मूल रूप से जो जवाब आया है, उसमें जो भुगतान किया गया है, वह नगद भुगतान किया गया है और जबकि पारदर्शिता के लिए और भ्रष्टाचार से बचने के लिए ये हमारे पास जो श्रमिकों को भुगतान करने का है, वह बैंकों के माध्यम से भुगतान किया जाना है। तो ऐसा क्या कारण था? ऐसी क्या परिस्थिति बनी कि उन श्रमिकों को नगद भुगतान करना पड़ा। मेरा वन मंत्री जी से यह प्रश्न है और ये है कि उसमें भुगतान नगद किया गया है तो कितनी राशि ऐसी है, जिसको नगद भुगतान किया गया है और माननीय मंत्री जी, तीसरा सवाल उसमें यह है। पहले इन सवालों का मैंने पूछा है कि नगद भुगतान यदि किया गया है तो क्या प्रावधान था? उसके क्या नियम है? और उसमें ऐसी क्या परिस्थितियां थीं कि नगद भुगतान करना पड़ा।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, बताइए।

श्री केदार कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लेंटाना जो एक खरपतवार है और लगभग 200 साल पहले जब ब्रिटिश यहां पर आये थे तब वे साउथ अमेरिका का एक शोभादार हेज का पौधा लेकर आये थे और पूरे अपने बंगलों में सजाया करते थे, लेकिन वह बंगले से निकलकर कब जंगल में चला गया और जंगल में किस तरीके से पूरे जंगल को बर्बाद करने की दिशा में बढ़ गया। पूरे देश की समस्या है। माननीय हमारे देश के प्रधानमंत्री जी की समस्या है और उसके निवारण और उन्मूलन के लिए जो योजना बनाई गई और उस योजना के तहत् में लेंटाना उन्मूलन के लिए कैम्पा से और नरवा के माध्यम से वर्ष 2018 से वर्ष 2022 तक हमारे इस सरगुजा वन-वृत्त के क्षेत्र में लगभग 8 हमारे वन-मंडल हैं, उन वन-मंडलों में जो काम हुए और उस काम में लगभग हमारे 1 लाख 57 हजार 767 श्रमिकों का बैंक के माध्यम से भुगतान हुआ और लगभग 75 हजार 36 श्रमिकों का नगद भुगतान किया गया और ये

नगद भुगतान के संदर्भ में माननीय सदस्य ने जानकारी पूछी है तो अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के संज्ञान में लाना चाहूंगा कि यदि ऐसे क्षेत्र जहां पर बैंक की सेवाएं अपर्याप्त हैं या फिर जहां पर हमारे श्रमिक निवासरत हैं, उसके 5 किलोमीटर की परिधि में यदि कोई बैंक स्थापित नहीं है तो वहां पर कलेक्टर और वन-मंडलाधिकारी के द्वारा नगद भुगतान का निर्णय लिया जाता है, जिसमें हमारे वहां के सरपंच हैं, पंच हैं या फिर वन समितियों के माध्यम से श्रमिकों को भुगतान किया जाता है । इस कार्य के माध्यम से जो जंगलों को बचाने की दिशा में लगातार काम हुआ है । पूरे प्रदेश के लगभग 4 लाख हेक्टेयर में लेंटाना के उन्मूलन के काम को किया गया है ।

श्री प्रबोध मिंज :- अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी ने बताया कि 75 हजार, 36 श्रमिकों का नगद भुगतान हुआ है, यह छोटा आंकड़ा नहीं है । 75 हजार श्रमिक बहुत ज्यादा होते हैं । सरगुजा में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां उनके पास साधन नहीं है, बैंक नहीं है । सरगुजा जिले के जो भी श्रमिक हैं, सबके बैंक खाते खोले गए हैं । प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी की मंशा के अनुरूप खाते खोले गए थे, ऐसा कोई श्रमिक नहीं है, जिसका खाता नहीं है । इसके बावजूद इतने श्रमिकों का नगद भुगतान किया गया है । इसमें मंत्री जी, चूंकि अंग्रेज लोग तो चले गए लेकिन लेंटाना छोड़ गए, उनका उन्मूलन अभी तक नहीं कर पाए हैं लेकिन मुझे लगता है कि उस लेंटाना के माध्यम से बाकी चीजों का उन्मूलन हो रहा है । जिन 75 हजार 36 श्रमिकों को नगद भुगतान किया गया और उसमें ऐसी क्या परिस्थितियां थीं और कितनी राशि बनती है कि ऐसा भुगतान किया गया है ।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, प्रश्न महत्वपूर्ण है और विषय भी लेंटाना से संबंधित है । दूसरा, श्रमिकों का पेमेंट माननीय प्रधानमंत्री जी की मंशा के अनुरूप बैंक के माध्यम से जाना चाहिए । अधिकतम् पेमेंट सभी विभागों में जो व्यवस्था है, उसको दुरूस्त करने की जरूरत है । नगद भुगतान से बचना चाहिए । मंत्री जी भविष्य में इसका ध्यान रखेंगे ।

श्री केदार कश्यप :- अध्यक्ष महोदय, जब 2014 में नगद भुगतान को लेकर निर्देश जारी किया गया था । बहुत सी जगह ऐसी हैं जहां अभी भी जनधन योजना के तहत् खाते खुलने चाहिए । जहां पर खाता नहीं है वहां खाता खुलवाएंगे और नगद राशि देना अभी हम लोगों ने बंद भी किया है । हम कोशिश कर रहे हैं कि डीबीटी के माध्यम से हम ज्यादा से ज्यादा राशि जाए । आपके मार्गदर्शन में हम इस दिशा में आगे बढ़ेंगे । जो कैंपा के माध्यम से कार्य हुए हैं । निश्चित रूप से माननीय सदस्य ने यहां प्रश्न किया है और श्रमिकों की चिंता की है । यदि किसी श्रमिक का भुगतान नहीं हुआ है तो उसको भी मैं एक बार दिखवा लूंगा ।

श्री प्रबोध मिंज :- अध्यक्ष महोदय, एक सवाल यह है कि ऐसा हमारे सरगुजा जिला को इतना पिछड़ा बता दिया गया, जहां बैंक नहीं है या उनके खाते नहीं खुले थे तो यह हमारे सरगुजा का दुर्भाग्य है । अध्यक्ष महोदय, इसमें आपदा में अवसर ढूंढा गया है इसलिए नगद भुगतान हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया ।

श्री प्रबोध मिंज :- मैं मानीय मंत्री जी से चाहूंगा कि जितने नगद भुगतान हुए हैं, आप उसकी जांच करवाएं । क्या आप उसकी जांच कराएंगे ?

श्री केदार कश्यप :- अध्यक्ष महोदय, जो 75 हजार श्रमिकों का नगद भुगतान किया गया है । मैंने अपने उत्तर में ही कहा कि 5 मिलोमीटर की परिधि में यदि बैंक न हो तो वहां कलेक्टर और वन मंडलाधिकारी से, वहां पंच, सरपंच और वन समितियों के माध्यम से उनकी उपस्थिति में नगद भुगतान देने का प्रावधान किया गया है ।

श्री प्रबोध मिंज :- मंत्री जी, मैं सारे भुगतान की जांच की बात नहीं कह रहा हूं । जो 75 हजार 36 श्रमिकों का नगद भुगतान हुआ है उसकी जांच करा दें और श्रमिकों के पैसों का जो बंदरबांट हुआ है, जांच कराने से दूध का दूध और पानी का पानी होगा । श्रमिकों के हित में होगा और भविष्य में इस तरह नगद भुगतान के मामले बंद होंगे । इसलिए मैं मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि क्या आप इसकी जांच कराएंगे ?

श्री केदार कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्तमान में नगद भुगतान बंद कर दिया गया है और जैसा कि माननीय सदस्य चाहते हैं, यदि कोई स्पेसीफिक जगह हो, जहां उनको लगता है कि ...।

अध्यक्ष महोदय :- आप लिखकर दे देंगे, वे जांच करा लेंगे ।

श्री प्रबोध मिंज :- जी ।

प्रश्न संख्या 07 : XX XX

<u>राजिम विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत जल संसाधन विभाग से स्वीकृत निर्माण/विकास कार्य</u>

[जल संसाधन]

8. (*क्र. 1137) श्री रोहित साहू : क्या वन मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि : **(क)** राजिम विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत जनवरी 2021 से दिसंबर, 2023 के मध्य जल संसाधन विभाग द्वारा कौन-कौन से निर्माण अथवा विकास कार्यों को स्वीकृति प्रदान की गई है? कृपया ग्रामवार जानकारी देवें? **(ख)** स्वीकृत कार्यों में से कौन-कौन से कार्य पूर्ण किए जा चुके हैं तथा कौन-कौन से कार्य अपूर्ण हैं? अपूर्ण निर्माण कार्यों में से कौन-कौन से ऐसे हैं, जिसकी निविदा की अवधि समाप्त हो चुकी है?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वन मंत्री (श्री केदार कश्यप) : (क) राजिम विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत प्रश्नावधि में 08 निर्माण कार्यों की स्वीकृति दी गई है, **जानकारी संलग्न प्रपत्र †[2] अनुसार है। (ख)** स्वीकृत कार्यों में से सभी कार्य अपूर्ण है। अपूर्ण कार्यों में से 01 कार्य की निविदा अवधि समाप्त हुई है। **जानकारी संलग्न प्रपत्र अनुसार है।**

श्री रोहित साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न जल संसाधन विभाग का है। मेरे राजिम विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत सीकासेर बांध जलाशय है जिसमें नहर लाईनिंग का जीर्णोद्धार, क्रांकीटीकरण का कार्य स्वीकृत हुआ है। लेकिन मैं बताना चाहूंगा, 5 वर्ष बीत जाने के बाद भी एक भी काम पूर्ण नहीं हुआ है जिसके चलते हमारे क्षेत्र के अन्नदाताओं को रबी फसल, दलहन, तिलहन लिए जो पानी की मांग कर रहे थे, उन्हें पानी नहीं मिल पाया। पूर्ववर्ती सरकार की नाकामी के कारण इस क्षेत्र की जनता को तकलीफ का सामना करना पड़ा है। हमारे गरियाबंद जिले में जितने निर्माण कार्य अभी स्वीकृत हुए हैं, उन निर्माण कार्यों का किस कारण से इतना विलंब हुआ है और विलंब होने के कारण कार्य पूर्ण नहीं हो पाया, उन ठेकेदारों के विरूद्ध क्या कार्रवाई हुई है या नहीं हुई है, किस कारण से कार्रवाई नहीं हुई है, मैं यह जानना चाहता हूं।

श्री केदार कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय विधायक जी ने जो जानकारी चाही है, उसके संबंध में मैंने अपना उत्तर दिया है। जो कार्य हैं, वह कार्य प्रगतिरत हैं। कई कार्य ऐसे हैं जिनकी निविदा आमंत्रित की गयी लेकिन वर्तमान में 5-5 बार निविदा आमंत्रण के पश्चात् भी वहां पर कोई निविदा, कोई ठेकेदार आ नहीं आ रहा है। हमारा प्रयास है कि जल्द से जल्द उस कार्य को पूर्ण करा लिया जाए, प्रारंभ करा लिया जाए, ताकि वहां के लोगों को सीधा-सीधा लाभ पहुंच सके। लगातार टेंडर के प्रोसेस पर पूरी योजनाएं हैं, हमारी पहली प्राथमिकता होगी कि माननीय विधायक जी की जो चिंता है, उस चिंता का हम निवारण करें और वहां पर जितने भी कार्य स्वीकृत हैं, उन स्वीकृत कार्यों में हम एजेंसी तय करके देंगे।

श्री रोहित साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा, यह अपूर्ण कार्य कब तक पूर्ण कर लिया जाएगा। महोदय, पांच साल बीत गये हैं जिसके कारण दलहन, तिलहन के लिए हमारे किसानों को पानी नहीं मिल पाया है। ठेकेदारों के द्वारा 8 काम में एक भी काम पूर्ण नहीं हुआ है। यह काम कब तक पूर्ण हो जाएगा ? हमारे क्षेत्र के किसानों के लिए यह महत्वपूर्ण योजना है, महत्वपूर्ण काम है, यह काम गंभीरता के साथ पूर्ण हो, मैं इसके लिए गंभीरता से आपका जवाब चाहता हूं।

---

[2] परिशिष्ट "तीन"

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री केदार कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी वर्तमान में तीन कार्यों में एजेंसी है और पांच कार्यों में निविदा की प्रक्रिया प्रांरभ है। जैसे ही वहां पर उस निविदा में ठेकेदार भाग लेंगे उसके बाद जब एजेंसी तय होगी तो उन सभी कार्यों को जल्द से जल्द पूरा करायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए ठीक है।

श्री रोहित साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक और जानकारी देना चाहूंगा। छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के पहले ही हम लोगों ने पांच साल तक धरना प्रदर्शन किया, चक्काजाम किया। हमारे क्षेत्र के किसानों के लिए दलहन, तिलहन, रबी फसल के लिए पानी की मांग करते रहे। लेकिन दुर्भाग्यवश पानी नहीं मिल पाया। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको अवगत कराना चाहूंगा, छत्तीसगढ़ में जैसे ही भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, सरकार बनते ही हमारे मुख्यमंत्री आदरणीय विष्णुदेव साय जी और हमारे जल संसाधन मंत्री जी को पूरे राजिम विधान सभा गरियाबंद जिलावासियों की ओर से धन्यवाद देना चाहूंगा कि सरकार बनते ही राजिम विधान सभा के गरियाबंद जिले के सभी किसानों में उत्साह है। जो आपके माध्यम से दलहन, तिलहन रबी फसल के लिए इस वर्ष पानी दिया है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, धन्यवाद दे दीजिए।

श्री रोहत साहू :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से आभार व्यक्त करना चाहूंगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। श्रीमती सावित्री मंडावी जी।

प्रदेश के राजीव युवा मितान क्लब के संबंध में

[खेलकूद एवं युवा कल्याण]

9. (*क्र. 473) श्रीमती सावित्री मनोज मंडावी : क्या राजस्व मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- प्रदेश के राजीव युवा मितान क्लब को प्रदत्त राशि की भविष्य में क्या उपयोगिताहै?

राजस्व मंत्री (श्री टंक राम वर्मा) : शासन के नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही की जावेगी।

श्रीमती सावित्री मनोज मंडावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न था कि युवा मितान क्लब की जो प्रदत्त राशि थी उसका भविष्य में क्या उपयोगिता है ? हमारे मंत्री जी का जवाब था कि शासन के नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जाएगी, मंत्री जी, यह कब तक की जाएगी, समय सीमा बताईए।

श्री टंकराम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजीव युवा मितान क्लब में जो शेष राशि बची है। वह शासन के नियमानुसार उसमें उचित कार्रवाई की जाएगी। इसमें 132 करोड़ रूपए का प्रावधान था और 40 करोड़ रूपए शेष है और लगभग 60 करोड़ रूपए खर्च किये जा चुके हैं। बची हुई राशि के लिए नियमानुसार उस पर कार्रवाई की जाएगी।

श्रीमती सावित्री मनोज मंडावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा छत्तीसगढ़ विविध संस्कृति वाला प्रदेश है। हमने हमारे सभी पारंपरिक खेलों और त्योहारों को सहेजने और संवारने का काम किया है। हमारे पुराने खेल जो विलुप्त होने की कगार पर थे, उनको बचाने का काम हमारे माननीय भूपेश बघेल जी ने किया है तो मेरा माननीय मंत्री जी से निवेदन है कि क्या आप मोदी जी की गारंटी में हमर सरकार, तुंहर द्वार योजना के तहत् ग्रामीणों और युवाओं को प्रोत्साहित करने और उनके रचनात्मक विकास से संबंधित राशि का उपयोग करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, क्या आप उस राशि का उपयोग करेंगे ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस उद्देश्य से राजीव युवा मितना क्लब का गठन किया गया था और जो उसकी नियमावली बनाई गई है उसके नियम के अनुसार उसके उद्देश्य पूरे नहीं हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी, आप छोटे-छोटे प्रश्न पूछ लीजिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने अभी प्रश्न करना शुरू नहीं किया है। यह प्रश्न छोटा सा है तो मैं और कितना छोटा प्रश्न पूछूं ?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी पहली बार जवाब दे रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, मंत्री जी को फंसाने का कोई विषय नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहूंगा कि राजीव युवा मितना क्लब को कौन-कौन से मद से राशि प्रदत्त की गई ? क्या उनको बजट से राशि दी गई या शेष से दी गई या D.M.F. से दी गई और उसके खर्च के नियम-निर्देश क्या थे ? वह किन-किन विषयों में खर्च किये जा सकते थे ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके लिए बजट का प्रावधान रखा गया है। इसका मूल भाव रामायण महोत्सव, खेल-कूद का आयोजन, सामाजिक गतिविधि, खिलाड़ियों का प्रशिक्षण, सांस्कृतिक कार्यक्रम था और इन कामों में राशि खर्च होनी थी।

श्री अजय चंद्राकर :- मंत्री जी, मुझे यह जानना है कि यदि इसको बजट में रखा गया था तो उस साल के बजट में उसके लिए कितनी राशि का प्रावधान रखा गया था। किसी अन्य मदों के पैसे भी उसमें दिये गये होंगे तो उन पैसों के खर्च के ऑडिट का कोई प्रावधान था या नहीं था या उन्हें केवल पैसे दे दिये गये ? प्रति क्लब कितने पैसे दिये गये ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब उपयोगिता प्रमाण पत्र आ जाएगा, तब इसमें प्रति क्लब को 4 किश्तों में 25,000 रूपये करके कुल 1 लाख रूपये देने थे। लेकिन कई जगहों पर इसमें उपयोगिता प्रमाण पत्र।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी, आप प्रश्न पूछिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप केवल इसके बजट की जानकारी दे दीजिए कि कौन-कौन से मद से उनको पैसे दिये गये थे ? राज्य बजट से कितने पैसे दिये गये थे ?

अध्यक्ष महोदय :- आपको मंत्री जी जानकारी उपलब्ध करा देंगे। धर्मजीत जी।

श्री टंक राम वर्मा :- आपको जानकारी दे देंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसको फ्लोर में आना था और पूरे प्रदेश को इसको जानना था। इसको तो पूरे प्रदेश को जानना चाहिए, क्योंकि यह आपका चिट्ठा है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि गलत हुआ है तो उस पर कार्रवाई होनी चाहिए। यदि आपको यह गलत लगता है तो इस पर बिल्कुल कार्रवाई होनी चाहिए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सभी गांवों में राजीव युवा मितान क्लब को 1-1 लाख रूपये दिये गये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न पूछिये।

श्री अजय चंद्राकर :- ऐसा है कि अध्यक्ष महोदय ने मुझे बैठा दिया है।

अध्यक्ष महोदय :- आप इस पर वाद-विवाद मत कीजिए। आप बोलिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजीव युवा मितान क्लब का मतलब था - खाओ, पियो और मौज करो। इससे ज्यादा इसका न कोई औचित्य है, न उपयोग है और न कोई अर्थ है। मंत्री जी, आपने 132 करोड़ रूपये में से केवल 100 करोड़ रूपये का हिसाब दिया है। आपका यही कहना है कि 40 करोड़ रूपये खर्च हुए और 60 करोड़ रूपये बचे हैं तो पहले आप यह बताइये कि 32 करोड़ रूपये कहां हैं ?

श्री टंक राम वर्मा :- लगभग 40 करोड़ रूपये बचे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- तो कितने पैसे खर्च हुए हैं ? आप 132 करोड़ रूपये का हिसाब बताइये।

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने क्लबों को 126 करोड़ रूपये भेज दिये हैं और अभी बजट में जिले में 14 करोड़, 54 लाख रूपये हैं। उनके जिला स्तरीय, अनुभाग स्तरीय खाते में करीब।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं समझ गया। माननीय मंत्री जी, वह 132 करोड़ रूपये गरीब लोगों और गांव के किसानों के पैसे हैं। वह पैसे मौज-मस्ती करने के लिए देने के लिए नहीं हैं। पिछली सरकार ने दिये होंगे। मैं आपसे केवल यह जानना चाहता हूं कि जितने पैसे खर्च हुए हैं, क्या आप उसकी जांच कराएंगे ? आगे के खर्च के लिए उनको पैसे नहीं देंगे।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप यह बताइये कि क्या उसकी जांच कराएंगे ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम इसकी जांच कराएंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- बहुत अच्छा। आपकी जांच कराने की मांग थी तो आपका काम हो गया। श्री द्वारिकाधीश यादव।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी में एक प्रश्न करना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी ने आपकी बात पूरी कर दी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मंत्री जी, आपने जांच कराएंगे कहा, उसके लिए धन्यवाद, लेकिन कोई अवधि बता दें कि 4 महीने या 6 महीने के अंदर इसकी जांच होगी ।

अध्यक्ष महोदय :- आप जानकारी उपलब्ध करा दें, वे उसकी जांच कराएंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, जांच की अवधि बता दीजिए । 4 महीने या 6 महीने में या कितने दिन में जांच कराएंगे ?

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जल्दी से जल्दी जांच कराएंगे।

अध्यक्ष महोदय :- शीघ्र करा लेंगे ।

श्री धरम लाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, एक छोटा सा प्रश्न करना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- इसी में ?

श्री धरम लाल कौशिक :- हां । आधा लाईन का प्रश्न है । मंत्री जी, शासन की राशि जहां भी दी जाती है और उसकी प्रक्रिया है, नियम है । उसमें आडिट की भी व्यवस्था है कि जिसके लिए राशि दी गई, उसमें खर्च हुआ या नहीं हुआ ? राशि दी जाती है तो उसका आडिट किया जाता है । मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि ये जो राशि दी जा रही है और इसमें राशि का दुरूपयोग हो रहा है । राशि का दुरूपयोग किया जा रहा है तो उसका आडिट कराएंगे क्या ? जो शासकीय राशियों को खर्च किया जाता है तो उसका आडिट कराया जाता है । उसमें आडिट की व्यवस्था कराएंगे क्या ?

श्री राजेश मूणत :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा एक छोटा सा प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप इसमें कहां से आ गए ।

श्री राजेश मूणत :- यह इस प्रदेश का बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है । अध्यक्ष महोदय, राजीव मितान क्लब के गठन की प्रक्रिया क्या थी ? इसमें किन व्यक्तियों को चिन्हित किया गया, उसकी प्रक्रिया कैसे थी और उसका चयन किसने किया ?

श्री धरम लाल कौशिक :- उसमें आडिट की बात भी जोड़ देना । आडिट करेंगे, जांच कराएंगे । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, मेरे विधान सभा क्षेत्र के किसी भी एक गांव का आडिट करवा दें कि क्या काम किया है ? मैं अपने विधान सभा क्षेत्र के एक गांव की जांच कराने की मांग करता हूं । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, घोर अव्यवस्था और भ्रष्टाचार । यह भ्रष्टाचार की जो हालत है, उसकी जांच करवाएंगे तो वह सामने आ जाएगा । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका संरक्षण चाहिए । मंत्री जी इसमें जांच करवाएंगे । यह खुली लूट का विषय है । इसमें जो बड़े मगरमच्छ हैं, उसमें हर विषय की जांच होनी चाहिए (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष जी, युवा मितान क्लब में छत्तीसगढ़ राज्य के युवाओं को आईटेंडीफाई किया गया है । आजतक किसी ने आपत्ति नहीं की । (व्यवधान)

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- अध्यक्ष महोदय, ग्राम सभा के माध्यम से युवाओं को चिह्नांकित किया गया है और प्रदेश के जितने भी युवा हैं, उनको आगे बढ़ने का अवसर दिया गया है । (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्राम सभा के प्रस्ताव से ही राजीव युवा मितान क्लब का गठन हुआ है । (व्यवधान)

श्री राजेश मूणत :- यह युवक कांग्रेस के लिए फंड आता था । ये [xx] सरकार थी । (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- अंधा बांटे रेवड़ी, चिह्न चिह्न के दे । पैसे का दुरूपयोग हुआ है। (व्यवधान)

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी :- ये लोग जबरदस्ती आरोप लगा रहे हैं (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- ग्राम सभा के प्रस्ताव से ही क्लब का गठन किया गया है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप लोग बैठिए । सब बैठ गए, आप भी बैठिए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, राजीव मितान क्लब में जो राशि दी जाती थी, उसमें इनके रैलियों के लिए खर्चा दिया जाता था । (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, [xx]शब्द का उपयोग करना उचित नहीं है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- हो गया, बैठिए ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- हमारे कार्यकर्ता को [xx] कह रहे हैं, यह उचित नहीं है । राजीव युवा मितान भंग कर दें । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- राजीव मितान क्लब इनकी रैलियों में जो खर्च होता था, उसके लिए राशि दी जाती थी । भंग करोगे तो जो भ्रष्टाचार हुआ है, उसकी जांच कैसे होगी (व्यवधान)

(भारतीय जनता पार्टी सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, ये लोग जिस चीज का विरोध कर रहे हैं, वह ग्राम पंचायत के प्रस्ताव से बना था (व्यवधान)

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए हो गया, अब दूसरा प्रश्न ले रहा हूं । (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप [xx] नहीं बोले सकते, उनको वही दिखता है तो पहले कर चुके हैं । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- राजीव मितान योजना खाने का माध्यम थी (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आप जांच कराईए न ।

श्री टंक राम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय,

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट, मंत्री जी बोल रहे हैं, आप लोग बैठिए ।

श्री राजेश मूणत :- क्या मितान क्लब भंग करेंगे ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट, मंत्री जी बोल रहे हैं।

श्री राजेश मूणत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि क्या मितान क्लब भंग करेंगे ? एक लाईन का प्रश्न है। क्या भुगतान पर रोक लगेगा ? भुगतान पर रोक लगेगा या नहीं लगेगा ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- जवाब सुनिये। आप बैठिये, मैं आपको अवसर दूंगा, आपको मौका दूंगा। चलिये, जवाब दीजिये। साहू जी बैठिये, गुरू जी बैठिये। मंत्री जी जवाब दे रहे हैं। आप एक लाईन में जवाब दे दीजिये।

श्री टंकराम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजीव युवा मितान क्लब का गठन रजिस्ट्रार फर्म सोसायटी से प्रदेश स्तर पर संगठन बनाया था, जिसके अध्यक्ष स्वयं मुख्यमंत्री जी थे और खेल मंत्री उपाध्यक्ष थे। इसमें जितने भी खर्च हुए हैं, जितने भी काम हुए हैं, उसमें आडिट का प्रावधान है। इनका आडिट कराया जायेगा। इसकी पहले भी शिकायत मिलती थी। जैसे ही हमारी भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई, वैसे ही इस क्लब पर रोक लगा दिया गया है। आने वाले समय में इस राजीव मितान क्लब को भंग किया जायेगा। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया, बैठ जाईये।

श्री टंकराम वर्मा :- जो दोषी लोग हैं, इसमें एक व्यवस्था है। क्योंकि राशि का दुरूपयोग किया गया है तो उस राशि की वसूली ..।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, यह छत्तीसगढ़ का आलोपिंक गेम है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक इसमें भाग ले सकते हैं। यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति का सवाल है। आप इसका अपमान कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- द्वारिकाधीश जी, आपको अवसर मिला है, प्रश्न कर लीजिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

<u>कोटवारों को प्रदत्त भूमि का विक्रय/हस्तांतरण</u>

[राजस्व एवं आपदा प्रबंधन]

10. (*क्र. 1310) श्री द्वारिकाधीश यादव : क्या राजस्व मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** छतीसगढ़ प्रदेश में कोटवारों को प्रदत्त भूमि को किस वर्ग में रखा गया है ? उन्हें किस भूमि का भूस्वामित्व प्रदान किया गया है? **(ख)** क्या कोटवारों को प्राप्त भूमि का विक्रय हस्तान्तरण का नियम है? यदि हां तो किस वर्ग/प्रकार की भूमि का ? **(ग)** क्या खल्लारी विधान सभा क्षेत्रान्तर्गत कोटवारों द्वारा शासन से प्राप्त भूमि का विक्रय- हस्तान्तरण किया गया है ? यदि हां, तो संख्या व रकबा बतायें? **(घ)** शासन से प्राप्त भूमि का अनियमित रूप से कोटवारों द्वारा विक्रय पर क्या कार्यवाही की जा रही है?

राजस्व मंत्री (श्री टंक राम वर्मा) :(क) छत्तीसगढ़ प्रदेश में कोटवारों को प्रदत्त भूमि को सेवा भूमि (शासकीय भूमि) वर्ग में रखा गया है। कोटवारों को सेवा भूमि का भूमिस्वामित्व प्रदान नहीं किया गया है। **(ख)** जी नहीं। **(ग)** जी हां। खल्लारी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत तहसील बागबाहरा में कुल खसरा 123 कुल रकबा 48.26 हेक्टेयर एवं तहसील कोमाखान में कुल खसरा 33 कुल रकबा 19.93 हेक्टेयर इस प्रकार कुल खसरा 156 कुल रकबा 68.19 हेक्टेयर का विक्रय हस्तांतरण किया गया है। **(घ)** शासन से प्राप्त भूमि का अनियमित रूप से कोटवारों द्वारा विक्रय किये जाने पर छ.ग. शासन, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग, मंत्रालय के पत्र क्रमांक एफ 10-11/2000/आ.प्र./पार्ट-2, दिनांक 10 मार्च 2014 एवं पत्र क्रमांक एफ 10-11/2020/7-4, दिनांक 27.02.2021 द्वारा समस्त कलेक्टरों को कोटवारों द्वारा विक्रय की गई भूमि संबंधी प्रकरणों का परीक्षण किया जाकर कोटवारों को प्रदानकी गई भूमि के अभिलेखों में **"अहस्तांतरणीय"** शब्द लिखे जाने तथा कोटवारों द्वारा अवैधानिक रूप से विक्रय की गई भूमि के विक्रय विलेख को भी व्यवहार न्यायालय में वाद दायर कर निरस्त कराये जाने का निर्देश प्रसारित किया गया है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मंत्री जी से जानना चाहा था कि खल्लारी विधानसभा क्षेत्र के कोमा खान और बागबाहरा तहसील में कोटवारों को सेवा भूमि प्राप्त हुई थी, उसमें से कितनी भूमि का विक्रय हुआ है। इसमें माननीय मंत्री का जवाब आया है कि कुल खसरा नं. 156 और कुल 68 हैक्टेयर भूमि का विक्रय हुआ है। माननीय मंत्री जी, आप उक्त हस्तान्तरित भूमि को निरस्त करने के लिए व्यवहार न्यायालय में वाद दायर करने के निर्देश दिए हैं। माननीय मंत्री जी, मैं आपसे जानना चाहता हूं कि अभी तक कितने वाद दायर हुए हैं ? यदि वाद दायर नहीं हुए हैं तो किस वजह से व्यवहार वाद दायर नहीं हुआ है ? किस अधिकारी ने वाद दायर नहीं किया, उनके ऊपर क्या कार्यवाही करेंगे ?

श्री टंकराम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोटवारों को जो भूमि दी गई थी, वह सेवा भूमि है। उनको विक्रय का अधिकार नहीं है। परन्तु खल्लारी विधानसभा में शासन से जो कोटवार भूमि, सेवा भूमि प्राप्त हुई है, उसमें हस्तान्तरण के, विक्रय के मामलें आये हैं। इस विक्रय को रोकने के लिए शासन ने समय-समय पर कदम उठाया है। उनके अभिलेख में "अहस्तान्तरित" शब्द लिखा गया है। ताकि उसका हस्तान्तरण ना हो, विक्रय ना हो। उसके बावजूद गलत तरीके से भूमि विक्रय किया गया है। अभी इस बारे में इन विक्रयों को निरस्त करने के लिए कई प्रकरण व्यवहार न्यायालय में चल रहा है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी, सेवा भूमि का विक्रय हुआ, जो नियम विरूद्ध हुआ है। इस विक्रय में सम्मिलित राजस्व विभाग के पटवारी, आर.आई., तहसीलदार के ऊपर क्या कार्यवाही करेंगे ? आपने विक्रय होना स्वीकार किया है, यह आपके उत्तर में है। तो जिन्होंने भी जमीन को नियम विरूद्ध विक्रय करने में नकल प्रदान किया है, मैं उनके लिए आपसे मांग करता हूं कि आप उनके विरूद्ध कार्यवाही करने की घोषणा इसी सदन में करेंगे ?

श्री टंकराम वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस विषय में भू राजस्व संहिता अधिनियम के तहत कई बार निर्देश/आदेश जारी किए गए हैं। अभी 21 अप्रैल, 2023 के द्वारा भूमि स्वामी को हक देने के निर्देश जारी किया गया था। भूमि स्वामी हक देने का निर्देश 21 अप्रैल 2023 के द्वारा जारी किये गये हैं । भू-राजस्व के आदेश 24 दिसम्बर 2011 के द्वारा निरस्त किया गया है । विभागीय प्रपत्र 10 मार्च 2014 को कोटवारों के द्वारा बेची गई सेवा भूमि के अभिलेख में भी अहस्तांतरित शब्द लिखे जाने और भूमि स्वामी के निर्देश जारी किये गये हैं ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय मंत्री जी, आप इतना लंबा भाषण क्यों दे रहे हैं ? मेरा सवाल सिर्फ यह है कि आप स्वीकार किये हैं कि सेवा भूमि बिकी है । सेवा भूमि की रजिस्ट्री तो ऐसे ही नहीं होगी । रजिस्ट्री प्रक्रिया से आप स्पष्ट वाकिफ हैं । उस आर.आई. पटवारी को बचाने के लिये क्यों समय खराब कर रहे हैं ?

श्री टंकराम वर्मा :- इसमें बचाने वाली बात नहीं है ?

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अध्यक्ष महोदय, यह स्पष्ट है, इसमें जांच की भी जरूरत नहीं है । 68 रकबा बिका है, स्वयं आपके विभाग ने बताया है कि इतना खसरा, इतना रकबा बिका है । नियम विरूद्ध बिक्री में आपके पटवारी, आपके आर.आई., तहसीलदार सम्मिलित हैं । आप उनके ऊपर कार्यवाही के लिये क्यों नहीं बोल रहे हैं ? यह दो लाईन का है, उनको बचाने के लिये क्यों लगे हो ?

श्री टंकराम वर्मा :- इसको दिखवा लेते हैं ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अध्यक्ष महोदय, इसमें दिखवाने का सवाल ही नहीं है। आप इसमें और क्या दिखवाना चाहते हैं ? यह मेरे को बता दीजिए ? वह तो दस्तावेज में स्पष्ट है । अगर आप दिखवायेंगे तो भी अलग से कोई चीज नहीं आनी है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, आप चाहते क्या हो ?

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अधिकारी ने गलत किया है तो कार्यवाही हो ।

श्री टंकराम वर्मा :- अध्यक्ष महोदय, इसमें क्रेता और विक्रेता दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । इसमें कोई अधिकारी और कर्मचारी क्रय विक्रय में सम्मिलित नहीं रहा है ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- वह बाद का विषय है । जो शासन की नीति में है...। (व्यवधान) माननीय मंत्री जी, आप अगर इसमें समय रहते कार्यवाही नहीं करेंगे तो यह पूरे प्रदेश में है, केवल खल्लारी नहीं है । यह उदाहरण है ।

श्री टंकराम वर्मा :- चलिये, आप भी पूछ लीजिए ।

श्री लखेश्वर बघेल :- अध्यक्ष महोदय, हमारे माननीय सदस्य यह कहना चाह रहे हैं कि आप कार्यवाही करेंगे या नहीं करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- कार्यवाही करेंगे बोल दीजिए, क्या करना है, कार्यवाही करना है ?

श्री टंकराम वर्मा :- कार्यवाही करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बस । ठीक है । हो गया ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद । श्री लालजीत सिंह राठिया ।

<u>बजट में सम्मिलित धर्मजयगढ़ विधानसभा क्षेत्र के सड़कों की जानकारी</u>

[लोक निर्माण]

11. (*क्र. 936) श्री लालजीत सिंह राठिया : क्या उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** लोक निर्माण विभाग के बजट वर्ष 2022-23 एवं 2023-24 के बजट में धर्मजयगढ़ विधानसभा क्षेत्र की कितनी सड़कें शामिल की गई है? कितनी सड़कों की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गयी है? कितने शेष है ? **(ख)** कब तक स्वीकृति प्रदान की जायेगी?

उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) (श्री अरूण साव) : (क) बजट वर्ष 2022-23 में 06 सड़क कार्य एवं बजट वर्ष 2023-24 में 09 सड़क कार्य शामिल किया गया। 01 सड़क कार्य की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। 14 सड़क कार्यों की प्रशासकीय स्वीकृति शेष है। **(ख)** निश्चित तिथि बताया जाना संभव नहीं है।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा माननीय उप मुख्यमंत्री जी से प्रश्न है, मेरे धर्मजयगढ़ विधान सभा क्षेत्र में वर्ष 2022-2023 और वर्ष 2023-2024 में कितनी सड़कों को बजट में शामिल किया गया है ? कितनी सड़कों को प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है ? कृपया मंत्री जी बताने का कष्ट करें ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य को विस्तृत जानकारी उत्तर में दिया गया है । वर्ष 2022-2023 में धर्मजयगढ़ विधान सभा क्षेत्र में 6 काम बजट में शामिल किये गये थे । एक काम की प्रशासकीय स्वीकृति 22-09-23 को 563.72 लाख की प्रशासकीय स्वीकृति मिली है । उक्त कार्य के लिये वन विभाग से अनुमति की प्रक्रिया की जा रही है । अभी निविदा जारी नहीं हुई है। शेष पांच कार्यों की प्रशासकीय स्वीकृति प्रक्रियाधीन है । वर्ष 2023-2024 में बजट में 9 काम शामिल थे । अभी प्रशासकीय स्वीकृति प्रक्रियाधीन है ।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक सड़क जो स्वीकृत किये हुये हैं, उसका कब तक टेंडर करा दिया जायेगा ? वन विभाग से कब एन.ओ.सी. प्राप्त होगी ? कब प्रारंभ किया जाये ? माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा दूसरा प्रश्न है कि मेरे धर्मजयगढ़ विधान सभा क्षेत्र ....।

अध्यक्ष महोदय :- छोटे-छोटे प्रश्न करें, समय बहुत कम है ।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी एक ही प्रश्न का जवाब देंगे कि कब इसका टेंडर करा लिया जायेगा ?

श्री अरूण साव :- जैसे ही वन विभाग की अनापत्ति मिलेगी, निविदा की प्रक्रिया करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती कविता प्राणलहरे ।

<u>बिलाईगढ़ विधानसभा क्षेत्र के ग्रामो में हैण्ड पंप खनन एवं रखरखाव</u>

[लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी]

12. (*क्र. 1089) श्रीमती कविता प्राण लहरे : क्या उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- जिला सारंगढ़-बिलाईगढ़ के विधानसभा क्षेत्र बिलाईगढ़ में 2021 से 01 जनवरी, 2024 की अवधि में कितने ग्रामों में हैण्डपंप खनन का कार्य किया गया? वर्तमान में कितने बंद एवं कितने कार्यरत् हैं? उक्त अवधि में कितने हैण्डपंप के रखरखाव हेतु कितनी राशि खर्च की गई? कृपया बतावें?

उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) (श्री अरूण साव) :जिला सारंगढ़-बिलाईगढ़ के विधानसभा क्षेत्र बिलाईगढ़ में 2021 से 01 जनवरी, 2024 की अवधि में 228 ग्रामों में नलकूप खनन (हैण्डपम्प) का कार्य किया गया। उक्त अवधि में स्थापित किये गये बंद हैण्डपम्प की संख्या निरंक एवं स्थापित किये गये समस्त 236 हैण्डपम्प कार्यरत है। उक्त अवधि में सुधार किये गये कुल 2808 हैण्डपम्पों पर राशि रू. 98.88 लाख खर्च की गयी है।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत छोटा प्रश्न करिये ? आपके पास समय कम है ।

श्रीमती कविता प्राण लहरे :- अध्यक्ष महोदय, माननीय उप मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि जिला सारंगढ़, बिलाईगढ़ के विधान सभा क्षेत्र में वर्ष 2021 से 1 जनवरी 2024 की अवधि में कितने ग्रामों में हैंण्डपंप खनन का कार्य किया गया है ? वर्तमान में कितने बंद और कितने कार्यरत हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल समाप्त ।

(प्रश्नकाल समाप्त)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :
12.00 बजे

पृच्छा

अध्यक्ष महोदय :- आज बसंत पंचमी है। आप सभी को बसंत पंचमी की शुभकामनाएं और मां सरस्वती का आशीर्वाद मिले (मेजों की थपथपाहट)। आप आने वाले समय में और बेहतर प्रश्न करें। आपकी बुद्धि और ज्ञान में वृद्धि हो। मैं आप सब को यह शुभकामनाएं देता हूं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष महोदय, आज वेलेंटाईन डे भी है।

अध्यक्ष महोदय :- उसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए। वह पाश्चात्य संस्कृति का प्रतीक है। आप मां सरस्वती को याद करिये। आप कहां वेलेंटाईन डे के चक्कर में पड़े हुए हैं। आप यह कामना करें कि सबको मां सरस्वती का आशीर्वाद मिले।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबको सरस्वती का ज्ञान तो चाहिए ही लेकिन यहां बहुत से लोग वेलेंटाईन-डे वाले भी हैं। यहां अंदर बाहर बहुत से लोग हैं। साहब, उनको भी बधाई दे दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- यह सब करने की उम्र निकल गई। चलिये।

श्री दलेश्वर साहू (डोंगरगांव) :- अध्यक्ष महोदय, राजनांदगांव जिला के किसान परेशान हैं। उनका नक्शा, खसरा, बी-1 नकल नहीं निकल पा रहा है। एक महीना से चिप्स में खराबी है। वह आपका और हमारा विधान सभा क्षेत्र है। मैंने इनसे शून्यकाल में निवेदन किया है, इसको ग्राह्य करके चर्चा कराई जाये।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया ना। शून्यकाल में जवाब नहीं आता है।

श्री दिलीप लहरिया (मस्तुरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे मस्तुरी विधान सभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत दर्राभाठा में कल ही की घटना है कि 7-8 वर्ष के दो स्कूली बच्चे थे, जो प्राईमरी स्कूल में पढ़ते थे। उनका पानी में डूबकर देहांत हो गया है। इसको अभी तक संज्ञान में नहीं लिया गया है। उन बच्चों का बस्ता भी स्कूल में ही पड़ा हुआ है। यह कल ही की घटना है।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री ब्यास कश्यप (जांजगीर-चांपा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नैला संपार 345 में विगत लंबे समय से क्षेत्र की जनता फाटक के संबंध में मांग कर रही है। जिससे नगर पालिका, जांजगीर-नैला सहित आस-पास के लोग परेशान हैं और वहां का व्यापार भी ठप्प हो गया है। दो घण्टे से ढाई-ढाई घण्टे तक रेलवे फाटक बंद रहता है। आपके शासनकाल के समय में भी एक सर्वे हुआ था। अभी वर्तमान में रेलवे से भी प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है। क्या छत्तीसगढ़ सरकार चाहती है कि उसमें भी बजट प्रावधान करके अतिशीघ्र ओव्हर ब्रिज का निर्माण किया जाये। यह मेरी मांग है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री इंद्रशाह मंडावी (मोहला-मानपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह ग्राम चिचवाही के बालक आश्रम का मामला था। मैंने प्रश्न भी लगाया था लेकिन उसको ग्राह्य नहीं किया गया है। वहां पर दिनांक 19.01.2024 को शाम 6.00 बजे पांच बच्चों के द्वारा मिलकर अदिति राणा को डण्डे से पीटा गया । वह भागकर अपने घर चले गया। उसके बाद वहां आश्रम में छात्रावास अधीक्षक भी नहीं थे और चपरासी भी नहीं थे। वह बच्चा रात भर किसी दूसरे जगह पड़े रहा। दूसरे दिन उसके पिताजी थाना में लेजाकर रिपोर्ट करवाने का प्रयास किये लेकिन रिपोर्ट नहीं हुआ। आज उस आश्रम के अधीक्षक और चपरासी आराम से है। उसके ऊपर क्या कार्रवाई करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- श्री कुंवर सिंह निषाद।

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुण्डरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धान का उठाव नहीं हो पाने के कारण टीमों के माध्यम से लगातार समिति प्रबंधक को नोटिस दिया जा रहा है। समिति प्रबंधक ने परेशान होकर कल माननीय कलेक्टर महोदय के पास जाकर अपना आवेदन दिया है कि जितनी जल्दी हो सके धान का उठाव किया जाये नहीं तो समिति और किसानों के ऊपर बहुत ज्यादा परेशानी आ सकती है। इस पर गौर किया जाये।

श्री अटल श्रीवास्तव (कोटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बिलासपुर में जितने भी नर्सिंग होम है, उसमें लगातार छापे मारे जा रहे हैं। डॉक्टरों के बीच में दहशत का माहौल बन गया है। जो नियम कानून के हिसाब से हॉस्पिटल चला रहे हैं, उनको भी कहीं न कहीं डराया, धमकाया जा रहा है। इसकी जांच की जाये।

श्री लखेश्वर बघेल (दंतेवाड़ा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे क्षेत्र में क्रेडा विभाग द्वारा लगाये गये ड्यूल पंप और हैण्ड पंप विगत 3-4 महीनों से खराब है। कई बार बोलने के बावजूद भी वे पंप नहीं बना रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- सरकार बदलने के बाद खराब हो गई या पहले से खराब है ?

श्री लखेश्वर बघेल :- जी, सरकार बदलने के बाद खराब हो गए और सरकार सुन नहीं रही है। हम लोग कई बार आवेदन कर रहे हैं, संबंधित विभाग को बोल रहे हैं, सबको बोल रहे हैं। मैंने उस संबंध में ध्यानाकर्षण सूचना दी है, उसको ग्राह्य करके चर्चा कराई जाये।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी मन ला बताना चाहत हव कि जो पानी के लेवल हे, ओ हर बहुत डाउन हो जात हे अउ गांव के गरीब आदमी मन ला पानी के समस्या होथे। जो पानी टंकी बनाथे ओ हर अभी तक चालू नइ हो पाये हे अउ पानी के लेवल भी डाउन हो जाथे। एकर बर माननीय मंत्री जी ध्यान देवय अउ एकर बर व्यवस्था बनाय के प्रयास करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दिसम्बर माह में दिनांक 23 एवं 24 तारीख को जो धान बिका है, उसमें बहुत सारे लोगों का पैसा बहुत मात्रा में नहीं आया है, मैं, आपका उस पर ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा।

श्री रिकेश सेन (वैशाली नगर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले शासन काल में मेरे विधान सभा में जिला प्रशासन ने 20 हजार से अधिक पट्टे जमा करवाए थे और आज दिनांक तक उन्हें पट्टा नहीं लौटाया जा रहा है और इस बात को लेकर कोई भी अधिकारी अधिकृत नहीं हो रहा है कि उनके पास वह पट्टा है। कृपया कर, सभी लोगों को वह पट्टा वापस हो जाए, ऐसी व्यवस्था हो जाए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया, उसके लिए आपको धन्यवाद्।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। उस दिन आप आसंदी पर नहीं थे। माननीय सभापति महोदय आसंदी पर थे। यहां उस दिन एक माननीय सदस्य की अनुपस्थिति पर चर्चा हुई। तो उस पर यह निर्णय आया था कि जब आप आसंदी पर रहेंगे तो इस पर व्यवस्था दी जायेगी, लेकिन इसमें आपकी व्यवस्था नहीं आयी और आज तक वह सम्माननीय सदस्य लगातार अनुपस्थित हैं। यदि वह बिना सूचना के लगातार अनुपस्थिति हैं तो उस दिन हमने स्वाभाविक रूप से वही चिन्ता जाहिर की थी ...।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय अजय भईया, माननीय सदस्य सदन में एक दिन बीच में आए थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसे क्या कारण हैं जिनके कारण वह माननीय सदस्य अनुपस्थित हैं, यदि अस्वस्थ है तो उसकी चिन्ता की जाए। चूंकि आज राज्यसभा का चुनाव शुरू हो रहा है। यदि मतदान की स्थिति बनती है तो क्या वह उसमें भी अनुपस्थिति रहेंगे ? क्या आपने उनकी छुट्टी स्वीकृत कर ली। क्या अपने छुट्टी स्वीकृत करने संबंधी कोई निर्देश दिये हैं ? या वह लगातार किन्हीं एजेंसियों के दबाव के कारण, हम ज्ञात, अज्ञात ढंग से उन्हें संरक्षण तो प्रदान नहीं कर रहे हैं कि सदन की बैठकों में आप अनुपस्थित रहेंगे तब भी आपके ऊपर कुछ नहीं होगा। मैंने इस संबंध में व्यवस्था उठायी थी। चूंकि नॉमिनेशन करने का दिन आ गया है इसलिए मैं चाहता हूँ कि आपकी उसमें व्यवस्था आ जाये। मेरा ऐसा आग्रह है।

अध्यक्ष महोदय :- मेरे पास यह विचाराधीन है। हम इसमें व्यवस्था देंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन अब तो राज्य सभा चुनाव शुरू हो गए।

अध्यक्ष महोदय :- हम उसमें जल्दी व्यवस्था देंगे।

श्रीमती अंबिका मरकाम (सिंहावा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र सिंहावा में रिसगांव खल्लारी क्षेत्र है जो कि नक्सल प्रभावित क्षेत्र है। वहां पर रोड, पुल, पुलिया और बिजली की

बहुत ही अव्यवस्था है। यह सुविधाएं वहां उस क्षेत्र तक पहुंच नहीं पा रही हैं। मैं माननीय मंत्री जी का इस पर ध्यान आकृष्ट करवाना चाहती हूँ कि वहां के लोगों को तेन्दूपत्ता तोड़ने का भी अधिकार नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया, उसके लिए आपको धन्यवाद्।

समय :

12.03 बजे **<u>वित्तीय वर्ष 2023-24 के तृतीय अनुपूरक पुस्तिका के पृष्ठ क्रमांक-52 में संशोधन संबंधी सूचना</u>**

अध्यक्ष महोदय :- श्री ओ.पी. चौधरी, वित्त मंत्री, वित्तीय वर्ष 2023-24 के तृतीय अनुपूरक अनुमान की बजट पुस्तिका के पृष्ठ क्रमांक-52 में संशोधन संबंधी सूचना देंगे।

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी. चौधरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तृतीय अनुपूरक अनुमान की बजट पुस्तिका के पृष्ठ क्रमांक-52 में संशोधन है, जो इस प्रकार है:-

पृष्ठ क्रमांक-52 में उल्लेखित मद क्रमांक-3 में सरल क्रमांक-1 में कार्य की अनुमानित लागत 1389 लाख के स्थान पर अनुमानित लागत 13.89 लाख संशोधित कर पढ़ा जाये।

समय :

12.04 बजे **<u>माननीय सदस्यों हेतु स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन</u>**

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यों हेतु विधान सभा स्थित एलोपैथी चिकित्सालय में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 फरवरी, 2024 से 16 फरवरी, 2024 तक स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित है।

कृपया माननीय सदस्य 11.00 बजे से लेकर 5.00 बजे के मध्य शिविर का लाभ लें।

अध्यक्ष महोदय :- पत्रों का पटल पर रखा जाना । माननीय विष्णु देव साय जी के स्थान पर श्री बृजमोहन अग्रवाल जी पटल पर रखेंगे।

समय :

12.05 बजे **<u>पत्रों का पटल पर रखा जाना</u>**

<u>(1) परिवहन विभाग की अधिसूचना क्रमांक एफ 5-9/आठ-परि./2022, दिनांक 18 जुलाई, 2023</u>

संसदीय कार्य मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ मोटरयान कराधान अधिनियम, 1988 (क्रमांक 59 सन् 1988) की धारा 212 की उप धारा (3) की अपेक्षानुसार अधिसूचना क्रमांक एफ 5-9/आठ-परि./2022, दिनांक 18 जुलाई, 2023 पटल पर रखता हूँ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(2) परिवहन विभाग की अधिसूचना क्रमांक एफ 5-6/आठ-परि./2022, दिनांक 22 सितम्बर, 2023

संसदीय कार्य मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ मोटरयान कराधान अधिनियम, 1991 (क्रमांक 25 सन् 1991) की धारा 23 की उप धारा (2) की अपेक्षानुसार अधिसूचना क्रमांक एफ 5-6/आठ-परि./2022, दिनांक 22 सितम्बर, 2023 पटल पर रखता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री विजय शर्मा के स्थान पर श्री ओ.पी. चौधरी पटल पर रखेंगे।

(3) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2022-23

वित्त मंत्री(श्री ओ.पी. चौधरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 (क्रमांक 42 सन् 2005) की धारा 12 की उपधारा (3) के पद (च) की अपेक्षानुसार महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2022-23 पटल पर रखता हूँ।

समय :
12:06 बजे

ध्यानाकर्षण सूचना

(1) प्रदेश में संचालित प्लेसमेंट एजेंसियसों द्वारा देशी/विदेशी शराब दुकानों के संचालन में अनियमितता की जाना।

श्री धर्मजीत सिंह (तखतपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यानाकर्षण की सूचना का विषय इस प्रकार है :- प्रदेश में देशी/विदेशी शराब की लगभग 700 दुकानें संचालित हैं, जिनके संचालन के लिए प्लेसमेंट एजेंसियां कार्यरत हैं। दुकानों की सुरक्षा के लिए निजी सुरक्षा एजेंसी तैनात की गयी है, मगर विभागीय अधिकारियों की मॉनीटरिंग के अभाव में तैनात एजेंसियां अमानत में खयानत करने लगी हैं। शराब दुकानों के संचालन के लिए बकायदा शासन के दिशा-निर्देश हैं, पर पालन कराने वाले कोई नहीं हैं। प्लेसमेंट एजेंसियां दुकानों के संचालन के नियम-कानूनों की धज्जियां उड़ा रही हैं। प्रदेश के 700 दुकानों में आज तक कभी न तो स्टॉक का मिलान किया गया, न बिक्री राशि का हिसाब। जितना मनचाहे कोषालय में जमा और मनमर्जी खर्च कर रहे हैं। 31/12/2023 की स्थिति में ही कांकेर, सूरजपूर, दंतेवाड़ा की दुकानों में लगभग 25 लाख से अधिक की नगद राशि की चोरी की रिपोर्ट उजागर हुई है। सच तो यह है कि प्रदेश की दुकानों से विधिवत रूप से प्रतिदिन की बिक्री की राशि कोषालय में जमा की जा रही है या नहीं, इस तरफ किसी जिम्मेदार का ध्यान नहीं है। सिर्फ औचक निरीक्षण की आड़ में सभी दुकानों

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

से मोटी रकम उगाही हो रही है। प्रदेश के देशी/विदेशी शराब की दुकानों में नगदी राशि के लेन-देन में घपलेबाजी वर्ष 2019 के पहले से चल रही है। अधिकारी ही नहीं प्लेसमेंट एजेंसी भी बेलगाम है। विधान सभा के शीतकालीन सत्र (25 नवंबर से 06 दिसम्बर 2019 तक) के दौरान दिनांक 26 नवंबर को विधान सभा में मामला उजाकर हुआ, जिसमें 2856 करोड़ रुपये कोषालय में जमा ही नहीं हुआ तथा उसे चिल्हर खर्च, प्लेसमेंट एजेंसी के पेमेंट के लिए रखा जाना बताया, जो कि शासकीय नियमों का उल्लंघन, आर्थिक घोटाला एवं अपराध है। इसकी जिम्मेदारी तय नहीं हुई और इसी का परिणाम है कि प्लेसमेंट एजेंसी एवं अधिकारी बेखौफ होकर मनमर्जी शराब की दुकानें चला रहे हैं। राजस्व की क्षति, करोड़ों के घोटाले और अपराधियों पर कार्यवाही नहीं होने से आमजन में भारी आक्रोष है।

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी. चौधरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कहना सही नहीं है कि प्रदेश में देशी/विदेशी शराब के लगभग 700 दुकानें संचालित हैं अपितु वर्तमान में देशी/विदेशी शराब के 672 दुकानें संचालित हैं। यह भी कहना सही नही है मदिरा दुकानों का संचालन प्लेसमेंट एजेंसियों द्वारा किया जा रहा है, अपितु मदिरा दुकानों का संचालन छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है, जिसे आबकारी विभाग द्वारा देशी/विदेशी मदिरा दुकानों के संचालन हेतु अनुज्ञप्ति प्रदान की जाती है। यह भी कहना सही नहीं है कि विभागीय अधिकारियों के मॉनिटरिंग के अभाव में तैनात एजेंसियां अमानत में खयानत करने लगी हैं। यह कहना सही है कि शराब दुकान दुकानों के संचालन के लिए शासन के दिशा-निर्देश जारी हैं, पर यह कहना सही नहीं है कि उसका पालन कराने वाला कोई नहीं है। प्रदेश में संचालित 672 देशी/ विदेशी मदिरा दुकानों में शासन के दिशा-निर्देशों का पालन कराया जा रहा है। अत: यह कहना सही नहीं है कि प्लेसमेंट एजेसियां दुकानों के संचालन में नियम-कानून की धजिज्यां उड़ा रही हैं। यह कहना सही नही है कि प्रदेश की दुकानों में आज तक कभी ना तो स्टॉक का मिलान किया गया ना, बिक्री राशि का हिसाब। प्रदेश की सभी मदिरा दुकानों में प्रतिमाह छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड के मुख्यालय द्वारा अनुबंधित ऑडिट अंकेक्षण फर्मों द्वारा ऑडिट कर मदिरा स्टॉक का मिलान किया जाता है तथा माह की कुल बिक्री राशि का हिसाब किया जाता है। यह कहना सही नही है कि मनचाही बिक्री राशि कोषालय में जमा की जा रही है और मनमजी खर्च। प्रदेश में संचालित समस्त मदिरा दुकानों में प्रतिदिन की बिक्री राशि को छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड से अनुबंधित कैश कलेक्शन एजेंसी द्वारा कलेक्शन कर आगामी कार्यदिवस को बैंक में जमा कराया जाता है। यह कहना सही नहीं है कि दिनांक 31.12.2023 की स्थिति में जिला कांकेर, सूरजपूर एवं दंतेवाड़ा के दुकानों में लगभग 25 लाख रुपये की चोरी हुई थी, अपितु नगद राशि लगभग 22,02,940 रुपये की चोरी हुई थी, जिसकी एफ.आई.आर., नजदीकी थाने में करा दी गई है। जिला दंतेवाड़ा में हुई चोरी की राशि रुपये 6,97,190/- की वसूली प्लेसमेंट एजेंसी से कर ली गई है। शेष अन्य जिलों में चोरी की राशि वसूली की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है।

छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड आबकारी विभाग का एक लायसेंसी है। अत: प्रदेश के मदिरा दुकानों में दिन-प्रतिदिन की बिक्री की राशि को छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिड के कार्पोरेट खाता में जमा किया जाता है, अत: यह कहना सही नहीं है कि जिम्मेदारों द्वारा दुकानों का औचक निरीक्षण कर सभी दुकानों से मोटी रकम की उगाही हो रही है। छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा मदिरा के क्रय किए जाने के पूर्व ही शासकीय राजस्व की निर्धारित राशि कोषालय में जमा कर दी जाती है। मदिरा दुकानों के निरीक्षण के लिए प्रभारी अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। प्रभारी अधिकारियों के द्वारा अलावा संभागीय उड़नदस्ता, राजय स्तरीय उड़नदस्ता द्वारा भी मदिरा दुकानों का निरीक्षण किया जा रहा है। यह कहना भी सही नहीं है कि प्रदेश की देशी/विदेशी शराब दुकानों में नगरी राशि लेन-देन में घपलेबाजी 2019 से पहले से चल रही है। यह भी कहना सही नहीं है कि अधिकारी एवं प्लेसमेंट एजेंसी बेलगाम है।

विधान सभा शीतकालीन सत्र (25 नवंबर से 06 दिसंबर 2019 तक) के दौरान 26 नवंबर को विधान सभा में मामला उजागर हुआ, जिसमें 2856 करोड़ रूपये कोषालय में जमा ही नहीं हुआ। चिल्हर खर्च, प्लेसमेंट एजेंसी के पेयमेंट के लिए रखा जाना बताया के संबंध में जानकारी निम्नानुसार है :- छत्तीसगढ़ शासन की नवीन आबकारी नीति 2017 एवं उसके अंतर्गत बने व्यवस्थापन नियम के तहत छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड का गठन किया गया है। छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड कंपनी अधिनियम 2013 के अतंर्गत पंजीकृत सार्वजनिक उपक्रम है। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आबकारी नीति 2017 के तहत छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड को छत्तीसगढ़ राज्य की समस्त फुटकर मदिरा दुकानों से मदिरा विक्रय हेतु अनुज्ञप्ति प्रदान की गई है। छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड फुटकर मदिरा दुकानों का संचालन करने हेतु वाणिज्यिक कर (आबकारी) विभाग का एक अनुज्ञप्तिधारी है। अनुज्ञप्तिधारी के रूप में आबकारी अधिनियम तथा उसके अंतर्गत अधिसूचित नियम/निर्देशों का पालन करते हुए छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड के द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य में फुटकर मदिरा दुकानों का संचालन किया जा रहा है तथा छत्तीसगढ़ मदिरा के क्रय-विक्रय का कार्य निर्धारित ड्यूटी तथा फीस का भुगतान कर ही किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ आबकारी देशी/विदेशी मदिरा की फुटकर बिक्री के अनुज्ञापनों के व्यवस्थापन नियम 2018 (यथा संशोधित) के नियम क्रमांक 08 के प्रावधनों के अंतर्गत अनुज्ञप्तिधारी द्वारा देशी मदिरा का प्रदाय निर्धारित ड्यूटी चुकाने के पश्चात् संबंधित भंडारगृह से देशी मदिरा की कीमत का भुगतान कर तथा विदेशी मदिरा का प्रदाय निर्धारित ड्यूटी चुकाने पश्चात् छत्तीसगढ़ राज्य बेवरेज कार्पोरेशन लिमिटेड से विदेशी मदिरा की कीमत का भुगतान कर अभिप्राप्त करेगा। चूंकि छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड मदिरा के फुटकर विक्रय हेतु अनुज्ञप्तिधारी है, अत: छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा मदिरा के उठाव पूर्व ही शासन को निर्धारित ड्यूटी एवं फीस का अग्रिम भुगतान

ऑनलाईन माध्यम से कर दिया जाता है। तत्पश्चात् उक्त मदिरा को फुटकर मदिरा दुकानों के माध्यम से उपभोक्ताओं को विक्रय कर विक्रय राशि निगम के खाते में जमा की जाती है। आबकारी अधिनियम, 1915 तथा उसके तहत मध्यप्रदेश शासन काल से ही फुटकर मदिरा दुकानों के अनुप्तिधारियों के द्वारा मदिरा के विक्रय की राशि प्राप्त की जाती है तथा शासन को केवल आबकारी शुल्क एवं अन्य कर जामा किया जाता है। इसी व्यवस्था के तहत वर्तमान अनुज्ञप्तिधारी छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड के द्वारा भी फुटकर मदिरा वर्तमान अनुप्तिधारी छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड के द्वारा भी फुटकर मदिरा दुकानों का संचालन कर मदिरा विक्रय से प्राप्त राशि कार्पोरेशन के खाते में जमा की जाती है। उक्त व्यवस्था के तहत किसी भी प्रकार की आर्थिक अनियमितता, शासन के किसी भी नियम/निर्देशों का उल्लंघन नहीं किया गया है। चूंकि राज्य में मदिरा दुकानों का संचालन शासन द्वारा नहीं किया जा रहा है, अतएव मदिरा विक्रय से प्राप्त राशि पर निगम का संपूर्ण अधिकार है एवं विक्रय से प्राप्त राशि का संकलन एवं व्यय निगम के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत है। 01 जनवरी, 2018 से 31 अक्टूबर, 2019 तक की मदिरा विक्रय शासकीय कोष में जमा राजस्व एवं अन्य व्यय की जानकारी :-

(राशि करोड़ रूपये में)

विवरण	**जनवरी 18 से मार्च 18**	**अप्रैल 18 से मार्च 19**	**अप्रैल 19 से अक्टूबर 19**	**राशि**
मदिरा दुकान से प्राप्त विक्रय राशि	1423.37	6046.26	3658.49	11128.12
शासन मद में जमा राशि	1122.57	4364.63	2784.2	8271.4
सी.एस.एम.सी.एल. द्वारा किये गये मदिरा क्रय एवं अन्य व्यय				
देशी मदिरा क्रय	176.33	649.91	392.63	1281.87
विदेशी मदिरा क्रय	166.98	711.87	401.84	1280.69
प्लेसमेंट एजेंसियों के भुगतान	10.01	86.32	39.80	136.13
मदिरा परिवहन में व्यय	11.86	43.62	19.66	75.64
अन्य व्यय-वेतन, कार्यालय संचालन, टैक्सी किराया, कर भुगतान आदि	11.00	109.01	25.8	145.81
महायोग	**376.18**	**1600.73**	**879.73**	**2856.64**

उपरोक्तानुसार राशि व्यय की गई है, अत: यह कहना सही नहीं है कि 2856 करोड़ रूपये कोषालय में जमा ही नहीं हुआ है अपितु उक्त विक्रय राशि को छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड के कार्पोरेट खाता में जमा किया जाता है। अत: यह शासकीय नियमों का खुला उल्लंघन तो है ही, आर्थिक घोटाला एवं अपराध भी है, कहना सही नहीं है। यह कहना भी सही नहीं है कि जिम्मेदारी तय नहीं हुई है और परिणामस्वरूप प्लेसमेंट एजेंसियां/अधिकारी बेखौफ मनमर्जी शराब की दुकानें चला रहे हैं।

अत: यह कहना सही नहीं है कि राजस्व की क्षति करोड़ों के घोटाले और अपराधियों पर कार्रवाई नहीं होने से आमजनों में भारी आक्रोश है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी विधानसभा में लिखित में उत्तर है कि 2800 करोड़ रूपये का हिसाब-किताब नहीं है । मैंने उसमें जांच के लिये पत्र लिखा है । देवजी भाई पटेल जो इस सदन में 15 साल तक सदस्य थे उन्होंने भी, आपके समय में जो ब्रेवरेज के अध्यक्ष थे उन्होंने भी चिट्ठी लिखी है । हम लोगों को एक चिट्ठी का जवाब तक नहीं मिला है । पुरानी सरकार के समय में जो प्लेसमेंट एजेंसी, शराब का धंधा, नकली शराब, होलोग्राम यह सब धंधा चल रहा है । मंत्री जी, आपके जवाब से तो ऐसा लग रहा है कि यह जो 2500 करोड़ रूपये का ई.डी. का केस है वह फर्जी है । ऐसा जवाब तो आना नहीं चाहिए था । यह सरकार के विभाग का जवाब है । माननीय मंत्री जी, मैं आपसे बहुत विनम्रतापूर्वक जानकारी लेना चाहता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास इस सदन की कार्यवाही की कॉपी है । मैंने इसी सदन में जो पूछा है और मंत्री जी का जो जवाब है उसकी कॉपी है । उसमें उन्होंने 2800 करोड़ रूपये का स्वीकार किया है तो 2800 करोड़ रूपये चिल्हर खर्च के लिये तो रख भी नहीं सकते, नियम भी नहीं है । खैर, मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि आपने जैसा कहा कि प्लेसमेंट एजेंसियां नहीं चला रही हैं तो आपने जो भी 670-672 दुकानें बतायी हैं उन दुकानों का संचालन कौन करता है, कैसे होता है ? प्लेसमेंट एजेंसी को नहीं बल्कि आपका का कोई कॉर्पोरेशन है वह कैसे करता है ?

श्री ओ.पी. चौधरी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो दुकानें हैं टेक्निकली उनका संचालनकर्ता स्टेट मार्केटिंग कॉर्पोरेशन को माना जायेगा । निश्चित रूप से प्लेसमेंट एजेंसियों के माध्यम से लोगों को लेकर दुकानों का संचालन करती हैं और पहले प्लेसमेंट एजेंसी का काम 8 जोन में विभक्त था इसको ट्रांसपेरेंट करते हुए विशुद्ध रूप से टेंडर प्रोसेस के जरिये अभी नये वित्त वर्ष के लिये नया प्रोसेस किया जा रहा है और 8 जोन के स्थान पर इसको बढ़ाकर 12 जोन किया गया है ताकि हेल्दी कॉम्पीडिशन हो सके, ट्रांसपेरेंसी आ सके और कोई भी गड़बड़ी न हो । इसी तरह से दुकानों में जो सिक्योरिटी गार्ड लगते हैं उसके लिये भी 8 जोन को बढ़ाकर 12 जोन किया गया है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय मंत्री जी, आपने ही जवाब में यह कहा है कि यह कहना सही नहीं है कि मदिरा दुकानों का संचालन प्लेसमेंट एजेंसियों द्वारा किया जा रहा है । ट्राईबल डिपार्टमेंट का मालिकाना हक हो सकता है लेकिन दुकानें तो प्लेसमेंट एजेंसियां चला रही हैं । प्लेसमेंट एजेंसियां बड़े-बड़े प्रभावी लोगों के थे जिनके ईशारे पर शराब के ढक्कन बनाने से लेकर, शराब की खाली बोतलों से लेकर के नकली और असली शराब बेचने से लेकर के एक नंबर और दो नंबर का शराब बेचने से, ओवर रेट का शराब बेचने से यही सब घपला हुआ है जिसके लिये ई.डी. इतना सब अपना माथापच्ची कर रहा है । माननीय मंत्री जी, मैं आपसे यह निवेदन करना चाह रहा हूं कि प्लेसमेंट की नियुक्ति के लिये नियम और शर्त हैं या नहीं हैं ? मॉनिटरिंग के लिये कौन अधिकृत अधिकारी है ? और आप कृपया यह बता दीजिये कि आपके पास अभी तक इन 2-4 सालों में कुल कितनी शिकायतें इन नियमों के प्लेसमेंट एजेंसियों के खिलाफ प्राप्त हुई है ?

श्री ओ.पी. चौधरी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो प्लेसमेंट एजेंसीज हैं वह मेन पॉवर प्रदान करने का काम करती हैं । टेक्निकली दुकान का संचालन मार्केटिंग कॉर्पोरेशन के द्वारा किया जाता है । मैं माननीय सदस्य को आपके माध्यम से अवगत कराना चाह रहा हूं कि निश्चित रूप से कई तरह की बातें आती हैं कि प्लेसमेंट एजेंसियों के द्वारा क्या किया गया है या यह किया गया है । हमको भी कई तरह की बातें सुनने को मिलती रहती थीं । जब हम सरकार में नहीं थे तब भी मिलती रहती थीं और अभी भी मिलती रहती हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि प्लेसमेंट एजेंसियों के नाम पर किसी भी प्रकार की गड़बड़ी नहीं होगी । यदि कोई गलत तरीके से करने की कोशिश कर भी रहा होगा तो ऐसे लोगों को विभाग बिल्कुल भी प्रश्रय नहीं देगा । ट्रांसपेरेंट तरीके से टेंडर प्रक्रिया करके 12 जोनों में प्लेसमेंट एजेंसियॉ नियुक्त की जायेंगी । जो मेन पावर प्रदान करने का काम करेंगी और जो भी बातें होंगी, हम विभागीय रूप से और भी माननीय सदस्य महोदय का जो भी पाइंट होगा उसको निश्चित तौर पर विभागीय रूप से दिखायेंगे । उन्होंने जो शिकायत की बात कही है, ऑफिशियली कितने पत्र हमारे पास आये हैं उसकी जानकारी अभी मेरे पास नहीं है। आज शाम तक मैं माननीय सदस्य को उपलब्ध करा दूंगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय मंत्री जी, आपने अपने जवाब में बताया है कि जो 3 जिले, जिला कांकेर, सूरजपुर और दंतेवाड़ा की दुकानों में 25 लाख की चोरी या गड़बड़ी हुई थी, आपने कहा 22 लाख। चलिए, मैं 22 लाख मान लेता हूं। उसमें आपने दंतेवाड़ा से 6 लाख 97 हजार 190 रूपये की वसूली प्लेसमेंट एजेंसी से कर ली है। शेष अन्य जिलों में प्लेसमेंट एजेंसी से वसूली क्यों नहीं हुई है? एक। और दूसरा आपके प्लेसमेंट एजेंसियों को जो भी आप टेंडर करेंगे, उसमें जो स्थानीय बच्चे हैं, उन्हें प्राथमिकता देने का प्रावधान करेंगे क्या? अध्यक्ष महोदय, होता क्या है जो पुराने शराब भट्ठी के ठेकेदारों के पंडे-गुंडे

हैं, वही सब प्लेसमेंट एजेंसी में आ जाते हैं। कोई यू.पी. का, बिहार का रूपया, बिक्री हुआ और रखकर चले जाते हैं। केवल पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कर देना या जांच करना ये तो कोई हल होता नहीं। हमारा पैसा सुरक्षित रहे तो उसके लिए आधारकार्ड, निवासी प्रमाण-पत्र और चयन की प्रक्रिया भी निर्धारित कर देंगे क्या? अध्यक्ष महोदय, ये प्लेसमेंट एजेंसी के लोग इतने स्पेशिलिस्ट थे माननीय ओ.पी.चौधरी साहब, आपको बता दूं कि ये झारखंड में भी ट्रेनिंग देने गये थे। झारखंड में शराब की बिक्री का क्या ट्रेनिंग देना है करके बेचारा झारखंड वाला भी अंदर चल दिया। प्लेसमेंट एजेंसी में इतने खतरनाक-खतरनाक लोग थे। तो आप इन सब चीजों को तत्काल बदलकर नया प्लेसमेंट एजेंसी टेंडर करके बुलायेंगे, नियमों को सख्त करेंगे या नहीं करेंगे और माननीय मंत्री महोदय..।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न कर लीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं प्रश्न ही तो पूछ रहा हूं। यही तो प्रश्न है और 2800 करोड़ रूपया जो जमा नहीं हुआ, ऐसा मेरा कहना है। हमारी चिट्ठी है। उसका आप विधिवत हमको संतुष्ट करने के लिए जवाब देंगे क्या?

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, इन्हें संतुष्ट कर दीजिए।

श्री ओ.पी. चौधरी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो पहला विषय माननीय सदस्य ने रखा है। 6 लाख 97 हजार की वसूली तो एक जगह दंतेवाड़ा में हो चुकी है और बाकी दो और केस हैं जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आपके माध्यम से मैं माननीय सदस्य को पूर्ण विश्वास दिलाता हूं कि इसी महीने जो प्लेसमेंट एजेंसी का जो पेमेंट होगा, उसमें हम adjustment करके ही उसको पेमेंट करेंगे ताकि उसकी वसूली सुनिश्चित हो जाये। ये हमारी ओर से है। दूसरा जो बिंदु है माननीय सदस्य ने जो concern रखा है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि प्लेसमेंट एजेंसियों के लिए नियम शर्तें बिल्कुल पारदर्शी तरीके से निर्धारित करके पारदर्शी टेंडर प्रक्रिया के माध्यम से प्लेसमेंट एजेंसियों का टेंडर किया जायेगा और इसमें स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता देने के लिए निश्चित रूप से प्रावधान किया जायेगा। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को विश्वास दिलाता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, बहुत अच्छा।

श्री विक्रम मंडावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है।

श्री रामकुमार यादव :- एक मिनट। अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से आपके माध्यम से थोड़ा जानकारी पूछना चाहथ रहौं चूंकि बार-बार आथे कि हमर जो सरकार बने हे तेहा भगवान के सरकार हे। जैसे सही बात हे विष्णु भगवान, ओती ओ.पी. चौधरी ओम से, एती बृजमोहन अग्रवाल जी श्री कृष्ण भगवान से, सब देवता धामी के सरकार हे, द्वापर त्रेता कस लागत हे तो का मैं ये पूछना चाहत हव कि भगवान सरकार में दारू ला बंद करे के योजना हे का? आप मन के इच्छा-शक्ति तो बहुत हे। आप मन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के बहुत इच्छा-शक्ति हे तो हो सकथे अंते ला कमा कूड़ के इंहा बजट ले आथौ, दारूच में जरूरी थोड़ी हे। मैं आपके माध्यम से चौधरी साहब से पूछना चाहथौं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आपका प्रश्न हो गया।

श्री धर्मजीत सिंह :- कोई बंद-वंद नहीं होगा। (हंसी)

श्री विक्रम मंडावी :- मैंने बोला था। पहले बोला था कि शराबबंदी नहीं होगा।

श्री रामकुमार यादव :- भगवान के सरकार हे बोलथव न। हे भगवान के सरकार हे।

अध्यक्ष महोदय :- चौधरी जी, कुछ जवाब देंगे।

श्री ओ.पी. चौधरी :- जी सर।

अध्यक्ष महोदय :- बोलिए।

श्री ओ.पी. चौधरी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार ने अपने जन-घोषणा पत्र में पूरे छत्तीसगढ़ की जनता को वादा किया था और लिखित वादा किया था। गंगा जल को लेकर वादा किया था कि..।

श्री अटल श्रीवास्तव :- यह बात गलत है। गलत है। गलत बात। (व्यवधान)
गंगाजल के बारे में मत बोलिए। ये गलत बात है। (व्यवधान)

श्रीमती रायमुनी भगत :- रामकुमार भैया, गंगा जल हाथ में लेकर कसम खाये थे शराब बंद करने का। (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- कर्जा माफी के लिये उठाये थे। (व्यवधान)

श्री दिलीप लहरिया :- आप असत्य मत बोलिए। (व्यवधान)

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय..।

श्री ओ.पी. चौधरी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने ऐसा कोई वादा फिलहाल नहीं किया है और अवैध दारू की बिक्री पर हमारी पुलिस व्यवस्था बहुत तेजी से कार्रवाई कर रही है और करती रहेगी।

श्री रामकुमार यादव :- दारू, दारू होथे। दारू, दारू होथे।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि एक विद्वान् पढे-लिखे और पूर्व आई.ए.एस. मंत्री के द्वारा इस तरह का उत्तर और हम लोगों के बारे में कहना उचित नहीं है । कभी भी कांग्रेस पार्टी ने गंगाजल लेकर दारू बंद करने की शपथ नहीं ली थी (मेजो की थपथपाहट) । सवाल यह उठता है कि हमने बंद नहीं किया तो आप तो बहुत विद्वान् हैं आप सब लोग चाहते थे कि दारू बंद हो जाए, दारू बंद हो जाए तो आप बंद करेंगे या नहीं यह तय कर लीजिए, अगली बार तय कर लीजिएगा या तो फिर मैं ग़ालिब के शब्दों में कहूंगा -

ग़ालिब शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

या फिर वो जगह बता, जहां पर ख़ुदा नहीं ।

श्री विक्रम मंडावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया ना, नेता जी के बाद अब और क्या बचा है ? उन्होंने पूछ लिया कौन सी जगह है, उसके बाद बचा क्या है ?

श्री विक्रम मंडावी :- अध्यक्ष महोदय, दूसरा मामला है ।

श्री रामकुमार यादव :- जब से इनकी सरकार बनी है गौ-तस्करी होत हे । आज आमानाका में ।

श्री विक्रम मंडावी :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपको जानकारी देना चाहता हूं कि अभी आमानाका में एक कंटेनर पकड़ा गया है, जिसमें 100 गाय भरकर ले जा रहे थे। जिसमें 13 से 14 गायों की मौत हुई है । पूरे प्रदेश में लगातार ऐसी घटनाएं हो रही है । सरकार को जो कार्रवाई करनी थी, सरकार इस पर कोई कार्रवाई नहीं कर रही है । इस पर सरकार का वक्तव्य आना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, आपने सूचना दी । आज भोजन की व्यवस्था माननीय बृजमोहन अग्रवाल, संसदीय कार्यमंत्री की ओर से माननीय सदस्यों के लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है । कृपया सुविधानुसार भोजन करें । श्री जनक ध्रुव ।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय, ये मन अतका दिन ले कहत रिहिस हे हमर सरकार रहिए हे ता गौठान मा गरवा के देखभल नइ होवत हे । अध्यक्ष जी, पूरा प्रदेश देखही एमन के मंशा का हे तेला ।

श्री इंद्रशाह मंडावी :- माननीय सदस्य ने जो विषय उठाया है, उस पर विशेष चर्चा होनी चाहिए ।

श्री रामकुमार यादव :- जब ले एमन के सरकार बने हे शहर के बीचोबीच बंद गाड़ी में 100 गाय ला जोड़कर ले जात हे । एमन के सरकार इहां सोवत हे । एमन के अधिकारी कहां हे, एमन तो ओ समय कहत रहिस हे हम गौ सेवा करेंगे । आज अधिकारी नइ पकड़त हे, आम आदमी जाकर पकड़त हे। आप मन ला गौ-माता के बद्दुवा लगही । का बात करथौ, जब ले एखर सरकार बने हे तब ले गरवा के तस्करी होत हे ।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया, आपकी बात आ गई । हो गया, और कितना बोलोगे ?

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अध्यक्ष महोदय, गौ-माता का विषय है । इसलिए मैं भी बोलना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- शून्यकाल के बाद फिर आप नया विषय कैसे ले आओगे ?

श्री द्वारिकाधीश यादव :- 2 मिनट अध्यक्ष महोदय, यादव समाज के लोग देख रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, यादव हैं तो बोल लीजिए । दोनों यादव एक साथ बैठते हो, यही गड़बड़ होता है । अलग-अलग बैठो (हंसी)।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अध्यक्ष महोदय, मामला बहुत गंभीर है । 100 गायों को कंटेनर में ले जाते हुए, केवल गांव देहात के रास्ते से नहीं, उस गौ-तस्कर की साहस और हिम्मत को देखिए । किसी न किसी बड़े व्यक्ति की शक्ति उसे प्राप्त है तब राजधानी के मुख्य सड़क से कंटेनर गुजर रही है और केवल तस्करी ही नहीं, 13 गौ-माताओं की मृत्यु नहीं, हत्या की गई है । मामला गंभीर है, अभी तक छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद राजधानी के अंदर पहली घटना है (शेम-शेम की आवाज)

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, गायों का मामला है । भारतीय जनता पार्टी की सरकार है । जब हमने गौठान की व्यवस्था बनाई थी तो उसके लिए इतने प्रश्न उठाते थे । इनके पास कोई दूसरी व्यवस्था नहीं है । जो आज का विषय है इसमें 13 गायों की मौत का मामला सामने आया है । पूरे प्रदेश में कंटेनर में 100 गायों को ले जा रहे थे । यह बहुत गंभीर मामला है, हम सबकी आस्था से जुड़ा हुआ मामला है । क्योंकि हम सब गायों को माता के बराबर मानते हैं ।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- अध्यक्ष महोदय, शून्यकाल समाप्त हो गया है। पहले ध्यानाकर्षण पर चर्चा हो चुकी है और दूसरे पर चर्चा होनी है ।

श्री उमेश पटेल :- मैं अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बोल रहा हूं ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- संसदीय कार्यमंत्री जी आपको तो इसकी जांच करवानी चाहिए । (व्यवधान)

(पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए हो गया। बैठ जाईए। आपका विषय आ गया। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय :- विषय आ गया। आगे बढ़ गये हैं। बैठिए। मैं बता रहा हूं।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठिए तो।

अध्यक्षीय व्यवस्था

अध्यक्ष महोदय :- शून्यकाल के बाद विषय की गंभीरता को लेकर एक, दो लोगों ने बोला और सरकार के ध्यान में सारा विषय आ गया। ध्यानाकर्षण चल रहा है। महत्वपूर्ण विषय पर बातचीत चल रही है। एक ध्यानाकर्षण हो गया। बीच में इस प्रकार की बात करना उचित नहीं है। कभी दूसरे अवसर आएंगे उस पर आप बोलिएगा।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह गंभीर विषय है, इस पर मंत्री जी का जवाब आना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- श्री जनकराम ध्रुव अपना ध्यानाकर्षण पढ़ेंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(2) गरियाबंद जिले के किसानों को फसल बीमा राशि का भुगतान नहीं की जाना।

श्री जनकराम ध्रुव (बिन्द्रानवागढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यानाकर्षण सूचना का विषय इस प्रकार है :-

गरियाबंद जिले में कुल 87610 किसान पंजीकृत हैं, जिसमें से 78526 किसान समर्थन मूल्य पर धान बेच पाए हैं एवं 9084 किसान इस वर्ष धान नहीं बेच पाए। इनमें से अधिकतर किसान गरियाबंद के देवभोग विकासखंड अंतर्गत झाखरपारा, खोखसार, झिरीपानी सहित 26 गांवों में कृषि कार्य करते हैं। इन 26 गांवों में अल्पवर्षा के साथ ही क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा के अभाव में धान की उपज कम हुई है। इन 26 गांवों में अल्पवर्षा या अन्य प्राकृतिक आपदा से फसल को होने वाले नुकसान की क्षतिपूर्ति हेतु फसल बीमा कराया गया है, किन्तु कृषि विभाग द्वारा किसानों से बीमा कराने के बाद भी उन्हें बीमाकृत खसरे एवं रकबे की बीमा राशि का भुगतान नहीं किया गया है। अल्पवर्षा के कारण धान की उपज कम होने से इस क्षेत्र के किसान न तो अपना धान बेच पाए और न ही प्रभावित ग्रामों के बीमाकृत किसानों को शासन द्वारा बीमा राशि का भुगतान किया गया। प्रभावित ग्रामवासियों द्वारा इस बाबत् अनेकों बार आवेदनों से शासन प्रशासन को अवगत कराया गया, जिस पर किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं की जाने से शासन-प्रशासन के खिलाफ आम जनमानस एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों में भारी असंतोष एवं आक्रोश व्याप्त है।

कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रबंध संचालक छ.ग. राज्य सहकारी बैंक मर्यादित रायपुर से प्राप्त जानकारी अनुसार-जिला गरियाबंद के सहकारी समितियों में मौसम खरीफ वर्ष 2023 में फसल धान विक्रय हेतु 87,631 किसानों ने पंजीयन कराया है, जिसमें से 78,526 किसानों ने धान विक्रय किया है एवं 9105 किसानों द्वारा उपार्जन केन्द्रों में धान का विक्रय नहीं किया गया है। यह भी सत्य है कि गरियाबंद जिले के देवभोग विकासखण्ड अंतर्गत आने वाली प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति झाखरपारा एवं झिरीपानी द्वारा संचालित धान खरीदी केन्द्र झाखरपारा, खोखसरा एवं झिरीपानी के आश्रित ग्रामों के पंजीकृत 2113 किसानों ने धान विक्रय हेतु उपार्जन केन्द्रों में धान नहीं लाया है, जिससे इन उपार्जन केन्द्रों में धान की खरीदी नही की गई है।

मौसम खरीफ वर्ष 2023 में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत असामयिक प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाली फसल हानि/क्षति से सुरक्षा प्रदान हेतु, गरियाबंद जिले की तहसील देवभोग के योजनांतर्गत अधिसूचित 26 ग्रामों में फसल धान असिंचित के लिए कुल 2681 कृषकों और 06 ग्रामों में फसल धान सिंचित के लिए कुल 80 कृषकों द्वारा फसल बीमा कराया गया है। योजनांतर्गत जोखिम में शामिल बाधित रोपाई/रोपण जोखिम, स्थानीयकृत आपदाएं फसल कटाई के उपरांत होने वाले नुकसान

हेतु योजना प्रावधानानुसार दावा भुगतान किया जाता है। फसल पैदावार के आधार पर व्यापक क्षति की स्थिति में प्रावधानानुसार अधिसूचित फसलों की फसल कटाई उपरांत प्राप्त वास्तविक उपज के आंकड़े के आधार पर थ्रेसहोल्ड उपज से वास्तविक उपज कम होने पर जिला गरियाबंद के तहसील देवभोग के अंतर्गत फसल धान असिंचित से संबंधित अधिसूचित 26 ग्रामों में से 17 ग्राम यथा-ग्राम नवागुड़ा के 43 कृषक को राशि 6,73,934 रूपये, ग्राम-उपरपौटा के 104 कृषक को राशि 14,31,653 रूपये, ग्राम दबनई के 22 कृषक को राशि 3,09,683 रूपये, ग्राम दहीगांव के 87 कृषक को राशि 8,60,208 रूपये, ग्राम सूपेबेड़ा के 166 कृषक को राशि 41,87,747 रूपये, ग्राम फुलीमुड़ा के 98 कृषक को राशि 19,83,406 रूपये, ग्राम निषटीगुड़ा के 141 कृषक को राशि 29,50,744 रूपये, ग्राम परेवापाली के 94 कृषक को राशि 25,83,264 रूपये, ग्राम सेन्दमुड़ा के 84 कृषक को राशि 20,31,287 रूपये, ग्राम मोटरापारा के 74 कृषक को राशि 8,34,761 रूपये, ग्राम झिरीपानी के 192 कृषक को राशि 93,27,956 रूपये, ग्राम डूमरबहाल के 228 कृषक को राशि 85,83,461 रूपये, ग्राम कोदोभाठा के 79 कृषक को राशि 16,66,617 रूपये, ग्राम दरलीपारा के 106 कृषक को राशि 24,49,078 रूपये, ग्राम झाखरपारा के 233 कृषक को राशि 61,10,849 रूपये, ग्राम सरगीबहली के 95 कृषक को राशि 23,84,463 रूपये एवं ग्राम दाबरीभाठा के 19 कृषक को राशि 3,86,822 रूपये, इस तरह कुल 1916 बीमित कृषकों को दावा राशि 4,8755,937 रूपये के दावा भुगतान की गणना क्रियान्वयक बीमा कंपनी द्वारा की गई है। अत: यह कहना सही नहीं है कि कृषि विभाग द्वारा बीमा पश्चात् कोई कार्रवाई नहीं की गई है अपितु प्रावधानानुसार आकलन किया जाकर भुगतान की कार्रवाई प्रक्रियाधीन है तथा तहसील देवभोग में फसल धान सिंचित के लिए अधिसूचित पाये गये 03 ग्राम यथा-सीनापाली, बाड़ीगांव एवं मुरगुड़ा में थ्रेसहोल्ड उपज से वास्तविक उपज अधिक होने के कारण दावा राशि की पात्रता नहीं बनती है।

तहसील देवभोग में फसल धान असिंचित के लिए अधिसूचित 09 अन्य ग्राम यथा-ठिरलीगुड़ा, उसरीपान, खोखसारा, सहसखोल, केंदुवन, सागोनभाड़ी, बिसीपारा, कोड़कीपारा एवं खम्हारगुड़ा तथा फसल धान सिंचित के लिए अधिसूचित 02 अन्य ग्राम यथा-केन्दुपती एवं गिरसूल में दावा गणना हेतु प्राप्त उपज आंकड़ों में बीमा कंपनी द्वारा उपज आंकड़ों में विसंगति दर्ज की गई है एवं 01 ग्राम-घोघर का उपज आंकड़ा नोडल कार्यालय, आयुक्त भू-अभिलेख से अप्राप्त है। जिस पर संचालनालय कृषि का पत्र क्र. 600 दिनांक 07.02.2024, पत्र क्र. 502 दिनांक 17.01.2024 एवं 617 दिनांक 09.02.2024 द्वारा नोडल कार्यालय, आयुक्त भू-अभिलेख को निराकरण हेतु लेख किया गया है, जिसके पश्चात् कियान्वयक बीमा कंपनी द्वारा संबंधित कुल 830 बीमित कृषकों का दावा गणना एवं पात्रतानुसार भुगतान की कार्रवाई किया जावेगा। अत: यह कथन सत्य नहीं है कि वर्तमान में आम जन मानस एवं कृषकों में किसी प्रकार की असंतोष एवं आक्रोश व्याप्त है। बल्कि उपरोक्त से स्पष्ट है कि शासन संवेदनशीलता के साथ कृषकों को वास्तविक दावा भुगतान उपलब्ध कराने में निरंतर कार्य कर रही है।

श्री जनकराम ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बीमा राशि के साथ-साथ अनावरी रिपोर्ट का भी आंकड़ा नहीं दिया गया है जिसके कारण से बीमा राशि की वसूली के लिए समितियों द्वारा नोटिस भेजा जा रहा है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से इसकी जानकारी चाहूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो बीमा राशि है, जिन किसानों के द्वारा बीमा करवाया है उन्हीं को बीमा की राशि उपलब्ध करवाई जाती है। ये जो 6 सिंचित गांवों के 80 कृषक हैं और 3 गांवों में वास्तविक थ्रेसहोल्ड से ज्यादा उपज हुई है, इसलिए उनको बीमा राशि उपलब्ध नहीं करवाई जा रही है। धान के जो असिंचित, अधिसूचित 26 ग्रामों में 2,681 कृषक हैं। उनमें 9 गांवों के आंकड़ों में विसंगति है उसका निराकरण किया जा रहा है। निराकरण के बाद उनको फसल बीमा की राशि उपलब्ध करवाई जाएगी। जो किसान बीमा करवाते हैं, उन्हीं को वह राशि उपलब्ध होगी। जिन किसानों ने बीमा नहीं करवाया है उनको वह राशि उपलब्ध नहीं होगी। थ्रेसहोल्ड में 7 सालों के उपज को निकाला जाता है। जिन 2 गांवों की सबसे कम उपज होती है, उसको हटाकर 5 गांवों का जो औसत होता है उसके आधार पर उनको बीमा की राशि उपलब्ध करवाई जाती है।

श्री जनकराम ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि जब तक बीमा की राशि प्राप्त न हो, तब तक सहकारी समिति से वसूली का जो नोटिस दिया जा रहा है, उस पर रोकथाम किया जाए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, निश्चित रूप से । जिन कृषकों को बीमे की राशि प्राप्त होनी है, अगर ऐसे कृषकों को बैंकों के द्वारा किसी प्रकार का नोटिस दिया गया है तो हम यह निर्देश जारी कर देंगे कि जब तक बीमे का निराकरण नहीं होता है, तब तक उनको कोई नोटिस नहीं दें ।

श्री जनक ध्रुव :- धन्यवाद ।

<u>अध्यक्षीय व्यवस्था</u>

अध्यक्ष महोदय :- आज ध्यानाकर्षण में प्रदेश में संचालित प्लेसमेंट एजेंसियों द्वारा देशी/विदेशी शराब दुकान के संचालन में अनियमितता के संबंध में जो वक्तव्य दिया गया, उसमें मैं सभी मंत्रिगणों से कहना चाहूंगा कि इतना लंबा वक्तव्य होता नहीं है । आप कृपा करके भविष्य में इस बात की चिन्ता करें कि इतना डिटेल और इतना लंबा वक्तव्य जो ध्यानाकर्षण में आया था, वह ठीक नहीं है । भविष्य में इस बात की चिन्ता करें ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :
12.46 बजे **अशासकीय संकल्पों के लिए समय निर्धारण की घोषणा**

अध्यक्ष महोदय :- आगामी शुक्रवार, दिनांक 16 फरवरी, 2024 के अशासकीय दिवस हेतु निर्धारित दो अशासकीय संकल्पों संबंधी सूचना पत्रक भाग-दो के द्वारा जारी की जा चुकी है । ग्राह्य अशासकीय संकल्पों पर चर्चा हेतु निम्नानुसार समय निर्धारित किया जाता है :-

अशासकीय संकल्प क्रमांक	**सदस्य का नाम**	**आवंटित समय**
(क्रमांक-01)	श्री अजय चन्द्राकर	30 मिनट
(क्रमांक-02)	श्री अजय चन्द्राकर	30 मिनट

समय :
12.46 बजे **नियम 267 "क" के अंतर्गत सूचना**

अध्यक्ष महोदय :- निम्नलिखित सदस्य की शून्यकाल की सूचना सदन में पढ़ी हुई मानी जायेगी तथा इसे उत्तर के लिए संबंधित विभाग को भेजा जाएगा :-

1. श्री अजय चन्द्राकर

समय :
12:47 बजे **वित्तीय वर्ष 2024-2025 की अनुदान मांगों पर चर्चा**

मांग संख्या - 26	**संस्कृति विभाग से संबंधित व्यय**
मांग संख्या - 27	**स्कूल शिक्षा**
मांग संख्या - 28	**राज्य विधान मण्डल**
मांग संख्या - 37	**पर्यटन**
मांग संख्या - 44	**उच्च शिक्षा**
मांग संख्या - 51	**धार्मिक न्यास और धर्मस्व**

अध्यक्ष महोदय :- वित्तीय वर्ष 2024-2025 के आय-व्ययक में स्वीकृत राशि के अनुदान की मांगों के बारे में प्रस्ताव माननीय बृजमोहन अग्रवाल । (मेजों की थपथपाहट)

स्कूल शिक्षा मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय की सिफारिश के अनुसार प्रस्ताव करता हूं कि दिनांक 31 मार्च, 2025 को समाप्त होने वाले वर्ष में राज्य की संचित निधि में से प्रस्तावित व्यय के निमित्त राज्यपाल महोदय को :-

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मांग संख्या - 26	**संस्कृति विभाग से संबंधित व्यय के लिए**-नब्बे करोड़, पचास लाख, उनतालीस हजार रूपये,
मांग संख्या - 27	**स्कूल शिक्षा के लिए** - सात हजार तीन सौ सतासीकरोड़, छियासठ लाख, बत्तीस हजार रूपये,
मांग संख्या - 28	**राज्य विधान मण्डल के लिए** - चौरासी करोड़, इंक्वायन लाख, अठारह हजार रूपये,
मांग संख्या - 37	**पर्यटन के लिए** - दो सौ अठारह करोड़, चार लाख, चालीस हजार रूपये,
मांग संख्या - 44	**उच्च शिक्षा के लिए** - एक हजार उनचास करोड़, आठलाख नब्बे हजार रूपये तथा
मांग संख्या - 51	**धार्मिक न्यास और धर्मस्व के लिए** - उनचास करोड़, बीस लाख रूपये तक की राशि दी जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

अध्यक्ष महोदय :- अब इन मांगों पर कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत होंगे । कटौती प्रस्तावों की सूचना पृथकत: वितरित की जा चुकी है । प्रस्तावक सदस्य का नाम पुकारे जाने पर जो माननीय सदस्य हाथ उठाकर कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत किये जाने हेतु सहमति देंगे, उनके ही कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत हुए माने जाएंगे :-

मांग संख्या - 26

संस्कृति विभाग से संबंधित व्यय

1. डॉ. चरण दास महंत	3
2. श्री लखेश्वर बघेल	2
3. श्री दिलीप लहरिया	1
4. श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी	1
5. श्री कुंवर सिंह निषाद	3
6. श्रीमती शेषराज हरवंश	2
7. श्रीमती चातुरी नंद	2

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मांग संख्या - 27

स्कूल शिक्षा

1. डॉ. चरण दास महंत	6
2. श्री लखेश्वर बघेल	12
3. श्रीमती अनिला भेंडिया	2
4. श्री भोलाराम साहू	3
5. श्री दिलीप लहरिया	5
6. श्री द्वारिकाधीश यादव	1
7. श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी	2
8. श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा	3
9. श्रीमती अंबिका मरकाम	4
10. श्री कुंवर सिंह निषाद	11
11. श्रीमती शेषराज हरवंश	1
12. श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह	4
13. श्री व्यास कश्यप	1
14. श्रीमती चातुरी नंद	4
15. श्री इंद्र साव	2

मांग संख्या - 28

राज्य विधान मण्डल

निरंक

मांग संख्या - 37

पर्यटन

1. डॉ. चरण दास महंत	3
2. श्री दिलीप लहरिया	1
3. श्रीमती अंबिका मरकाम	1
4. श्री कुंवर सिंह निषाद	2
5. श्रीमती शेषराज हरवंश	2

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

6.	श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह	2
7.	श्रीमती चातुरी नंद	1

मांग संख्या- 44

उच्च शिक्षा

1.	डॉ. चरण दास महंत	3
2.	श्री लखेश्वर बघेल	2
3.	श्री भोलराम साहू	3
4.	श्री दिलीप लहरिया	1
5.	श्री द्वारिकाधीश यादव	1
6.	श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी	2
7.	श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा	2
8.	श्रीमती अम्बिका मरकाम	2
9.	श्री कुंवर सिंह निषाद	4
10.	श्रीमती शेषराज हरवंश	2
11.	श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह	2
12.	श्री ब्यास कश्यप	2
13.	श्रीमती चातुरी नंद	3

मांग संख्या- 51

धार्मिक न्यास और धर्मस्व

1.	डॉ. चरण दास महंत	5
2.	श्रीमती अनिला भेंडिया	1
3.	श्रीमती अम्बिका मरकाम	2
4.	श्री कुंवरसिंह निषाद	1

अध्यक्ष महोदय :- उपस्थित सदस्यों के कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत हुए।

अध्यक्ष महोदय :- अब मांगों और कटौती प्रस्तावों पर एक साथ चर्चा होगी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, आपने कटौती प्रस्ताव पर नाम पुकारा तो किसी ने हाथ नहीं उठाया। अभी हाथ उठा रहे हैं। तो इसका मतलब यह है कि इसमें से कोई भी सदस्य चर्चा में भाग लेने के लिए उपयुक्त नहीं है। इन लोगों ने कटौती प्रस्ताव पर हाथ नहीं उठाए तो चर्चा में कैसे भाग लेंगे ? अभी हाथ उठा रहे हैं।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, क्या है अजय जी, आज आपको कम दिखाई दे रहा है, लगता है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी हाथ उठा रहे हैं। मैं तो देख कर बोला हूं, रहने दीजिये।

श्री उमेश पटेल :- आप रिकार्ड देख लीजिये। जिनका-जिनका नाम पुकारा गया, सबने हाथ उठाया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, आप उनको बोलने का मौका तो दीजिये। परन्तु आपने कटौती प्रस्ताव पर कहा तो किसी ने हाथ नहीं उठाया। इससे उनके कटौती प्रस्ताव अभी से अमान्य कर दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- उनकी कुछ सहमति है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बृजमोहन जी, आपका जो संसदीय कार्यकाल होगा, यह इतिहास में दर्ज होने वाला है। माननीय अध्यक्ष महोदय को कहना पड़ गया कि इतना लम्बा वक्तव्य मत दो। आप क्या कर रहे हैं ? सदस्यों को सिखा नहीं रहे हैं। आप कुछ तो बताईये, अपने अनुभवों का लाभ दीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, ऐसा है अभी तो नया-नया है। विधानसभा का मुश्किल से आज पांचवा दिन है। आप चिंता मत करिये। जब धीरे-धीरे रवा हो जायेंगे तो आप लाजवाब हो जायेंगे।

श्री उमेश पटेल :- नहीं, इतिहास तो रचते ही जा रहे हैं न। आप उसको तो बदल नहीं सकते।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इतिहास नहीं, यदि आपको भी याद दिलाऊ तो शुरूआत में आप लोगों की क्या हालत थी ? अभी हमारे मंत्री कम से कम जवाब तो दे रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- एक सत्र में रवा हो जायेगा। चलिये, बैठिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, कटौती प्रस्ताव निरस्त माने जाने चाहिए।

श्री रामकुमार यादव :- भले रवा हो जाये, लेकिन धुवां नहीं निकलना चाहिए। डबल इंजन के धुवां नहीं निकलना चाहिए, भले रवा हो जाये।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप दोनों (श्री रामकुमार यादव, श्री द्वारिकाधीश यादव सदस्यगण) यादव जी हो। आप दोनों आपस में धक्का-मुक्की मत करो।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सुनिये तो। मेरा समय एक मिनट में खत्म कर दीजिये। सही बात यह है कि हम लोग हाथ उठाये, लेकिन आप हम लोगों की तरफ नहीं देख रहे थे, उधर देख रहे थे।

श्री धर्मजीत सिंह :- हम लोग यहां पर सिर्फ आप ही लोगों को देखते हैं, इधर (सत्तापक्ष की तरफ) नहीं देखते हैं। इधर क्या देखना, जिनको देखना है, देख लिए, बस हो गया।

अध्यक्ष महोदय :- श्री कुंवर सिंह निषाद। आप अपनी बात प्रारंभ करेंगे।

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुण्डरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज प्रदेश के इस पवित्र सदन में बजट सत्र में सबसे पहले बहुत ही काबिल, सुलझे हुए मंत्री माननीय श्री बृजमोहन अग्रवाल जी के विभागों की अनुदान मांगों के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- स्कूल नहीं खुलवाना है ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- खुलवाना है। मैं अभी निवेदन करूंगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा का मंदिर जहां हम घरेलू संस्कार को लेकर जाते हैं और शिक्षा की बुनियाद को मजबूत कर जीवन में कुछ कर गुजरने की कल्पना को साकार करने की नींव डालते है।

"दीप से जलना ना सीखो, दीप से मुस्कान सीखो।
सूर्य से ढलना ना सीखो, सूर्य से उत्थान सीखो।
सोचना है हम स्वयं इस चित्र में अंकित हैं क्हां।
राह चलना ही ना सीखो, राह का निर्माण करो"

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अध्यक्ष महोदय, कल आपने व्यवस्था की मांग किए कि आप गाना गाकर बजट में चर्चा नहीं करेंगे। परन्तु मैं देख रही थी कि आपके लोकसभा में हमारे कांकेर के सांसद महोदय जी भी गाना गा रहे थे। इसलिए आपको याद दिला रही हूं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- क्या है ना दीदी, जब अच्छा हो जाथे तो आदमी ला पचय नहीं। जब जब विरोध करही मैं छत्तीसगढ़ी संस्कृति मा एक घंटा नहीं, 12 घंटा भी बोले बर तैयार हंव।

समय :
12.55 बजे **(सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) पीठासीन हुये)**

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, नजरें इनायत इधर भी ? आपका संरक्षण चाहूंगा, शुरूआत है ।

सभापति महोदय :- आपके लिये हमेंशा नजरें इनायत रहती है ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, प्राथमिक, माध्यमिक, हायर सेकेण्डरी स्तर यह शिक्षा की कड़ी है, जिसमें हम सभी उस दौर से गुजरे हैं । उस समय विद्याध्ययन की शैली अलग थी, अब

इस भौतिक पराभव की दुनिया में सिस्टम बदल चुके हैं । शिक्षा में आधुनिकता का समावेश हो गया है, अब ब्लैक बोर्ड की जगह डिजिटल बोर्ड ने स्थान ले लिया है । सभापति महोदय, उस समय अनुशासन को अधिक महत्व दिया जाता था, पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियां बराबर हुआ करती थी और अनुशासन बनाने में परिजनों का भी पूरा सहयोग मिलता था । अब सख्ती करो तो परिजन स्वयं ही विरोध में खड़े हो रहे हैं । हम कहां से स्कूलों अनुशासन की बात करेंगे और शिक्षा में गुणवत्ता लायेंगे ? आज यह भी एक कारण है, जिसकी वजह से शिक्षा में गिरावट आई है, लेकिन इसका एक मुख्य कारण शिक्षा का व्यवसायीकरण भी है । निजी स्कूलों के कारण कहीं न कहीं शासकीय स्कूलों में पढ़ाई का महत्व कम हुआ है, लोगों की सोच में परिवर्तन आया है, आज सब कोचिंग के भरोसे हो गये हैं, जिसके कारण आज शासकीय स्कूलों में गिरावट आई है । सभापति महोदय, शिक्षा के स्तर में बदलाव होना चाहिये, इस पर हमें गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिये, ताकि हम फिर शासकीय स्कूलों को गुलजार कर सकें । सभापति महोदय, पूर्व में हमारी सरकार के द्वारा स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूलों को खोलकर इस ओर आगे कदम बढ़ाया गया था और इसे आगे बढ़ाने की जरूरत है । सभापति महोदय, क्या उन गरीब के बच्चों को अधिकार नहीं है कि कम फीस में घर से आ-जाकर, बासी खाकर, रोटी खाकर, उनके बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में नहीं पढ़ सकते हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मछली पकड़कर ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- हां मछली पकड़कर । हमर परिवार में जाथे, आज भी मछली पकड़थे अऊ मैं स्वयं मछली पकड़े ला जाथंव । माननीय सभापति महोदय, जिस शिक्षा में परिवर्तन की बुनियाद माननीय भूपेश बघेल की सरकार ने डाली थी, एक राजनीतिक विचारधारा से हटकर, हम उसे कैसे प्रभावी रूप से कारगर बना सके, शिक्षा की उस बुनियाद को मजबूत कर सकें, ताकि जहां बच्चे सपने लेकर जाते हैं, उन सपनों को आकार दे सकें, उसे गढ़ सकें । माननीय सभापति महोदय, यह वही शिक्षा का मंदिर है, यह वही शिक्षा का मंदिर है, जिस पाठशाला से निकलकर हम लोग इस पवित्र सदन में शब्दों के सामंजस्य को लेकर अपनी बातें प्रभावी रूप में रखने की कोशिश कर रहे हैं । सभापति महोदय, आज बसंत पंचमी भी है, माता सरस्वती के आर्शीवाद से, उन गुरूजनों के आर्शीवाद से, कुछ शिक्षा ग्रहण किये हैं और यहां रखने का प्रयास किया है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- निषाद जी, आप जो पुरानी बातें कर रहे हैं, आज हमने निर्देश जारी किये हैं, बसंत पंचमी के दिन सरस्वती की पूजा के साथ-साथ मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में भी उसे मनाया जाये। हमने संस्कारों की शुरूआत कर दी है। (मेजों की थपथपाहट)

समय :

1.00 बजे

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय मंत्री जी, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमने सभी स्कूलों में निर्देश जारी कर दिये हैं। आज सभी स्कूलों में कार्यक्रम हो रहे हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, हम तो शुरूआत से ही सरस्वती पूजन कर रहे हैं। जब हम पढ़ते थे तो सबसे पहले यह जो सारी विधाएं होती थी, चाहे नाग पंचमी हो, चाहे सरस्वती पूजा हो या जो अन्य गतिविधियां होती थी, वह पूरा करते थे। लेकिन अभी आधुनिकता के दौर में लगभग वे सारी व्यवस्थाएं खत्म होती जा रही है, उसे वापस लाना जरूरी है ताकि हमारा संस्कार बना रहे। हम बगैर संस्कार के शिक्षा की बुनियाद और सोच को मजबूत नहीं कर सकते। वह संस्कार ही है, जिसकी बदौलत हम व्यवहार और आचरण के उपयोग में आने वाले शब्दों को अच्छे से बयान कर सकते हैं और उपयोग कर सकते हैं।

माननीय सभापति महोदय, माननीय भूपेश बघेल जी ने जिस सोच के साथ स्वामी आत्मानंद स्कूल प्रारंभ किये थे, मैं निश्चित ही उनकी सोच को सलाम करता हूं। गरीब के बच्चों को पढ़ने का जो एक सपना होता था, उसे उन्होंने पूरा करने का प्रयास किया है। स्कूलों में बच्चों को पोषण मिले, इसके लिये भी मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था संचालित की जा रही है और मैं समझता हूं कि इसका सीधा असर छात्रों और शिक्षकों पर पड़ रहा है। ऐसे बहुत से समय है जो बच्चों के भोजन पर या अन्य संसाधनों पर निकल जाते हैं। इस पर विचार करके इसका कुछ दूसरा उपाय करें ताकि शिक्षा के स्तर को मजबूत किया जा सके। यह मैं आपके माध्यम से आग्रह करना चाहता हूं।

सभापति महोदय, पहले शिक्षकों की पोस्टिंग होती थी और वह जंगलों में पढ़ाने चले जाते थे। उनकी बढ़िया स्वीकृति और रजामंदी होती थी। फिर कुछ सालों बाद वे पहुंच और एप्रोच लगाकर मैदानी इलाकों में आ जाते। जंगलों में बच्चे अच्छी शिक्षा से वंचित हो जाते थे क्योंकि उनके पास पर्याप्त शिक्षक नहीं होते थे और वह यहां-वहां घूमते पाये जाते थे। लेकिन हमारी सरकार ने पिछले कार्यकाल में इसकी व्यवस्था की है और भर्ती के माध्यम से अनुसूचित क्षेत्र की तमाम शालाओं में शिक्षकों की भर्ती करने का प्रयास है। आज जंगल के स्कूलों में भी वह घण्टियां बजती है और क, ख, ग, घ की आवाजें सुनाई देती है। निश्चित ही शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव हुआ है। साथ ही मैंने गणवेश, सायकल और स्कूलों में खेल के संबंध में बजट में भी देखा है। मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि इसमें बजट में कोई प्रावधान नहीं किया गया है। जबकि सरस्वती सायकल योजना के माध्यम से बेटियों को घर से आने जाने के लिये सायकल दिया जाता था। जिसमें बेटियां चढ़कर घण्टी बजाकर स्कूल जाती थी और स्कूल से छूटने के बार जैसे ही घर आती थी तो फिर घण्टी बजती थी और घर पर पालकों को पता

चल जाता था कि मेरी बेटी स्कूल से आ गई है। अब वह घण्टी की आवाज सुनाई नहीं दे रही है। उस घण्टी में एक प्यार होता है, परिवार में एक उम्मीद होती है कि मेरी बेटी सकुशल स्कूल से पढ़कर वापस आ रही है। चाहे मां हो, चाहे पिता हो, चाहे उनके भाई हो या बुजुर्ग हो, वह पलक बिछाकर उस समय का इंतजार करते हैं कि मेरी बेटी आयेगी। बेटियां आती हैं और सबसे पहले काम में लग जाती है और उनको दादी-दादा का प्यार मिलता है। वह उनके लिये पानी और चाय की व्यवस्था में व्यस्त हो जाती है। यह गांव में एक संस्कार होता है।

माननीय सभापति महोदय, बजट में स्कूल शिक्षा से संबंधित विषय में ऐसी बहुत सी चीजें हैं, जिसका प्रावधान करना था, वह नहीं हो पाया है। मुझे पूरा विश्वास है कि अनुदान मांगों पर कटौती के बाद माननीय मंत्री जी जरूर गंभीरतापूर्वक सोचकर इसमें प्रावधान रखेंगे ताकि शिक्षा के मंदिर को सजाने की उनकी एक सोच, एक परिकल्पना भी सही होगी। बहुत से ऐसे स्कूल हैं, जो पुराने हो चुके हैं, जर्जर हो चुके हैं। हमारी पिछली भूपेश बघेल जी सरकार ने स्कूल जतन योजना के माध्यम से जो स्कूल 15 सालों तक नहीं बन पाये थे उन स्कूलों को बनाने का प्रयास किया, जीर्णोद्धार करने का प्रयास किया, जीर्णोद्धार करने का प्रयास किया। यह संभव तो नहीं है कि सभी काम एक साथ हो जाए। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि उन स्कूलों में जो बाकी के रह गये हैं सबसे पहले प्राथमिकता का कोई काम होगा तो वहां पर बाऊण्ड्री वॉल हो। जब से वह स्कूल बनें हैं तब से वहां बाऊण्ड्री वॉल नहीं है। मेरे विधान सभा क्षेत्र के स्कूलों में बहुत से बाऊण्ड्री वॉल टूट गये हैं, कई स्कूलों में बाऊण्ड्री वॉल का अस्तित्व ही खत्म हो चुका है। वहां केवल स्कूल के भवन दिखते हैं, लेकिन वहां पर कहीं बाऊण्ड्री वॉल नहीं दिखती है। वहां स्कूलों में गेट नहीं है। आपको इसका ताजा उदाहरण देखने को मिला कि जब मेरे विधान सभा क्षेत्र के गुण्डरदेही विकासखण्ड के ग्राम चीचा में 31 जनवरी को स्कूल में बाऊण्ड्री वॉल न होने के कारण बच्चे खाना खाने के बाद स्कूल से बाहर निकले थे तो उसकी हत्या हो गई थी। यदि उन स्कूलों में दोपहर में खाना खाने के बाद ताला लग जाता है क्योंकि हम स्कूलों में मध्याह्न भोजन देते हैं तो बच्चों को घर जाने की जरूरत ही नहीं है। उन स्कूलों में बाऊण्ड्री वॉल रहेगा तो वहां बच्चे सुरक्षित रहेंगे। इस पर बिल्कुल गंभीरतापूर्वक विचार होना चाहिए। ताकि बच्चे स्कूलों में सुरक्षित रहें। क्योंकि वह भविष्य में अपने मां-बाप की आस हैं उन्होंने जिस पेड़ को सिंच कर बड़ा किया है, उसके बाद यह पता चले कि पेड़ की डालियां काट दी गई है तो उन पर क्या बीतती और गुजरती होगी।

माननीय सभापति महोदय, मैं काबिल मंत्री जी यही निवेदन करना चाहूंगा कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में बहुत से ऐसे स्कूल हैं जो आज भवनविहीन हैं आपके माध्यम से यह निवेदन चाहूंगा कि उन स्कूलों का निर्माण कर संवारने, जतन करने का काम करें। मेरे ही विकासखण्ड के गुन्डरदेही विधान सभा के ऐसे बहुत से स्कूल हैं जिनका उन्नयन भी होना है और वहां गणेश खपरी, डौण्डी लोहारा आदिवासी

अंचल हैं। मेरे विधान सभा क्षेत्र का गणेश खपरी ऐसा गांव है जो उधर के बाद राजनांदगांव, डोंगरगांव और इधर के बाद खुज्जी विधान सभा है। वहां व्यावारिक रूप से थोड़ी अड़चन और परेशानी आती है। यदि वहां हाईस्कूल का उन्नयन कर दिया जाये तो निश्चित ही वहां आसपास के जो गांव हैं, उनको सुविधाएं मिल सकती हैं। इधर डौण्डीलोहारा से लगा हुआ गांव बुंदेली है। बुंदेली गांव के अंतिम छोर गुन्डरदेही विधान सभा और इधर डौण्डीलोहारा का विधान सभा का अंतिम छोर है। मैं आपके माध्यम से वहां भी मैंने हाईस्कूल के उन्नयन के संबंध में निवेदन करना चाहता हूँ कि उसे जोड़कर बजट में प्रावधान रखें। मेरे विधान सभा क्षेत्र के बहुत से ऐसे हायर सेकेण्डरी स्कूल हैं जो भवनविहीन हैं जिसके लिए मैंने बजट में प्रावधान रखने के लिए प्रस्ताव दिया था, लेकिन अभी तक उसे सम्मिलित नहीं किया गया है। मेरे विधान सभा क्षेत्र में पिनकापार हायर सेकेण्डरी स्कूल, कांदुल हायर सेकेण्डरी स्कूल, डोंगीतरई हायर सेकेण्डरी स्कूल का भवन ऐसे बहुत से हायर सेकेण्डरी स्कूल के भवन हैं, जिसका इस बजट में कोई उल्लेख नहीं है। ताकि उसके लिए राशि का प्रावधान किया जा सके। पूर्व मुख्यमंत्री जी के द्वारा अनुदान प्राप्त हायर सेकेण्डरी स्कूल भाठागांव (बी) और पैरी है यह लगभग 50-55 साल पुराना स्कूल है। वह समिति किस माध्यम से संचालित हो रही है उस स्कूल में शासन से अनुदान मिल रहा है, लेकिन वहां शिक्षक नहीं है वहां पर दो से तीन शिक्षकों के माध्यम से स्कूल चल रहा है। माननीय मुख्यमंत्री जी ने घोषणा की है कि मैं उस घोषणा के अनुरूप चाहता हूँ कि वहां शिक्षकों की व्यवस्था की जाए। मैंने माननीय वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी साहब से निवेदन किया है कि यह बच्चों के भविष्य का मामला है माननीय मंत्री महोदय, हायर सेकेण्डरी स्कूल भाठागांव (बी) और पैरी है, यह ऐसे स्कूल हैं जो संचालित हो रहे हैं । उनके शासकीयकरण की बात माननीय मुख्यमंत्री जी ने की थी और लगभग सारी प्रक्रिया पूर्ण हो गई थी, सी.एफ. एडवांश के लिए भी चला गया था, लेकिन उस समय आचार संहिता लगने के कारण यह नहीं हो पाया था। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि उस स्कूल को अतिशीघ्र स्वीकृति प्रदान कर शासकीयकरण की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाये। पिछले समय परसाही (टी) के स्कूल का उन्नयन हुआ था, उसके नवीन भवन का कोई उल्लेख नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री जी आज हमारे विधान सभा के अध्यक्ष हैं, उनकी भंडेरा की घोषणा हुई थी। उसे पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी से करवाकर उन्नयन करवाया था और वहां बच्चे हायर सेकेण्डरी तक विद्या अध्ययन कर रहे हैं लेकिन उसमें कुछ शिक्षकों के अभाव के कारण पर्याप्त सुविधायें नहीं मिल पा रही हैं। इस ओर भी मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। बहुत से ऐसे स्कूल हैं जिसमें प्राचार्य के पद रिक्त पड़े हैं। गुंडरदेही विधान सभा क्षेत्र में लगभग 57 हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल संचालित हैं। प्राचार्य के कुल 57 पद हैं, जिसमें केवल 15 पदों पर प्राचार्य कार्यरत हैं, शेष 42 हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल में प्राचार्य के पद रिक्त हैं। क्योंकि प्रमोशन के बाद उन स्कूलों के शिक्षक कुछ भिलाई, दुर्ग, रायपुर चले गये। बहुत से प्राचार्य के पद खाली हो गये हैं। इस पर भी गंभीरतापूर्वक विचार कर प्राचार्य के रिक्त पदों को भरने की

कृपा करें। बगैर घर में मुखिया के परिवार नई चले, वैसे ही बिना हेडमास्टर के, बिना प्राचार्य के संस्था के सुचारू रूप से संचालन की बात करेंगे तो यह संभव नई हो सकय। हायर सेकेण्डरी स्कूल में व्याख्याता के लगभग 606 पद स्वीकृत हैं जिसमें 547 पद में कार्यरत हैं और लगभग 70 पद रिक्त हैं। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यही कहना चाहूंगा कि माननीय मंत्री जी मेरी बातों पर और मेरे इस प्रस्ताव पर जरूर विचार करें क्योंकि यह बच्चों के भविष्य का मामला है। केवल स्कूल ही वह ऐसी जगह है जहां पर हम संस्कार के साथ शिक्षा की मजबूत नींव की बुनियाद को गढ़ते हैं और हम उन उम्मीदों, संकल्पों को लेकर आगे जब पढ़ाई करते हैं तो उसके लिए एक आधार तैयार करते हैं। सबके सपने होते है, चाहत सबकी होती है कि डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. बनें, लेकिन सबका बन जाना संभव नहीं है। लेकिन यदि पढ़ा-लिखा होता है तो जरूर अपने लिए कुछ न कुछ कर गुजरने की चाहत रखता है। सभापति महोदय, इच्छा बलवती होती है, इच्छा को कोई रोक नहीं सकता।

सभापति महोदय :- आप समाप्त करिये न। आपको बोलते हुए 17 मिनट हो गये हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, अभी तो चालू किया हूं।

स्कूल शिक्षा मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- धीमी गति के समाचार पढ़ही तो थोडा ले टाइम ज्यादा लगही।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- बृजमोहन भैया, लेकिन सारगर्भित बातें करत हौं न।

सभापति महोदय :- आपको 17 मिनट बोलते हुए हो गये हैं। मैं आपको पहली बार निवेदन कर रहा हूं। आप बोलिये न।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, क्या है कि वह पहले वक्ता हैं, अभी 17 मिनट ही हुआ है।

श्री अजय चन्द्राकर :- उमेश जी, पहले वक्ता हैं तो राज्य के बजट में चर्चा हो रही है या गुंडरदेही के बजट में चर्चा हो रही है, इसको पहले तय कर लीजिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- मैं अपने क्षेत्र की मांग कर रहा हूं, राज्य की भी मांग कर रहा हूं। स्कूल शिक्षा की भी बात कर रहा हूं।

श्री उमेश पटेल :- वह अपने क्षेत्र की भी मांग कर रहे हैं और राज्य के बजट की भी बात कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप पूरे भाषण की कापी निकाल लीजिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- राज्य के घलौ बात करे हौं भईया। ..(व्यवधान)

श्रीमती चातुरी नंद :- ले न अजय भैया, तैं अभी एक-एक घंटा तक बोलथस गा। 17 मिनट तो होये हे।

श्री उमेश पटेल :- काहे ये बीच में झपकी मार लेथे ता ये बीच के गायब हो जाथे।

सभापति महोदय :- कोई किसी से कुछ नहीं कह रहा है। मैंने तो उनसे आग्रह किया है। आप बोलिए, मैं कुछ बोल ही नहीं रहा हूं। आप बोलिये।

स्कूल शिक्षा मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- सभापति जी, कुंवर जी अच्छा बोल रहे हैं, लेकिन यदि वह ऐसा बोलेंगे, जिससे कि सबको नींद आ जाए। सदन दिन भर चलाना है। ऐसे में कैसे काम चलेगा?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- बृजमोहन भैया, यह बात जोश में कहने की नहीं है। यह शांत चित्त से करने की बात है, क्योंकि स्कूल और शिक्षा का मामला है। यह खासकर आपका विभाग है।

सभापति महोदय :- विषय में आईये ।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- वह कल गाना गा रहे थे तो आप लोगों ने मना कर दिया। इसलिए आज उनकी आवास धीरे हो गई।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी ने कहा है कि बीच-बीच में गा सकते हैं। पूरा दिन भर नहीं गा सकते। (हंसी)

सभापति महोदय :- निषाद जी, आप बोलिये। आप बढ़िया भाषण दीजिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, मैं मूल बातों पर आना चाहूंगा। आज प्रदेश में शिक्षा की व्यवस्था पर जो बात होनी चाहिए, बजट पर जो प्रावधान किया गया है, मैं समझता हूं कि उस पर एक बार फिर विचार करें कि हम कैसे इस शिक्षा की व्यवस्था को मजबूत कर सकें, उससे अच्छा बना सकें। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में तो ठीक है। हम प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर पर जा ही रहे हैं। वहां कोई और नहीं है। कोई अंग्रेजी माध्यम या कोई बड़े स्कूल नहीं है। बच्चे शहरो में पढ़ने आ जाते हैं। लेकिन हमने जो संकल्पना की थी, उसे साकार करने की जिम्मेवारी जिम्मेवारी सरकार की है। आपको जनादेश मिला है तो हम आपसे चाहेंगे कि जो बुनियाद हमने रखी है, वह नींव को मजबूत करने का काम आप करे। इसमें हमको राजनीतिक विचारधारा से हटकर काम करना चाहिए, क्योंकि बच्चों के भविष्य का सवाल है और उन्हीं भविष्य को लेकर सदन में बैठे तमाम सदस्य को भी चिंता होती है क्योंकि सबके परिवार में बच्चे हैं जो आज स्कूलों में शिक्षा अध्ययन कर रहे हैं। सभापति महोदय, मुझे खुशी इस बात की होती है जब हम अपने आसपास के पड़ोस के बच्चों को अंग्रेजी में बोलते देखते हैं। बच्चे सरकारी स्कूल से आकर अंग्रेजी में बोलते देखते हैं तो अच्छा लगता है क्योंकि हम उस समय नहीं पढ़ पाए थे, उसका हमें आज भी मलाल है। हमारे पास उतने साधन नहीं थे। हमारे मां-बाप उतने सक्षम नहीं थे। वह मजदूरी करके जीवन-यापन किया और हमको यहां तक पढ़ाया है। यह उनका हमेशा कर्ज रहेगा। लेकिन हम आने वाले भविष्य को अच्छा संवार सकें, अच्छा बना सकें, शैक्षणिक स्तर को कुछ मजबूत कर सकें, यह हमारी सोच होनी चाहिए। निश्चित ही सदन में बैठे पूरे सदस्य हैं। उन सबसे मैं आग्रह करूंगा कि राजनीतिक विचारधारा से हटकर इस शिक्षा को बुनियाद को कैसे मजबूत करें, इस पर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

एक विचार सार्वजनिक रूप से होनी चाहिए। मैं स्कूल शिक्षा के इस महत्वपूर्ण बातों पर आप सबके माध्यम से इस सरकार से पूरे प्रदेश की जनता की उम्मीद, एक विश्वास, एक भरोसा है। जो जनादेश आपको मिला है, उसे गढ़ने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी, यह मैं आपके माध्यम से उम्मीद करता हूं। शिक्षा के व्यवसायीकरण पर थोड़ा सा अंकुश लगी है क्योंकि शहर के बच्चे हैं, जो सामाथ्र्य लोग हैं, वह तो जरूर अपने बच्चों को बड़े-बड़े स्कूलों, संस्थानों, कोचिंग में पढ़ाकर अच्छे-अच्छे अंक लेकर इस प्रतियोगिता की दौड़ में खड़े कर सकते हैं, लेकिन गांव के बच्चे आज भी पीछे हो जाते हैं। वह चाहकर भी अपनी आस, अपनी उम्मीद को पूरा नहीं कर पाते हैं क्योंकि उनको उस स्तर की शिक्षाएं नहीं मिल पाती। सबसे बड़ी बात होती है कि आज इस प्रतियोगिता की दौर में प्रतियोगिता में अपने आप को खड़ा कर पाना। माननीस सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री जी से अनुरोध करना चाहूंगा कि विकासखण्ड स्तर पर एक कोचिंग की सुविधाएं होनी चाहिए। ताकि वहां के बच्चे, जो शहर में जाकर उतनी सुविधाएं या उतने संसाधन में पैसा खर्च नहीं कर पाते हैं, उनको वहां तक शिक्षा चूंकि गांव के बच्चे हैं । वे बच्चे 10, 12-15 किलोमीटर साईकिल चलाकर आराम से आकर शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं । जिला स्तर पर भी इसकी एक सुविधा होनी चाहिए । पूर्व में सरकार ने सोच रखी थी, उसकी संकल्पना हुई थी और कुछ धरातल पर आये थे । वह रूके हुए कार्य प्रारंभ हो जाने चाहिए ताकि बच्चों को अच्छी कोचिंग के माध्यम से इस प्रतियोगिता के दौर में खड़े होने के लिये हम उसका बेस तैयार कर सकें और इस प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने के लिये उनकी नींव मजबूत कर सकें ।

माननीय सभापति महोदय, शिक्षा में समय-समय पर बदलाव होते हैं और होना भी चाहिए । चूंकि आधुनिकता का दौर है । बोली-भाखा के संबंध में बातें हुईं । साफ्टवेयर बन रहा है, यह होना चाहिए । चूंकि छत्तीसगढ़ में 30 प्रतिशत आदिवासी अंचल के लोग रहते हैं । गोंडी भाषा के संबंध में जिन्होंने साफ्टवेयर की बात की है यह होना चाहिए लेकिन और भी जो भाषाएं बोली जाती हैं । गोंडी के साथ-साथ छत्तीसगढ़ी का भी एक साफ्टवेयर बनना चाहिए ताकि हम आने वाले भविष्य को भी इन चीजों को बता सकें । चूंकि छत्तीसगढ़ी का व्याकरण इतना क्लिस्ट है जिसे समझना बहुत मुश्किल है । उनका भी एक साफ्टवेयर बनना चाहिए । ललित भैया, बनना चाहिए कि नहीं ? छत्तीसगढ़ी का साफ्टवेयर बनना चाहिए ।

श्री राजेश अग्रवाल :- भैया कल आप नइ सुने का ? मंत्री जी घोषणा करिन हे कि क्रमशः सभी भाषा का किया जायेगा ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आदरणीय अग्रवाल जी, मैं आपसे सहमति चाहत हंओं।

श्री राजेश अग्रवाल :- कल हमर वित्तमंत्री जी घोषणा करिन हे कि गोड़ी के साफ्टवेयर के साथ-साथ क्रमशः सबे बर बनाय जाही । (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- मैं उही ला आग्रह करत हंओं काबर कि हमन छत्तीसगढ़ राज्य के हरन अउ छत्तीसगढ़ के रहईया हन । (व्यवधान)

श्री राजेश अग्रवाल :- आत्मानंद ला बिना तैयारी के खोल दे हा, मिडिल स्कूल-हाईस्कूल दोनों बंद होगिस हे अउ 5-5 करोड़ रूपया एक-एक...।

श्री उमेश पटेल :- क्या है अग्रवाल जी, आपके वित्तमंत्री जी का भाषण सुनोगे तो ऐसा लगता है कि वे भविष्य की बातें कर रहे हैं । वर्तमान में तो हैं ही नहीं ।

श्री राजेश अग्रवाल :- उन्होंने इस भाषा के लिये कल जवाब दिया कि गोड़ी का साफ्टवेयर बन रहा है, बाकी का क्रमश: बनायेंगे । आत्मानंद बिना तैयारी के खोला गया, 5-5 करोड़ रूपये रेनोवेशन में खर्च किया गया उसकी वजह से मिडिल स्कूल और हाई स्कूल दोनों बंद हो गये ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- भैया, आप मन केवल रेनोवेशन भर में जात हओ ।

श्री राजेश अग्रवाल :- मिडिल स्कूल और हाई स्कूल दोनों बंद हो गये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- साढ़े 3 करोड़ रूपया के व्यवस्था बजट में कर दे हें। साफ्टवेयर बना के जोन अपन गोड़ी है, भथरी हे, सब भाषा के साफ्टवेयर बन जही । (व्यवधान) एकर व्यवस्था भी कर दे हन । बजट में साढ़े 3 करोड़ रूपया के रखे हन।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- छत्तीसगढ़ी के ला घलो । अगर बईठाना चाहो तो हमन हमर विषय विशेषज्ञ ला भेज देबो ।

श्री राजेश अग्रवाल :- कुंवर भैया, जल्दी निपटावओ । तुंहर भाषण में उमेश भैया हा घलो असकटावत हे । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- छत्तीसगढ़ी लिपि नइ हे, जेकर लिपि होही ओकर साफ्टवेयर बनही । जेकर लिपि नइ होही ओकर साफ्टवेयर कइसे बनही ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- भैया, छत्तीसगढ़ी के व्याकरण हे । आप ला बता देथओं कि छत्तीसगढ़ी के व्याकरण निकल गे हे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- व्याकरण हे, लिपि नइ हे न ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आप ला व्याकरण के माध्यम से ओकर लिपि मिल जही ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नइ हो सकय न । (हंसी)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- भैया, हो सकही । तें हा हमन न बईठार न ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमर जोन भाषा हे ओ तो हिंदी हे न । हिंदी ला छत्तीसगढ़ी में लिखथन ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- हमन आठवीं अनुसूची में भेजे हन । राजभाषा के दर्जा मिले हे, काबर भेजे हन । ओकरे बर तो भेजे हन कि छत्तीसगढी ला महत्व मिलय ।

श्री राजेश अग्रवाल :- भैया, हमन ला छोड़ न । उमेश भैया भी तुंहर प्रश्न में असकटात हें । सुस्त बइठे हें । परेशान मत करा ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अगर तुमन अतका में असकटा जहू ता मैं समझथओं कि तुंहर सोच अच्छा नइ हे ।

सभापति महोदय :- चलिये, आप सीधे भाषण दीजिये न ।

श्री उमेश पटेल :- सदन में सोने की आदत इन्हीं की है, अजय चंद्राकर जी की है । (हंसी)

सभापति महोदय :- चलिये, बोलिये ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, गांव के रहवईया हन । सब के सपना होत हे कि बढ़िया शिक्षा मिलय, बढ़िया सोच आय अउ उही सोच ला लेके सब चलत हें । मैं प्राथमिक स्तर के भी शिक्षा के बात करेओं, माध्यमिक स्तर के, हायर सेकेण्डरी स्कूल के अऊ उच्च शिक्षा स्तर के भी बात करेओं । यह मजबूत होना चाहिए । जहां सरकार के प्रति, शासन के प्रति एक विश्वास बनय और वह विश्वास कब अच्छा होही जब हम कोनो चीज के निर्माण बर एक अच्छा सोच रखन। अउ उही सोच के माध्यम से एमे कटौती करके जतका बात करे हव, ओला स्वीकार करे अउ ए बजट में लगत हे कि शिक्षा के सुधार बर कुछ नहीं हे। तेखर विरोध करत हुए मैं अपन बात का समाप्त करत हव।

सभापति महोदय :- श्री अजय चन्द्राकर जी। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय सभापति महोदय, ये सौभाग्य है विष्णु सरकार का..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कुंवर सिंह निषाद जी ने उच्च शिक्षा पर कुछ बोला ही नहीं है। धर्मस्व विभाग में बोले ही नहीं हैं। संस्कृति में बोले ही नहीं हैं।

सभापति महोदय :- अब हो गया न।

श्री अजय चन्द्राकर :- तो अब तो समाप्त हो गया न।

श्री रामकुमार यादव :- बोले लायक ही नहीं हे न। ओमन में बोले लायक ही नहीं हे।

श्री उमेश पटेल :- पहले वक्ता हैं। आप फिर से मौका दे सकते हैं।

सभापति महोदय :- न-न, ऐसा नहीं होगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक मिनट। एक मिनट। मैं बोल लूं।

सभापति महोदय :- आप बैठिए न। कोई दूसरा बोल लेंगे न। आप बोलिए।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी..।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय..।

श्री अजय चन्द्राकर :- शुरू ही नहीं हुआ ते शुरू होगे हस।

सभापति महोदय :- बैठिए-बैठिए। ओ अजय चन्द्राकर जी का भाषण शुरू हो गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- बैठ-बैठ, मोला ओखर से अनुमति मिल गे हे।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- दो मिनट संस्कृति के बारे में बोल दूं।

सभापति महोदय :- हो गया न।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, दो मिनट संस्कृति विभाग में बोल देता हूं।

सभापति महोदय :- उनको मैंने बुला लिया है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- हमन संस्कृति ले जुड़े हन एखर सेती थोड़ कन दो मिनट बात करना चाहूं।

सभापति महोदय :- नहीं, उनको बोलने दीजिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- संस्कृति अउ पर्यटन में थोड़ा से बोलना चाहूं। काबिल मंत्री बैठे हे तेखर सेती निवेदन करना चाहथव। मैं निवेदन करथव।

श्री अजय चन्द्राकर :- हो गया आपका।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अजय भैया, निवेदन करत हव।

सभापति महोदय :- अभी और बीच में बोल लीजिएगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके दूसरे वक्ता बोल लेंगे न।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- संस्कृति के ऊपर बोल लेथव।

सभापति महोदय :- एक मिनट, चन्द्राकर जी बैठ जाइए। एक मिनट में आप बोल लीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- ते तो अउ सुरता देवाय हस।

सभापति महोदय :- एक मिनट।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, संस्कृति जेन छत्तीसगढ़ के हर चीज में व्यापक प्रभाव रखथे। छत्तीसगढ़ के संस्कृति के जेन व्यापकता हे, चाहे ओ जंगल स्तर पर हो या चाहे मैदानी स्तर पर हो।

सभापति महोदय :- आप सीधे विषय में आ जाइए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- ओला पिछले सरकार के बजट में छत्तीसगढ़ के संस्कृति, परंपरा पर बहुत अकन अइसे बात होये हे, लेकिन अभी वर्तमान बजट में छत्तीसगढ़ के जेन मूल स्वरूप नाचा के संरक्षण के ऊपर कोई बजट में प्रावधान नहीं हे। माननीय सभापति महोदय, नाचा आज हमन जतका रूप देखथन, जतका बड़े-बड़े मंच देखथन ओखर अगर कोई उद्भव हे तो नाचा हे। लेकिन नाचा के संरक्षण के ऊपर एमा कोई बात नहीं हे। माननीय सभापति महोदय, साथ ही पर्यटन के बात करहूं। पूरा प्रदेश में पर्यटन के जेन स्थिति हे..।

सभापति महोदय :- आप आधे घंटे भाषण दिये, आप नहीं कर पाये।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- और खासकर जेन पुरातत्व के महत्व हे। माननीय सभापति महोदय..।

श्री रामकुमार यादव :- भैया, ए नाचा ला देख के ही मिथुन चक्रवर्ती हा सीखे रहिस हावय।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- यादव जी, आप बैठिए न। अभी तो आपका भी नाम आने वाला हे न। यादव जी, बैठिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, पर्यटन के ऊपर बात..।

सभापति महोदय :- समाप्त करिए। एकाक मिनट में।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- बस-बस, एक मिनट में समाप्त कर रहा हूं।

सभापति महोदय :- यह परंपरा भी ठीक नहीं है न कि बीच में आपको याद आया और आप बोलने लगे। आपने आधे घंटे में नहीं बोला। यह ठीक नहीं है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- पर्यटन के ऊपर माननीय बृजमोहन भैया, आप गये हस घलो, गौरय्या मेला ऐतिहासिक स्थल हे। पूरा छत्तीसगढ़ में ओखर अलग स्वरूप हे। कल्चूरि वंश के सिरपुर में देखथव आप गये हो अजय भैया, सिरपुर में जो मूर्ति निकले हे वैसे वहां भी बहुत अकन अइसे मूर्ति हे जेन हमन ला ऐतिहासिक महत्व के याद दिलाथे। पर्यटन में तो हे, लेकिन पर्याप्त रूप से विकसित नहीं होये हे। माननीय सभापति महोदय, डेंगरापार हरदीलाल बाबा के अइसे जग धरती जहां देव दशहरा होथे अउ छत्तीसगढ़ में मोर ख्याल से वहीं होथे देव दशहरा जहां हजारों घोड़ा हर साल चढ़थे। वो आदिवासी मन के एक आस्था हे।

सभापति महोदय :- ठीक है। धन्यवाद।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- वहां भी विचार हो साथ ही नर्मदा धाम आप ए ढहार जाथव, ओ ढहार जाथव, आप एक बार गुंडरदेही विधान सभा के सुरसुली नर्मदा धाम जाओ वहां हमेशा लगातार कुंड से पानी निकलथे।

सभापति महोदय :- हो गया।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- ओखर बर भी विकास बर बजट में प्रावधान के निवेदन मैं आपके माध्यम से करना चाहथव।

सभापति महोदय :- मैं सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करना चाहता हूं कि कोई भी भाषण में जब आप खड़े हों तो कोई जरूरी नहीं है कि एक मंत्री जी के पास 5 विभाग है तो पांचों विभाग में बोले। आप अपनी interest के टॉपिक में बोल लीजिए, पांचों विभाग में बोलना कोई compulsory नहीं है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से बस एक निवेदन करत हव कि पर्यटन ला बढ़ावा देथव तो मोरो विधान सभा में 4-5 जगह अइसे हे चाहे गौरय्या धाम हो, चाहे मोहदीपाट बाबा हो चाहे डेंगरापार हो चाहे जोगी मठ हो, इन सबके लिए आपके बजट में कोई प्रावधान नहीं हे तो बजट में प्रावधान करे के मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहथव। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- चलिए, अजय चन्द्राकर जी। अजय चन्द्राकर जी से मैंने आग्रह किया है कि शुरू करे। सभी सदस्यों से आग्रह है कि मंत्री जी के पास 5-6 विभाग हैं तो सब में बोलना जरूरी नहीं है। जिसको जिसमें interest है बोले।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय सभापति महोदय, जब मंत्रियों का परिचय हो रहा था तो विपक्ष के पूर्व मुख्यमंत्री जी मखौल उड़ा रहे थे कि बृजमोहन अग्रवाल जी को बच्चा खेलाने का काम मिल गया । वो ऐसे आदमी की टिप्पणी थी जिसको गंभीरता से नहीं लेना चाहिए । क्योंकि आपके समय में शिक्षा की स्थिति 35वें नम्बर पर थी । बृजमोहन जी को छत्तीसगढ़ को शिक्षित, संस्कारित और इस संस्कार को विश्व में स्थापित करने का अवसर मिला । देश के सामने, प्रदेश के सामने जो परिदृश्य पांच सालों में भूपेश बघेल जी ने रखा है । बृजमोहन जी से चाहूंगा कि इस चुनौती को अवसर में बदलें और छत्तीसगढ़ शिक्षा के मानचित्र में चाहे किसी भी तरह की शिक्षा हो, उसको अवसर के रूप में लेकर पूरा परिदृय बदल दें।

श्री उमेश पटेल :- अजय जी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप वो शिक्षा मंत्री थे जो अपने पिताजी के नाम पर पांच साल में एक खोली ही बना सके ।

श्री उमेश पटेल :- एक बात सुन लीजिए । स्कूल शिक्षा में स्वामी आत्मानंद स्कूल की नींव रखने वाली वही सरकार है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अरे । अभी उसमें आ रहा हूं ।

श्री उमेश पटेल :- और बता रहा हूं । इस उच्च शिक्षा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मोला गुंडरदेही मा नइ बोलना हे, प्रदेश में बोलना हे ।

श्री उमेश पटेल :- गुंडरदेही मा नइ बोलत हौं, प्रदेश में बोलत हौं । नैक में एग्रीगेशन हुआ है उसकी लिस्ट निकलवाकर देख लीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 335 में मात्र 34 ही है ।

श्री उमेश पटेल :- 34 में नहीं होए हे 200 मे होए हे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 34 ठन होए हे ।

श्री उमेश पटेल :- अरे, का बात करथौ । एकदम से कुछ भी आंकड़ा बोल देते हो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- चलिए, मेरे हाथ में सबसे पहले उच्च शिक्षा विभाग का प्रतिवेदन आ गया । सभापति महोदय, 9 राजकीय विश्वविद्यालय हैं । आप विश्वविद्यालयों में रिक्त पदों को देख लीजिए । 5 सालों में आपने कितनी भर्ती की, यह बता सकते हैं, अभी आप खड़े हो रहे थे ? पदों की संख्या लगातार बढ़ती गई, पहले दिन से आखिरी दिन तक एक भी भर्ती नहीं हो पाई, भर्ती एक नहीं हो पाई । देश के प्रथम 100 विश्वविद्यालयों में हमारे एक भी राजकीय विश्वविद्यालय नहीं हैं। मैं उसमें

लाईन बोलूंगा क्योंकि आपके पास बहुत सारे विभाग हैं । उसका नैक मूल्यांकन हो और आपको पैसे भी रविशंकर विश्वविद्यालय, महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय के लिए मिले हैं कि कम से कम 100 में नहीं आ सकें तो कम से कम प्रथम 50 में तो एक-दो यूनिवर्सिटी आए । इसके लिए रिक्त पदों पर भर्ती करके उसके सेटअप को पुनरीक्षित करके, सेटअप इसलिए पुनरीक्षित करना जरूरी है क्योंकि रोज नए डिपार्टमेंट खुलते रहते हैं, नए रिटायरमेंट होते रहते हैं । आज की शिक्षा की दृष्टि से और शिक्षा ही एक मात्र साधन है जिससे इस छत्तीसगढ़ को बदला जा सकता है । आपके पास 17 निजी विश्वविद्यालय हैं उसमें सिर्फ एक लाईन बोलना चाहता हूं । अब निजी विश्वविद्यालय को बिलासपुर, रायपुर, भिलाई, दुर्ग में प्रतिबंधित करके, आपको जो छूट देना है दीजिए और इन सबसे कहिए कि आप बस्तर में खुलवाइए, सरगुजा में खुलवाइए । इन सबको कहिए कि नए विश्वविद्यालय की परमीशन तब मिलेगी जब कैम्पस सरगुजा, बस्तर या दंतेवाड़ा में खोलेंगे (मेजो की थपथपाहट) । आपके पास पीठ है, अब वो पीठ है या मजाक है ? आपने पीठ में क्या किया है, एकाध बता सकते हैं । पीठ ने एक काम नहीं किया , एक अध्यक्ष नियुक्त नहीं सके । यदि एक अध्यक्ष नियुक्त किया तो उसको मानदेय भी नहीं दे सके । कम से कम या तो पीठ को हटा दीजिए और पीठ या तो सुंदरलाल शर्मा की जयंती मनाने के लिए मत रहे । सुंदरलाल शर्मा जी का तत्कालीन समय से अब तक क्या योगदान रहा, 1885 से लेकर 1941/42 तक उन्होंने, यानी उनके जैसी विभूति सदियों में पैदा होती है । छत्तीसगढ़ में पीठ की हालत तो दयनीय है । को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक आपने कभी नहीं ली । उमेश जी, सुन लीजिए । एक-एक लाईन में बोलते चल रहा हूं क्योंकि आपके पास विभाग बहुत है । को-ऑर्डिनेशन कमेटी की कभी बैठक नहीं हुई । प्रदेश में जितनी तरह की यूनिवर्सिटी हो, चाहे मेडिकल यूनिवर्सिटी हो या टेक्नीकल यूनिवर्सिटी हो, एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हो कम से कम एक जगह बैठते थे, माननीय मुख्यमंत्री होते थे, गवर्नर साहब कुलाधिपति होते थे, शिक्षा मंत्रीगण बैठते थे तो उनकी क्या समस्याएं होती थी । कागजों में दौड़ने के बजाय उनके मिनिट्स के हिसाब से अगले को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक तक उसमें एक्शन-टेकन रिपोर्ट देना होता था और उस को-ऑर्डिनेशन कमेटी के माध्यम से बहुत सारी समस्याएं हल हो जाती थीं । आप भूपेश बघेल जी का गुणगान कर रहे थे । अभी संस्कृति विभाग की चर्चा में भूपेश बघेल जी के बारे में एकाध लाईन बोलूंगा ।

श्री उमेश पटेल :- को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक कब हुई, यह भी डेटा निकाल लीजिए, गलत बयानी मत करिये ।

सभापति महोदय :- आदरणीय, उनको बोलने दीजिए ना । आप जवाब में बोल देना ना । जो भी बोल रहे हैं, बोल तो वही रहे हैं ना ।

श्री अजय चंद्राकर :- यूनिवर्सिटी और हायर एजुकेशन मिलाकर 3476 से ज्यादा साढ़े तीन हजार से ज्यादा पद खाली हैं। जब कांग्रेस की सत्ता थी तो उनको छत्तीसगढ़ में हिंदी ग्रंथ अकादमी भी है, यह

मालूम नहीं था। हिंदी ग्रंथ अकादमी क्या होती है तो वे हंसने लगे देख लीजिए। हिंदी ग्रंथ अकादमी नाम की कोई चीज है। छत्तीसगढ़ के लेखक, इतिहासकार, छत्तीसगढ़ में लेखन की इतनी समृद्ध परंपरा है, मैं बोलूंगा तो दो तीन घंटे लगेंगे। आप राजनांदगांव से आते हैं, पन्नालाल, पदुमलाल, बख्शी, मुक्तिबोध, ये कौन लोग हैं ? आप रायगढ़ से आते हो, रायगढ़ बोलपुर में तो सरस्वती पुत्र ही पैदा हुए हैं। गलत है या सही है।

श्री उमेश पटेल :- सही है, सही बोल रहे हो।

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति महोदय, बोलपुर में सरस्वती पुत्र ही पैदा हुए हैं। आज बसंत पंचमी है, उनके प्रकाशन को कौन जानता है। श्यामा स्वप्न, ठाकुर जगमोहन सिंह ने लिखा है, हिंदी का पहला उपन्यास माना जाता है। इन्हीं के बोलपुर के लेखक ने मिट्टी भर टोकरी लिखा। पहली कहानी मानी जाती है, कौन जानता है। हिंदी ग्रंथ अकादमी हम क्यों मनाए थे ? धूल फांकने के लिए मनाए थे। माननीय मंत्री जी, मैं तो आपसे आग्रह करता हूं कि आप जाकर एक बार दौरा करिए और हिंदी ग्रंथ अकादमी की हालत देखिए। इनकी उपलब्धियों को देखकर आप सर पकड़ लेंगे।

नैक मूल्यांकन, नैक मूल्यांकन में आपने जो बजट बनाया है, उसमें राज्य उच्च शिक्षाओं के लिए परिषद बना रहे हैं, मैं सोचता हूं कि वही काम करेगी, सबको ट्रेनिंग देकर नैक मूल्यांकन के लायक तैयार करेगी, कैरीकुलम को तैयार करेगी। सबसे महत्वपूर्ण बात आप जो उच्च शिक्षा के लिए परिषद बना रहे हैं, उस परिषद में नैक मूल्याकंन को अनिवार्य कीजिए। उन कॉलेजों को अनुदान देना बंद होना चाहिए जिसमें नैक मूल्यांकन नहीं हो। 9 विश्वविद्यालय को इतने छोटे मामले में इसलिए फटकार लगी, ये असंवेदनशीलता है कि लोकपाल की नियुक्ति नहीं है। आप तो बहुत डायनेमिक आदमी हैं। आपको लोकपाल को महाविद्यालय स्तर पर ले जाना चाहिए। जो छात्र हैं उनको कोई प्रॉब्लम नहीं होना चाहिए, यह सिर्फ यूनिवर्सिटी में नहीं। एक प्राध्यापक ऐसा होगा जो लोकपाल होगा, वह स्टूडेंट वेलफेयर के मामलों को देखेगा। यह आपको घोषणा करनी चाहिए ताकि छात्र को किसी भी तरह की परेशानी ना हो। माननीय सभापति महोदय, जो सबसे महत्वपूर्ण बात है, वह कैरीकुलम है। विश्वविद्यालयों में शिक्षा परिषद की कोई बैठक नियमित होती हो, मैं नहीं जानता। मैं तो आपको कहूंगा कि किसी आई.आई.टी. आई.आई.एम. के साथ करके हमारे जो कैरीकुलम है, वह अखिल भारतीय परीक्षाओं के स्तर के हैं कि नहीं हैं। उसका कैलेण्डर बनाने का काम, जो आपकी को-आर्डिनेशन कमेटी या आप जो परिषद बना रहे हैं, जिसके लिए आपने बजट में पैसा लिया है, वार्षिक कैलेण्डर ऐसा बने कि जो प्रवेश परीक्षाएं राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर की जो संस्थाएं हैं, चाहे वह तकनीकी क्षेत्र के हों, प्रबंधन क्षेत्र के हों, सामान्य क्षेत्र के हों, बच्चे बाहर पढ़ने जाते हैं, उस प्रवेश के समय उनके रिजल्ट आ जाएं, इसको सुनिश्चित करना भी कैरीकुलम के लिए जरूरी है और कैरीकुलम का यह परीक्षण करना कि यह अखिल भारतीय स्तर की परीक्षाओं के स्तर कितनी है, 21वीं सदी में इसरो चांद में हम दक्षिणी ध्रुव भारत उतर रहा है, साउथ की

यूनिवर्सिटी में यह पढ़ाया जा रहा है और हम 1959 में पहली बार अमेरिका ने नील आर्मस्ट्रांग को चंद्रमा में उतारा है, यह पढ़ा रहे हैं। हम भारत की उपलब्धि जानते ही नहीं है। क्योंकि हमारे कैरीकुलम में है ही नहीं। यह बात छत्तीसगढ़ में बिल्कुल नहीं देखी जा रही है, आप डायनेमिक आदमी हैं, आप इस बात को देखिए कि हमारा कैरीकुलम यदि यहां विद्या परिषद बनाने में अक्षम हैं तो किसी विद्वत संस्थान से अनुबंध करके उसको अपग्रेड अखिल भारतीय संस्थाओं के लेबल का बनाईए। सभापति महोदय, मैंने रिक्त पदों के बारे में कह दी। प्राईवेट यूनिवर्सिटी लाने के बारे में भी आपकी यह योजना होनी चाहिए कि जो राजकीय विश्वविद्यालय हैं, जिनमें परंपरागत कोर्स रहते हैं, रोजगारमूलक कोर्स लाएं और यह कोर्स लाएंगे उसका फ्रेम यदि वे पहले देते हैं तब हम उनको अनुमति दें। यह भी देखें कि उसमें प्लेसमेंट कितना है। इस बात का भी अध्ययन होना चाहिए कि हमारे जो विश्वविद्यालय हैं, प्लेसमेंट एजेंसी किस लेवल की आती है और कितना प्रतिशत प्लेसमेंट का रहा और अधिकतम पैकेज कितना मिला, न्यूनतम पैकेट कितना मिला। यह रिपोर्ट सरकार के पास हर हाल में आनी चाहिए। ताकि निजी विश्वविद्यालय किसी भी तरह का धंधा न बने। अब मैं स्कूल शिक्षा विभाग में कुछ बातें बोलता हूं।

श्री जनकराम ध्रुव :- माननीय सभापति महोदय, मैनपुर में ऐसा विश्वविद्यालय है, जहां एक भी बच्चे नहीं आते हैं। वह पिछले 15 सालों से खाली चल रहा है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- रिकॉर्ड में कितना है ? आप उसकी जांच की मांग कीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- मामा श्री, अभी आप बोलेंगे।

श्री जनकराम ध्रुव :- पैरी-गंगा ऐसा विश्वविद्यालय है, जहां पिछले 15 सालों से एक भी बच्चे दिखाई नहीं देते हैं। पता नहीं कि वहां डिग्री देते हैं या क्या देते हैं?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, उस समय के तत्कालीन शिक्षा मंत्री जी बहुत मुस्कुरा रहे हैं। मैंने एक विषय उठाया था कि माकड़ी कॉलेज में एक भी शिक्षक नहीं था। बस्तर में कुल 1,400 पद में से लगभग 500 पद भरे हुए थे और बाकी खाली हैं। जब आप जवाब देंगे तो बताएंगे कि अभी उसकी क्या स्थिति है ? क्योंकि हमारी नीति है - लुक बस्तर। बजट पत्रिका में लुक बस्तर और सरगुजा आया है।

श्री उमेश पटेल :- सुनिये, आप गलत-गलत बोलते हैं और कहीं का कहीं पर जोड़ देते हैं। क्या आपको पता है ?

श्री अजय चंद्राकर :- माकड़ी का नहीं उठाये थे ? क्या माकड़ी में एक भी शिक्षक था ? आप मुझे टोक रहे हैं तो हां या नहीं बोलिये।

श्री उमेश पटेल :- आप मेरी पूरी बात तो सुन लीजिए। माकड़ी में पहले शिक्षक नहीं थे। उसके बाद जब भर्ती हुई तो माकड़ी में शिक्षक आ गये। आप इस बात को क्यों नहीं बोलते हैं ?

श्री अजय चंद्राकर :- अच्छा, अब आ गये होंगे। आप यह बोलिये कि एक भी शिक्षक नहीं था और कॉलेज चल रहा था।

श्री उमेश पटेल :- किसके समय में ?

श्री अजय चंद्राकर :- आपके समय में।

श्री उमेश पटेल :- आप लोगों को 15 साल तक मौका मिला, लेकिन आपने भर्ती नहीं की।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आप स्कूल शिक्षा विभाग के प्रतिवेदन के पेज क्रमां 14 में देखियेगा कि एक आश्चर्यजनक विषय है कि प्राथमिक शाला में 25 लाख, 36 हजार, 137 बच्चे हैं। मीडिल स्कूल में 14 लाख, 57 हजार, 393 बच्चे हैं। मैं इस एक कॉलम को पढ़ रहा हूं। बीच में 11 लाख बच्चे कहां गये ? हाई स्कूल में आते तक वह 8 लाख हो गये। फिर से 6 लाख बच्चे गायब हो जाते हैं। हायर सेकण्डरी में आते तक 6 लाख, 50 हजार बच्चे हो जाते हैं और 1.5 लाख बच्चे पुन: गायब हो जाते हैं। आपका प्रतिवेदन बोलता है कि आपके राजकीय विश्वविद्यालय में G.E.R. 19.6 प्रतिशत है। आपकी संख्या में उसमें 3 लाख बच्चे पहुंचते हैं। यदि आप प्राइवेट स्कूलों की संख्या को जोड़ देंगे, एकाध लाख और जोड़ देंगे तो उनमें 4 लाख बच्चे हैं। लेकिन मैं प्राइवेट स्कूलों को इसलिए नहीं गिन रहा हूं कि आपने शासकीय स्कूलों की संख्या बतायी है। यदि हम निजी स्कूलों की संख्या को जोड़ देंगे तो G.E.R. 19.6 प्रतिशत है। भारत की स्थिति उसमें 27-28 प्रतिशत है। तमिलनाडू ऐसा राज्य है जो लगभग 50 प्रतिशत से ऊपर है। आप इसे एक चुनौती के तौर पर स्वीकार कीजिए कि निजी क्षेत्र की भागीदारी अपनायें, शासकीय कॉलेज खोलें, परंतु मेरे इस पंचवर्षीय कार्यकाल में मैं G.E.R. को छलांग लगाकर कम से कम 30-40 तक पहुंचाऊंगा ही। जब तक एक लक्ष्य आधारित कार्य योजना नहीं बनेगी, तब तक हम इस बहस में परंपरागत रूप से भाग लेते रहेंगे और छत्तीसगढ़ के साथ अन्याय होगा। मैं इस बात को बार-बार इसलिए बोलता हूं क्योंकि आप में क्षमता, केलिवर है।

माननीय सभापति महोदय, आप एक दूसरा आंकड़ा देखियेगा। आपने मरम्मत, स्कूल जतन की बात कही थी। यहां गुण्डरदेही के माननीय विधायक बैठे थे। आपने D.P.I. से कार्य संख्या 25,009 दिया है और फिर D.M.F. से 928 दिया है। आपने समग्र-समग्र लिखा है तो यह समग्र क्या है ? यह कौन से हेड का पैसा है ? इसमें समग्र शिक्षा तो नहीं लिखा है तो समग्र का क्या अर्थ है ? हम लोग अपने विवेक से तो समग्र का अर्थ नहीं समझ सकते हैं, लेकिन उसमें काफी संख्या और काफी राशि जारी हुई है। आप आपके स्कूल शिक्षा विभाग के प्रतिवेदन में चाक के मूल्यांकन को थर्ड पार्टी को दीजिए या इसकी सोशल ऑडिट करवाइये कि स्कूलों में क्या स्थिति है? जो चाक ने मूल्यांकन किया है - Accelerated Learning for a Knowledge Economy. यह क्या चीज है और इसके empact क्या और कितने हुए हैं ? आपने जो भी मापदण्ड तय किये हैं, उसमें आप किसी भी एक स्कूल का मॉडल बनाकर उसका अध्ययन तो कीजिए। आपके पास एक संस्था S.C.R.T. है। S.C.R.T. में जो चेयरमेन बनते हैं वह अमूमन उसको सजा का पद

मानते हैं। जब मैं शिक्षा मंत्री था तो मैं S.C.R.T. को स्वायत्त संस्था बनाने की ओर बढ़ा था। मैंने उसके नियम-कानून, भर्ती नियम और सेटअप बनाये थे। प्रदेश में लोग क्या पढ़ रहे हैं ? हम लोगों को क्या पढ़ाना चाहते हैं ? वह कैसे तय करेंगे कि क्या पढ़ाएंगे ? हम उनको बताएंगे कि भारत में कौन सा स्कूल C.B.S.E., I.C.I.C. से लेकर जितने प्रकार के बोर्ड हैं, हमारा curriculum चाहे हिंदी हो तो हम हिंदी में हीनता क्यों पालते हैं ? हम अंग्रेजी में भी पढ़ाएंगे। लेकिन क्या पढ़ाया जाए, यह आज का इश्यू है । पूरी दुनिया में सनातन का अध्ययन हो रहा है । मैंने दो अशासकीय संकल्प लगाए हैं, यदि अशासकीय संकल्प आएगा तो मैं सनातन के बारे में बोलूंगा । स्कूल में कालखण्ड कितना वैज्ञानिक है, वह कौन तय करेगा ? आजतक वह जारी हुआ या नहीं हुआ ? कक्षा 1 से लेकर 12 तक एस.सी.आर.टी. क्यों नहीं बना दिया ? मैं बोल रहा हूं कि एस.सी.आर.टी. के कोर्स कहां पर के हैं ? इस शताब्दी के हैं या पिछली शताब्दी के हैं या कब के हैं। जो लेखक किताब तैयार करते हैं, उसका शैक्षणिक Background कितना है, वे लोग कितने Academic हैं ? कभी उसका अध्ययन किया गया या नहीं किया गया ? यहां से मूल है कि हम कौन से स्तर की सामग्री तैयार कर रहे हैं, किसके द्वारा तैयार करवा रहे हैं और वह कैसे लोगों तक जा रही है । यह एक बड़ा प्रश्न चिह्न है, जिसको एस.सी.आर.टी. को मजबूत करके और यदि छत्तीसगढ़ में नहीं है तो विद्या में आदान-प्रदान होगा, तभी विद्या आगे बढ़ी है । सांस्कृतिक आदान-प्रदान, शैक्षणिक आदान-प्रदान राष्ट्र के संघीयों में भी शामिल रहा है । वह इनके नियम में था कि हम बाहर का आदमी नहीं लाएंगे, लेकिन बाहर के आदमी आये थे, अच्छे पैसे में आये थे ।

माननीय सभापति महोदय, प्रदेश में लगभग 74 हजार रिक्त पद हैं । क्षेत्रीय असंतुलन है या नहीं है, इसका अध्ययन करना आवश्यक है । अब क्षेत्रीय असंतुलन में इस बात का अध्ययन करना कि दूरी है, दर्ज है । बस्तर में दर्ज संख्या कम हो सकती है, वहां दूरी कम होनी चाहिए, पर यदि मध्य छत्तीसगढ़ है । माननीय मंत्री जी, बस्तर में क्षेत्रीय असंतुलन में दूरी विषय हो सकती है, पर मध्य छत्तीसगढ़ है तो डेंसिटी विषय होगी कि हम कहेंगे कि बस्तर में स्कूल कम है या ज्यादा है, दर्ज संख्या कम है या ज्यादा है । मध्य छत्तीसगढ़ में संख्या ज्यादा होगी ही । आपको ज्यादा स्कूल खोलनी पड़ेगी क्योंकि डेंसिटी मध्य छत्तीसगढ़ में ज्यादा है । जब हम किसी क्षेत्र से तुलना करते हैं तो इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि जनसंख्या भी एक कारक है, डेंसिटी भी एक कारक है, जिसमें यह बात होनी चाहिए । अब आपसे एक आग्रह है कि इस देश को लगभग 33 सालों बाद कस्तूरीरंगन जैसे शिक्षाविद ने शिक्षा नीति बनाई । उनकी बड़ी आलोचना हुई कि हम दक्षिण पंथी हैं, ये हैं, वो हैं, लेकिन आलोचना का कोई तथ्य नहीं बता सके । आजाद हिन्दुस्तान में उतने बड़े वैज्ञानिक ने कभी शिक्षा नीति नहीं बनायी थी, राजीव गांधी जी के समय 1987 में आखिरी शिक्षा नीति जारी हुई थी । वह किसने बनाया था, वह लंबा बहस का विषय हो जाएगा । हमने उसको अभी तक स्वीकार नहीं किया है । इस बजट में कोई एक कमेटी बने, जो यह बताए कि उस शिक्षा नीति के अनुरूप हमें संसाधन जुटाने में, कोर्स बनाने में,

curriculum से लेकर सब चीज में उसमें कितना पैसा खर्च आएगा, सेट-अप में कितना परिवर्तन आएगा और हमने स्वीकार कर लिया, मध्यप्रदेश ने स्वीकार कर लिया । मध्यप्रदेश के जो वर्तमान मुख्यमंत्री हैं, जब वे उच्च शिक्षा मंत्री थे तो वे देश में सबसे तेजी से उसके क्रियान्वयन के लिए जाते जाते थे । हमारे यहां भी नई शिक्षा नीति के आलोक में स्वीकार करते हुए उसके आलोक में हमने इतने सारे कदम उठाए। यह स्पष्ट होना चाहिए ।

माननीय सभापति महोदय, मध्याह्न भोजन में हमेशा विवाद रहा । धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भोजन में अंडा दें या न दें । पौष्टिक क्या दें, कैसे दें । रेडी टू ईट को इस कम्पनी को दे दें, उस कम्पनी को दे दें । आप स्वयं सक्षम आदमी हैं । प्रोटीन का अंडे से अच्छा कोई Alternate Option आपके पास नहीं हैं तो तमाम संकीर्णता को छोड़कर Ready to Eat में अंडा शामिल करें । छत्तीसगढ़ में पिछले 5 साल में कुपोषण बढ़ा है, घटा नहीं है । यह मैं पूर्व महिला एवं बाल विकास मंत्री के सामने बोल रहा हूं ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- उस समय आप अंडा का विरोध करते थे और अभी बोल रहे हैं कि उससे बेहतर प्रोटीन कोई है ही नहीं । आपकी सरकार आ रही है, तब आप अंडा दो, बोल रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं विरोध नहीं करता था । मैं इस मामले में व्यवहारिक आदमी हूं । आप मेरे भाषण का रिकार्ड निकलवाकर देख लीजिए ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- हमारे समय में अंडा देते थे, तब आपका सनातन धर्म खड़ा हो गया था ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- उच्च शिक्षा मंत्री जी ने अंडे का विरोध किया था।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, यह जो समग्र शिक्षा है, आपकी साईकिल की योजना है । आपने जो नये प्रयास किये हैं, मैं उसकी प्रशंसा करता हूं कि उसके परिणाम आने में समय लगेंगे । आपके जो नये प्रयास हैं, वह आपके प्रतिवेदन के पहले और दूसरे पेज में ही है । आप उसको बताएंगे, वह आपके भाषण में आएगा, लेकिन इसके अतिरिक्त कांग्रेस शासन ने जो घोटाला किया । मेरे ध्यानाकर्षण में चर्चा शुरू हुई, वह चर्चा अन्य प्रश्नों में गई । आत्मानंद स्कूल को गरीब का बच्चा, ऐसा बच्चा, वह बच्चा, कांदी लूने वाला बच्चा, मछली पकड़ने वाला बच्चा, ऐसा-ऐसा विशेषण लगाकर बोल रहे थे जैसे वही सबसे ज्यादा दीन-हीन,गरीब और छत्तीसगढ़ को जानने वाले हैं, हम लोग बाहर से आकर बसे हैं। वह मेरे गांव के रहने वाले हैं। मैं जानता हूं कि वह कितनी बार मछली पकड़ने गये हैं। तै पूछ ना ओ हा खरौद के हे कि नाहीं ? तोर गांव खरौद हे कि नाहीं ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- हां। लेकिन रिश्ता-नाता, सुख-दु:ख मा जाथस, बाकी समय कहां जाथस ? जब भात खाना हे तब जाथस।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं हा तोर गांव का कालेज ला खोले हंव, ये बता देवत हव। तै ओतक बड़ चीज अपन कार्यकाल मा नहीं करवा सके।

माननीय सभापति महोदय, आत्मानंद योजना। माननीय सभापति महोदय, मैं उस दिन एक चीज का उल्लेख करना भूल गया था कि उसमें प्रतिनियुक्ति का पैसा भी देते हैं। दूरी के हिसाब से पांच सौ, डेढ़ हजार, दो हजार देते हैं। जब आप श्वेत-पत्र जारी करेंगे तो ये कौन से मद से प्रतिनियुक्ति का पैसा देते थे ? तो यह भी यह एक प्रतिनियुक्ति घोटाला है। आप प्रतिनियुक्ति का पैसा कौन से मद से देते थे ? रेनोवेशन को छोड़, मरम्मत के छोड़, रंगरोगन के छोड़, एक पैसा, नया कदम आत्मानंद स्कूल के लिए उठाया हो तो मैं बैठता हूं, मछली धरने वाले, कांदी लूहने वाले, का-का बोलत रहेस न, हां तो बताबे कि कौन सा नया काम करे हस ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आप ला तकलीफ हे का ? मछली पकड़ैया, कांदी लूऐय्या, खेत जोतैया के लइका अंग्रेजी पढ़ते तो तोला तकलीफ हे का? तकलीफ हे तो बता।

श्री अजय चन्द्राकर :- तो वैसन तूही भर ला आथे, हमन ला नइ आय ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- तोला नइ आय, मोला नइ आय, वाला बात नइ हे। भइया, तथ्यात्मक बात करो न। मछली मा मत आ, ओ हा तो मोर पेशा हे, मैं तो करबे करहूं, नइ बोलबे तभो करहूं।

सभापति महोदय :- ठीक है, ठीक है।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, अब हिन्दी मीडियम के स्कूलों को आपने आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल में बदल दिया। लगभग 34 लाख बच्चे थे। बहुत से बच्चों को स्कूल छोड़ना पड़ गया। मैं आपको एक बात बता दूं। कोरोना के समय पूरा पोटा स्कूल बंद था। यह स्कूल आपके अधीनस्थ आयेगा या नहीं आयेगा, मैं नहीं जानता। परन्तु स्कूल शिक्षा है। यहां लगभग 30 हजार सीटें हैं। पूरी तरह से बंद थे। परन्तु उस दो साल में पूरा खर्च बुक हुआ है, स्कूल शिक्षा का यह पोटा केबिन घोटाला है, यह आप नोट कर लीजिये। आप उसकी जांच करा दीजिये।

श्रीमती चातुरी नंद :- उस समय भी रंग रोगन होवत रहिस हे, भइया। काबर कि मैं शिक्षक रहेव मैं हा जानत हंव। कोरोना काल के समय भी प्रधान पाठक रंगरोगन के काम करवात रहिस हे। भले स्कूल बंद रहिस हे, लइका नहीं आत रहिस हे, लेकिन रंगरोगन के काम होवत रहिस हे।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन खर्च 11 प्रतिशत बुक हुआ है, वह खुद स्वीकार कर ली। एक भी बच्चे नहीं आते थे।

माननीय सभापति महोदय, तीसरी बात है, जिसके लिए मैं हमेशा बोलता हूं, वह है किलोल पत्रिका। यह हमारे आरोप-पत्र में भी था। जबर्दस्ती, समग्र शिक्षा के इस मद से, उस मद से, बी.आर.सी., डी.आर.सी. होते हैं, उसको आजीवन सदस्य बनना है और बनाना है। उस समय कम से कम सौ करोड़ रूपये के सदस्य बनाये गये और पत्रिका कितने स्कूलों में जाती है, कितने स्कूलों में नहीं जाती है, कितने

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

बच्चें पढ़ते हैं, उसमें कौन लिखता है, कौन छापता है, उसका भगवान ही मालिक है। यह पैसे की खुले तौर पर लूट है। प्रशासनिक दादागिरी का एक शानदार उदाहरण है। मैं तो आपसे कहूंगा कि इसकी जांच होनी चहिए।

सभापति महोदय, आपके पास पी.एम. श्री स्कूल है। जितने पी.एम. श्री स्कूल आये हैं, तो मैं तो कुरूद-कुरूद कहूंगा नहीं, आपकी निगाहें पूरे प्रदेश की तरफ पड़े, लेकिन हमारी ओर पड़ जाये तो अच्छी बात है। सभापति महोदय, मैं आपको बता दूं कि महतारी दुलार योजना, आपने कोरोना वालों के लिए लगाई। पहली बार 20 करोड़ रूपये का आयोजन बजट में बृजमोहन अग्रवाल जी ने किया है। उससे पहले महतारी दुलार के लिए पैसा कहां से आता था ? ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा था, जिसमें भ्रष्टाचार हमने (आपने) किया नहीं हो।

माननीय सभापति महोदय, आपने 5 साल में मात्र 34 स्कूलों का उन्नयन किया था। तो स्कूल शिक्षा में एक और चुनौती, जिसको आप चुनौती के तौर पर स्वीकार कीजिये। हमारे छत्तीसगढ़ की साक्षरता लगभग 77 प्रतिशत है। केरल का साक्षरता दर 96-97 प्रतिशत है। हम इतनी अवधि में शत-प्रतिशत जायेंगे, वहां पर ज्यादा फोकस करेंगे, जहां पर सबसे कम साक्षरता है।

सभापति महोदय, दूसरी बात प्रदेश में जितने बड़े-बड़े संस्थान हैं, समझ गेस न ? इसरो मा पूरा वैज्ञानिक दक्षिण से पैदा होथे, कोई नार्थ ईस्ट से तीरंदाज पैदा होथे, हरियाणा से पहलवान पैदा होथे, एक तरफ धावक पैदा होथे, हमर तरफ पांच साल में पैदा होथे गोबर बीनने वाला ? समझ गेस न ? कोई भी ऐसी टूर्नामेंट है, स्कूल के जो टूर्नामेंट होते थे, वह पूरी तरह बंद है, ब्लॉक स्तरीय, जिला स्तरीय, प्रदेश स्तरीय ओपन टूर्नामेंट होते थे, 20 करोड़ रूपया ग्रामीण खेलकूदों के लिये रखे हैं, आप उसको बुलवाईये । स्कूल के टूर्नामेंट शुरू कीजिए, हमारी टीम नेशनल तक जायें । 36 परशेंट के बाद अब एक ऐसे स्कूल की परिकल्पना होनी चाहिये, जो दिव्यांगों के लिये हो । आप शिक्षा मंत्री हैं, नर्सरी से लेकर पी.जी. कॉलेज तक वह रेसिडेंशियल हों, मैं उच्च शिक्षा में बोलते-बोलते रह गया, अमरकंटक की भांति जनजातीय विश्वविद्यालय की परिकल्पना आप प्रस्तुत कीजिए । जनजातीय स्कूल के ऑफ कैम्पस जशपुर और सरगुजा में खुले, मुख्यालय उसका दंतेवाड़ा हो । सभापति महोदय, स्कूल शिक्षा विभाग के बाद धार्मिक न्यास आ गया । माननीय महोदय, इसमें फोटो गलत छपवा दिये हो, एक देवी को आप लोग दूसरा देवी बना दिये हो, दंतेश्वरी ला महामाया बना दे हव भईया, अधिकारी मन सुन लो अऊ महामाया ला दंतेश्वरी बना दे हव । कम से कम प्रतिवेदन छपाथव त देख ले करव । मैं आज कार्यवाही के मांग नई करंव, लेकिन ये हा बड़े गलती हरे कि प्रतिवेदन जो बंटता है, उसमें इतनी बड़ी गलती स्वीकार नहीं होती । माननीय मंत्री जी लिबरल आदमी हैं, उसको हंस कर टाल देते हैं । इसमें मुझको एक ही बात कहनी थी । मैंने एक प्रश्न किया था, मैं आपको प्रश्न की कॉपी दे दूंगा । मुझे पांच साल में एक ही लाईन का उत्तर मिला, धार्मिक न्यास के बारे में बात करवाया, अरबों-खरबों रूपये की संपत्ति

धार्मिक न्यास में है । शासन के पास उसका कोई रिकार्ड नहीं है । धर्मस्व का एक प्रश्न लगाया था, मेरे इलाके के ऐसे मंदिर थे, जिसमें 10-10, 20-20 एकड़ खेत थे, मेरी जानकारी नहीं थी । मुझे यह उत्तर दे दिया, डायरेक्टरेट और संचालनालय बना रहा हूँ, पांच साल में डायरेक्टरेट नहीं बना सके, संभागीय नहीं बना सके, इस प्रतिवेदन में एक पद है, हम एक डायरेक्टरेट बनायेंगे, संचालनालय बनायेंगे, जो न्यास बनते हैं, जिसमें न्यास नहीं बने हैं, उसके पैसे को कोई परिवार या कोई व्यक्ति खा रहा है, जिसका कोई योगदान नहीं है, सर्वाकार बनकर बैठे हैं, एक मंदिर के तो 50 लाख रूपये निकले थे, 50 लाख रूपये निकलने के कारण बताया था कि इसको जनहित में खर्च करना था । सभापति महोदय, मैं एक मंदिर बता रहा हूँ, उसकी 20 एकड़ है, शिव पुराण हो रहा है तो मैंने लिखा कि 50 लाख रूपया जमा है भई, शिव पुराण करा रहे हैं 1 लाख रूपया दे दो, उसमें पैसा जमा है । कई ट्रस्टों में उसे खर्च कैसे करेंगे, उसके कोई निर्देश नहीं है । लाखों लोग कुंडली मारकर बैठे हैं, जिनका योगदान उस मंदिर में नहीं है । मैं एक उदाहरण बता देता हूँ। आप जैतूसाव मठ का इतिहास निकाल लीजिए, आप अच्छे से जानते हैं, वहीं से चुनकर आते हैं । उसमें पैसा कितना है और खर्चा कैसे होता है ? कब उसका निर्वाचन हुआ, कब उसका गठन हुआ, कब उसका प्रकाशन हुआ ? देख लीजिए । उसका पैसा कितना निकला है, आप देख लीजिए ? छत्तीसगढ़ के जितने मंदिर हैं, जिसमें संपत्ति है, उसका न्यास विधिवत बनना चाहिये और उसका देखरेख और प्रबन्धन होना चाहिये । दूसरी बात, जो रामलला दर्शन योजना बनी है, वह 20 हजार धर्मस्व यदि देखेगा तो 20 हजार वार्षिक की संख्या कम है, धर्मस्व उसको देखेगा तो छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 3 करोड़ है । कौन देखेगा, कौन भारसाधक विभाग नहीं होगा, धर्मस्व की चर्चा हो रही है, इसलिये मैं कह रहा हूँ । वह संख्या ज्यादा होना चाहिये । तीसरी बात यह है आप जो मानदेय सरकारी मंदिर को दे रहे हैं, वह लोगों के बढ़ने चाहिये । सभापति महोदय, मैं संस्कृति और पुरातत्व में भाषण तो बहुत देते रहता हूँ...।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, धर्मस्व के बारे में बोलथे त माननीय महोदय जी ला ये कहना चाहथंव, मंत्री जी भी सुनथे, जब अयोध्या में ओतका बड़े भव्य मंदिर बने हे, गांव-गांव म जो मंदिर पहले से बने हे, बड़े मन करके सबो जगह देखना चाहिये कि एके जगह मंदिर बनाय ल हो जाही ? हमन छत्तीसगढ़ के गरीब आदमी अरन, अयोध्या कैसे जाबो ? तुमन के ट्रेन लेगिहव ? इंहै दर्शन सब ला करावव ।

समय :

2.00 बजे

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, आपने काफी वर्षों तक पर्यटन विभाग देखा है। पर्यटन विभाग में जो कमजोरी है और जो अच्छाई है, उसको कैसे ठीक करना है वह आप अच्छे से जानते हैं। लेकिन मैं कुछ चीजों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। मुझे भी इस विभाग में कुछ दिन,

एक से डेढ़ साल काम करने का अवसर मिला। जब पांच साल तक यह सरकार थी, आपने तब की राम वन गमन पथ में सोशल ऑडिट कराने की बात कही है। बद्रीनाथ में शंकराचार्य भगवान की यूनिक मूर्ती बनाई गई है। उसको उसी दक्षिण के कर्नाटक के कलाकार ने बनाई है, जिसने अभी भगवान की राम की मूर्ती को बनाई है। जहां भगवान नहीं गये हैं, उस हर जगह राम भगवान की मूर्ति बनाकर हर जगह पैसा खाने का जतन। आप चंपारण में चैतन्य महाप्रभु की और वल्लभाचार्य जी की एक-आत भव्य मूर्ति लगवाईये। आपकी जो पॉलिसी है कि वल्लभाचार्य जी के प्रागट्य स्थल की 84 कोस की बैठकें जो देश में है, जो पर्यटन का विपणन होता है, जो विज्ञापन होता है, उसके बोर्ड कहां पर लगे। हमारे पांच शक्तिपीठ हैं, तो उसके विज्ञापन कहां पर लगे। पूर्वी भारत में या बंगाल के असम में भी उसके बोर्ड लगने चाहिए कि भाईसाहब छत्तीसगढ़ में एक शक्तिपीठ दंतेवाड़ा भी है, कुदुर माई भी है। जिधर उनकी ज्यादा मान्यता है। दुनिया में सबसे अच्छे जंगलों में से एक हमारे पास है। उसमें नये पर्यटन स्थलों की खोज, इंफ्रास्ट्रक्चर, क्या-क्या मिनिमम सुविधाएं होनी चाहिए, वह मिनिमम सुविधाएं तो हो लेकिन राम भगवान के नाम पर जो पैसा घोटाला हुआ है, उसकी जांच होनी चाहिए। आप मोटल में नहीं आए थे, उससे पहले उसको ठीक करने के लिये जो खरीदी हुई है उसकी जांच होनी चाहिए। क्योंकि उसको ठीक करने के लिये, उसमें रिनोवेशन के नाम पर जो साम्रगी खरीदी गई, उसमें अभी तक एक भी जगह कोई भी काम नहीं हुआ है। मुक्तांगन के टिकट घोटाले में एक आदमी को सस्पेंड कर दिया गया, फिर उसको थोड़े दिन में बहाल कर दिया गया। मैं उस विषय को उठाना बंद कर दिया कि हटाओ करके। आप समझ रहे हैं न कि इनके लिये तो हर जगह अवसर था। मैंने वह खेलगढ़ी का नाम नहीं लिया। स्कूल शिक्षा में खेलगढ़ी योजना में भी सामग्री खरीदकर पैसा कमा लिये। अब मुक्तांगन में टिकट घेटाला हुआ। जंगल सफारी तो ऐसी थी कि उसके कर्मचारियों को वेतन देने के लिये उनके पास पास पैसे नहीं थे। प्रसाद योजना की स्थिति यह है कि जब से वह प्रसाद योजना शुरू हुई है, तब से निर्माण कार्य ऐसा चल रहा है कि वह पूरा होगा या नहीं होगा, वह नहीं मालूम और दूसरा वाला शुरू होगा या नहीं होगा, यह नहीं मालूम। तीरथ बरत योजना बंद हो गयी है।

सभापति महोदय, अब दूसरी बात। पर्यटन और संस्कृति के विषय में आ जाता हूं। इसमें छत्तीसगढ़ी राजभाषा का विषय है। अभी आप कह रहे थे कि छत्तीसगढ़ की अपनी लिपि नहीं है। लेकिन आप यह अच्छे से जानते हैं कि छत्तीगसढ़ का व्याकरण हिन्दी से पुराना व्याकरण है। वह एशियाटिक सोसाइटी के जनरल में भी छपा है और बंगाल गजेटियर में भी छपा है और सी.पी. बरार के समय में भी वह प्रकाशित हुआ। आप उसकी लिपि बनाईये। उसमें भाषाविदों को लगाईये।

श्री रामकुमार यादव :- तो ओला हमन बनाबो का ? ते ओती ला बोल ना। ते हमिच ला कहथन। तुंहर रेस ला एती उतारथो। बबा बनावय कहि के ओती कहे कर ना।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, अब मैं उनके समर्थन में थोड़ा बोल देता हूं। उनको जो चीजें संस्कृति और इतिहास लगती है, जो चीजें समझ में आती है, वही चीजें बोल देता हूं क्योंकि यह चीजें उनके समझ में नहीं आयेगी। हम लोग इटली में फ्लोरेंस गये थे, यह अफसर लोग भी गये होंगे। फ्लोरेंस में डेविड की एक प्रतिमा है। उसको देखने दुनिया-दुनिया से लोग आते हैं। डेविड के शरीर में कोई कपड़े नहीं है। मुक्तांगन में भूपेश बघेल जी की सांकड़ लेते हुए डेविड जैसी स्थिति में एक प्रतिमा लगाओ और कांग्रेसियों के लिये उसको तीर्थ स्थल घोषित करिये। वहां तालाब बना हुआ है। उसकी रिपलिका, नदी बनाकर उसमें पुन्नी नहाते हुए बीच में कूदते हुए वैसी ही फोटो लगाइये, वहीं तुम्हारे लिये छत्तीसगढ़ का दर्शन होगा बाकी चीज तुमको समझ में नहीं आयेगी। आप दो रिपलिका लिख लीजिये। एक, फ्लोरेंस में डेविड की जैसी प्रतिमा है, भूपेश बघेल जी की सांकड़ लेते हुए वैसी ही प्रतिमा बनाये। वह सांकड़ देने वाला जो लड़का था, वह मर गया। अब उसका लड़का सांकड़ देता है।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, जो प्रतिमा लगायेंगे उसका खर्चा कौन देगा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- यह रामकुमार यादव जी और अनिला मैडम देंगी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- आप बजट में तय कर दीजिये कि प्रतिमा लगायेंगे।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अजय चन्द्राकर जी, आप लगातार छत्तीसगढ़ की लोक कला और संस्कृति का अपमान कर रहे हैं। क्या सोटा खाना गलत है ? यदि वह हमारी परंपरा है तो मुख्यमंत्री जी ने खाया था, आप भी खाईये। आप यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति का लगातार अपमान कर रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, सोटा खाने से दिमाग ठीक हो जाथे। जैसे पगला मन ला ये हे लगा देथे ना तो ओकर दिमाग ठीक हो जाथे।

श्री अटल श्रीवास्तव :- क्या नदी में स्नान करना, छत्तीसगढ़ की संस्कृति नहीं है। राजिम कुम्भ का मेला शंकराचार्य जी तय करते थे, वह आप तय करने लगे। आपने माघी पुन्नी मेला को राजिम कुम्भ बना दिया। वहां आप सब फर्जी लोगों को लाकर स्नान करा रहे हैं। आप उसे राजिम कुम्भ का नाम दे रहे हैं। 15 साल में आप लोगों ने लाखों करोड़ों रूपये का भ्रष्टाचार किया है।

श्री रामकुमार यादव :- छत्तीसगढ़ के परम्परा ला हमर ओ. पी. चौधरी साहब भी जानत हो ही। हमर गांव मन में का करथन गांव मन में पुजई होथे। ता का ओ परम्परा गलत हे।

सभापति महोदय :- यादव जी, आप हर विषय में मत खड़े होईए।

श्री रामकुमार यादव :- भई मान लो कहात हे कि अब छत्तीसगढ़ के इतिहास हे, छत्तीसगढ़ी के लेखा हे करके तभो हम ला कहिथे माननीय सभापति जी तुमन ओ ला समझाओ न। ओति कडगा कथे। ओ मन ला बनाए हो, कहिथे।

सभापति महोदय :- मैं हा ओला बोले हौं कि तुमन हर बार में खड़े हो हूं ता कहां ले बोलही।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति जी, ओति के रिस ला हमन ऊपर उतारथे। ओला मंत्री नइ बनाए हे ता हमन ओला काय करबो।

सभापति महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी हो गया। आप बोलिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, माननीय अटल जी हमारे श्रद्धेय हैं हम श्रीवास्तव को हटा देते हैं। हम अटल कहें तो अटल जी हमारे श्रद्धेय हैं। जिनका भी नाम अटल हों, वह हमारे श्रद्धेय हैं। मैं जिस वार्ड में रहता हूँ वह आदिवासी सुरक्षित वार्ड है। मेरे घर के सामने से गौरा-गौरी निकलती है मैंने बचपन में सबको साकड़ खाते देखा है, लेकिन हम उस परम्परा की मार्केटिंग नहीं करते हैं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप लोग पूरे राम मंदिर की मार्केटिंग करके बैठे हैं। आप बता कर रहे हैं। भगवान राम हमारे आराध्य हैं, अयोध्या में उसकी मार्केटिंग करके भगवान राम के नाम से सत्ता में आना चाहते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, ए देश के प्रधानमंत्री (व्यवधान) वह मार्केटिंग नो हरे।

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप भगवान राम के नाम से सत्ता में आना चाहते हैं। आप लोग मार्केटिंग करते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, विदेश में ओम कहात हे तेला टी.व्हीं में देखाईस हे। ओ मार्केटिंग नो हे।

कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री रामविचार विचार नेताम) :- माननीय सभापति महोदय, एक मिनट। माननीय अजय चन्द्राकर जी का भाषण काफी देर से सुन रहा हूँ। मेरा मन तो करता था कि मैं उनके भाषण में पूरे समय रहूं। इनके मुखारबिंद से इतनी अच्छी बातें आयीं कि यह जहां पर रहते हैं। आप मेरी बात तो सुनिए। यह जहां रहते हैं वह आदिवासी सुरक्षित वार्ड है जब वहां आदिवासियों का भूत, देवता का जुलूस निकलता है तो कभी माननीय भी उस वेश भूषा में रहा करते थे। उसी वेशभूषा में पूरा अक्षरश: पालन करते थे। इसलिए मैं आपके माध्यम से तथा समाज की ओर से माननीय अजय चन्द्राकर जी का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय नेताम जी, पहले यह उस वेशभूषा में रहते थे तो अभी क्यों अपमान करने लग गए।

श्री रामकुमार यादव :- पहिली तुंहर पुरखा हा कपड़ा नइ पहिनत रिहिस हे। ओकर बाद जिंस में आएव। आप आदिम जमाना में देखवव। आप लकड़बघ्घा संस्कृति ला देखव का रिहिस हे तेला। ओमन कपड़ा नइ पहिनत रिहिस हे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय सभापति जी, यह आदिवासियों के साकड़ का अपमान कर रहे हैं। पहले उसी वेशभूषा में रहते थे और अभी राजनीति में आते ही क्यों पलट गये?

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, माननीय रामविचार नेताम जी सदन के बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं। मैं उनसे निवेदन करूंगा कि माननीय अजय चन्द्राकर जी को मंत्री पद तो नहीं मिला। उनके प्रदीप शुक्ला और आशाराम जी जैसे कुछ प्रवचनकर्त्ता बना दीजिए ताकि पूरे प्रदेश को फायदा हो।

श्री रामकुमार यादव :- नहीं। एला ओ लंगोट वाले साधु बनावए।

सभापति महोदय :- आप प्रदीप मिश्रा कह रहे हैं न।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आठवीं अनुसूची में छत्तीसगढ़ी बोली को भाषा में शामिल करने के लिए 5 साल में कोई गंभीर प्रयत्न नहीं हुए। हमने तो राजभाषा आयोग बना ही दिया था, पर मैं माननीय मंत्री श्री बृजमोहन जी से यह आग्रह करूंगा कि इसमें गंभीर प्रयत्न हो कि छत्तीसगढ़ बोली से भाषा की ओर अग्रसर हो। यदि उसके लिए राजभाषा आयोग में किसी तरह की तकनीकी क्षमता की कमी हो तो विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान विभाग है और यदि यह नहीं है तो किसी और भाषाविद् को जो गृह मंत्रालय में आठवीं अनुसूचि के काम को देखते हैं वहां जाकर कहें कि छत्तीगसढ़ की बोली को भाषा में लाने के लिए क्या-क्या जरूरत है, व्याकरण बनाने, इतने प्रकाशन, जनरल की जरूरत है, इतनी चीजों की जरूरत है तो वह सब कार्यवाही करनी चाहिए। यह एक नारा नहीं होना चाहिए कि हमको छत्तीसगढ़ी को बोली से भाषा बनाना है। इसमें हर कोई आए और भाषण देकर चल दें।

माननीय सभापति महोदय, इनकी समझ के लायक एक बात बता देता हूँ। हम इन्होंने पुन्नी मेला का नाम बदला तो इन्होंने कहा कि हम लोग बाहर से आदमी नहीं लायेंगे। हमारे शहर के लोग करेंगे। सदन में किसी का नाम नहीं लेना है, पर यास्मीन किदवई एजेंसी है मैं किसी गलत ध्येय से नाम नहीं ले रहा हूँ। यास्मीन किदवई कहा जाता है कि मोहसिना किदवई की लड़की है। उनकी एजेंसी शिवरीनारायण, जहां शबरी ने भगवान राम को जूठे बेर खिलाए, यह माना जाता है "मतंग शिष्या शबरी नवधा भक्ति रामचरित मानस की घटित हुई इस छत्तीसगढ़ की धरती पर कही गई इस छत्तीसगढ़ की धरती पर ।" यदि वहां शबरी महोत्सव में किसी ने खुले आम शराब पिलायी तो वह भूपेश बघेल जी की सरकार ने पिलाया है। किसी ने मैनपाट महोत्सव में खुले तौर पर शराब पिलायी तो भूपेश बघेल की सरकार ने पिलायी।

श्री अटल श्रीवास्तव :- यह गलत बात है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, यह गलत बात है। हर बात में असत्य बोलत हे।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सदस्य कह रहे हैं कि हमने शराब पिलायी है। आप करें तो ठीक है। आपके पास क्या सबूत है कि शबरी महोत्सव में हमने शराब पिलायी।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सदस्य कुछ भी आरोप लगा देंगे।

सभापति महोदय :- आप दोनों एक साथ न कहें।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, वह कुछ भी आरोप लगा रहे हैं।

सभापति महोदय :- आप दोनों में कोई एक ही बोलिए।

श्री अटल श्रीवास्तव :- सभापति महोदय, वह आरोप लगा कर उधर मुंह करके हंस रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं कहां हंस रहा हूं?

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- भैया, आप गलत बोल रहे हैं, आप पिछली तरफ देखकर हंस रहे थे, आप गलत बोल रहे हैं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप हमारी आस्थाओं के केन्द्र पर हुए प्रोग्रामों पर गलत बयानबाजी कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं गलत तो बोलता नहीं हूं, मैं हाउस में मजाक नहीं करता।

सभापति महोदय :- यादव जी, आप पहले समझ लीजिए। तीन-चार लोग एक साथ बोलेंगे तो आप क्या बोलेंगे, वह भी नहीं समझेंगे, आप भी नहीं समझेंगे और मैं भी नहीं समझूंगा।

श्री रामकुमार यादव :- जी, आप ठीक बोल रहे हैं।

सभापति महोदय :- आपको जो बोलना है, आप लोग एक-एक करके बोल लीजिए न। मैं तो आप लोगों का अवसर दे रहा हूं।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, अगर भगवान राम के बारे में बोलत हे, ये छत्तीसगढ़ की बात नई करत हौं, तो ये देश में भूपेश बघेल जी की पहली सरकार हे, जे अतके बड़े रामायण मंडली के कार्यक्रम रायगढ़ के धरती में करे रहिस। आप में हिम्मत हे तो ओतका बड़ा कार्यक्रम करके दिखाओ, तब हम मानबो। यह राम-राम कहना, पराया माल अपना कहना छोड़ दीजिये। यह छत्तीसगढ़ की जनता की देखत हे, राम के नाम पर राजनीति बंद करा।

सभापति महोदय :- आपको भाषण देने के लिए नहीं कहा हूं। आपको क्या बोलना है, आप दो शब्द बोलिये, वह अपना जवाब दे देंगे।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, माननीय अजय चन्द्राकर जी बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं। जब भी संस्कृति और पर्यटन की बात चले तो मैं आपसे निवेदन करूंगा कि अगर आपके पास कोई सबूत नहीं है, शिवरीनारायण हमारी आस्था का केन्द्र है, आप उस आस्था के केन्द्र के बारे में बता रहे हैं कि वहां कार्यक्रम हुआ तो शराब परोसी गई। यह गलत बयानबाजी और गलत चीज आप आस्थाओं के साथ मत कीजिए। बाकी आपको जो आरोप लगाना है, लगाईये। भ्रष्टाचार की जांच कराईये, जो करना

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है, आप कीजिए। परंतु इस तरीके से कहना कि वहां शराब परोसी जा रही है, यह आप सीधे-सीधे सदन में गलत बयानबाजी कर रहे हैं। मैं आपसे इतना ही कहना चाहूंगा।

सभापति महोदय :- हो गया, अब अजय चन्द्राकर जी, आप बोलिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, इन्होंने कहा था कि यह बाहर से कलाकार नहीं लायेंगे। महोदय, मैं आपकी ओर देखकर बोल रहा हूं।

सभापति महोदय :- मैं आप सबको अवसर दे दिया। आपने जो बोला, अब चन्द्राकर जी अपनी बात कहेंगे। उनको बोलने दीजिए। हर कोई बोलेंगे तो फिर वह भाषण कब देंगे। आप इसके पहले सुने हो तो बताईये। मैं भाषण रोक कर आपकी बात करवा रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, आशीष विद्यार्थी एंकर आये, छत्तीसगढ़ में किसी को बोलना नहीं आता। शंकर महादेवन, पंकज उधास, अनुराधा पौडवाल आईं। यहां गंगा जल पीकर बोल रहे थे कि हम बाहर से आदमी नहीं लायेंगे। इस लोगों को संस्कृति, पर्यटन में एजेंसी बुक करके कितना पैसा भुगतान हुआ है।

श्री विक्रम मंडावी :- अजय भैया, आपके समय में करीना कपूर आई थीं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- करीना कपूर, सलमान आये थे, तब उतनी संस्कृति नहीं थी। हमारे समय में कलाकार आ गयें तो अब संस्कृति हो गई। आपके समय करीना कपूर के साथ तत्कालीन मुख्यमंत्री जी ने सेल्फी ली थी। वह फोटो भी हमारे पास मौजूद है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको मालूम है भूपेश बघेल जी, झांक-झांक के देख रहे थे।

श्री विक्रम मंडावी :- उसके बाजू में आप भी खड़े थे।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगडे :- नहीं, नहीं।

सभापति महोदय :- बहन जी, आप बैठिये। यह बहस के लिए जगह नहीं है। उनको बोलने दीजिए। आप बीच में टिप्पणी जरूर कर लिये, उसके लिए मैं अवसर दे दिया, लेकिन अब उनको बोलने दीजिए न। हर बात में रोकेंगे तो कैसे बनेगा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, करीना कपूर जी आई थीं, सलमान जी आये थे, मैं मान लिया। उसी के विरूद्ध में इन लोगों ने कहा कि हम किसी को नहीं लायेंगे। इन लोगों ने उसी को कहकर सत्ता में आये और यही लोग लाये। और सिर्फ कलाकारों को लाये भर ही नहीं, उसको तो कोई कंपनी वाले लाये थे, इसको तो एक एजेंसी लाई, सरकार की जेब से पैसा गया।

श्री विक्रम मंडावी :- भैया, उनके टक्कर में लाये थे।

सभापति महोदय :- आप बैठिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, सरकार की जेब से पैसा गया और कितने में आये और कितने में भुगतान हुआ, वह एक लड़की जानती है। यह भी कलाकार घोटाला है।

श्री विक्रम मंडावी :- इसमें भी बुल्डोजर चला दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :-माननीय मंत्री महोदय, मैं आपसे कुछ विषय में अभिलेखागार के संबंध में कहना चाहता हूं। मैं इस बात को बार-बार बोलता हूं और दु:ख के साथ बोलता हूं। छत्तीसगढ़ का देश का एकमात्र संग्रहालय है जिसमें उस विभाग का संचालनालय भी चलता है। संग्रहालय को कृपया मुक्त कीजिए। संचालनालय अलग जगह ले जाईये। मुझको जगह मिल गई थी। मैं तो गाली नहीं दे सकता, लेकिन ऐसे लोगों को तो मैं कहूंगा कि छत्तीसगढ़ से निकाल देना चाहिए जिनने मुझको कहा कि आपको directorate के लिए जगह मिल गई, उसको ले लीजिए। वहां जाकर पता चला कि एक विभाग संचालित है। अब दूसरी बात आपका अभिलेखागार शायद बनना शुरू हो गया है। अगले साल हम नये विधान सभा भवन में विधान सभा की बैठक करेंगे। 25 साल में यदि छत्तीसगढ़ के बारे में शोध नहीं हो रहा है, छत्तीसगढ़ के बारे में कोई काम नहीं हो रहा है, छत्तीसगढ़ में यहां के दस्तावेज खोले नहीं जा रहे हैं। मैं तो यह कहूंगा कि मध्यप्रदेश के आर्काइव से आप जितना भी हिस्सा लेंगे, उसके अतिरिक्त आपको सी.पी. बरार से भी हिस्सा लेकर आना चाहिए। क्योंकि छत्तीसगढ़ कभी सी.पी. बरार का भी हिस्सा था। छत्तीसगढ़ से संबंधित दस्तावेज, आलेख वहां भी मौजूद हैं। इसलिए उसको चुनौती के तौर पर लीजिए। मैं दूसरी बात कहूंगा कि सिरपुर को हमने साडा बनाया था। हमने साडा नगर निवेश विभाग के लिए नहीं बनाया था । हमने साडा नगर एवं ग्राम निवेश विभाग के लिए नहीं बनाया था। एकदम से राजनीति इच्छाशक्ति लीजिए। बड़े-बड़े निर्णय में थोड़ी-बहुत तकलीफ होती है तो होने दीजिए। पूरे Rehabilitation करके सिरपुर को विश्व विरासत बनाना है, पूरी खुदाई होनी है। आपको मेरे से ज्यादा मालूम है कि सिरपुर की खुदाई कितने प्रतिशत हुई है। उसके Rehabilitation का पूरा प्रोग्राम लोगों के साथ बात-चीत करके राजनीतिक सहमति बनाकर करिये। यदि पांच लोग विरोध करते हैं कि करेंगे, लेकिन उद्देश्य बड़ा है।

सभापति महोदय:- चन्द्राकर जी, जल्दी खतम करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- जी। मैं जल्दी खतम कर रहा हूं। इसीलिए सिरपुर विश्व विरासत बने, उसके पूरे प्रोजेक्ट बने, हमने इसके लिए कुछ काम शुरू किया था।

मंत्री महोदय, अब कुछ चीजें ऐसी हैं, जिसको आप ध्यान दे सकते हैं। यह लोग फिर मेरे ऊपर हल्ला करेंगे। वर्ष 2019 से दिनांक 6 मार्च, 2024 तक धर्मांतरण के 35 प्रकरण दर्ज हैं। उसमें कोई गंभीरता नहीं है। आप धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग देखते हैं। श्री सुनिल शर्मा सुकाम के एस.पी. थे। वह मंत्री जी नहीं हैं। उन्होंने सरकार को धर्मांतरण बढ़ने के नाम पर चिट्ठी लिखी। दिनांक 01 मार्च, 2022 को बचेली के विद्यालय के छात्रों को उनके अभिभावकों को बिना बतायें चर्च घुमाने लेजाया गया। आपने यह पढ़ा है कि मदरसे में किन बच्चों का एडमीशन हो रहा है। आपने यह भी पढ़ा है कि धर्मांतरण के कारण पूरे बस्तर में जो डेमोग्राफीक चीजें हैं, वह एक-दो दशक में बदल जायेंगी। यदि आप

आज से सख्त नहीं होते हैं तो बस्तर नार्थ-इस्ट की तरह बन जाएगा। जशपुर में भी लगभग वही स्थिति है, उसको सभी लोग जानते हैं। माननीय मंत्री जी, मैं आपसे संस्कृति विभाग में एक चीज आगह करूंगा कि आप बहुत सारे 80-89 महोत्सव करवा रहे हैं, आप करवाईये, उसमें कोई आपत्ति नहीं है। लोगों को मनोरंजन होना चाहिए। आपने कोशिश की थी, पर किन्हीं कारणों से भंग हो गई। यह विपक्ष के सम्माननीय नेता जी भी बैठे हैं। एक-दो ऐसे महोत्सव होने चाहिए। आज छत्तीसगढ़ के लिए बड़ा शुभ दिन है, भले ही वह राजनीतिक कारण हो। हम बसंत पंचमी में शिक्षा की चर्चा कर रहे हैं। हम संस्कृति के माध्यम से राजा चक्रधर जी को याद कर रहे हैं। आज उनके प्रपौत्र राज्यसभा के लिए फार्म दाखिल कर रहे हैं। हिंदुस्तान में संगीत को संस्थागत शिक्षा देने के लिए यदि किसी को श्रेय जाता है तो राजा चक्रधर जी को जाता है। क्या राजा चक्रधर का महोत्सव गणेश जी बैठाने और कवि सम्मेलन के लिए होगा?

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- सभापति महोदय, मैं इनसे एक मिनट ले सकता हूं?

सभापति महोदय :- साहब, मैं दे रहा हूं। उनसे लेने की जरूरत नहीं है।

डॉ. चरण दास महंत :- चन्द्राकर जी, आप राजा चक्रधर जी को याद कर रहे हैं। मैं आपको प्रणाम करमा हूं। अब आपका शासन आ गया है। उनका लिखा हुआ किताब ताल तोय निधि और कुछ किताबें हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- चार किताबें हैं।

डॉ. चरण दास महंत :- चार किताबें हैं। उसको संग्रहित करवा दीजिए, छपवा दीजिए। वह बड़ा इनाम होगा, न कि राज्यसभा में जाना इनाम है।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, मेरी माननीय नेता प्रतिपक्ष जी से एक बार चर्चा हुई थी। मैंने कहा था कि आपको भी देखना चाहिए। नेता प्रतिपक्ष जी उपस्थित हैं, इसलिए मैंने उसका उल्लेख किया। रायपुर में, सिरपुर में कोई ऐसा महोत्सव स्थापित हो, क्योंकि पर्यटन के नक्से में, संस्कृति के नक्से में, पुरातत्व के नक्से में जब तक हमारा एक्सपोजर नहीं होगा। छोटा सा राम गांव महोत्सव। मैं किसी विद्वेश से नहीं बोल रहा हूं। हमने करवा दिया। न आदमी जा सकता है। एक स्थानीय लोग उस विषय को कितना देखेंगे। बाहर से लोग इंतजार करते रहते हैं कि खजुराहों का नृत्य महोत्सव कब आयोजित होगा? दर्शक कितने हो, यह विषय नहीं है। विषय यह है कि उसमें कौन लोग परफार्म कर रहे हैं। विद्यार्थी उसके चर्च देखने जाते हैं कि आज कौन सी नृतय की प्रस्तुति है, किसके द्वारा प्रस्तुति है, किसका गायन है? खैरागढ़ विश्वविद्यालय के या कोई भी विश्वविद्यालय के बच्चे उसको देखने क लिए जाते हैं। रहा सवाल कि माननीय नेता जी ने जो प्रश्न उठाया। मैं स्वयं उस परिवार से मिला था। जितना पैसा चाहिए, मिलेगा। मैं उसमें सार्वजनिक रूप से ज्यादा चर्चा नहीं करूंगा, लेकिन आपकी चिंता

स्वाभाविक है। यदि बृजमोहन जी घोषणा कर सकें तो हिंदुस्तान में पहली बार संगीत पर लिखी किताब आएगी और उसका श्रेय छत्तीसगढ़ को जाएगा। यह प्रयत्न में हम सब एक हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपकी और नेता प्रतिपक्ष जी, आप दोनों की चिंता है तो उन चारों किताबों को हम छत्तीसगढ़ के संस्कृति विभाग के माध्यम से प्रिंट करवायेंगे और प्रिंट करावाकर पूरे देश में प्रकाशित करवाने की व्यवस्था केरेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. चरण दास महंत :- आप मेरा स्पेशल धन्यवाद ले लीजिए। आपको स्पेशल थैंक्यू।

श्री अजय चन्द्राकर :- वैसे ही आपने 'डे भवन' के लिए बजट में लाया है। डे भवन के लिए बजट में और प्रावधान था। डे भवन में सिर्फ कलेक्टर से चर्चा करवाने से नहीं हो सकती है, वह आपसे ही होगी, राजनीतिक तौर पर होगी। यह हमारा सौभाग्य है कि भगवान रजनीश या ओशो कह लें । विवेकानंद जी, महेश योगी जी, वल्लभाचार्य जी ऐसे अनेकोंनेक नागार्जुन जी और अवदानशतक के मुताबिक तो भगवान बुद्ध भी छत्तीसगढ़ में आये हैं ऐसे लोगों की धरती छत्तीसगढ़ रही है तो इन सबको हम क्यों नक्शे में नहीं लाये हैं और जिसके ज्ञात हैं कि सबसे ज्यादा समय तक यदि वे छत्तीसगढ़ में रहे हैं और हमको मालूम है कि इस जगह में रहे हैं वह स्मारक बन जाये तो इससे ज्यादा प्रसन्नता की बात नहीं होगी । आप सक्षम हैं, आपकी कांस्टेंसी का विषय है और सबसे बड़ा विषय है । वही बूढा तालाब है, जहां वे घंटों तैरा करते थे ।

सभापति महोदय :- अब समाप्त कर दीजिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति महोदय, मैं बस एक मिनट में समाप्त कर देता हूं । विधानमंडल में चर्चा नहीं होती ।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- सर, माफ कीजियेगा । आप इनके साथ तैरा करते थे या जोगी जी के साथ उन्हीं की तरह तैरा करते थे ?

श्री अजय चंद्राकर :- मैं यह कह रहा हूं कि बूढ़ा तालब में विवेकानंद जी घंटो तैरा करते थे । (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं तो वहां रोज तैरता हूं ।

सभापति महोदय :- अब समाप्त कर दीजिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, बस मैंने यह एक आखिरी पुस्तक अपने हाथ में रखी है । विधानमंडल में चर्चा होती नहीं है ।

सभापति महोदय :- आपका माईक ऑन नहीं था, आपने क्या बोला ?

श्री अजय चंद्राकर :- अभी उनके बहुत सारे चिट डाऊन हैं, क्या बताया जाये?

डॉ. चरणदास महंत :- मैंने कहा कि ये जोगी जी की तर्ज पर तो नहीं तैरा करते थे न ।

श्री अजय चंद्राकर :- जोगी जी की तर्ज पर आज कुंवर सिंह निषाद जी भाषण दे रहे थे । मैं करपा बांधता था, मैं धान लूहता था, मैं बोझा डोहारता था, मैं पैरावट को उसालता था अइसे कहए, ओसनहे टाईप के आज बोलत रिहिस हे ।

सभापति महोदय :- चलिये, अब जोगी जी के बारे में क्यों ?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, वे आज हमारे बीच में नहीं है। मैंने उनके लिये कोई अपशब्द नहीं कहा है । मैंने यह कहा कि वे उनकी स्टाईल में भाषण दे रहे थे ।

सभापति महोदय :- अब समापन करिये ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अजय भैया, सबके अपन अलग-अलग स्टाईल होथे । मोर स्टाईल अलग होही, आपके स्टाईल अलग होही । मोर सोंखी में फंद जबे ते दिन पता चल जही ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आपने सेंट्रल लाईब्रेरी की जो परिकल्पना की है वह बहुत अच्छी है लेकिन इस बीच में बहुत सारे ऑडिटोरियम बने, आप बनाना चाह रहे थे । कला के प्रदर्शन के लिये जिसमें प्रदर्शनी भी लग सके, जिसके अंदर में एमफी थियेटर भी हो, पार्किंग हो, सुविधा हो, खाने-पीने की जगह हो। उस परिकल्पना को साकार करिये । दूसरा, छत्तीसगढ़ के खानपान की हमने शुरूआत की थी । कैलोरी माफ करने के लिये हमने अवधिया फैमिली को दिया था । इन्होंने पेमेंट नहीं दिया तो वह बंद हो गया । हमने बस्तर से लेकर सरगुजा तक जितने खाद्य हैं, कैलोरी नापकर उसको प्रकाशित करिये । गढ़कलेवा खोलने का मतलब यही था, केवल ठेठरी-खुर्मी खिलाना गढ़कलेवा का उद्देश्य नहीं था । पूरे बस्तर का लांदा भी हम खिलायेंगे तो सल्फी भी पिलायेंगे, यह उद्देश्य था तो यह एक परिकल्पना थी । जिसको साकार होना चाहिए, थोडा-थोड़ा हुआ था । मैं इसीलिये क्षोभ और दुख से बोलता हूं कि यही भर एक संस्कृति है । बाकी कोई संस्कृति नहीं थी ।

माननीय सभापति महोदय, विधानमंडल में चर्चा नहीं होती । मैं थोडा सा संसदीय कार्यविभाग में आ जाता हूं । हमारे विधानसभा की बड़ी उच्च परंपरा रही । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी उस कुर्सी में बैठे हैं । माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी आपके कार्यकाल में ऐसी परम्परा स्थापित हो कि जब सदन की चर्चा हो तो कम से कम ट्रेजरी बेंच की जिम्मेदारी है कि अच्छी भरी दिखनी चाहिए तो हम लोगों को भी बोलने में मजा आयेगा कि माननीय मंत्रीगण कहीं पर हमारे कार्यों में रूचि लेकर उसमें कुछ कार्यवाही कर देंगे करके । ऐसा सदन मत बनें, ऐसी परम्पराएं मत टूटें । पूरे 5 साल में एक भी बजट सत्र पूरा नहीं चला । समय से पहले अवसान हुआ । उस कुर्सी पर बैठने वाले लोगों को अपमानित किया गया । यह परम्परा नहीं बननी चाहिए । आज भी जैसे चलती है, जितनी चलती है, हमारी विधानसभा सबसे अच्छी विधानसभा है । उस दिन मैंने प्रशिक्षण में एक माननीय सदस्य से पूछा था कि आपकी विधानसभा कितने दिन चलती है तो उन्होंने कहा था कि 20 दिन चलती है, उनहोंने बड़े संकोच से बोला । मैंने बताया कि हम कम से कम 40 दिन वाले हैं और जो सचेतक सम्मेलन की अनुशंसाएं हैं

उसको लागू करने वाले कुछ राज्यों में से एक हैं । गोवा जैसी कि हमारी अधिकतम बैठक 58 दिन तक हुई है । ऐसा जब मैंने उनको बताया तो वे आश्चर्यचकित रह गये थे । माननीय प्रेमप्रकाश पाण्डेय जी जब अध्यक्ष थे तो सर्वाधिक बैठक 58 दिन की हुई । मैं दुख के साथ कह रहा हूं कि एक भी विशेषाधिकार में पिछले 5 सालों में चर्चा नहीं हुई । जिस विशेषाधिकार के लिये यह नये सदस्य जानने को उत्सुक रहते हैं, जो पहली बार चुनकर आये हैं । नहीं मालूम कि कौन से दबाव में चर्चा नहीं होती थी । मैंने एक अल्पसूचना प्रश्न लगाया ताकि लोग सीखेंगे और महत्वपूर्ण विषय में लगाया, ए.जी. के इस्तीफा के प्रकरण में वस्तुस्थिति क्या है ? खैर अस्वीकृत हुआ, मैं उसमें सचिवालय की ओर नहीं जाता । कार्यवाही नहीं हुई, सत्रावसान हो गये ।

सभापति महोदय :- चलिये न, आपकी बात आ गयी ।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं, बस दो मिनट में समाप्त कर रहा हूं । माननीय सभापति महोदय, एक तो यह विषय हैं कि माननीय बृजमोहन जी के नेतृत्व में हमारी परम्पराएं मजबूत हों और नेता जी से भी यही आग्रह करूंगा कि बहिर्गमन करके जो दो दिन के लिए गायब होते हैं, राजनीतिक कारणों से नहीं हुए। ये सदन जीवंतता के साथ चलना चाहिए। अंत में जिसको कोई नहीं बोलता उसे फिर बोल देता हूं कि बृजमोहन जी माननीय नेता प्रतिपक्ष जी के साथ सहमति बनाकर विधायक महोदय लोग जो चुनकर आये हैं, उनकी सुविधाओं के मामले में और उनकी समस्याओं के मामले में, उनके सहयोग के मामले में उनके अच्छे प्रदर्शन के मामले में पूरा सहयोग देंगे और कुल मिलाकर बृजमोहन जी 8 बार चुनाव जीते हैं। बृजमोहन जी जितने दिन विधायक नहीं रहे, उससे ज्यादा वे मंत्री रहे हैं। केवल 10 साल वे विधायक नहीं रहे। वर्ष 1993 से लेकर वर्ष 2003 तक और फिर 5 साल तो जोड़ लीजिए 15 साल उनके संसदीय कार्यकाल में अनन्य विभागों को उन्होंने देखा है, अपेक्षाएं हैं। मैं ये अपेक्षा तो जरूर करूंगा कि मंत्री बनने के लिए हम लोग मंत्री नहीं बने हैं। छत्तीसगढ़ की ईमानदारी से सेवा और वो भी प्राथमिक क्षेत्र की सेवा कि शिक्षा और संस्कार के क्षेत्र को वे मजबूत करेंगे और जो उपहास उड़ा रहे थे कि बच्चे खिला रहे हैं, उनको एक करारा जवाब मिलेगा कि उस शख्सियत के सामने वे टिप्पणी कर बैठे, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक इतिहास और शैक्षणिक गतिविधियों को बदलकर रख दिया। शैक्षणिक रूप से, सांस्कृतिक रूप से छत्तीसगढ़ उस उन्नत प्रदेशों के कतार में खड़े हो गया जो साउथ के प्रदेश हैं या पश्चिम के जो प्रदेश हैं, उन प्रदेशों की कतार में छत्तीसगढ़ हो गया। जो वर्ष 2047 में उन्नत राष्ट्र की परिकल्पना माननीय मोदी जी ने कही है कि छत्तीसगढ़ क्या भूमिका निभा सकता है, उसका रोडमैप हम जारी करेंगे तो मैं सोचता हूं कि उस रोडमैप का जो सबसे महत्वपूर्ण अव्यय है वह बृजमोहन जी के पास है और बृजमोहन जी सबसे महत्वपूर्ण अव्ययों को पूरा करने में खरा उतरेंगे, इस सद्भाव के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। जय हिन्द। जय छत्तीसगढ़। आपने बोलने के लिए अवसर दिया उसके लिए धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- जी। दलेश्वर साहू जी। शॉर्ट में बोलिएगा, क्योंकि आपके दल से बहुत से लोग हैं।

श्री दलेश्वर साहू (डोंगरगांव) :- ठीक है साहब।

डॉ. चरण दास महंत :- माननीय सभापति महोदय, ओपनर साहब ने कितने मिनट भाषण दिया है?

सभापति महोदय :- नहीं, साहब उन्होंने एक घंटे बोला है और आपकी तरफ के ओपनर ने भी करीब 45 मिनट बोला है।

डॉ. चरण दास महंत :- हम वहां बैठे रहते थे तो सबसे ज्यादा समय इधर वाले को देते थे, आप अभी से कट मार रहे हैं।

सभापति महोदय :- नहीं-नहीं, मैंने बोला कि इधर ज्यादा बोलने वालों की सूची है। उधर कम है। मैंने इसलिए निवेदन किया।

श्री दलेश्वर साहू :- मैं वित्तीय वर्ष 2024-25 की अनुदान मांगों पर चर्चा, मांग संख्या- 26, 27, 28, 37, 44, 51 के विरोध में अपनी बात रखना चाहता हूं। हमारे प्रदेश में विभिन्न जाति, विभिन्न धर्म, विभिन्न संप्रदाय और विभिन्न संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज से जो ओतप्रोत है, वह आज के बजट में चाहे वह संस्कृति, पुरातत्व, पर्यटन एवं न्यास एवं धर्मस्व विभाग के लगभग हमारी जो परंपरा रीति-रिवाज है, उसको बढ़ावा देने में, उसके संवर्धन में लगभग इसी बजट पर चर्चा है। सभापति महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि मध्य प्रदेश के समय से जब वर्ष 2000 के बाद छत्तीसगढ़ राज्य बना तो हमारे क्षेत्र के मंत्री माननीय धनेश पटला जी उस समय जेल मंत्री और अनुसूचित जाति मंत्री हुआ करते थे। तो हम एक कार्यकर्ता होने के नाते उनके साथ भोपाल जाते थे और भोपाल जाते थे तो उसके रिकॉर्ड रूम में हमारा एक कमरा रहता था और हम वहीं सोते थे तो ये सब प्रतिवेदन पढ़ने का सौभाग्य मिलता था। तो मेरा बड़ा शौक था कि मैं उस संस्कृति विभाग के उस प्रतिवेदन को पढ़ा और पढ़ने के बाद मुझे वहां लगा कि वहां पर दो बजट था। बजट तो बहुत सारा होता है पर हमारे छत्तीसगढ़ में एक जगार महोत्सव के लिए मांग संख्या में अर्थात् बजट में प्रावधान था। दूसरा, ग्वालियर मेला तो हमने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य बन गया था तो उसको मैंने वहीं पर देखा कि मड़ई मेला मांग संख्या में /मड़ई/मड़ई मेला करके मांग संख्या में कुछ लगभग 15-20 लाख रूपये का बजट रहा होगा। उनको पढ़ने के बाद मुझे लगा, वहीं पर मैंने drafting किया और मैंने कहा कि मैंने drafting करने के बाद पटला जी को बोला कि जब आप संचालनालय जायेंगे तो मुझे ले चलना। मैं इस पैसे को अपने क्षेत्र, अपने ग्राम में लाउंगा। तो उन्होंने कहा कि तुम बड़ी-बड़ी बात मत किया करो। ऐसा संभव नहीं है। मैंने कहा कि इसमें मांग संख्या मड़ई मेला है लिखा है तो इस पैसे को कहीं भी ले जाया जा सकता है । उस समय हमारे गृहमंत्री आदरणीय महंत जी हुआ करते थे । हम गए तो दिग्विजय सिंह जी ने एक ही बार में उसमें 2

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लाख रूपए स्वीकृत लिख दिया। उस समय अर्जुन सिंह जी के पुत्र संस्कृति मंत्री हुआ करते थे । मुख्यमंत्री जी के लिखने और उसके बाद की प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद उस पैसे की स्वीकृति हुई और जगार के बाद कोई दूसरा बजट हुआ तो लोक मड़ई महोत्सव के नाम से 2 लाख रूपए की स्वीकृति प्राप्त हुई । मुझे बहुत अच्छा लगा, मैं उत्साह से भर आया और मेरे ही गांव से मैंने पहले महोत्सव की शुरूआत की । उस समय हमने वहां सारे कलाकारों को बुलवाया । उस समय तीजन बाई को देखने के लिए लोग तरसते थे, उस समय ममता दीदी का भी कलाकारी में बड़ा वर्चस्व था । ऐसे बहुत से लोक संस्कृति के धरोहर को कार्यक्रम में सम्मिलित किया गया । छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद श्री धनेन्द्र साहू संस्कृति मंत्री बने । उस समय हमने उनसे कहा कि हमारे मड़ई में चलिए साहब । हमने शुरूआत की है, वहां के लिए पहला बजट लाया है । वहां आने के बाद उन्हें भी बहुत अच्छा लगा वे बोले कि भोरमदेव के लिए भी कुछ प्रोग्रामिंग कराओ । हमने भोरमदेव के लिए, राजीव लोचन के लिए, इस तरह हमने 4 या 5 महोत्सव की शुरूआत की । उसके बाद शासन बदला और बृजमोहन अग्रवाल जी मंत्री बने, मुझे बुलाया गया और कहा कि इस महोत्सव को कैसा स्वरूप देना है ? चूंकि उस महोत्सव की शुरूआत मेरे द्वारा हुई थी, उस समय चंदूलाल जी रेती में बैठते थे, मैं जब वहां रहता था तो वे रेती में बैठकर कार्यक्रम देखते थे । आज वे सांसद हैं, बहुत बड़े ओहदे में हैं । हमने माननीय धनेन्द्र साहू जी के साथ उस महोत्सव को सुधारने की शुरूआत की । हमारे मंत्री जी ने उसको कुंभ का दर्जा दिया। मुझे ऐसा लगा कि यहां भ्रष्टाचार का आलम हो रहा है और मुझे मैदान छोड़ देना चाहिए और मैंने छोड़ दिया । वहां से आकर अपने क्षेत्र के मड़ई मेले में जो कि फरवरी में होता है, उसका कार्य किया । अभी मैं संस्कृति विभाग का प्रतिवेदन देख रहा था । जिसकी शुरूआत हमने की, पहला महोत्सव हुआ । आज 01 से लेकर 68 महोत्सव, कबीर पंथ मेला महोत्सव, मकर संक्रांति मेला महोत्सव, झुमका महोत्सव, महिषासुर महोत्सव, मैनपाट महोत्सव, तातापानी महोत्सव, बिलासा महोत्सव, शिवरीनारायण मेला महोत्सव, रतनपुर महोत्सव, सहसपुर मेला, ताला महोत्सव, कबीरपंथ मेला महोत्सव, शिल्प संस्कृति मड़ई महोत्सव, कबीरघाट मोहलाई मेला ये लगभग 89 महोत्सव होने लगे । देखिए, कितनी समृद्धि हुई चाहे किसी का भी शासन रहा हो । मैं सोचता हूं महोत्सव में जितनी भी बढ़ोतरी हुई है वह आदरणीय भूपेश बघेल की सरकार में, उनके द्वारा लोक संस्कृति के संवर्धन में हुआ । जैसे अभी चक्रधर महोत्सव के बारे में बात किया, वह सेकेंड महोत्सव हुआ । जब राजीव लोचन और भोरमदेव महोत्सव हुआ तो चक्रधर महोत्सव की शुरूआत भी जोगी जी ने की । उसमें भी मुझे जाने का अवसर मिला । आज इस प्रतिवेदन में 89 महोत्सव पढ़ने का अवसर मिल रहा है । किंतु दुर्भाग्य है, अपने ही बजट को बढ़ाने के लिए मुझे मंत्रियों से कहना पड़ता है कि यह मध्यप्रदेश के समय का है । आज मैं बृजमोहन अग्रवाल जी से निवेदन करना चाहूंगा, अग्रवाल साहब थोड़ा ध्यान देंगे तो अच्छा लगेगा । मैंने आपसे मांग की है और आपने लिखा भी है कि स्वीकृत करें, अभी फरवरी में 23, 24 और 25 को यह आयोजन होना है । माननीय मंत्री जी ने

स्वीकृति तो दे दी है, मैंने कहा कि आज भी 8 लाख रूपए से ज्यादा नहीं मिलता है। यह इतने सालों के बाद भी वैसे ही है। हमने जिसकी शुरूआत की, इस महोत्सव के स्वरूप को बदलने का प्रयास किया, नहीं तो लोग महोत्सव क्या है, यह जानते नहीं थे, जगार के अलावा, ग्वालियर मेला के अलावा किसी को जानते नहीं थे। मैं बृजमोहन अग्रवाल जी से चाहूंगा कि कम से कम आपकी दया दृष्टि मेरे जैसे आदमी के लिए रहे, आपने ही मुझे बुलाया था। आपने कुंभ का स्वरूप, उसकी परिकल्पना करके पुन्नी मेला को रूपांतर करके फिर से कुंभ किया है। आपके विभाग से, आपके पत्र के अनुसार प्रोसेस होगा। यहां संस्कृति विभाग के डायरेक्टर और सचिव बैठे होंगे, उनसे निवेदन है कि आज मैं जिस उद्देश्य के साथ अपने पिछले कार्यकाल को और इस महोत्सव के बारे में बताने का प्रयास किया है, शायद आपको असर होगा और थोड़ी बहुत राशि बढ़ा देंगे। मैंने 25 लाख रूपए की मांग की है, उस 25 लाख रूपए में आप नोटशीट में कितनी अनुशंसा करोगे, डायरेक्टर साहब कितनी अनुशंसा करेंगे, वह समय और स्वीकृति आर्डर मिलने के बाद ही पता चलेगा।

सभापति जी, मैं एक बात और कहना चाहूंगा। जब संस्कृति विभाग कार्यक्रम करते हैं तो महापुरूषों का फोल्डर छपता है। आज भी आप मध्यप्रदेश की पुस्तक निकालकर देख लीजिएगा और इस पुस्तक का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो सबूत के साथ कहना पड़ रहा है, साहब, इसमें जरा भी क्वालिटी नहीं है। सभापति जी, आप भी मध्यप्रदेश के समय रहे हैं, मध्यप्रदेश में बहुत बड़ा बजट होने के बावजूद भी संस्कृति विभाग इतने शानदार तरीके से उस एक-एक पन्ने को बेहतरीन तरीके से उच्च स्तरीय क्वालिटी से छपाने का प्रयास करते थे और ऐसा लगता था कि कोई एक कलात्मक व्यक्ति उस पुस्तक को छपाने में अपने दिल और दिमाग को समर्पण भाव से, त्याग की भावना से करते थे। आप इसका तुलनात्मक अध्ययन कर लीजिएगा। सन् 2000 में छत्तीसगढ़ बनने के बाद इस पुस्तक की गरिमा देखिए। मध्यप्रदेश के समय पुस्तक का तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चलेगा कि हमारे मंत्री जी 15 साल के बाद कितना गंभीर रहे, उनकी कितनी सोच रही है। जहां तक मेरे को ऐसा लगता है कि कहां पर उसकी कटौती हो जाए, कहां से पैसा बच जाए, इस दृष्टिकोण के कारण ही गुणवत्ताहीन पत्रिका का निर्माण इस विभाग द्वारा किया गया। पदुमलाल, पुन्नालाल, बख्शी साहित्य अकादमी, श्रीकांत वर्मा पीठ, गुरू घासीदास शोध पीठ, कला अकादमी, नाचा के केन्द्र, कत्थक कला केन्द्र, आदिवासी एवं लोक कला अकादमी, छत्तीसगढ़ सिंधी अकादमी, छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम, ऐसी बहुत सारी योजनाएं संचालित हैं। यह विभाग थोड़ी सी भी कला संस्कृति के संवर्धन में ध्यान देगी तो अच्छा हो सकता है। मुझे पूरा विश्वास है। हमारे बृहमोहन अग्रवाल जी, पुन्नी मेला में महोत्सव करते थे तो सभी विधायकों को बुलाते थे और कोसा के साड़ी, बंगाली देते थे। आज भी वह परंपरा बरकरार है या बंद कर देंगे ?

संस्कृति मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- रहेगी-रहेगी।

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय, ऐसी बहुत दुर्गामी सोच के आधार पर हमारे अग्रवाल जी को संस्कृति विभाग को संवारने की जिम्मेदारी मिली है, मुझे विश्वास है।

सभापति महोदय :- ठीक है।

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति जी, अभी तो एक ही विषय हुआ है, अभी तो पर्यटन में नहीं आया हूं।

सभापति महोदय :- सब कोई एक-एक घंटा बोलेंगे तो कैसे होगा।

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति जी, मेरे महोत्सव के लिए पैसा बढ़ा दीजिए, मैं चुपचाप बैठ जाऊंगा। आप आदेश कर दीजिए।

सभापति महोदय :- आप मांग करिए ना, वे करेंगे तो मुझको क्या तकलीफ है।

श्री दलेश्वर साहू :- मंत्री जी प्लीज, मैं बोलने के लिए बंद उसी शर्त पर करूंगा नहीं तो मैं बोलते रहूंगा। (हंसी) मुझे 8 लाख का बजट विगत् कई वर्षों से मिल रहा है। मध्यप्रदेश के समय से दो लाख रूपया था, अभी 8 लाख रूपए में संभव है ? अग्रवाल साहब, अभी हमारे अनुज भाई बैठे नहीं हैं, 50 हजार रूपये लेते हैं, वे रहते तो मैं बोलता, उसको कम करिए। एक कलाकार दो गीत के लिए 50 हजार रूपए में कैसे संवर्धन होगा ? मैं चाहता हूं कि आप इस पर विचार करें तो मैं अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं आपको समाप्त करने के लिए नहीं बोल रहा हूं।

श्री दलेश्वर साहू :- मंत्री जी, मैं आपको पैसा बढ़ाने के लिए बोल रहा हूं। हमारे महंत जी ने चक्रधर पुस्तक के लिए कहा तो आपने खड़े होकर कहा। मेरे लिए भी कर देंगे तो मुझे अच्छा लगेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, विधायक जी को 8 लाख रूपये की जगह 15 लाख रूपये मिलेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- आप मंत्री जी को धन्यवाद दीजिए।

श्री दलेश्वर साहू :- मंत्री जी, धन्यवाद। माननीय सभापति महोदय, यदि आप मुझे समाप्त करने के लिए कहेंगे तो मैं अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

सभापति महोदय :- नहीं, आप समाप्त कर दीजिए। श्रीमती उद्धेश्वरी पैकरा।

श्रीमती उद्धेश्वरी पैकरा (प्रतापपुर) :- माननीय सभापति महोदय, मुझे इस सदन में बोलने के लिए आज पहली बार मौका मिला है। सबसे पहले तो मैं आपको मुझे बोलने का मौका देने के लिए धन्यवाद देती हूं। जिस तरह से बजट में शिक्षा विभाग के लिए प्रावधान रखा गया है। यह बहुत ही अच्छा, बहुत ही बढ़िया बजट है। हमारे वित्त मंत्री जी और हमारे शिक्षा मंत्री जी ने शिक्षा विभाग में इस तरह का प्रावधान किया किया है, इसके लिए मैं उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद दूंगी। इससे पहले हमारे डॉ. रमन सिंह जी की सरकार के समय छत्तीसगढ़ में शिक्षा के लिए हर जगह माध्यमिक शिक्षा के लिए

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माध्यमिक स्कूल, हाई स्कूल बने थे। हर 3 किलोमीटर के अंतराल में माध्यमिक शाला और 5 किलोमीटर के अंतराल में हाई स्कूल बने थे। हमारे आदरणीय रामविचार नेताम जी जब उस समय उच्च शिक्षा मंत्री थे, उस समय उन्होंने हमारे छत्तीसगढ़ के नये-नये हाई स्कूलों का हायर सेकण्डरी स्कूल में उन्नयन किया। हमारे वर्तमान शिक्षा मंत्री जी ने शिक्षा को बढ़ावा दिया है। चाहे वह स्कूल शिक्षा विभाग हो, चाहे उच्च शिक्षा विभाग हो, सभी में प्रावधान किया है। मैं आदिवासी क्षेत्र से आती हूं। मेरे विधान सभा क्षेत्र में तेंदूपत्ता तोड़ने वाली माताएं, बहनें, पढ़ने वाली बेटियां हैं। जो आठवीं, दसवीं कक्षा में बोर्ड परीक्षा पास करती हैं। ऐसे सभी तेंदूपत्ता संग्राहक परिवार और पढ़ने वाली छात्राएं तेंदूपत्ता का संग्रहण करने जाती थीं तो उनको भी हमारी सरकार में छात्रवृत्ति दी जाती थी। उस छात्रवृत्ति को पिछली सरकार ने रोक दिया है। मैं हमारे शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगी कि हमारे गरीब आदिवासी परिवार की तेंदूपत्ता तोड़ने वाली छात्राओं की छात्रवृत्ति रूकी हुई है। आप उनकी छात्रवृत्ति को भी बजटीय प्रावधान में ले लीजिए। सभापति महोदय, आदरणीय शिक्षा मंत्री जी ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सामरी विधान सभा क्षेत्र के राजपुर ब्लॉक में नये संकाय के लिए प्रावधान किया है, हमारे जिले में ऐसे जो भी प्रावधान किए गए हैं, मैं उसके लिए मंत्री जी को धन्यवाद दूंगा ।

आदरणीय सभापति महोदय, अच्छी गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए अच्छी सुविधायुक्त शाला भवनों का होना बहुत आवश्यक है । जिस उद्देश्य से इस बजट में 265 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है, जिससे स्कूल भवनों का निर्माण, जीर्णोद्धार किया जा सके, हमारे प्रदेश के बच्चों के लिए साफ-सुथरा वातावरण में पढ़ाई-लिखाई कर सकें, हमारे अधोसंरचना विकास के लिए भी प्रावधान किया गया है। शिक्षा विभाग में विधि प्रकोष्ठ के भवन निर्माण हेतु 84 लाख रूपए का प्रावधान किया गया है, इससे शिक्षक वर्ग के न्यायालयीन प्रकरणों का शीघ्र निराकरण किया जाएगा । हमारे शिक्षा मंत्री इसमें हमेशा सहायता करते रहेंगे । टाईपिंग के लिए भी बजट में राशि का प्रावधान किया गया है । हमारे शिक्षा मंत्री जी ने शिक्षा विभाग के लिए जो प्रावधान किया है, उसके लिए मैं वित्त मंत्री और शिक्षा मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल जी को मैं धन्यवाद दूंगी । मेरे सामरी विधान सभा क्षेत्र में तीन विकासखण्ड हैं और तीनों विकासखण्ड के महाविद्यालय में पी.जी. विषय नहीं है । हमारे क्षेत्र से रामानुजगंज 100 किलोमीटर, जशपुर 80 किलोमीटर और अंबिकापुर (सरगुजा) 100 किलोमीटर दूर पड़ता है । मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करूंगी कि हमारे क्षेत्र के नगर पंचायत कुसमी के महाविद्यालय में वनस्पति विज्ञान में पी.जी. संकाय का विषय खोला जाये, यह मैं निवेदन करती हूं । शंकरगढ़ में जो महाविद्यालय है, वहां भी हिन्दी संकाय खोलने का निवेदन करती हूं । सभापति महोदय, मुझे आज पहली बार सदन में बोलने का मौका मिला । आदरणीय शिक्षा मंत्री जी जिस तरह से शिक्षा के मंदिर को सवारेंगे, निखारेंगे, यह कहकर मैं इस सदन को, मंत्री जी को धन्यवाद देती हूं । सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद देती हूं ।

श्रीमती अनिला भेण्डिया (डौण्डीलोहारा) :- माननीय सभापति महोदय, मैं, शिक्षा मंत्री माननीय श्री बृजमोहन अग्रवाल के विभाग हेतु वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए प्रस्तुत अनुदान मांग संख्या-26, 27, 28, 37, 44 तथा 51 पर चर्चा करने के लिए खड़ी हुई हूं।

सभापति महोदय, सबसे पहले संस्कृति विभाग के लिए हमारे भाई दलेश्वर साहू जी ने जो मांग रखा, माननीय मंत्री जी ने मेला-मड़ई की मांग को सहृदयता से स्वीकार भी कर लिया इसलिए मैं उनको धन्यवाद भी दूंगी। हमारे विद्वान साथी अजय भईया जो सामने बैठते हैं, वह हमारे छत्तीसगढ़ी संस्कृति का विरोध करते हैं, उसे अपमानित करते हैं, उसके लिए हमारे छत्तीसगढ़ के निवासी कभी माफ नहीं करेंगे। क्योंकि वह जब भी खड़े होकर किसी भी विषय पर वक्तव्य देते हैं तो पहले छत्तीसगढ़ की संस्कृति, चाहे डुबकी लगाने की बात हो, चाहे सांकल बांधने की बात हो, उनका हमेशा विरोध किया है। तो मुझे ऐसा लगता है कि हमारे विद्वान साथी ना तो सनातन धर्म को मानते हैं और ना छत्तीसगढ़ की संस्कृति को मानते हैं। क्योंकि छत्तीसगढ़ की संस्कृति कई विधाओं से जुड़ी हुई है। हमारे छत्तीसगढ़ में बड़े-बड़े विद्वान और कवि पैदा हुए, जो यहां की विधाओं को पूरा देश और विदेश तक पहुंचाये हैं और यह हमारी छत्तीसगढ़ की उपलब्धि है। लेकिन इसे मजाक बनाकर सदन में रख दिया जाता है, यह भी हमारी एक बहुत बड़ी कमी है।

सभापति महोदय, मैं यही कहना चाहूंगी कि पूरे प्रदेश में बहुत सारे मड़ई-मेला होता है। उसी तरह से मेरे भी विधानसभा क्षेत्र में कंगलामाझी सम्मलेन होता है, जहां पूरे प्रदेश के आदिवासी लोग आते हैं, पूरे देश से आदिवासी लोग आते हैं और वहां आकर सम्मेलन करते हैं। वह बहुत बड़े स्तर पर आयोजन होता है। यदि माननीय मंत्री जी ने इतने सारे मड़ई-मेला को शामिल किया है तो कम से कम मेरे विधानसभा क्षेत्र के इस मड़ई मेला के आयोजन को भी अपने बजट में जोड़ लेंगे तो पूरे देश भर के आदिवासी भाई-बहन आपको बहुत-बहुत बधाई देंगे। माननीय मंत्री जी, आपने सुना है न ? तो कंगलामाझी मेला में पूरे देश भर के लोग आते हैं। तो आप कम से कम मेरे विधानसभा क्षेत्र के एक मड़ई मेला को बजट में सम्मिलित कर लेते तो मेरे पूरे आदिवासी भाई-बहन आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देंगे।

सभापति महोदय, उसी तरह स्कूल शिक्षा विभाग पर हमारे सभी वक्ताओं ने बहुत बातें कर ली। मैं इस पर यह कहना चाहूंगी कि हमारे ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में बच्चों संख्या धीरे धीरे कम क्यों होते जा रही है, इस बात को हमारे सदस्यों ने भी उठाया है। वह इसलिए कम होते जा रहा है क्योंकि जब तक शासकीय स्कूलो में सही सुविधाएं नहीं देंगे, वहां शिक्षकों का सेटअप नहीं होगा, वहां उनके खेल-कूद इत्यादि की सारी व्यवस्थाएं नहीं होंगी, तब तक हमारे विद्यार्थियों की संख्या धीरे-धीरे कम होते जायेगी। प्रायवेट स्कूलों में बच्चों को ज्यादा सुविधाएं मिलती हैं। आज आधुनिक जमाना है। आज शिक्षा के क्षेत्र में नया-नया प्रचार-प्रसार हो रहा है। इसलिए बच्चें नई दिशाओं में जाने की कोशिश करते हैं। उनके

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माता-पिता भी चाहते हैं कि मेरा बच्चा अच्छे स्कूल में पढ़ें, मेरा बच्चा अच्छी प्रतियोगिता में भाग ले, मेरा बच्चा डाक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. बने। इसलिए लगता है कि बच्चें कोचिंग और प्रायवेट स्कूलों की ओर जा रहे हैं। इसलिए माननीय मंत्री जी से कहना चाहूंगी कि आप कम से कम स्कूल शिक्षा विभाग का बजट बढ़ाये, जिससे हमारे स्कूलों में जरूरत की सुविधाएं पूरी हो सकें। पूर्व सरकार ने स्कूल जनत योजना चालू किया था और उसमें काम भी चालू हो गया था। उसके बाद उसका भुगतान रोक दिया गया है। क्योंकि यह शासन-प्रशासन के अनुमोदन से काम चालू हुआ था। माननीय मंत्री जी, आपसे निवेदन करना चाह रही हूं कि पूरे प्रदेश में इस राशि को रोक दिया गया है, उसको चालू करवायें। ताकि स्कूलों की मरम्मत, बाउण्ड्री वाल, नया भवन बनना है, वह बहुत जल्दी बनें और बच्चों को सुविधाएं मिल सकें।

माननीय भापति महोदय, वैसे ही राज्य विधान मण्डल में ज्यादा कुछ बात नहीं है। हमारे विद्वान साथी ने कह ही दिया है तो मैं भी कहना चाहूंगी कि हमारे पूरे 90 विधायक साथियों के मानदेय, वेतन, विधायक निधि है, उसको बढ़ाया जाये। आज हमारे किसी विधायक को निवास की सुविधायें नहीं मिली है, अत: आप निवास की भी व्यवस्था करें । माननीय मंत्री महोदय, आप वैसे भी पक्ष के लिये भी और विपक्ष के लिये भी बहुत दयालू और जागरूक मंत्री माने जाते हैं, आपको बोलने के लिये जरूरत नहीं है । आप संसदीय कार्य मंत्री हैं, आप एक अच्छी सोच को लेकर अपने विधायक साथियों को लेकर चलेंगे, यह हम सबको पूर्ण विश्वास है । सभापति महोदय, मैं पर्यटन के संबंध में कहना चाहूंगी कि आप ही लोगों के शासनकाल में मोटल वगैरह जो बना है, उसकी गति धीमी हो गई थी, आपके मोटल वगैरह हैं, वह जर्जर हो गये हैं, उसके मरम्मत के लिये आपके पास बजट होना चाहिये, ताकि हमारे छत्तीसगढ़ की संस्कृति और विधा को देखने के लिये लोग दूर-दूर से आयेंगे । आप जब तक उन्हें सुविधायें नहीं देंगे, हमारे पास जगह है, हमारे पास प्राकृतिक सौंदर्य है । लोग कश्मीर जाते हैं, हमारा बस्तर और सरगुजा कश्मीर से कम नहीं है । सभापति महोदय, आपसे कहना चाहेंगे कि इसमें बजट भी बढ़ायें और संसाधन भी बढ़ायें तथा आप यहां कर्मचारी भी रखें, इससे यह सही तरीका से चलेगा । सभापति महोदय, हमारे डौंडी ब्लॉक में बहुत बड़ा पचेड़ा घने जंगल में मौनी ब्लॉक में बसा हुआ है, उसे अमृत कुण्ड के नाम से जानते हैं । वहां पर मान्यता है कि उस कुण्ड में नहाने से जो चर्म रोग है, वह मिट जाता है, इसे पर्यटन में भी ले सकते हैं ।

सभापति महोदय :- भेंडिया जी, टाईम हो गया ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- सभापति महोदय, वहीं पर पंडवान देव करके स्थल है, जब बारिश नहीं होती थी तो जनता वहां जाकर प्रार्थना किया करते थे, भजन-कीर्तन करते थे, तब वहां पानी गिरता था । यह वहां के आदिवासियों की सोच है । सभापति महोदय, मैं उच्च शिक्षा के लिये बात करना चाहूंगी, हमारे प्रदेश में जितने भी नये-नये कॉलेज बने हैं, आपके बजट में सिर्फ एक कॉलेज भवन की बात आई

है, बाकी कॉलेजों के लिये नहीं है । आप उसमें पर्याप्त फण्ड लाकर जितना भी हो सके, कॉलेज के नवीन भवनों का निर्माण कराईये और वहां पर जो सेट अप है, प्रभारी प्राचार्य के रूप में अभी काम कर रहे हैं, न वहां पर कोई अभी लेक्चरर है, जैसे हमारी सरकार में 1500 शिक्षकों की भर्ती हुई थी, उसी तरह प्रधान अध्यापकों की भी अगर भर्ती हो जाये, हमारे जो प्रभारी और संविदा में शिक्षक चल रहे हैं, उसकी पूर्ति हो जायेगी । सभापति महोदय, हमारे यहां दल्ली राजहरा के बहुत से कॉलेजों में प्रयोगशाला है, परन्तु वहां कमरे नहीं है, यहां बहुत पुराने महाविद्यालय हैं, यहां पर कमरों की आवश्यकता है । वैसे ही कंगलामांझी डौंडी महाविद्यालय में जूलॉजी के भी विषय प्रारंभ करने की आवश्कता है । मैं माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगी कि आप इस तरह की स्वीकृति दें । सभापति महोदय, मैं धर्मस्व विभाग में भी यह कहना चाहूंगी कि जैसे आप 5 शक्तिपीठों के लिये बजट में प्रावधान रखे हैं, उसी तरह से हमारे प्रदेश में और भी बहुत से जिलों में हमारी जनता के आस्था के अनुरूप देवी-देवता विद्यमान है, ऐसे जगहों के लिये भी आप बजट में प्रावधान रखेंगे तो बहुत अच्छी बात होगी और छत्तीसगढ़ की जनता का आपको आर्शीवाद मिलेगा। सभापति महोदय, हमारे गंगा मइया के नाम से बालोद जिला में भी एक शक्तिपीठ है, उनके लिये भी आप बजट का प्रावधान करें तो बहुत अच्छी बात होगी ।

सभापति महोदय :- भेंडिया जी । थोड़ा जल्दी करें ।

श्रीमती अनिला भेंड़िया :- सभापति महोदय, मैं हमारे वरिष्ठ मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगी कि आपकी सरकार ने जो बजट में बहुत से क्षेत्रों को कोई कार्ययोजना में नहीं लिये हैं। आप कम से कम अपने विभाग में पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश को लेकर एक अच्छी परंपरा जारी करें, यह मैं आपसे निवेदन करती हूं और मैं इस इस विभाग का विरोध करने के लिये खड़ी हुई हूं।

माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते।

श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते (प्रतापपुर) :- माननीय सभापति महोदय, मैं इस सभा में पहली बार अपनी बात रखने के लिये और मैं अपने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी, वित्त मंत्री, ओ.पी. चौधरी जी और शिक्षा मंत्री, बृजमोहन अग्रवाल भैया को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बजट के पक्ष में अपनी बात रखने के लिये उपस्थित हुई हूं।

सभापति महोदय, आज सरस्वती पूजन का दिन है। मुझे इस शुभ अवसर पर शिक्षा के विषय पर अपनी बात रखने का अवसर प्राप्त हुआ है। माता सरस्वती की कृपा से हमारे मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं शिक्षा मंत्री, श्री बृजमोहन अग्रवाल जी निश्चित ही छत्तीसगढ़ को शैक्षणिक रूप से नई ऊचाइयों तक ले जायेंगे। मैं इन लाइनों के साथ अपनी बात आगे बढ़ाऊंगी।

"विकास के पथ पर अग्रसर हम समर्पण और समान भाव से

हम शिक्षा का प्रचार समृद्धि का संकल्प

बनायेंगे हम छत्तीसगढ़ का विश्वभर का मॉडल'' (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय, जो हमारे विपक्ष के साथीगण हैं, लगता है उन्होंने बजट को ठीक से देखा नहीं है। इतना अच्छा बजट, शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक बजट है। हमारी सरकार द्वारा डिजिटल एवं ए.आई. आधारित ईको सिस्टम के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की जायेगी। शिक्षकों की भर्ती एवं पदस्थापना के लिये पोर्टल आधारित पारदर्शी विश्वसनीय एवं सुगम व्यवस्था लागू की जायेगी। मैं प्रतापपुर विधान सभा से आती हूं, जो बहुत ही पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। वहां पर रघुनाथ नगर में हमारे शिक्षा मंत्री जी ने महाविद्यालय भवन की घोषणा की है। इसके लिये मैं शिक्षा मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूं। पूर्व में जब भाजपा की सरकार थी तो हमारी सरकार ने सरस्वती साईकिल योजना की शुरूआत की थी। हमारा क्षेत्र पिछड़ा हुआ है। वहां गरीब बच्चियां रहती हैं, उनके पास चलाने के लिये साईकिल नहीं होती थी, वह दूसरों को देखकर तरसती थी। उस समय हमारी भाजपा की सरकार ने स्कूलों में सरस्वती साईकिल योजना आरंभ की थी, उस योजना से हमारे सभी क्षेत्र के लोग बहुत प्रभावित हुए थे और यह योजना बहुत ही महत्वपूर्ण योजना थी और यह योजना हमारे लिये और बच्चियों के लिये बहुत ही गौरवान्वित करने वाली योजना थी।

सभापति महोदय, हमारी सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारे काम किये हैं और उच्च शिक्षा विभाग के क्षेत्र में भी बहुत से काम करने जा रही है। हमारी सरकार द्वारा शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर अंतर्गत 20 नये शिक्षा विभाग के 33 नये स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरंभ किये जायेंगे। इस हेतु बजट में 03 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है।

सभापति महोदय, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में स्टार्ट-अप, इनोवेशन एवं रिसर्च को बढ़ावा देने के लिये सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन फेसिलिटी प्रारंभ की जायेगी। इस हेतु बजट में 02 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है।

सभापति महोदय, स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार हमारा मकसद यह है कि भारत को उत्तम बनाये, न कि उसे उत्तम सिद्ध करे। हमारी सरकार ने 19 शासकीय महाविद्यालयों के लिये भवन निर्माण हेतु कुल 19 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। हमारी सरकार शिक्षा की दृष्टि से ऐतिहासिक कदम उठा रही है।

सभापति महोदय, मैं अपने शिक्षा मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहती हूं कि आप हमारे छत्तीसगढ़ में मां महामाया शासकीय महाविद्यालय, खड़गवा, जिला- कोरिया, शासकीय महाविद्यालय, शनावल, जिला- सरगुजा, शासकीय लरंगसाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामानुजगंज, जिला बलरामपुर-रामानुजगंज, महेश बघेल जी केशकाल शासकीय दण्डकारण्य महाविद्यालय, केशकाल, जिला-कोण्डागांव, शासकीय महाविद्यालय विश्रामपुर, जिला-सूरजपुर, शासकीय बाला साहेब देशपाण्डे महाविद्यालय कुनकुरी, जिला-जशपुर, शासकीय

लाल कालिन्द सिंह महाविद्यालय, अंतागढ़, जिला-कांकेर एवं शासकीय महाविद्यालय राजपुर, जिला - बलरामपुर- रामानुजगंज, इस प्रकार से 08 शासकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर नवीन संकाय प्रारंभ किया जायेगा। इसके लिये मैं अपने शिक्षा मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित करती हूं।

माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार द्वारा गोंडी भाषा के विकास हेतु हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी भाषा से गोंडी भाषा में अनुवाद करने वाले सॉफ्टवेयर का निर्माण किया जायेगा। यह हमारे लिए ऐतिहासिक है। विभागवार महत्वपूर्ण अभिलेखों को डिजिटल रूप में तैयार किया जाएगा इस हेतु मुख्य बजट में 03 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। हमारी सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किये हैं, निश्चय ही वह प्रशंसनीय हैं। मैं इतना ही कहकर, अपनी बात को समाप्त करना चाहती हूँ।

माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी (भानुप्रतापपुर) :- माननीय सभापति महोदय, मैं अनुदान मांग 26, 27, 28, 37, 44 और 51 की मांगों पर चर्चा के लिए उपस्थिति हूँ।

माननीय सभापति महोदय, मैं सर्वप्रथम माननीय शिक्षा मंत्री जी को धन्यवाद् देना चाहूंगी कि मेरे क्षेत्र में मात्र एक दुर्गकोंदल विकासखण्ड के शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल मेड़ो के नवीन भवन निर्माण हेतु एक करोड़ 21 लाख 16 हजार रूपये का प्रावधान किया है इसके लिए माननीय शिक्षा मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद् देती हूँ। साथ ही उसमें उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु, जो कॉलेज जाने वाली छात्राओं के यात्रा भत्ता के लिए कोई राशि का प्रावधान नहीं किया गया है साथ ही कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु इंदिराकला एवं संगीत विश्वविद्यालय की तर्ज पर कला एवं संगीत महाविद्यालय खोलने हेतु कोई रोड मैप तैयार नहीं किया गया है। महोदय, मध्यान्ह भोजन योजनार्न्तगत स्कूलों में कार्यरत हमारे रसोईयां भाई बहन जो मात्र 50 रूपये प्रति दिवस मानदेय पर बच्चों को गर्म भोजन बनाकर परोसते हैं, जिनके लिए इस बजट में राशि का कोई प्रावधान नहीं किया गया है। माननीय शिक्षा मंत्री जी को मेरा यह सुझाव है कि प्रदेश के शिक्षकों को उत्कृष्ट कार्यों के लिए जो उन्हें पुरस्कृत किया जाता है उनके लिए प्रत्येक विकासखण्ड स्तर पर एक कमेटी बनायी जाये, जो शिक्षकों के कार्यो का अवलोकन करे। उनमें से एक उत्कृष्ट शिक्षकों का चयन कर, उन्हें पुरस्कृत करें। हमारे प्रदेश के शिक्षक पुरस्कार के लिए शिक्षक स्वयं होकर आवेदन न करें। क्योंकि यह देखा गया है कि शिक्षक स्वयं होकर आवेदन करते हैं तो उनको पुरस्कार भी मिल जाता है तो मैं चाहूंगी कि माननीय शिक्षा मंत्री जी इस पर थोड़ा सा ध्यान देंगे। क्योंकि इस प्रक्रिया से श्रेष्ठ शिक्षक वंचित रह जाते हैं। मैं जिस क्षेत्र से आती हूँ वहां पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं जिसमें वहां प्रमुख रूप से देवधारा जलप्रपात है, जो कि भानुप्रतापपुर विकासखण्ड में है जहां प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि को भव्य मेला लगता है उसी प्रकार एक जगह सोनादाई है यह पूरा अचंल सुदूर जंगल ईलाके में है और वह नक्सली बेल्ट है तो माता लोहत्तर दुर्गकोंदल माता है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वहां भी माघ पूर्णिमा का मेला लगता है मैं चाहती हूँ कि जिन्हें पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सके। जिसके लिए यहां इस बजट में कोई ठोस रणनीति नहीं है। साथ ही मेरे विधान सभा क्षेत्र में कई हाई स्कूल और हायर सेकेण्डरी स्कूल हैं, जो भवनविहीन हैं। जिनमें से प्रमुख रूप से दुर्गकोंदल विकासखण्ड अंतर्गत जो हाई स्कूल मंघूर, जाड़ेखुरसी, गोढ़पाल, झिटकाटोला और कलनपुरी है ठीक उसी प्रकार भानुप्रतापपुर विकासखण्ड अंतर्गत हायर सेकेण्डरी स्कूल कनेचुर, हाई स्कूल भैंसाकन्हार, हाई स्कूल गोगा सम्मिलित है, जो वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा के भवनों में संचालित हो रही है इसके लिए बजट में कोई प्रावधान आ जाता तो बहुत अच्छा होता और इसके साथ ही भानुप्रतापपुर क्षेत्र में यह जो शासकीय महर्षि वाल्मिकी महाविद्यालय है, वह भवन जर्जर हो चुका है, वहां भवन की आवश्यकता है इस पर भी ध्यान दिया जाये। मैं शिक्षा मंत्री जी से यह कहना चाहूंगी कि वाकई में दुर्गकोंदल ईलाके में एक मात्र कॉलेज है और वहां आसपास पूरा नक्सली ईलाका है वहां जो बच्चे पढ़ते हैं वह भानुप्रतापपुर या कांकेर नहीं जा पाते तो मैं चाहती हूँ कि वहां एक नवीन संस्थान है जिसकी वर्ष 2013-14 में स्थापना हुई थी। वर्तमान में वहां उस कॉलेज में आवश्यक संसाधनों का अभाव है मैं चाहती हूँ कि वहां 100 सीटर बालक छात्रावास हो जाए और 100 सीटर बालिका छात्रावास हो जाए। यह बहुत जरूरी है इसके साथ ही स्नातक स्तर में नवीन विषय हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, भूगोल साहित्य, इतिहास के विषय खुल जाएं और इसके अतिरिक्त स्नातकोत्तर स्तर में नवीन विषय एम.एस.सी. का रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, विज्ञान और प्राणी शास्त्र खुल जाए और एम.ए. के लिए राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र और एम.कॉम में वाणिज्य विषय खुल जाएं। उस कॉलेज के लिए यह विषय बहुत जरूरी है क्योंकि बहुत अंदरूनी इलाके में है, वहां के बच्चे बाहर जाकर पढ़ नहीं सकते तो इनके लिए अगर यह सुविधा हो जाये तो बहुत अच्छा होगा। यहां पर वित्त मंत्री जी, शिक्षा मंत्री जी बैठे हैं। मैं चाहती हूं कि जल्दी से जल्दी इसका इसमें प्रावधान आ जाये। मैं ज्यादा कुछ तो नहीं बोलना चाहती, बस इतना कहकर मैं अपनी वाणी को विराम दे रही हूं। माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती भावना बोहरा (पंडरिया) :- माननीय सभापति महोदय, शिक्षा विभाग की अनुदान मागों में चर्चा हो रही है, आपने मुझे यहां बोलने का अवसर दिया, मैं आपका आभार व्यक्त करती हूं। मैं सर्वप्रथम हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी जिनके नेतृत्व में यह बजट आया है, आदरणीय वित्त मंत्री जी, शिक्षा मंत्री जी का बहुत अभिनंदन करती हूं कि इस बार शिक्षा का बजट पिछले बार के बजट से 10 प्रतिशत ज्यादा है। निश्चित ही जिस समग्र विकास की बात करते हैं, मुझे लगता है कि उस समग्र विकास में शिक्षा का बहुत महत्वपूर्ण रोल रहता है। इसलिए मैं सबसे पहले जो हमारे यहां पर सीनियर बैठे हुए हैं, उनका अभिनंदन करना चाहूंगी। आज चूंकि बसंत पंचमी का दिन है, माता वीणावादिनी का दिन है, जिनके आशीर्वाद से आज सत्र में शिक्षा विभाग में चर्चा हो रही है। हमें याद है कि छत्तीसगढ़

की रचना श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जी ने की थी, जिनका शिक्षा नीति पर बहुत फोकस था। सर्वशिक्षा अभियान की जो हम बात करते हैं, कहीं न कहीं उनको हम जरूर याद करते हैं। उन्ही शिक्षा नीतियों को आगे बढ़ाते हुए हम शिक्षा की जो नई टेक्नालॉजी की, शिक्षा पद्धति की, शिक्षा नीति की बात करते हैं, कहीं न कहीं मुझे लगता है आने वाले बजट में जिस तरीके से सारी चीजों का समायोजित किया गया है, नई शिक्षा नीति पर बहुत जल्दी ही काम होगा।

सभापति महोदय, मैं पीएम श्री स्कूल के विषय में कहना चाहूंगी। पहले यहां पर 211 पीएम श्री स्कूल एलाटेड हुए थे, उसको बढ़ा करके लगभग 300 के आसपास पीएम श्री स्कूल का जो प्रस्ताव रखा गया है, कहीं न कहीं वह प्रस्ताव बहुत अच्छा है। मुझे लगता है कि आने वाले समय में इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका बनेगी। विपक्ष के माध्यम से लगातार स्वामी आत्मानंद स्कूल की चर्चा होती आ रही है। हम जब जनप्रतिनिधि होने के नाते क्षेत्र मे किसी स्कूल के प्रोग्राम में, खेल के किसी कार्यक्रम में स्कूलों में जाते हैं तो जिस प्रकार से वहां पर व्यवस्थायें दिखती हैं। क्योंकि मैंने पहले भी यह विषय रखा था कि उन्हीं शिक्षकों को जो हमारे शिक्षा विभाग के स्कूलों में शिक्षक थे, उन्हीं को अपग्रेड करके हमने उनको स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल में पदस्थापना कर दी है। जो कही न कहीं उनकी पढ़ाई की जो क्षमता होनी चाहिए, वह प्रभावित करती है। दूसरा महत्वपूर्ण विषय था कि एक ही स्कूल में, एक ही बिल्डिंग में, एक ही इन्फ्रास्ट्रक्चर में लगातार दो शिफ्ट में जो कक्षायें चल रही हैं, पहले सुबह 8 से 12, 1 बजे तक कक्षायें चलती हैं और शाम को 12 से 4 बजे तक कक्षायें चलती हैं। कहीं न कहीं इस बार स्कूलों के लिए जो बजट आया है, मुझे लगता है कि नवनिर्माण स्कूल की हम जो बात करते हैं, इसको बजट में समायोजित किया गया है जो कि बहुत ही अच्छा विषय है।

सभापति महोदय, काफी लोगों ने कुछ विषयो में अपनी बातें रखी हैं, मैं मुख्य विषय में ही अपनी ज्यादा बात रखना चाहूंगी। सबसे पहले मैं कालेज के विषय में कहना चाहूंगी। हमारे यहां कॉलेज बहुत खुले हैं, उसमें लगातार 15 सालों में बहुत काम भी हुआ है। लेकिन पिछले 05 साल में कॉलेजों की जो दुर्दशा हो गई है, मैं बताना चाहूंगी कि जो लैब, लाइब्रेरी हैं, अगर आप लैब में जायेंगे, कमेस्ट्री लैब के लिए न ही वहां पर कोई मटेरियल उपलब्ध है। आप बायोलॉजी लैब जायेंगे तो वहां पर माइक्रोस्कोप और न ही कोई स्लाइड्स उपलब्ध हैं। यह स्थिति हमारे कॉलेजों की है। मैं आदरणीय मंत्री महोदय से यह निवेदन करना चाहूंगी कि हमारे क्षेत्र में, प्रदेश में जितने भी कॉलेज हैं, एक बार उनका सर्वे होना चाहिए कि वहां पर किन चीजों की जरूरते हैं। क्योंकि कॉलेज खुलना और वहां पर बच्चों का आना एक अलग विषय रहता है, लेकिन पढाई के स्तर को सुधारने की हम जो बात करते हैं, मुझे लगता है कि जो मूलभूत सुविधायें हमारे कालेजों में होनी चाहिए, खासकर के सरकारी कॉलेजों में, उसका एक बार सर्वे होना बहुत जरूरी है।

माननीय सभापति महोदय, मैं दूसरे विषय स्कूल के सर्वे के बारे में कहना चाहूंगी। हमारे अधिकतर स्कूलों में बाउण्ड्री नहीं है। ऐसे बहुत से स्कूल हैं, चाहे वह मेरे क्षेत्र की बात करूं, आदरणीय भी मुझसे सहमत होंगे, स्कूलों में बाउण्ड्री की आज भी कमी है जिसके कारण स्कूल हटने के बाद में असामाजिक तत्वों का वहां पर डेरा रहता है, जिसके कारण बहुत सारी परेशानियां होती हैं। जिस तरीके से पिछले 05 साल में शराब का जो कारोबार बढ़ा है, कहीं न कही स्कूल भी उससे प्रभावित हुए हैं। स्कूल में बाउण्ड्री नहीं होने के कारण से उस क्षेत्र में सुबह जब बच्चे स्कूल जाते हैं, वहां पर खराब की बाटलें निकलती हैं। मुझे लगता है कि यह सुविधा उस पर होनी चाहिए।

सभापति महोदय, उसके अलावा जो बहुत गंभीर विषय है, जैसे मैं अपने कबीरधाम जिला की ही बात करती हूं। हमारे यहां लगभग 4 हजार शिक्षकों के पद हैं, लेकिन वहां पर जो शिक्षकों की नियुक्ति हुई है, वहां पर मुश्किल से 1900 शिक्षकों होंगे। अभी भी लगभग 2 हजार से 2100 शिक्षकों की कमी है। जिसके कारण से शिक्षकों को कभी इस स्कूल में शिफ्ट करना पड़ता है, कभी दूसरे स्कूल में शिफ्ट करना पड़ता है। मेरा निवेदन यही है कि जब भर्ती नहीं होती है तब तक वहां पर अतिथि शिक्षकों की व्यवस्था की जाये। जिनकी क्वालीफिकेशन उसी के अनुसार हो जो शिक्षकों की होती है। उनको या तो हम कुछ एक मिनिमम साईट पर सैलरी बांध दें या फिर प्रमाण-पत्र के तरीके से उनको एक अनुभव प्रमाण-पत्र को दे सकें जोकि आने वाले में उनका सर्टिफिकेट का काम भी आएगा और जो शिक्षकों की कमी है, मुझे लगता है कि हम वह कमी को भी दूर कर सकेंगे। मुझे लगता है कि इस पर विचार होना चाहिए। ऐसा मेरा यहां पर पूरा अनुरोध है।

सभापति महोदय :- बोहरा जी, थोड़ा जल्दी समाप्त किरये।

श्रीमती भावन बोहरा :- जी। सभापति महोदय, इसीलिए मैंने बहुत सारे विषय नहीं रखा है। जो मुख्य मांगें हैं, जो विषय मेरे विधान सभा क्षेत्र में आ रहे हैं, मैं उन्हीं पर आ रही हूं। इसलिए बाकी भूमिका में मैंने ज्यादा समय नहीं लिया है। उसके अलावा पर्यटन और संस्कृति विभाग भी हमारे आदरणीय मंत्री महोदय के पास में है तो उन विषयों पर मेरे विधान सभा क्षेत्र की जो छोटी-सी मांग है, वह मैं आप सबके सामने जरूर रखना चाहूंगी। जो नक्सल क्षेत्र से आते हैं, मैं नक्सल क्षेत्र तो नहीं कहना चाहूंगी, लेकिन जो वनांचल क्षेत्र से आते हैं। कोई दूर है। दूरलापुर मण्डल है। करीब 70-80 ऐसे बूथ हैं, जो वनांचल क्षेत्र में है और आज भी उनके पास उनकी आजीविका का साधन नहीं है। उनके पास बहुत लिमिटेड साधन है। मेरा निवेदन है कि वहां पर भैंसाधार नाम से प्राकृतिक सौंदर्य से और वाटर फाल से समुचित एक क्षेत्र है, वहां पर काफी दिन से पर्यटन स्थल की मांग चल रही है। यह मांग काफी समय से लंबित है। मुझे लगता है कि उस पर जरूर विचार होना चाहिए क्योंकि उनकी आय का एक साधन मिलेगा और वहां डेव्हलपमेंट भी होगा।

सभापति महोदय, दूसरा विषय है कि एक कुंवर अछरिया स्थल है जो हमारा लोहारा ब्लॉक में आता है। यह भी काफी समय पहले से इसे महोत्सव के रूप में मांग की गई थी। जिस तरीके से भोरमदेव महोत्सव किया जाता है, इसी तरीके से काफी सालों से इसके लिए महोत्सव की मांग की जाती ह। यहां लगभग 200 साल पुराना मंदिर है जो यादव समाज के राजा थे, यह उनका मंदिर है। वहां हर 3 दिन का साल मेला लगता है, जहां 200-300 गांव के लोग आते हैं। काफी दिनों से उनकी मांग थी कि उस क्षेत्र में ऐसा महोत्सव कुंवर अछरिया देव के नाम से होना चाहिए। सभापति महोदय, मुझे लगता है यह विषय एक बार जानकारी में आना जरूरी था और मैं फिर से कहना चाहूंगा कि जो शिक्षा का बजट आया है वह बहुत अच्छा बजट है। निश्चित ही पिछले पांच सालों में जो कमियां रही हैं, उसको देखते हुए बिल्कुल प्रतीत होता है कि आने वाले समय में शिक्षा पर भरपूर जोर दिया जाएगा और प्रयास किया जाएगा कि हम शिक्षा की इतनी गुणवत्ता सुधार सकते हैं। आदरणीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया है। यहां हमारे आदरणीय मंत्री जी बैठे हैं। आपने समय दिया। आप सबके लिए आभार व्यक्त करते हुए इन्हीं उम्मीदों के साथ कि जो विषय हमने रखा है, उसको धरातल में लाने का काम अतिशीघ्र होगा। आप सबका अभिनंदन।

सभापति महोदय :- श्री द्वारिकाधीश यादव।

श्री अजय चन्द्राकर :- देख ममा, जे बात बोलना होही, ओ सच बोलबे। भूपेश बघेल, भूपेश बघेल मत करबे।

श्री द्वारिकाधी यादव :- भूपेश बघेल जी में सच है तो बोलना ही पड़ेगा। असत्य बोलूंगा तो आप जरूर बोल दीजियेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- भाचा हा तोला श्राप दिही।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आज तक के इतिहास में भाचा कभी मामा को श्राप नहीं देते।

सभापति महोदय :- यादव जी, आप अपनी बात रखिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव (खल्लारी) :- सभापति महोदय, वह भी बात जरूरी थी। माननीय सभापति महोदय, मैं वित्तीय वर्ष 2024-2025 के अनुदान मांगों पर चर्चा के लिए मांग संख्या 26, 27, 28, 37, 44, 51 के चर्चा के लिए खड़ा हुआ हूं।

माननीय सभापति महोदय, देश के लिए, प्रदेश के लिए शिक्षा विभाग सबसे महत्वपूर्ण विभाग है। शिक्षा मंत्री जी भी विद्वान हैं और वित्त मंत्री जी भी विद्वान हैं, लेकिन मैं ऐसा महसूस करता हूं कि एक लाख 47 हजार करोड़ रूपये की बजट में शिक्षा विभाग में उच्च शिक्षा में केवल और केवल 1483 करोड़ 27 लाख रूपये प्रावधान किया गया है। यह पर्याप्त नहीं है। इसलिए पर्याप्त नहीं है क्योंकि आप किसी भी समूचे छत्तीसगढ़ में विधान सभा का आप आंकलन करेंगे। मंत्री जी विद्वान हैं। यह मैं मानता हूं कि वह काम कर सकते हैं, लेकिन शिक्षा विभाग में धन राशि की कमी पर आप जैसे भी दिमाग लगा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लीजिये, चाहे नीति लागू करने की बात हो, अंत में बजट की आवश्यकता होगी। छत्तीसगढ़ में महाविद्यालय एक विधान सभा में मुश्किल से एक या दो होंगे। आप 12वीं के बाद का औसत देखेंगे तो 25 प्रतिशत छात्रों को महाविद्यालय में प्रवेश नहीं मिल रहा है। 25 प्रतिशत छात्रों को प्रवेश मिल रहा होगा, लेकिन जरूरी नहीं है कि 25 प्रतिशत छात्रों को प्रवेश मिल रहा हेगा। आज 75 प्रतिशत छात्रों को शासकीय महाविद्यालय में प्रवेश नहीं मिल रहा है और इसका परिणम है कि छत्तीसगढ़ में महाविद्यालय की कमी की वजह से केवल और केवल बारहवीं तक के बच्चे शिक्षा का लाभ ले रहे हैं । माननीय सभापति महोदय, दूसरी बात । बजट में कहीं पर ऐसा नहीं बताया गया है जिसमें गरीब बच्चों के लिये कुछ हो । गरीब बच्चों के लिये क्या होगा ? आज की परिस्थिति में उनको कैसी शिक्षा मिले ? उनके लिये क्या व्यवस्था होगी ? माननीय सभापति महोदय, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि शिक्षा के क्षेत्र में हमारी सरकार के मुखिया माननीय भूपेश बघेल जी ने एक ऐसी शिक्षा नीति लाये । पहले गरीब के बच्चे अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के बोर्ड को पढ़ा करते थे कि यहां अंग्रेजी की पढ़ाई होती है और उस बिल्डिंग को देखा करते थे । घर में माता-पिता को बोलते थे कि मैं भी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ूं । लेकिन आर्थिक तंगी के चलते न तो गरीब के बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ पाते थे और माता-पिता भी उसकी इच्छा की पूर्ति नहीं कर पाते थे ।

माननीय सभापति महोदय, मैं इस बात को गर्व के साथ बोलना चाहता हूं कि 5-10 सालों के बाद इसी सदन में उस शिक्षा नीति का परिणाम है कि माननीय राज्यपाल जी का अभिभाषण अंग्रेजी में हुआ । हम 70 परसेंट सदस्य शायद उस अभिभाषण को समझ ही नहीं पाये लेकिन उस शिक्षा नीति का परिणाम यह होगा कि इस सदन में ऐसे भी विधायक बनकर आयेंगे जो माननीय राज्यपाल जी के अंग्रेजी के अभिभाषण को समझेंगे और बहुत सारी बातें होंगी । लेकिन इस बजट में कहीं पर भी ऐसा नहीं दिख रहा है कि उस तरह की नीति महाविद्यालय के लिये चूंकि आज 25 परसेंट भी प्रवेश नहीं पा रहे हैं ।

सभापति महोदय :- जल्दी करें ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय, मैं संसदीय सचिव था । मैं बोल नहीं पाता था, अभी बोलना शुरू हुआ है । विद्वान वित्तमंत्री जी ने बजट में शिक्षा विभाग में बहुत अच्छी बात बोली है कि किसी भी प्रदेश को पीछे करना है तो उसके लिये कोई बमबारी की जरूरत नहीं है, शिक्षा नीति को कमजोर कर दें । माननीय वित्तमंत्री जी, कम से कम शिक्षा में दलगत भावना नहीं होनी चाहिए लेकिन दलगत भावना के चलते अब शिक्षा में वैसा ही हो रहा है । हमारे खल्लारी विधानसभा में एक महाविद्यालय नहीं खुलेगा तो वही बातें हो रही हैं । वहां शिक्षा को कमजोर कर दो । हाईस्कूल एक भी नहीं, प्राईमरी स्कूल एक भी नहीं, नया मिडिल स्कूल एक भी नहीं । चूंकि बच्चों की दर्ज संख्या बढ़ रही है तो आखिर वह बच्चे जायें तो कहां जायें ? माननीय वित्तमंत्री जी ने जो कहा है वह कहीं न कहीं

मेरे खल्लारी विधानसभा में दिख रहा है । 5 साल में वहां के बच्चे शिक्षा में पीछे होंगे । मैंने देवरी हायर सेकेण्डरी स्कूल की भी मांग की थी, कमरौद का किया था, अरण्य हाईस्कूल की मांग की थी, मुड़ा गांव का किया था, शासकीय पूर्व माध्यमिक का किया था, मौहगांव का किया था लेकिन एक भी नहीं मिला । आखिर हाईस्कूल के बच्चे बगैर छत के पढ़ें तो कहां पढ़ें ? प्राचार्य एडमिशन दें तो कहां दे ?

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, हमर वित्तमंत्री जी पहिली बार आये हे । ओहा बहुत अच्छा नया-नया कानून बनात हे । एक ठन अइसे कानून बना दिया जाये कि चाहे नेता के लइका हो, चाहे अधिकारी के लइका हो, चाहे उद्योगपति के लइका हो, सब सरकारी स्कूल में पढ़य । देखिहा हमर छत्तीसगढ़ के शिक्षा व्यवस्था कइसे आगे नइ बढ़ही । अब हमर लइका अउ तुंहर लइका पढ़त हावय बड़का डी.पी.एस. स्कूल में अउ पथराफोरा, माटीबोहा के लइका सरकारी स्कूल में पढ़त हे ता कइसे बनही ? हम आपसे तब निवेदन करबो, अइसे कानून बना देवा कि दुनिया हा आप ला वाह-वाह कइही ।

सभापति महोदय :- चलिये, यादव जी अपनी बात रखिये ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय, प्रदेश में स्कूल शिक्षा विभाग में निश्चित रूप से रिक्त पद हैं और भर्ती की आवश्यकता है । मैं माननीय मंत्री जी को सलाह देना चाहूंगा कि अतिशेष प्रदेश में पर्याप्त हैं । अतिशेष को खत्म करके, चूंकि मैं दूसरी बात यह कहना चाहूंगा कि पहले की दर्ज संख्या के हिसाब से पद स्वीकृत हैं । वर्तमान दर्ज संख्या के आधार पर पद निर्धारण होना चाहिए जिससे मैं समझता हूं कि 50 परसेंट आज भी शालाओं में शिक्षक की पूर्ति हो सकती है।

सभापति महोदय :- यादव जी, अगर आपकी मांग हो तो रखिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मांग भी कर रहा हूं और बता भी रहा हूं।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, बोलन दो न। ओ तो बोलथे। 5 घंटा ले बोलन दो।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- सभापति जी, मैं सरकार के खजाने में बजट के लिए निवेदन कर रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, ये दोनों यादव बंधुओं को अलग-अलग बैठाइए। दोनों एक साथ खड़े होते हैं और एक-दूसरे को धक्का-मुक्की भी करते हैं।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप पूरा देख लीजिए। जब आप बोलते हैं तो मैं कभी खड़ा नहीं हुआ हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- दोनों एक-दूसरे से धक्का-मुक्की तो करते हो।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- नहीं-नहीं, हम लोग कका-भतीजा हैं।

श्री रामकुमार यादव :- कका-भतीजा हन भाई। (हंसी)

सभापति महोदय :- यादव जी, 7 मिनट हो गया।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- 7 मिनट हो गया। सभापति महोदय, दूसरा निवेदन यह कर रहा हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में शिक्षक की पर्याप्त कमी है। जिलाधीश कलेक्टर महोदय अतिशेष को व्यवस्थित करने के लिए संचालनालय प्रस्ताव भेजे कई महीने हो गये। पता नहीं दियार-वियार खा गया होगा। अगर दियार खा दिया होगा तो भांचा श्री मैं फिर से भेजवा दूंगा। मैं आपके माध्यम से बताना चाह रहा हूं कि उस क्षेत्र में भी काम हो। तीसरी बात..।

सभापति महोदय :- द्वारिका जी आपके पास सिर्फ 1 मिनट बचा है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय, एक मिनट में मैं यही बोलना चाहूंगा कि विद्वान शिक्षा मंत्री जी हैं, लेकिन सरकार ने उन्हें पर्याप्त बजट नहीं दिया। मुझे ऐसा लगता है कि उसमें भी कुछ अंदर वाली भावना है। ज्यादा पॉपूलर न हो जाये। ज्यादा जननेता न हो जाये। जननेता हो, लेकिन कहीं न कहीं शिक्षा के क्षेत्र में जैसे बजट और जितना बजट देना था, वैसे बजट नहीं दिया गया है, इससे स्पष्ट है कि साल 6 महीने बाद इसी सदन में परिणाम आयेगा कि शिक्षा के क्षेत्र में कोई नया नहीं होगा, ऐसा मैं महसूस कर रहा हूं। आपने बोलने के लिए समय दिया, उसके लिए धन्यवाद दूं, उससे पूर्व मंत्री जी से जरूर निवेदन करना चाहूंगा कि मेरे क्षेत्र में जो लंबित प्रस्ताव है और शिक्षक की कमी के क्षेत्र में भी आगामी बजट में जरूर सम्मिलित करेंगे, इसी बात के साथ आपको पुन: धन्यवाद देते हुए मैं अपनी बात को विराम देता हूं।

सभापति महोदय :- गजेन्द्र यादव ।

श्री गजेन्द्र यादव (दुर्ग शहर) :- सभापति महोदय, धन्यवाद। आज आपने वित्तीय वर्ष 2024-25 के इस बजट भाषण में शिक्षा विभाग के संबंध में चर्चा के लिए मुझे आमंत्रित किया। आज मैं शिक्षा विभाग जो कि छत्तीसगढ़ के सबसे ज्यादा कर्मचारी वाले विभाग के संबंध में बात करने के खड़ा हुआ हूं। सभापति महोदय, मैं सबसे पहले छत्तीसगढ़ शासन के हमारे माननीय मुखिया श्री विष्णु देव साय जी, हमारे वित्त मंत्री आदरणीय श्रद्धेय श्री ओ.पी. चौधरी साहब और शिक्षा मंत्री श्रद्धेय श्री बृजमोहन अग्रवाल जी को धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने हमारे बच्चों के उत्तम शिक्षा के लिए एक स्वच्छ विद्यालय सुनहरा भविष्य प्रभाव को लेकर उन्होंने कार्य करना प्रारंभ किया। जिसके तहत सबसे पहले हम सब जब स्कूल जाते हैं, अभी लगातार सभी बैठकों में बात आती थी कि डी.एम.एफ. फंड के नाम से, रख-रखाव के नाम से, मेंटेनेंस के नाम से बहुत सारी खामियां और भ्रष्टाचार हुए। कई-कई प्रकार की बातें आई हैं। उसको दूर करने के लिए इन्होंने जो शालाओं के रख-रखाव और अधोसंरचना विकास के लिए जो बजट में 265 करोड़ रूपये की राशि का प्रावधान किया है, जिससे कि स्कूल के भवनों का निर्माण, भवनों का अनुक्षरण और जगह स्वच्छ रहे और साफ-सुथरा रहे, उसके लिए सरकार ने चिंता की, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। आदरणीय सभापति महोदय, मैं सबसे पहले आपके माध्यम से माननीय वित्त मंत्री जी को बधाई देता हूं, जिन्होंने हम सब जानते हैं कि जब शुरू में कहा 3 लाख से भी ज्यादा हमारे

कर्मचारी हैं और वो अपनी समस्याओं को लेकर, अपनी मांगों को लेकर या कुछ विषयों को लेकर निराकरण के लिए जाते हैं। इंद्रावती परिसर जहां पर सारे विभागों के विभागाध्यक्ष की बिल्डिंग है, कहीं न कहीं कर्मचारी संख्या के हिसाब से वह बिल्डिंग छोटा होता है। शिक्षा विभाग का एक अलग बिल्डिंग हो, जिसके लिए आपने कंपोजिट विभागध्यक्ष की बिल्डिंग के लिए एक अलग से बजट में जो राशि प्रावधानित किया है, उसके लिए मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। साथ ही साथ श्रद्धेय वित्त मंत्री जी माननीय शिक्षा मंत्री से एक और निवेदन करना चाहता हूं। चूंकि यह बहुत बड़ा विभाग है। बहुत बड़ी संख्या में कर्मचारी काम करते हैं । मेरा आपसे एक ही आग्रह है, जैसे आपने राज्य में विभागाध्यक्षों के लिए एक साथ कम्पोजिट बिल्डिंग की व्यवस्था की है । वैसे ही सभी संभाग मुख्यालयों में भी ज्वाइंट डायरेक्टर, डी.ई.ओ., बी.ई.ओ. आदि के लिए भी कम्पोजिट बिल्डिंग का प्रावधान अगर सारे संभाग मुख्यालयों में करेंगे तो संभाग से आने वाले कर्मचारियों को सुविधा मिलेगी । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को, माननीय वित्त मंत्री जी को, माननीय शिक्षा मंत्री जी को धन्यवाद् देता हूं । चूंकि कर्मचारियों की संख्या ज्यादा होने के कारण ट्रांसफर, पोस्टिंग, कोर्ट केसेस के मामले भी ज्यादा आते हैं । इस सरकार ने जो अधिकारी कर्मचारी न्यायालय में विभाग का पक्ष रखने के लिए बिलासपुर जाते हैं, उनकी व्यवस्था के लिए सोचा, विधि प्रकोष्ठ के लिए जो बात रखी गई है, उसके लिए भी धन्यवाद् देता हूं । हम सब जानते हैं भारत योग के मामले में विश्व गुरू है और श्रद्धेय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है । हमारे बच्चों के अच्छे हेल्थ के लिए पूरे प्रदेश के 146 ब्लॉक के शिक्षकों को आपने योग प्रशिक्षण की बात कही । चूंकि जब तक शिक्षक प्रशिक्षित नहीं होंगे तो वे बच्चों को क्या सिखा पाएंगे ? आपने शिक्षकों को पहले योग प्रशिक्षण की बात कही उसके लिए 30 लाख का बजट प्रावधान किया है, मैं इस सरकार को धन्यवाद् देता हूं ।

माननीय वित्त मंत्री जी ने प्रथम दिवस अपना बजट रखा तो अत्याधुनिक टेक्नालॉजी के माध्यम से बजट रखा उसके लिए धन्यवाद् देता हूं । सूचना प्रौद्योगिकी में विचार क्रांति के माध्यम से आपने एक नये युग का अवतरण हमारे छत्तीसगढ़ विधान सभा में लाया उसके लिए धन्यवाद् देता हूं । आपकी सोच के अनुरूप लगातार देखने में आता था, बच्चे कम्पयूटर में पढ़ाई कर लेते थे लेकिन किसी भी विषय में उनको बाबू के लिए, लिपिक के लिए उनको आवेदन देना रहता था तो वहां यह बात आती थी कि टायपिंग बोर्ड से आपने मुद्रलेखन परीक्षा आपने पास की है या नहीं ? कम्प्यूटर के युग में आज भी टायपिंग की परीक्षा देना दुष्कर काम था जो बच्चे आज उससे दूर हो रहे हैं । आपने उसको दुरूस्त करके टायपिंग बोर्ड का निर्माण करके मुद्रलेखन परीक्षा में पुराने टाइपराइटर पद्धति को हटाकर कम्प्यूटर पद्धति लागू की उसके लिए आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी, वित्तमंत्री जी का बहुत बहुत आभार व्यक्त करता हूं कि आपने एक अच्छी सोच रखी।

श्री राम कुमार यादव :- यादव जी, नवा बजट में एक ठ भी हाईस्कूल, हायर सेकेंडरी नइ हे ओखरे लिए कुछ बोलहू ।

श्री गजेन्द्र यादव :- पहिली मोर बात तो सुन तो ले ।

श्री राम कुमार याव :- इतिहास में ये पहला बजट हे कि मुख्य बजट मे एक ठ हाई स्कूल नइ हे, हायर सेकेंडरी नइ हे ।

श्री गजेन्द्र यादव :- जेन स्कूल हे ओला सुधार लेबो तो हमर व्यवस्था दुरूस्त हो जाही । सभापति महोदय, मैं बहुत बहु धन्यवाद देता कि हमारी सरकार ने, हमारे यशस्वी वित्तमंत्री जी ने जो डिजिटल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की व्यवस्था आधारित ईको सिस्टम शिक्षा में लागू किया । जिससे हर स्कूल में एक स्मार्ट क्लास होगा । मेरे भाई राम कुमार यादव कह रहे हैं । शिक्षकों की कमी पूरे प्रदेश के ग्रामीण अंचल के स्कूलों में, वनवासी अंचल के स्कूलों में रहती है । अगर यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से स्मार्ट क्लास चालू हो जाएगी तो मैं समझता हूं कि किसी भी स्कूल में शिक्षक रहे या न रहे, हम स्मार्ट क्लास के माध्यम से ऑनलाईन क्लास के माध्यम से हम शिक्षा व्यवस्था दुरूस्त कर सकते हैं । उसके लिए मैं धन्यवाद् देता हूं ।

सभापति महोदय :- यादव जी, कोई मांग हो तो रख लो ।

श्री गजेन्द्र यादव :- इसमें एक और निवेदन करना चाहता हूं और वित्त मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूं । हाईस्कूल, हायर सेकेंडरी के बच्चे कॉम्पीटीटिव एक्ज़ाम के चक्कर में आई.आई.टी. और नीट की तैयारी के संबंध में बच्चे स्कूल नहीं जाते, वे कोचिंग क्लास में जाते हैं । यहां के बच्चे कोचिंग के नाम से कोटा और अन्य शहरों में जाते हैं, वे एक छोटे से रूम में 4-4, 5-5 बच्चे वहां रहकर रात दिन, न खाने की चिंता, न खेलने की, न मनोरंजन का कोई साधन, एक छोटे से डब्बे समान रूम में रहकर 24 घंटे पढ़ाई करते हैं और किसी कारणवश उनका रिजल्ट उनके अनुरूप नहीं आया तो वह बच्चे सुसाइड कर लेता है । बहुत दुर्भाग्य की बात है, कल सूरजपुर का हमार एक बच्चा जिसका आई.आई.टी. के प्रारंभिक एक्जाम में सेलेक्शन नहीं होने के कारण सुसाइड कर लिया । मैं आपके माध्यम से माननीय वित्त मंत्री जी से, माननीय शिक्षा मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि आप एक व्यवस्था बनाएं, 9वीं कक्षा से ही बच्चे कोटा और विभिन्न राज्यों में चले जाते हैं, उनके लिए एक उम्र और एक निश्चित सीमा रहे, जिससे कि बच्चों में किसी प्रकार की नकारात्मकता ना आए। मैं आपसे मांग करना चाहता हूं।

सभापति महोदय, शिक्षा की भर्ती, पदस्थापना के लिए आपने पोर्टल आधारित पारदर्शी, विश्वसनीय सुगम व्यवस्था लागू की। उसके लिए मैं आदरणीय स्कूल शिक्षा मंत्री, वित्त मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। क्योंकि अभी लगातार पिछली सरकार में भर्ती और पदस्थापना में पोर्टल पद्धति का उपयोग नहीं करने के कारण भेदभाव हुआ, भेदभाव होने के कारण यह हुआ कि माननीय मंत्री जी ने किसी को कहीं भी पदस्थापना दे दी, दूसरे मंत्री ने उसे रोक दिया, लगभग एक हजार से

ज्यादा शिक्षकों की नई पदस्थापना थी, वह रूक गयी। पिछले 6 महीने से उनका वेतन आहरण नहीं हो पाया। हमारी सरकार बदलने के बाद माननीय स्कूल शिक्षा मंत्री ने उनकी व्यवस्था की। इस प्रकार की अव्यवस्था होती है, जिससे शिक्षक सफर करता है। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री को धन्यवाद देता हूं कि आपने इस व्यवस्था को पोर्टल आधारित करने का लागू किया है, जिससे हमारी भर्ती में पारदर्शिता, पोस्टिंग में विश्वसनीयता और बहुत आसान व्यवस्था होगी। उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय :- यादव जी, प्लीज समाप्त करिए।

श्री गजेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, आप बार-बार टोक रहे हैं, मैं एक बात कहना चाहता हूं, सबको ऐसा लगता है कि हम क्रिकेट प्लेयर के बैक प्लेयर हैं।

सभापति महोदय :- चूंकि सारे लोगों को बोलना है। ऐसा नहीं है। मैं पूरे टाइमिंग के साथ चल रहा हूं।

श्री गजेन्द्र यादव :- आदरणीय सभापति महोदय, बहुत लंबे अंतराल के बाद तीन दिन के अंतराल के बाद आज हमें बोलने का मौका मिला है। मैं आदरणीय वित्त मंत्री जी और शिक्षा मंत्री से एक और मांग करना चाहता हूं। पहले स्कूल शिक्षा में संकुल व्यवस्था ऐसी थी कि 20, 25 स्कूलों का एक संकुल केन्द्र बना करता था। पिछली सरकार ने उस संकुल व्यवस्था को हटाकर 5 से 6 स्कूलों के बीच बनाई। इससे यह होता है कि संकुल व्यवस्था के नाम से एक शिक्षक स्कूली कार्य को छोड़कर वह अन्य डाक बांटने के काम में लग जाता है। ऐसे ही हमारे यहां ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में शिक्षकों की कमी है। वह स्कूल में अध्यापन के अलावा दूसरे काम में लिप्त रहे तो उसमें स्कूल की व्यवस्था में दिक्कत होती है। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि स्कूल में जो संकुल व्यवस्था है, आप 20, 25 शहरों में एक नगर निगम की संकुल व्यवस्था करें, क्योंकि आज टेक्नोलॉजी का जमाना है, वाट्सअप का जमाना है, आप सिर्फ डाक पत्रिका शासन की चिट्ठी को भेजने के लिए स्कूल की मांग को डी.ई.ओ. तक पहुंचाने के लिए संकुल व्यवस्था को दे रहे हैं, उसमें अनावश्यक बहुत से शिक्षकों का उपयोग हो रहा है वह बंद हो। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं कि कम से कम आप संकुल व्यवस्था 20 से 25 स्कूलों के बीच में ही करें। यह मेरा आपसे आग्रह है।

सभापति महोदय, कुछ बातें उच्च शिक्षा की है, मैं मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं, माननीय सदस्यों ने बात कही कि हमारे यहां सारे जगह कॉलेज हैं, बिल्डिंग, बच्चे सब जगह हैं, लेकिन सभी जगहों पर प्रोफेसरों की बहुत ज्यादा कमी है। A+2 लेवल का साईंस कॉलेज दुर्ग में है, जिसमें आज भी प्रिंसीपल नहीं है। आपने जो नवीन शिक्षकों की भर्ती की व्यवस्था इस बजट में की है, उसके लिए मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। आपने हायर एजुकेशन में उनकी समस्याओं को दूर के लिए छत्तीसगढ़ हायर एजुकेशन मिशन का गठन किया है, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय :- यादव जी, प्लीज,आपका समय ज्यादा हो रहा है।

श्री गजेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय आपने रायपुर में स्टार्टअप नवाचार की पद्धति इनोवेशन रिसर्च की है, मैं उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए, अपनी बात को समाप्त करता हूं। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े। (अनुपस्थित)

श्री भोलाराम साहू (खुज्जी) :- माननीय सभापति महोदय, मैं वित्तीय वर्ष 2024-25 की अनुदान मांगों की चर्चा के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं ज्यादा लंबा चौड़ा कहना नहीं चाहूंगा। राजनांदगांव जिले का खुज्जी विधान सभा क्षेत्र वनांचल क्षेत्र है, जंगल से जुड़ा हुआ है और उसका क्षेत्रफल बहुत लंबा है। क्षेत्रफल लंबा होने के कारण वहां पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए हमारे बच्चों को 25-30 मिलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है। वहां उमरवही एक ऐसा गांव है कि उमरवही से डोंगरगांव की दूरी 25 किलोमीटर है और उमरवही से लोहारा की दूरी 35-40 किलोमीटर है। उस बीच में एक भी महाविद्यालय नहीं है। मैंने माननीय मंत्री जी से मांग की थी कि वहां पर महाविद्यालय की स्थापना हो, लेकिन वह नहीं हो पाया। उसी तरह से गेंदाटोला मेरे खुज्जी विधान सभा क्षेत्र का हृद्य स्थल है। आपकी सरकार के 15 साल के कार्यकाल में मैं विधायक था, तब से मैं इस मांग रखते आया हूं। लेकिन वह महाविद्यालय का कार्य आज तक पूरा नहीं हुआ। आपकी सरकार पुनः स्थापित हुई है तो गेंदाटोला एक ऐसा स्थान है कि वहां पर एक महाविद्यालय खुलना चाहिए। ताकि हमारे गांव के गरीब बच्चे, किसान के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। बारहवीं पास करने के बाद उनको भटकना पड़ता है। वह लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहीं पर भर्ती नहीं होते। उनको उच्च शिक्षा प्राप्त करने करने के लिए राजनांदगांव, चौकी या छुरिया जाना पड़ता है तो बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वहां पर महाविद्यालय की स्थापना होनी चाहिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- विधायक जी, आपने क्या कहा ?

श्री भोलाराम साहू :- गेंदाटोला।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह कहां है ?

श्री भोलाराम साहू :- वह उमरदा से 25 किलोमीटर आगे है।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं आपकी मदद के लिए खड़ा हुआ हूं। मंत्री जी मुझसे बात कर रहे थे तो उसको सुन नहीं पाये थे।

श्री भोलाराम साहू :- जी। खुज्जी विधान सभा का हृद्य स्थल गेंदाटोला है। वैसे ही छुरिया और उमरवही हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप ओ.पी. जी की गंभीरता देखिये कि वह एक-एक चीज को नोट कर रहे हैं। वह सुन नहीं पाये थे।

श्री भोलाराम साहू :- माननीय वित्त मंत्री जी, यदि आने वाले सत्र में उसका निर्माण हो जाएगा तो आप बधाई के पात्र हैं। निश्चित रूप से वित्त मंत्री जी बड़ी सोच रखते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- अभी नोट हो रहा है, यही बहुत है। पहले तो मंत्री नोट भी नहीं करते थे।

श्री भोलाराम साहू :- मंत्री जी, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आने वाले अनुपूरक बजट या मार्च के बजट में निश्चित रूप से इसको सौगात मिले, क्योंकि यह बच्चों के भविष्य का सवाल है। बच्चे बारहवीं तक तो कहीं भी पढ़ लेते हैं लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उनको दर-दर भटकना पड़ता है। आपने इस बात को गंभीरता से लिया है और मेरी मदद की है, इसके लिए आपको धन्यवाद। मैं माननीय वित्त मंत्री जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मेरी बातों को स्वीकार करते हुए नोट किया है।

माननीय सभापति महोदय, मेरे खुज्जी विधान सभा क्षेत्र में बहुत सारे प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला और हाई स्कूल खुले हैं, लेकिन आज तक उन स्कूलों के भवन नहीं बने हैं। वह प्राथमिक और माध्यमिक शाला में बैठकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि कम से कम हाई स्कूल भवन का निर्माण हो, ताकि बच्चों के लिए सुविधाजनक ढंग से बैठने की व्यवस्था हो और शिक्षा के प्रति ध्यान दें। मेरे क्षेत्र में उन्नयन के बहुत से कार्य हैं।

माननीय सभापति महोदय, मेरे क्षेत्र में मध्यान्ह भोजन मेन्यू के हिसाब से अप्राप्त रहता है, इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि बच्चों को मध्यान्ह भोजन में मेन्यू के हिसाब से भोजना मिलना चाहिए। स्कूल में कार्यरत् स्वीपर बहुत मेहनत करते हैं लेकिन उनको उनकी मेहनत के हिसाब से पारिश्रमिक नहीं मिलता है। जितने भी स्कूल बने हैं, प्राय: सभी अहाताविहीन हैं। कम से कम उन स्कूलों में अहाता का निर्माण हो जाए। ताकि सुरक्षा की दृष्टि से वहां पर जो पौधारोपण या वृक्षारोपण करते हैं, वह सुरक्षित रहें। वह बहुत मेहनत करते हैं लेकिन मवेशियों और अन्य बहुत से कारणों से वहां पर किया गया वृक्षारोपण नष्ट हो जाता है। वह हर साल उसकी पुनरावृत्ति करते हैं। पुन: वृक्ष लगाते हैं और वह पुन: नष्ट हो जाते हैं। इसलिए सभी हाई स्कूल, हायर सेकण्डरी और प्राथमिक शालाओं में बाउंड्री वॉल का निर्माण होना चाहिए। हमारी पूर्ववर्ती सरकार में हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने गांव के बच्चे की चिंता की कि गांव में रहने वाले गरीब परिवार के बच्चे अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्राप्त करें। इस दृष्टिकोण से स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल का संचालन किया गया था।

सभापति महोदय :- भोलाराम जी, समय का ध्यान रखें।

श्री भोलाराम साहू :- माननीय सभापति महोदय, उन स्कूलों में बच्चे बड़ी दिलचस्पी लेकर पढ़ाई करते थे। उसका बहुत अच्छा संदेश गया।

सभापति महोदय, प्रत्येक शाला में विषय शिक्षक की बहुत कमी है । सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी का ध्यानाकर्षित करना चाहूंगा । धार्मिक न्यास के हिसाब से आपको भी पता है कि हमारे खुज्जी विधान सभा क्षेत्र में एक मोक्षधाम सांकरदाहरा है, जो छत्तीसगढ़ प्रदेश में

राजिम के बाद दूसरे नम्बर का मोक्षधाम सांकरदाहरा है । मैं समझता हूं कि वहां पर राजिम से भी अस्थि विसर्जन करने उसी सांकरदाहरा में जाते हैं क्योंकि छत्तीसगढ़ में हमारे खुज्जी विधान सभा क्षेत्र में वह सांकरदाहरा है, वहां महाराष्ट्र से भी आते हैं । वह ऐसा स्थान है, जहां 12 महीने नाव चलती है और हजारों की संख्या में अस्थि विसर्जन करने वाले लोग जाते हैं । वहां पर उनकी समुचित व्यवस्था नहीं हो पाती । मैं कहना चाहता हूं कि उस सांकरदाहरा को पर्यटन स्थल घोषित कर विकसित किया जाये। वहां पर महाशिवरात्रि का आयोजन होता है, वहां तीन दिन तक मेला लगता है, उसके पहले 15 दिन तक वहां भागवतपुराण कथा होती है और वहां वृहद रूप से भीड़ रहती है । वहां पूर्ववर्ती सरकार द्वारा 1 लाख रूपए दिए जाते थे, मैं मांग करता हूं कि वहां पर आयोजन के लिए 1 लाख रूपए की जगह 5 लाख रूपए दिया जाये, ताकि वहां पर पंडा, पुजारी और व्यवस्थापक उस कार्य को व्यवस्थित ढंग से संपादित करे, यह निवेदन करता हूं।

सभापति महोदय, दूसरी बात यह है कि स्कूलों में कार्यरत् शिक्षा कर्मी की आकस्मिक दुर्घटना होने के बाद कई परिवार ऐसे हैं, जो भटक रहे हैं, उनको अनुकम्पा नियुक्ति नहीं मिल पा रही है । इस दृष्टिकोण से उस परिवार को अनुकम्पा संबंधी सहुलियत मिलनी चाहिए । संस्कृति विभाग में हमारे क्षेत्र के बुजाटोला में एक तबलावादक थे । वह छत्तीसगढ़ में नामी थे, सभापति महोदय, शायद आप भी जानते होंगे । वे वरिष्ठ हो गए हैं, उनकी परवरिश करने वाला कोई नहीं है । पहले वे तबला बजाकर जीवन-यापन करते थे, वे आज बहुत वृद्ध हो चुके हैं । उनको कम से कम पेंशन के रूप में कुछ राशि दी जाये, ताकि उसका जीवन-यापन आसानी से चल सके, यह निवेदन करता हूं ।

सभापति महोदय, शिक्षा जतन योजना के अंतर्गत स्कूल के बाउन्ड्रीवाल और भवन निर्माण प्रारंभ था, वह आज भी अपूर्ण है । कई स्कूलों ने तो उसे पूरा कर लिया है, लेकिन उनको आवंटन नहीं मिल पाया है कम से कम आवंटन के दृष्टिकोण से यहां से राशि जारी करें, ताकि आवंटन हो, यह निवेदन करता हूं । सभापति महोदय, आपने बोलने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद कहते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं ।

श्री प्रणव कुमार मरपची (मरवाही) :- माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद । सदन में मेरा यह पहला वक्तव्य है। (मेजों की थपथपाहट) मैं माननीय विष्णु देव साय सरकार और उनकी केबिनेट को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने पिछले सरकार के 82 हजार करोड़ के कर्ज तले दबे होते हुए भी पिछले सरकार से बजट से लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि करके छत्तीसगढ़ का विकास करने की दिशा तय की है । मैं वित्त मंत्री जी के बजट का पूर्ण रूप से समर्थन करता हूं ।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, ओकर बड़का इंजन के कर्जा ला बताहौ का ?

श्री प्रणव कुमार मरपची :- यादव जी, आप तो प्रत्येक सदस्य के वक्तव्य के समय टोका-टाकी करते हो ।

श्री अनुज शर्मा :- पहिली बेर बोलथे, ओला बोलन दे न ।

श्री रामकुमार यादव :- टोका-टाकी नहीं करवं, मैं सही बोलथौं । बड़का इंजन के कतेक कर्जा हे, ओला बता देवव । ओमा का टोका-टाकी हे ।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- आपको स्वतंत्र रूप से बोलने का मौका देंगे ।

श्री रामकुमार यादव :- जो सही चीज हे, ओला मैं बोलथौं ।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- यादव जी, मैं सही चीज बोल रहा हूं ।

श्री रामकुमार यादव :- मैं सही चीज बोलथौं तो तुमन ओला टोका-टाकी कहिथौ ।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- सभापति महोदय, पिछले सरकार के बजट से 20 प्रतिशत अधिक बजट पेश किया गया है ।

श्री रामकुमार यादव :- विधायक जी, मोला खुशी तब होतिस, जब ये सदन के अंदर में कहिथौ कि एकोठन स्कूल नहीं हे । हमर क्षेत्र मा नहीं तो तुहर क्षेत्र में खोलवा देतिन । ओकर बर बोलव न ।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- मैं बोलथौ, तै ध्यान देके सुनबे । महु ला थोड़ बहुत छत्तीसगढ़ी आथे । सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से शिक्षा के बजट में शामिल होते हुए कहना चाहूंगा कि माननीय शिक्षा मंत्री जी, अधिकतर शिक्षा क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए अनेक कालेज, स्कूलों की व्यवस्था की है। हमारे लगभग सभी सदस्यों ने सभी विषयों को पूरे दिन यहां पर रखा है। मैं उन विषयों पर ज्यादा नहीं जाऊंगा। मैं अपने क्षेत्र की मांग रखना चाहूंगा। जिला गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही लगभग पूर्ण रूप से अनुसूचित जनजाति क्षेत्र है। जिले में लगभग सवा विधानसभा क्षेत्र आता है। जिले का क्षेत्रफल लगभग सौ किलोमीटर के दायरे में फैला हुआ है। चूंकि यहां पर गरीब लोग निवास करते हैं, अति पिछड़े लोग निवास करते हैं, यहां पर सुविधाओं का अत्यंत अभाव है। अभाव के कारण यहां के बच्चे शिक्षा प्राप्त करने में अनेक प्रकार की दिक्कतों का सामना करते हैं। ऐसी स्थिति में यहां के बच्चें अपना जीवन स्तर आगे नहीं बढ़ा पाते हैं।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सम्माननीय वित्त मंत्री जी, सम्माननीय शिक्षा मंत्री जी का ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगा कि जिले में तीन ऐसे हाईस्कूल हैं, जो अन्य व्यवस्थाओं के माध्यम से चल रहे हैं। उनके लिए भवन की व्यवस्था नहीं है।

सभापति महोदय :- माइक बंद हो गया है, चालू कर लें।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- मेरा काफी आवाज आ रहा है, माईक से ज्यादा आवाज आ रहा होगा, ऐसा मुझे लगता है इसलिए माईक की जरूरत ही नहीं है। (मेजों की थपथपाहट) सभापति महोदय, जिले

के स्कूलों की लगभग 30 किचन सनसेट उपयोग के लायक नहीं है। मुझे लगता है कि 7-8 दिन या महीने-दो महीने में खराब नहीं हुआ है। पूर्व के सरकार की कथनी और करनी में जो अंतर है, यह उसका उदाहरण है।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से क्षेत्र की अन्य विषयों पर ध्यान दिलाना चाहूंगा। जिला गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही में गरीब विद्यार्थी लोग रहते हैं। उन्हें उच्च शिक्षा के लिए लगभग बिलासपुर की तरफ का रास्ता चुनना पड़ता है। चूंकि यहां के बच्चें गरीब होते हैं। उनके पास धन का अभाव होने के कारण उनकी व्यवस्था नहीं बन पाती है जिसके कारण वे कोचिंग जैसे संस्थानों में नहीं पहुंच पाते हैं। आज का जमाना ऐसा है कि बच्चें एल.के.जी., नर्सरी में जाते हैं तब से ट्यूशन लेना शुरू कर देते हैं। ऐसी स्थिति में ग्रामीण बच्चें धन के अभाव ना ट्यूशन पढ़ पाते हैं और ना ही कुछ पाते हैं। तो जो शहरी क्षेत्र के बच्चें हैं, जो सुविधाओं का उपयोग करते हैं, अधिकारी-कर्मचारी के बच्चें जो प्रायवेट स्कूलों में पढ़ते हैं, उनसे मुकाबला, प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते हैं और इस कारण कहीं न कहीं पीछे रह जाते हैं। इन चीजों को ध्यान में रखते हुए माननीय वित्तमंत्री और माननीय शिक्षा मंत्री जी से गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही के लिए आवासीय कोचिंग सेन्टर की मांग करूंगा। मुझे लगता है कि यह नई मांग है। इसमें कुछ तकनीकी दिक्कतें आ सकती हैं। लेकिन उच्च शिक्षा, नौकरी, कोचिंग के लिए ऐसी व्यवस्था की जाये, जिससे वहां के बच्चे आगे बढ़ सकें। क्योंकि दूरदराज के बच्चें हैं। मैंने बताया कि यह जिला लगभग सौ किलोमीटर के दायरे में है। वहां के लोग निर्धन है, धन का अभाव है।

सभापति महोदय :- समय के रहते अपनी बात रखो तो ज्यादा सार्थक होगा।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- सभापति महोदय, मैं दूसरा विषय रखना चाहूंगा कि मरवाही के रानी दुर्गावती महाविद्यालय में कुछ विषय नहीं है, इतिहास, गणित, भूगोल विषय को भी जोड़ा जाये। इसके साथ ही मैं सम्माननीय वित्त मंत्री, सम्माननीय शिक्षा मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि इन्होंने शासकीय कन्या महाविद्यालय गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही के भवन निर्माण हेतु बजट में राशि की व्यवस्था की है, मैं वित्त मंत्री जी और शिक्षा मंत्री जी को धन्यवाद देते हुए अपनी वाणी को विराम दूंगा। सभापति महोदय, आपने मझे बोलने का मौका दिया, धन्यवाद। हिन्द, जय भारत।

सभापति महोदय :- श्रीमती चातुरी नंद ।

श्रीमती चातुरी नंद (सरायपाली) :- माननीय सभापति महोदय, मैं आपके अनुमति से अपन भाषण के शुरूआत करना चाहथंव । मैं स्कूल शिक्षा विभाग के शुरूआत दू लाईन से करिहंव ।

महतारी के मया ला प्रणाम
एखर कोरा हा लागे सरग कस धाम
कर्जा एखर मया के नई उतरै जनम भर
एखर सेवा करे ले मनखे, पूरा हो जाही तोर तीरथ धाम

पूरा हो जाही तोर तीरथ धाम

सभापति महोदय, शिक्षा के अलग-अलग स्तर के विषय म मोर कहना हे...।

श्री प्रणव कुमार मरपच्ची :- तीरथ धाम के व्यवस्था कराय हवन दीदी । तोर यादव भाई हा बहुत टोका-टाकी करथे, त हमु मन ला करे ला परही ।

श्रीमती चातुरी नंद :- बहुत-बहुत धन्यवाद भईया कि आप मन तीरथ धाम के व्यवस्था कराथव ।

श्री रामकुमार यादव :- कतको कर लव आप ?

श्रीमती चातुरी नंद :- सभापति महोदय, शिक्षा के अलग-अलग स्तर मे मोर कहना हे कि-

प्राथमिक शिक्षा जेमा लईका के नाक बोहाथे,

घर ले बिना चप्पल के आवथे,

अऊ कापी पुस्तक ला पन्नी मा लावथे ।

ये हमर प्राथमिक शिक्षा ए । इंहा मोर ग्रामीण स्तर के प्राथमिक शाला हे, जेखर गुरूजी हा बाबू के काम घलो करथे, चपरासी के काम घलो करथे, एखर अलावा बीएलओ के घलो काम करथे ।

श्री अनुज शर्मा :- वोखर जिम्मेदार कोन रहिसे तेनों ला बतादव ?

श्रीमती चातुरी नंद :- सभापति महोदय, 15 साल तक आपके सरकार रहिसे । उहू जगह भी ए काम चलथ रहिसे भईया ।

श्री जनक ध्रुव :- पांच साल के मौका मिलिस न ?

श्रीमती चातुरी नंद :- एखरे सती त कहाथंव कि अब आपला मौका मिले हे ?

श्री जनक ध्रुव :-गंगा जल के कसम खाये रेहेव, गंगा जल के कसम ।

श्रीमती चातुरी नंद :- अब आप मन ला मौका मिले हावय, आप मन कर दिहव ।

श्री रामकुमार यादव :- दो साल ले त कोरोना रिहिसे ।

श्री प्रणव कुमार मरपच्ची :- आप मन ला पांच साल के मौका मिले रिहिसे । यहु ला सोचे के जरूरत हे । सभापति महोदय, इधर भी ध्यान दे दिया करें ।

श्री सुशांत शुक्ला :- नाक एखर पाय के बोहात रिहिस कि रेडी टू इट गायब हो गे रहिसे ।

सभापति महोदय :- प्लीज यादव जी, आप शांत रहें ।

श्रीमती चातुरी नंद :- रेडी टू इट गायब नहीं होय रहिसे भईया...।

एक माननीय सदस्य :- गायब होगे रहिसे ।

सभापति महोदय :- गायब नई होवत रहिसे, मिलत रहिसे ।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, नई सदस्य है, उसको बोलने दिया जाये ।

श्री रामकुमार यादव :- फैसला कर लौ भईया हो । जरसी गाय देबो केहे रहिन हे ।

श्री प्रणव कुमार मरपच्ची :- सभापति महोदय, ए बात के ध्यान यादव जी ला रहिसे दीदी ।

सभापति महोदय :- चातुरी नंद जी, आप अपनी बात रखिये । कृपया समय खराब न करें ।

श्रीमती चातुरी नंद :- सभापति महोदय, प्रायवेट और सरकारी स्कूल के हाल ला हमर सरकार घलो जानथे ।

बिना टेबल कुर्सी के लईका हा अपन जिंदगी ला चलावथे ।

एक स्कूल के आधा लईका, गुटखा अऊ तमाखू में बोजावथे,

अऊ मिडिल स्कूल के स्थिति ला, हमु मन ला समझावथे

सभापति महोदय, उच्च शिक्षा के हाल ए हे कि 33 जिला के लईका रायपुर, बिलासपुर अऊ दुर्ग में आके बोजाय हे । एखर मतलब समझथव संगवारी हो ? यानी बाकी जगह ये सुविधा नई होय के कारण पूरा 33 जिला के लईका मन इंहा आके पढ़ाई, लिखाई करथे । 51 इंजिनियरिंग कॉलेज केवल 7 जिला में धंधाये हे । रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, अंबिकापुर, जगदलपुर ह नवा-नवा विद्यालय चलावथे, अऊ जोंक नदी के ए पार म, बसना सरायपाली ह कन्या महाविद्यालय ल अगोरथे । सभापति महोदय, ए बहुत बड़े विडम्बना ए कि हमर जोंक नदी के वो पार एक ठो भी कन्या महाविद्यालय नई ए । निश्चित रूप से हमर बेटी पढ़ाओ अऊ बेटी बचाओ के जो नारा ए, एहा व्यर्थ जावथे । संगवारी हो, एखर अलावा मैं कहना चाहथंव कि छत्तीसगढ़ी संस्कृति ला बनाय रखे बर सरायपाली क्षेत्र म माननीय महोदय से मोर निवेदन है कि देवगुड़ी के प्रस्ताव पास करे के कृपा करहीं । भंवरपुर में हायर सेकण्डरी स्कूल भवन के स्वीकृति के मांग करथंव । काबर कि लईका मन ऐसे स्कूल में पढ़थें, जहां कालेज घलो भी लगथे, अऊ वहीं पर हायर सेकण्डरी स्कूल लगथे । निश्चित तौर पर वहां हाई स्कूल भवन, हायर सेकण्डरी स्कूल भवन के आवश्यकता हरे । सभापति महोदय, एखर अलावा उंहा कॉलेज के घोषणा हो चुके हे । ऊंहा एक हायर सेकण्डरी स्कूल म कॉलेज भी चलथे । मैं माननीय शिक्षा मंत्री महोदय से कालेज भवन म भी राशि स्वीकृत करे के निवेदन करथंव । मोर विधान सभा क्षेत्र सरायपाली के 33 हाई स्कूल म व्याख्याता के 196 पद रिक्त हे अऊ 33 प्राचार्य के पद खाली हावय । सभापति महोदय, शिक्षक के 47 पद रिक्त हावय, सहायक शिक्षक आऊ विज्ञान प्रयोगशाला सहायक के 39 पद रिक्त हावय । एखर अलावा भृत्य के 70 पद भी रिक्त हावय । प्रायमरी प्रधान पाठक के 110 और सहायक शिक्षक के 435 पद पद रिक्त हवय।

समय :
4.00 बजे

एखर अलावा एक चीज अउ कहना चाहत हव कि विभिन्न स्कूलों में स्वीपर के नियुक्ति करे गे हे अउ ये स्वीपर मन ला समय पे मेहनताना नइ मिलत हे। कभू-कभू ये मन ला 10-10, 15-15 महीना तक मेहनताना नइ मिलत हे। हमर मंत्री महोदय ए कति भी थोड़ा-सा ध्यान दिही तो ओमनो के भला हो जाही। संगवारी हो, में हर कन्या महाविद्यालय खोले के निवेदन कर चुके हों। साथ ही हमर सराईपाली

क्षेत्र के सिंघोड़ा अंचल ले बहुत सारा लईका मन सराईपाली ला कॉलेज पढ़े ले आथे। वहां से एखर दूरी 30 किलोमीटर हे अउ 30 किलोमीटर होये के कारण लइका मन हर उही दिन पढ़े ला आथे, जेन दिन ओखर पिता जी हर ओला बिठा के लेकर आथे। ओकर पिता जी दिन भर कॉलेज मा इंतजार करथे अउ शाम के लईका ला लेके जाथे ता ओ दिन के लईका के पढ़ाई हर पूरा होथे। निश्चित तौर पर यह हमन बर बहुत ही विडंबना वाली बात हे कि हमर लईका, जेखर बर हमन ये नारा देथन कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, तेकर बर हमन एक सुविधा उपलब्ध नइ करा पाथन, ओमन ला आये जाये के साधन उपलब्ध नइ करा पाथन, मे हा माननीय मंत्री महोदय के ध्यान ये ओर आकर्षित करिहा अउ सिंघोड़ा में एक कॉलेज खोले बर निवेदन करिहा।

सभापति महोदय, एखर अलावा पर्यटन स्थल के मांग तो हो गे रिहीसे अउ ओकर घोषणा भी हो चुके रिहीसे। बस ओकर जीर्णोद्धार बर राशि स्वीकृत करे बर निवेदन करथो। ओ मा रंग-मंच, पानी टंकी, सामुदायिक भवन, गार्डन, रिसॉर्ट सुलभ शौचालय के स्वीकृति के निदेवन करत हव। सागरपाली के पास में पोटापारा मा सुंदरा दाई माघी पूर्णिमा मेला होथे। अउ वहां आस-पास के लगभग 200 गांव शामिल होथे। जे मा हमर 10-15 हजार की जनसंख्या में मनखे मन उपस्थित होकर माघी पूर्णिमा के लाभ लेथे।

सभापति महोदय :- चातुरी बहन, अपनी बात थोड़ी जल्दी रखिये।

श्रीमती चातुरी नंद :- सभापति महोदय, दो मिनट। मे हर माननीय मंत्री महोदय से पोटापारा के सुंदरा दाई ला पर्यटन स्थल घोषित करे के मांग करत हव। एखर अलावा भी ग्राम बम्हनीद्वार, हमर सराईपाली अंचल के, सराईपाली विधान सभा के सबसे आखिरी वनांचल क्षेत्र हे। ये वनांचल क्षेत्र में न तो एक आंगनबाड़ी हवय, न ही एक प्राथमिक स्कूल हवय। में हा आंगनबाड़ी अउ एक प्राथमिक स्कूल खोले बर निवेदन करत हव। ये मा भैया स्वीकृति दे देतिस तो बहुत अच्छा हो जातिस। ताकि आप मन हमर लईका मन बर जो नारा बनाय हवव कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, ओ हर साकार होतिस।

सभापति महोदय, मे अतकि कह के मोर वाणी ला विराम देवथो। आप सबो ला जय जोहार, जय छत्तीसगढ़।

सभापति महोदय :- अनुज शर्मा।

श्री अनुज शर्मा (धरसींवा) :- माननीय सभापति महोदय, आज के इस बजट के चर्चा मा स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, संसदीय कार्य, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन एवं संस्कृति में चर्चा में भाग लिये बर आप मोला अवसर दिये हव। ये कहीं न कहीं एक विजन के साथ लाये हुए बजट हे अउ हमर सबसे वरिष्ठ अउ विद्वान माननीय मंत्री जी के विभाग हे। ये प्रदेश ओखर दूरदर्शिता हर देखे हे अउ बहुत सारी ऐसी योजना हमेशा लाये गे हे। ओखर नेतृत्व में उच्च शिक्षा में चाहे छत्तीसगढ़ हायर एजुकेशन मिशन के बात हो, चाहे पर्यटन विभाग में छत्तीसगढ़ के पांचों शक्तिपीठ ला जोड़े के बात हो, राम लला दर्शन में ले जाये के बात हो। अभी आज हमन अपन संगवारी मन ला हरी झण्डी दिखा के

आये हन अउ ये जल्दी शुरू भी हो जाही। एक बहुत संवेदनशीलता के साथ के जेन लईका मन हा राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत अच्छा प्रदर्शन करे हे, ओ मन ला छात्रवृत्ति दिये बर जो योजना लाये गे हे, ओ हा बहुत अभिनंदन के लायक हे। ये चीज बर में हा माननीय मंत्री जी के अउ हमर सरकार के अभिनंदन करत हव। एखर बर जो बजट के प्रावधान रिहीसे, ओला पिछली बार से डबल कर दिये गे हे। वह कहीं न कहीं संवेदनशीलता के बात हे। ओखर बाद जो कलाकार कल्याण कोष के स्थापना करे गे हे, ओखरो बजट ला काफी बढ़ा दिये गे हे। जे मा गंभीर बीमारी, दुर्घटना, मृत्यु, बहुत दु:खद पक्ष रिहीसे। मे हा एती ध्यान आकृष्ट करहू। जब कोविड के समय आईस, जब कलाकार हर त्राहिमाम-त्राहिमाम करत रिहीसे तो ओ समय ये जो फण्ड रिहीस हे तेखर से कलाकार मन ला मदद नहीं करे जा सकिस। सरकार ओ समय पता नहीं का सुध में रिहिस हे यानी कोई भी कलाकार ला मदद नहीं किये जा सकिस। ओ समय कलाकार, निर्माता, निर्देशक अउ ए सब मन आगू आके पईसा इकट्ठा करके अपन साथी कलाकार ला मदद करिस। ए हमर सरकार के अउ हमर मंत्री जी के संवेदनशीलता ला बतात हे, जो अइसे वक्त बर जब कोई आपातकालीन स्थिति आए, काखरो जीवन में दुर्घटना या विषम परिस्थिति आए तो ओकर मदद करे बर ए कलाकार कल्याण कोष में काफी बजट बढ़ाए गे हे। मासिक वित्तीय सहायता पेंशन योजना के बात करे गे हे ए मा 50 लाख रूपये के प्रावधान करे गे हे। ए मा पहिली जो अव्यवारिक सीमा रिहिस हे, साल के 24 हजार रूपये आय वाले मन ला पेंशन दे के रिहिस हे, ओ ला बढ़ाकर 2 लाख 16 हजार रूपये तक करे गे हे। जेकर से ज्यादातर जो कलाकार हे जेखर मन के आए वार्षिक कम हे ओ मन रिटायर्ड हो गे। ओ मन ला अइसे मन ला मदद मिल सकही। अइसे अउ योजना हे जइसे में गोंडी भाषा के विकास के बात करव तो ओखर बर जो 2 करोड़ 50 लाख रूपये के प्रावधान करे गे हे ताकि ओखर बर साफ्टवेयर बनाया जा सके। आने वाला पीढ़ी भी सीख सके। पिछले बार बजट में आकार प्रशिक्षण में भी 80 हजार रूपये के प्रावधान रिहिस हे जेमा कोई आयोजन नइ करे जा सकत रिहिस, ओला बढ़ाकर 60 लाख रूपये करे गे हे। ताकि हमर कला के जो पारंपरिक विधा हे गर्मी के छुट्टी में एला नवा लईका मन सीख सकए। अइसे आयोजन होथे तेला बढ़ावा दे के प्रयास करे जावत हे। पूरा देश में अउ छत्तीसगढ़ में गढ़ कलेवा एक अलग पहिचान बनईस, उहू ला प्रमोट करे बर 2 करोड़ 12 लाख रूपये के प्रावधान करे गे हे।

माननीय सभापति महोदय, मैं ज्यादा समय न लेत हुए ए कुछ विषय हे, जेमे ध्यान आकृष्ट करना चाहूं कि रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी में एम.ए. के कोर्स शुरू करे गे रिहिस हे। ओ मा पहिली 100 छात्र के एडमिशन होवत रिहिस हे ओ ला घटाकर 40 कर दिये गे हे। मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी से यह आग्रह करहूं कि यह एडमिशन संख्या ला बढ़ाये जाए। अउ साथ ही साथ ऊखर भविष्य ला देखत हुए भर्ती के लिए पद भी निर्मित करे जाए ताकि जेन लइका मन छत्तीसगढ़ी में अपन कैरियर ला बनाना चाहत हे, जेन मन आगू बढ़ना चाहत हे ओ मन ला सरकारी स्तर पर नौकरी

मिल सके। छत्तीसगढ़ी में एम.ए. करे हुए लइका मन बर कोई न कोई प्रावधान होना चाहिए, मोर अइसे आग्रह हे। एखर अलावा जेन बात चलत रिहिस हे कि इहां कार्यक्रम बर बाहिर से कलाकार नइ लाए के। माननीय सभापति महोदय, सबले बड़े दु:खद बात ए रिहिस हे कि ओ समय स्थानीय कलाकर मन के साथ बहुत दुर्व्यवहार होए, बहुत भेदभाव होवए। कलाकार ला छांट के कार्यक्रम दिये जाए कि ए फलाना से जुड़े हुए हे, ए ओखर से जुड़े हे। इहां 15 साल भारतीय जनता पार्टी में डॉ. रमन सिंह जी के सरकार रिहिस, हमन ए दिन कभू नइ देखे रेहेन, लेकिन पिछले 5 साल में मैं खुद कलाकार हों तो मैं सब कलाकार मन के दु:ख ला जानत हौं। मैं जानत हौं कि ए जो भेदभाव के भावना रिहिस हे कि हमर माननीय मंत्री जी सहृदय हे अउ ए भेदभाव नइ करहि तेला जानत हौं, लेकिन ए में ध्यान आकृष्ट करना जरूरी हे कि हमर मन में ए बात नइ राहए। ए बात से ऊपर उठके काम हो ही। साथ ही साथ अधिकारी मन साथ। रहाना, बोलन दे ना गा।

श्री रामकुमार यादव :- महाराज जी, आप कुछ बोलहूं तेला सुनत थोड़ी रहिबो। आप गलत बोलहू ता हमन काबर सुनबो। माननीय सभापति महोदय, महाराज मोर आदरणीय हे। अगर महाराज ले सबले ज्यादा कार्यक्रम कराए हे तो विधायक रहते हुए रामकुमार यादव हा कराए हे।

श्री अनुज शर्मा :- तभे जीत पाय हस।

श्री रामकुमार यादव :- लेकिन आज ए मन उल्टा बोलत हे। आप विधायक बन गेव ता कुछ बोलिहौ का।

श्री अनुज शर्मा :- मैं एक बात करना चाहत हौं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अनुज भाई मोरो विधान सभा में सबले ज्यादा कोई कार्यक्रम होए हे तो एक बार उठाकर देख लेबे। मैं भा.ज.पा., कांग्रेस पार्टी के बात नइ कहात हौं। मोरे बहुत अकन साथी मन कलाकार हे। कोई व्यक्तिगत हो ही तो अलग बात हे।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं एमे जानकारी उपलब्ध करा दूहूं मैं साक्ष्य के आधार पर बात करत हौं।

सभापति महोदय :- आप अपनी बात रखिए।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं, अपन बात रखत जावत हौं। एकर अलावा कलाकार मन के ग्रेडेशन करे गे हे। ग्रेडेशन के आधार पर वह कलाकार मन ला पेमेण्ट करे जाथे, जेमे ढेर सारा गलती हे। बड़े-बड़े कलाकार मन के ग्रेड नीचे हे अउ बहुत से अइसे कलाकार हे जेन मन ऊपर के ग्रेड से हावए, लेकिन ओ मन ओतका डिजर्व नहीं करए।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अनुज भाई, आप कलाकार हैं कृपया यह बता सकते हैं कि यह ग्रेडिंग सिस्टम किस तरह से किया जा सकता है? उसका क्या क्राईटएरिया होगा, जो कलाकार पापुरलर है वह ग्रेड वन में आएगा और जो कम पापुलर है वह ग्रेड 2 में आएगा। कोई ग्रेडिंग सिस्टम तो है नहीं।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, ऐसा है। मैं आपकी जानकारी दुरूस्त कर दूं। पिछली आप लोगों की सरकार में संस्कृति विभाग द्वारा ऐसा नियम बनाया गया था, जिसमें उन्होंने ग्रेडेशन का अपना तरीका एडाप्ट किया गया था। उस समय मनमर्जी की गई थी जिसमें जो वरिष्ठ कलाकार हैं ..।

सभापति महोदय :- अनुज भाई अपनी बातें रखें।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं वही बात रख रहा था।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अनुज शर्मा, ये जिसको भी ए ग्रेड में ला दिये हैं आप उसे सी ग्रेड में ला दीजिए। आप सी ग्रेड वाले को ए ग्रेड में ला दीजिए।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, हमारा नजरिया वह नहीं होता।

श्री रामकुमार यादव :- आप अमिताभ बच्चन ला का सन्नी देओल और सन्नी देओल ला अमिताभ बच्चन थोड़ी बना सकिहौ। अमिताभ बच्चन, अमिताभ रही अउ सन्नी देओल, सन्नी देओल रही।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी से मेरा एक आग्रह है मेरे विधान सभा क्षेत्र में कल्चुरीकालीन इतिहास का एक बड़ा कुंरा केन्द्र है जिसे कुंवरगढ़ कहते हैं। 13वीं और 14वीं शताब्दी के मंदिर, बावली, सती पत्थर जैसे स्मारक वहां पर आज भी अस्तित्व में हैं। मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि वहां पर एक महोत्सव की जनता की बहुत मांग है, हमारे क्षेत्र में साल में कम से कम एक कुंवरगढ़ महोत्सव प्रारंभ करने पर विचार करेंगें। एक बड़ी बात कहना चाहता हूं कि जब हम मध्यप्रदेश में थे तो हमारे यहां के बहुत सारे कलाकारों ने पूरे विश्व में अपनी ख्याति अर्जित की और कहीं न कहीं उसके पीछे एक बड़ा केन्द्र "भारत भवन" था। ऐसे एक संस्थान की कमी हमारे प्रदेश में महसूस होती है। मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि एक "भारत भवन" के जैसा दृष्टिकोण रखते हुए ऐसा संस्थान होना चाहिए जहां विविध कला के लोगों को अवसर मिले। उनकी ट्रेनिंग, प्रदर्शन हो सके, उनकी गैलरी बन सके।

सभापति महोदय :- माननीय अनुज शर्मा जी, आपको बोलते हुए 08 मिनट हो गये हैं, 02 मिनट शेष हैं।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, दो मिनट और लूंगा। हमारे क्षेत्र में श्यामाचरण शुक्ल जी के नाम पर महाविद्यालय है। मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि उस महाविद्यालय का उन्नयन पी.जी. कॉलेज के रूप में हो सके तो इस पर विचार करेंगे।

माननीय सभापति महोदय, हमारे साथी कलाकारों का बहुत आग्रह रहा है जो पद्मश्री से सम्मानित हैं। बहुत सारी ऐसी प्रतिभाये रही हैं जो पद्मश्री से सम्मानित हुई हैं लेकिन आर्थिक तौर पर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वह बहुत मजबूत नहीं रहे हैं। छत्तीसगढ़ सरकार उन्हें 5 हजार रुपये सम्मान निधि देती है। मेरा माननीय मंत्री जी से आग्रह है कि इसको बढ़ाकर ऐसे कलाकारों को, ऐसी विभूतियों को मदद कर सकते हैं जो इससे सम्मानित हैं। मैं बताना चाहूंगा कि पूनाराम निषाद जी अपने ईलाज के लिए तरसते रह गये, क्योंकि उनके पास अर्थाभाव था। मैं चाहता हूं कि ऐसी परिस्थितियां भविष्य में निर्मित न हों, इसलिए मेरा यह आगह है कि संवेदनापूर्वक सोचकर जो राष्ट्रीय स्तर पर इतने बडे सम्मान के हकदार रहे हैं, उनको सम्मान निधि 50 हजार रुपये प्रति महीने के हिसाब से करना चाहिए। क्योंकि बहुत ज्यादा लोग होते नहीं हैं, कुल 12-15 लोग होते हैं। उन लोगों के लिये संवेदनापूर्वक आप जरूर सोचिये।

माननीय सभापति महोदय, नया रायपुर में संगीत महाविद्यालय की स्थापना की गई है, इसका मैं स्वागत करता हूं। मैं माननीय मंत्री जी से सिलयारी में एक नवीन महाविद्यालय की मांग रखूंगा। सिलयारी एक बहुत बडा केन्द्र है, आस-पास के बहुत सारे गांव हैं जहां के बच्चे उच्च शिक्षा के लिए दूर-दूर तक जाते हैं। मेरे क्षेत्र की स्कूलों से संबंधित कुछ मांग है। कुंरा, कपसदा, बरतोरी, कनकी में शिक्षकों का जो अनुपात है, वह काफी कम है। भृत्यों की संख्या नहीं है। एक स्कूल तो ऐसा है जहां शिक्षक को ही झाड़ू लगाना पड़ता है। मैं चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी इसमें भी विचार करेंगे। इस पर जरूर हमें कोई न कोई सकारात्मक उत्तर देंगे। सभापति महोदय, साथ ही साथ एकल शिक्षकीय शाला हैं, उसमें भी संवेदनापूर्ण विचार करेंगे। मेरा ऐसा माननीय मंत्री जी से आग्रह है। वह बहुत सहृदय हैं, बहुत सहयोगी हैं, हमेशा मदद करते हैं। माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती अंबिका मरकाम (सिहावा) :- माननीय सभापति महोदय, मै माननीय स्कूल शिक्षा मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत अनुदान मांग संख्या 26, 27, 28, 37, 44, 51 में चर्चा करने और विरोध करने के लिए खड़ी हुई हूं। मैं दो लाईन बोलना चाहती हूं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति जी, यहां शिक्षा विभाग की चर्चा चल रही है, एक मंत्री को छोड़कर सब मंत्री पलायन कर दिये हैं।

श्री प्रबोध मिंज :- आपका पलायन भी तो अभी समाप्त हुआ है।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, आज बसंत पंचमी का दिन है, मैं दो लाईन बोलना चाहती हूं।

फूलों की वर्षा, शरद की फुहार,
सूरज की किरणें, खुशियों की बहार,
चंदन की खूशबू, अपनों का प्यार,
मुबारक हो आप सभी को बसंत पंचमी का त्यौहार।

माननीय सभापति महोदय, माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी शिक्षा मंत्री हैं, निश्चित है उनकी सोच शिक्षा के प्रति है। शिक्षा के केन्द्र वह मंदिर हैं जो बच्चो के जीवन में उजाला लाती है। आज बसंत पंचमी मॉ सरस्वती का दिन है और आज शिक्षा विभाग की ओर भी चर्चा हो रही है। माननीय मंत्री जी, आपने बजट प्रस्तुत किया है, लेकिन उस बजट में बहुत सारी कमियां भी हैं। मेरे सिहावा विधान सभा क्षेत्र में बहुत से ऐसे स्कूल हैं, जहां प्राथमिक शाला में एच.एम. के 15 पद रिक्त हैं, मिडिल स्कूल में एच.एम. के 60 पद रिक्त हैं और हायर सेकेण्डरी में प्राचार्य के 5 पद रिक्त हैं। ऐसे तमाम स्कूलों में यह व्यवस्था करें, यह मैं माननीय मंत्री जी से चाहूंगी। मेरे विधान सभा क्षेत्र में जो बहुत ही दूरस्थ अंचल है, जो जंगल क्षेत्र है, जो नक्सल क्षेत्र है, वहां विद्युत की बहुत असुविधा है। वहां पर सौर ऊर्जा से पैनल लगाकर यह व्यवस्था करनी चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, मैं पर्यटन के क्षेत्र कहना चाहूंगी कि मेरा सिहावा विधान क्षेत्र महानदी का उद्‍गम स्थल है और उस महानदी के उद्‍गम स्थल में कर्णेश्वर महादेव का मंदिर है। जहां पर हर वर्ष पूर्णिमा पर मेला लगता है। वहां हजारों की संख्या में लोग आते हैं। वहां के विकास के लिए पर्यटन के क्षेत्र में जोड़ा जाना चाहिए, उसका विकास करना चाहिए और जहां पर महानदी का उद्‍गम होता है, जो गणेश घाट के रूप में है, उस गणेश घाट को विकसित करना चाहिए। माननीय मंत्री महोदय जी, आप जानते हैं, आप उस क्षेत्र में गये भी हैं। पहले भी आपका सहयोग रहा है और अभी भी मैं चाहती हूं कि आप वहां पर सहयोग करेंगे, ऐसा आपसे उम्मीद है। दूसरी बात, जो मध्यान्ह भोजन है। स्कूलों में यह मध्याह्न भोजन की व्यवस्था बहुत अच्छी है, लेकिन वहां जो रसोईया है, उनका मानदेय बहुत कम है। उनका मानदेय कम से कम कलेक्टर दर पर बढ़ोत्तरी करनी चाहिए, क्योंकि उनको काम भी बहुत करना होता है, दिनभर बच्चों को भी देखना होता है तो यह मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूं। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी का और भी ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं कि मेरे क्षेत्र में बहुत सारे स्कूल हैं, जिसका मिडिल स्कूल से हाई स्कूल में उन्नयन करना है, वह स्कूल मगरलोड ब्लॉक में खिसोरा और कपालफोड़ी गांव, नगरी ब्लॉक में रतावा, कोटरवाही, बिरनासिलरी का है। जिसका हायर सकेण्डरी स्कूल में उन्नयन करना है, वह तुमड़ीबहार, घटला, सुकलाभाठा, धौराभाठा नवागांव, करहिया, भोथापारा, उमरगांव, भैंसामूड़ा का स्कूल है। यह सभी स्कूलों का बहुत दिनों से उन्नयन नहीं हो पाया है। सभापति महोदय जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहती हूं कि इन स्कूलों का उन्नयन किया जाए। तीसरी बात, मेरे सिहावा विधान सभा क्षेत्र में सिर्फ नगरी और मगरलोड में कॉलेज है, जोकि मेरा गट्टाशीली क्षेत्र जंगल क्षेत्र है, वहां की बच्चियां 12वीं के बाद आगे नहीं पढ़ पाती हैं। इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूं कि वहां पर महाविद्यालाय खोला जाए। जब मैं वर्ष 2008 में विधायक बनी थी, तब भी मैंने आपसे यह मांग की थी और आज मैं फिर मांग कर रही हूं। मुझे आपसे बहुत उम्मीद है कि आप इस मांग को जरूर स्वीकृति दिलायेंगे क्योंकि बच्चों को

पढ़ने के लिए वहां से धमतरी जाना पड़ता है या नगरी जाना पड़ता है। दूरी 40 से 50 किलोमीटर हो जाती है। माननीय महोदय जी, आप इस पर जरूर ख्याल करेंगे, यह मैं आपसे कहना चाहती हूं। पर्यटन के क्षेत्र में विशेष रूप से आप ध्यान देंगे क्योंकि वह सप्त ऋषियों का तपोभूमि भी है और महानदी का उद्गम स्थल भी है। इसलिए उस क्षेत्र को विकसित करें, यह मैं आपसे कहना चाहती हूं। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री रामकुमार टोप्पो (सीतापुर) :- माननीय सभापति महोदय, मैं मांग संख्या- 26, 27, 28, 37, 44 एवं 51 के संबंध में चर्चा के लिये खड़ा हुआ हूं । मैं चर्चा आरंभ करूं उससे पहले इस बसंत पंचमी की शुभकामनाओं के साथ मैं आपके माध्यम से सदन को उनकी भी याद दिलाना चाहूंगा जिन्होंने इस भारत की सुरक्षा और रक्षा के लिये अपने प्राण का बलिदान दिया । माननीय सभापति महोदय, आज ही के दिन दिनांक 14 फरवरी, 2019 को पुलवामा में एक आतंकी हमला हुआ । यह हमला आतंकवाद का कायराना हमला था जिसमें सी.आर.पी.एफ. के, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 40 जवान शहीद हुए । मैं शीश झुकाकर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय सभापति महोदय, शिक्षा जीवन का बहुत महत्वपूर्ण विषय है । इस विषय पर आने वाली सरकारों ने अपनी-अपनी नीतियों के अनुसार अनेक प्रकार की नीतियां बनायीं और बेहतर से बेहतर प्रयास किया । कोई सफल हुआ तो किसी ने उसके दुष्परिणाम को भी देखा है । पिछली सरकार ने भी एक बहुत महत्वपूर्ण शिक्षा को लेकर उत्कृष्ट स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम विद्यालय का शुभारंभ किया । यह बहुत अच्छी योजना है, यह काबिलेतारीफ है लेकिन मैं माननीय शिक्षामंत्री जी का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूंगा कि यह जितनी अच्छी योजना है उतने ही इसके दुष्परिणाम भी देखे जा रहे हैं । मेरे विधानसभा क्षेत्र में अधिकतर संचालित विद्यालय बिना भवन के दो पालों में चल रही हैं इससे पूरे दिन चलने वाली शिक्षा एक पहर में चलायी जा रही है तो मैं माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहूंगा कि इस विषय की ओर भी ध्यान आकर्षित करें और भविष्य में इनके लिये भवन की व्यवस्था की जाये ताकि बच्चों के साथ शिक्षा के प्रति जो दुष्प्रभाव हो रहा है उसको प्रभाव में बदला जा सके ।

माननीय सभापति महोदय, इस नये शिक्षा बजट में एक महत्वपूर्ण चीज है । मैं जिस विषय में कहना चाहूंगा कि योग । हम सभी यह जानते हैं कि यही भारतवर्ष है जिसने वेदों के माध्यम से आज से हजारों वर्ष पहले पूरी दुनिया को बता दिया था कि यह बृह्माण्ड कैसे बना ? आज विज्ञान जिन चीजों को ढूंढ़कर निकालता है, इसको आज से हजारों वर्ष पहले बता दिया गया था कि यह ब्रह्माण्ड कैसे बना, यहां ग्रह क्या-क्या हैं ? इसी प्रकार योग भी उन्हीं वेदों से उठाया गया, पतंजलि के द्वारा संजोया गया । यह एक महत्वपूर्ण अंग है जिसको मोदी जी ने हमेशा से कहा कि हम विश्व गुरू की ओर आगे बढ़ रहे हैं । हमें विश्व गुरू बनना है और उन्होंने योग को लेकर कहा था कि दुनिया हमारे भारत की ओर देखो और आज देखिये योग को, मैं इसके लिये शिक्षा मंत्री महोदय एवं वित्तमंत्री महोदय जी को बहुत-बहुत बधाई

और धन्यवाद देना चाहूंगा कि यह महत्वपूर्ण अंग जो आज से हजारों वर्ष पहले से इस भारतवर्ष में चला आ रहा था । उस योग शिक्षा को इसमें शामिल किया इसके लिये मैं आपको बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देना चाहूंगा ।

माननीय सभापति महोदय, हमारे माननीय सदस्यगण सभी विषयों पर चर्चा कर चुके हैं इसलिये अब मैं सीधे मेरे विधानसभा क्षेत्र की कुछ मांगों को आपके समक्ष रखना चाहूंगा । मेरे विधानसभा क्षेत्र में शासकीय प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला विद्यालयों में आज भी 50 से अधिक विद्यालयों में एकल शिक्षा से संचालित हो रहे हैं । जो कि अतिप्रभावशील न होने के कारण शिक्षा की नींव कमजोर होती जा रही है ।

सभापति महोदय :- रामकुमार जी, आप अपनी मूल बात रखेंगे तो समय पर आपका पूरा विषय आ जायेगा । कृपया भूमिका न बांधें ।

श्री रामकुमार टोप्पो :- जी । माननीय सभापति महोदय, हम कहते हैं कि अगर हम कोई बिल्डिंग बना रहे हैं और यदि उसकी नींव मजबूत है तो भवन अपने आप मजबूत रहता है । लेकिन यह एकल शिक्षा इस चीज को दर्शाता है कि पिछले 5 वर्षों में किस तरीके से बच्चों की जो शिक्षा की नींव है वह कमजोर हुई तो इसलिये मैं माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहूंगा कि इस पर भी विशेष ध्यान देकर उन जगहों पर जल्दी ही शिक्षकों की व्यवस्था की जाये । दूसरा, जो मेरी विशेष मांग थी। चूंकि मेरा क्षेत्र जंगल और पहाड़ों में बसा हुआ क्षेत्र है इसलिये मैंने मांग की थी कि कुछ जो हाईस्कूल विद्यालय हैं सरभंझा, जामकानी और ढ़ोड़हा गांव। इसको हॉयर सेकेण्डरी स्कूल में बदला जाये और सभी विषयों का संचालन यहां किया जाये । इसके अतिरिक्त क्षेत्र में लगभग 100 से अधिक विद्यालय हैं, जिसमें स्वीपर की व्यवस्था नहीं है और इस कारण से आये दिन निरंतर बच्चों को काम कराने के मामले में शिक्षकों पर प्रकरण दर्ज होते हुए भी दिखाई देते हैं, क्योंकि सफाई बहुत महत्वपूर्ण अंग है। सफाई होना अति आवश्यक है। तो सफाई कौन करेगा? ये अति ध्यान देने वाला विषय है। तो मैं निवेदन करूंगा कि इस पर भी विचार कर जल्द से जल्द स्वीपर की व्यवस्था की जाये। डिजिटल क्लास अधिकतर विद्यालयों में दिया गया है, लेकिन ये कौन सा सिस्टम दिया गया है माननीय सभापति महोदय, जो चलता ही नहीं है। जैसे लगाया गया है वैसे ही नया का नया रखा गया है। पूछने और निरीक्षण में जाने पर पता चलता है कि जिसने टेंडर लिया, उसकी पता नहीं कौन सा फॉल्ट है, जिससे चलता नहीं है। तो मैं शिक्षा मंत्री महोदय को भी यह अवगत कराना चाहूंगा कि इस विषय पर भी ध्यान दिया जाये। माननीय सभापति महोदय, सीतापुर विधान सभा जो कि जिले से 50 किलोमीटर दूर स्थित है और यहां कन्याओं के लिए किसी प्रकार का वहां पर विशेष विद्यालय और महाविद्यालय संचालित नहीं हो रहा है तो मैं महोदय का ध्यान दिलाना चाहूंगा कि सीतापुर विधान सभा में खासकर सीतापुर में कन्या महाविद्यालय सभी विषयों में संचालित किये जायें, इससे वहां की जो बेटियां हैं, उन्हें एक अच्छी

शिक्षा उपलब्ध हो पायेगी। महोदय, पर्यटन के लिहाज से हम अति सौभाग्यवान हैं कि सीतापुर विधान सभा को छत्तीसगढ़ का शिमला मैनपाट मिला है। हम सौभाग्यशाली हैं और इस मैनपाट की मैं कुछ बिंदुओं को बताना चाहूंगा। उल्टा पानी, आप सभी ने सुना होगा कि इस भारतवर्ष में एक ऐसा प्वाइंट है, जहां पानी विपरीत दिशा में बहती है। ये ध्यान का केन्द्र है। दलदली जहां जमीनें हिलती हैं, ऐसा प्वाइंट भारत देश में बहुत ही कम दिखाई देता है। जहां मछली की विभिन्न प्रजातियां दिखाई देती हैं। टाइगर प्वाइंट, मेहता प्वाइंट, दर्जनों झरने, सुंदर पर्वत मालाएं और गर्मी के मौसम में भी सबसे बड़ी बात कि वहां शिमला का एहसास दिलाने वाली सुंदर शीतल हवाएं और वन्य जीवों जैसे कोटरी, खरगोश, हाथी, बंदर, जंगली सुअर जैसे विभिन्न प्रकार के वन्य जीव वहां पर विचरण करते हैं, लेकिन दुर्भाग्य की बात तो ये है कि आज तक वहां पर्यटन को डेव्लप करने के लिए वहां कोई ठोस कदम नहीं उठाये गये हैं। उठाया भी गया तो वहां भ्रष्टाचार का शिकार होता गया। तो इसलिए मैं माननीय पर्यटन मंत्री का भी ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा और कहना चाहूंगा कि मैनपाट की ओर भी देखें, क्योंकि मैनपाट में अपार संभावनाएं हैं। माननीय सभापति महोदय..।

सभापति महोदय :- आपके पास सिर्फ दो मिनट है।

श्री रामकुमार टोप्पो :- जी-जी, बस समाप्त कर रहा हूं। माननीय सभापति महोदय, बस मैं अपने लास्ट में माननीय वित्त मंत्री जी को, माननीय शिक्षा मंत्री जी को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूंगा कि उन्होंने शासकीय महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर विषय संकाय प्रारंभ करने के लिए कुल 131 पदों के सृजन हेतु 450 लाख का प्रावधान किया है, जिसमें शासकीय महाविद्यालय सीतापुर भी शामिल है, जिसके लिए मैं धन्यवाद करूंगा और आपने मुझे मौका दिया, इसके लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करते हुए वित्तीय वर्ष 2024-25 की मांग संख्या 26, 27, 28, 37, 44, 51 का मैं समर्थन करता हूं। जय हिन्द।

सभापति महोदय :- श्री अटल श्रीवास्तव।

श्री अटल श्रीवास्तव (कोटा) :- सभापति महोदय, वित्तीय वर्ष 2024-25 के अनुदान मांगों पर चर्चा हेतु इस सदन के सबसे वरिष्ठ मंत्री, सबसे अनुभवी मंत्री आदरणीय बृजमोहन अग्रवाल जी के विभाग स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा, पर्यटन और संस्कृति और संसदीय कार्य के अनुदान मांग पर चर्चा करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

माननीय सभापति महोदय, मैं सबसे पहले संस्कृति की बात करूंगा, क्योंकि छत्तीसगढ़ की संस्कृति सबसे समृद्ध संस्कृति है..।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- चर्चा करने के लिए या विरोध करने के लिए खड़े हुए हो? पक्ष में हैं न?

श्री अटल श्रीवास्तव :- पहले चर्चा कर लूं फिर विरोध भी कर लूंगा। वो तो कर ही रहे हैं। किसी भी प्रदेश की पहचान उसकी संस्कृति से होती है, उसके खान-पान से होती है, उसके वहां रहने वाले लोक

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कला से होती है। माननीय सभापति महोदय, जब से छत्तीसगढ़ राज्य बना, राज्य बनने की परिकल्पना थी हमारी अपनी बोली, हमारी अपनी बोली, हमारी अपनी भाषा, हमारी अपनी लोक-संस्कृति, पर पिछले 15 सालों में जब भारतीय जनता पार्टी का शासन था, जब छत्तीसगढ़ की लोक कला और छत्तीसगढ़ की संस्कृति पर कोई काम नहीं किया गया, पर हमारी सरकार बनने के बाद हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा रहने वाले आदिवासी लोग हैं, उनके लिए देवगुड़ी की बात की कि हम हर जगह देवगुड़ी बनायेंगे। हर ब्लॉक पर जो सतनामी बाहुल्य ब्लॉक थे, हमारे बाबा गुरू घासीदास जी के ब्लॉक थे, उसमें हर ब्लॉक में 25 लाख रूपए जैतखंभ बनाने के लिए दिये ताकि वहां सतनामी समाज के लोग गुरू घासीदास जी की जयंती मना सकें । अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव का आयोजन हुआ । पहले छत्तीसगढ़ की पहचान क्या थी ? जब छत्तीसगढ़ के लोग बाहर जाते थे तो लोग पूछते थे कि छत्तीसगढ़ आएंगे तो क्या मिलेगा और एयरपोर्ट पर उतरने के कितने देर बाद नक्सलाइट मिलेंगे ? हमारी पहचान नक्सलाइट प्रदेश के रूप में हुई थी । हमारा छत्तीसगढ़ इतना सुंदर है, सात राज्यों से घिरा हुआ है, हमारे छत्तीसगढ़ की पहचान आदिवासी नृत्य महोत्सव की वजह से भी बनी है । जब 27 राज्यों और 8 देशों के नर्तक दल यहां आए तब उन्होंने देखा कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति कितनी समृद्ध है । सभापति महोदय, ये लोग भगवान् राम की बात करते हैं । रामायण महोत्सव छत्तीसगढ़ की संस्कृति है, छत्तीसगढ़ के गांव-गांव में नवधा रामायण होती है । इसको कभी किसी ने तवज्जो नहीं दी किंतु हमारी सरकार ने पहले ब्लॉक लेवल पर, फिर जिला लेवल पर, फिर राज्य स्तर पर और फिर राष्ट्र स्तर पर रामायण महोत्सव कराकर पूरी रामायण मंडलियों को कहीं न कहीं एक पहचान बनाकर दी । हमारे यहां तीजा और हरेली के छत्तीसगढ़ी त्यौहार नहीं होते थे। इनसे भी हमारी पहचान बनी । पहले बोरे बासी को कोई नहीं खाता था आज छत्तीसगढ़ के बड़े-बड़े अधिकारी और बड़े बड़े नेता बोरे बासी खाकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं, ये है छत्तीसगढ़ की संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम।

श्री रामकुमार यादव :- पहिली बासी ला एमन चम्मच मा खात रिहीन हे ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- चम्मच मा खात रिहिस हे । सभापति महोदय, मैं राजिम कुंभ मेले की बात करना चाहता हूं जिसका अभी-अभी नाम बदला और जो अभी केबिनेट में पास नहीं हुआ है । छत्तीसगढ़ की जो पुरानी संस्कृति है जब उसका नाम तब के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री आदरणीय ताम्रध्वज साहू ने उसको माघी पुन्नी मेला कहा जो कि पुरानी संस्कृति, पुरानी परम्परा के अनुरूप था । आपने बिना केबिनेट में लाए उसको फिर से राजिम कुंभ का नाम दिया । क्या यह अधिकार हमारे पास है ? मैं चाहता हूं कि वह हमेशा रहे, वह माघी पुन्नी मेला नाम कमाए, उसकी साख बढ़े । लेकिन यह बार-बार हमारी सरकार आएगी तो हम माघी पुन्नी करेंगे और आपकी सरकार आएगी तो आप उसको तथाकथित राजिम कुंभ नाम देंगे । अरे, कुंभ का मेला आयोजित करने का काम शंकराचार्यों का है ।

पहले महाकुंभ 108 सालों में होता था, फिर कुंभ का मेला 12 सालों में होता था, फिर अर्धकुंभ का मेला 6 सालों में होता है किंतु यह राजिम कुंभ के नाम से नया कुंभ कहां से आ गया ? इसे सोचना पड़ेगा, यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति की बात है, केवल आपकी सरकार या मेरी सरकार आने की बात नहीं है । अगर माघी पुन्नी मेला है तो माघी पुन्नी मेला होने की बात कीजिए । आज छत्तीसगढ़ में 23 साल हो गए, हमारी सरकार ने, भूपेश बघेल की सरकार ने छत्तीसगढ़ को राज्यगीत दिया । आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारे प्रदेश का राज्यगीत है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- अटल जी, उस समय पर्यटन विभाग के अध्यक्ष थे । उस समय आपने इस बात को छेड़ा क्या, आपने कहा कि पुन्नी मेला होना चाहिए, आपने तो राजिम मेला मनाया ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सदस्य ने जो बात रखी । हमारी सरकार के समय भी ताम्रध्वज साहू जब संस्कृति मंत्री थे, तब उसे माघी पुन्नी मेला का नाम दिया गया । विवाद इस बात का नहीं है, आयोजन होना चाहिए । किंतु यह बार-बार नाम को लेकर विवाद आ रहा है, यह क्लीयर हो जाना चाहिए कि हमें उसका नाम क्या रखना है ? हमारी परम्पराएं क्या हैं ? सभापति महोदय, अभी छत्तीसगढ़ में अलग-अलग स्थानों पर लगभग 90 महोत्सव होते हैं । कहीं जाज्वलयदेव महोत्सव, कहीं अरपा महोत्सव और कहीं कुछ । अच्छी बात है कि छत्तीसगढ़ में अलग-अलग स्थानों पर 90 महोत्सव होते हैं । यही छत्तीसगढ़ की पहचान और संस्कृति की बात है । मैं कहूंगा कि अभी छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद् का गठन हुआ । छत्तीसगढ़ में 9 संस्कृति संचालित इकाईयां हैं जिसमें अलग-अलग विधाओं पर, अलग-अलग क्षेत्रों पर काम किया जा रहा है । यही चीजें हमारी छत्तीसगढ़ की संस्कृति को समृद्ध करेगी। सभापति जी, मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि अभी हमारे माननीय अजय चंद्राकर जो बहुत विद्वान हैं, वे बहुत स्टडी करते हैं । वे कह रहे थे कि छत्तीसगढ़ की लोक कला एवं संस्कृति की कोई ऐसी मार्किंग होनी चाहिए । मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि रतनपुर छत्तीसगढ़ की पुरानी राजधानी है । वहां भोपाल के भारत भवन जैसा एक भवन बनाइए । जहां छत्तीसगढ़ की सभी लोक कलाओं का एक समागम हो, ताकि भारत भवन पूरे देश में जाना जाने लगे ।

सभापति जी, रामलला के दर्शन की योजना बनाई, बहुत अच्छी बात है । हम सबके आराध्य राम हैं । किंतु ये रामलला दर्शन की योजना तो आपने बनाई किंतु राम वन गमन परिपथ, माता कौशल्या का जन्म स्थल, 2260 किलोमीटर चिन्हित किया गया, कि हम राम वन गमन परिपथ बनाएंगे, उसके लिए 10 जगह चिन्हित किए गए हैं, उनका विकास हुआ । आपने तो कभी नहीं ढूंढा और न ही उसके लिए बजट का कोई प्रावधान किया गया। क्या केवल अयोध्या वाले भगवान राम की जय होगी, भांचा राम की जय नहीं होगी । भगवान राम के बीच में जो राजनीति की बात है, इसे दूर किया जाना चाहिए । मेरा आपसे निवेदन है कि राम वन गमन परिपथ को आप आगे बढ़ाइए ताकि छत्तीसगढ़ में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिल सके । माननीय सभापति महोदय, मैं पर्यटन के क्षेत्र में बात करना चाहता हूं, क्योंकि

मैंने एक दो साल पर्यटन के क्षेत्र में दिया है। अभी पर्यटन क्षेत्र में राम वन गमन पर्यटन परिपथ विकसित हो रहा था। माननीय चंद्राकर जी दो दिन पहले बहुत आपत्ति कर रहे थे कि चंपारण में भगवान गये या नहीं गये। भगवान राम कहां गये, हमारे पुराणों में जो लिखा हुआ है, उसी के आधार पर यह राम वन गमन परिपथ बनाया गया है। चंपारण में भगवान राम गये थे या नहीं गये थे, यह बात नहीं है। बात यह है कि अगर पर्यटन परिपथ बन रहा है तो उस पर्यटन परिपथ के आने वाले 20 किलोमीटर के एरिया में अगर कोई चीज विकसित की जा सकती है तो किया जाना चाहिए। माननीय अजय चंद्राकर जी को आपत्ति है, वे वहां से राम भगवान की मूर्तियां हटा दें। इस तरीके की बातें नहीं होनी चाहिए। सभापति महोदय, हमारा छत्तीसगढ़ राज्य पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावना रखता है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस बार छत्तीसगढ़ के पर्यटन मंत्री, छत्तीसगढ़ के सबसे अनुभवी, विद्वान मंत्री बने हैं, मैं चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ भारत के पर्यटन मानचित्र में अपना स्थान बनाए। हमारे पास 11 वाइल्ड लाइफ सेंचुरी है, हमारे पास तीन नेशनल पार्क हैं, हमारे पास 1 लेमरू एलिफेंट रिजर्व है, हमारे पास एक कोकोडायल पार्क है, हमारे पास अचानकमार टाइगर रिजर्व, जैव विविधता पार्क है। हमारे पास 6 बड़े बांध हैं, जहां पर वाटर बाडिस हैं, 10 बड़ी नदियां हैं। इतना किसी राज्य के लिए उसके पर्यटन को विकसित करने के लिए काफी होता है। मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि अगर छत्तीसगढ़ की पहचान बाहर बनानी है तो पर्यटन और संस्कृति सबसे अच्छा माध्यम हो सकता है। इससे हम छत्तीसगढ़ की पर्यटन और संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम कर सकते हैं। मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि पर्यटन एक हास्पिटिलिटी बिजनेस है, इसमें जब तक पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप नहीं आएगी, हम इसे विकसित नहीं कर सकते। क्योंकि जब सरकारी चीजें बनती है तो उसका दुरूपयोग शुरू होता है। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि एक लैंडबैंक की स्थापना करें और लैंडबैंक बनाकर बड़े-बड़े पब्लिक पार्टनरशिप हैं, उसको लाकर छत्तीसगढ़ के पर्यटन को बढ़ाने की दिशा में काम करें। सभापति महोदय, मैं मंत्री जी के माध्यम से पर्यटन को तीन भागों में बांटने का निवेदन करता हूं। नार्थ सर्किट, साउथ सर्किट और मीडिल सर्किट। अगर इस तरीके से हम दो-दो, तीन-तीन दिन का पैकेज बनाकर पर्यटक को देंगे तो मुझे पूरा विश्वास है कि छत्तीसगढ़ पर्यटन की दिशा में अपना अलग पहचान बनाएगी।

सभापति महोदय :- अटल भाई, आपके पास दो मिनट है, जो बोलना है, बोल सकते हैं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- सभापति महोदय, मैं उच्च शिक्षा के लिए बात करना चाहता हूं। रतनपुर के लिए बहुत सारी बातें हुई। अभी आपने रतनपुर की महामाया मंदिर को विकास के लिए लिया है, पर धार्मिक विकास के साथ शिक्षा की विकास की ओर भी ध्यान देना होगा। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि रतनपुर के कॉलेज में खेल का मैदान नहीं है, वहां ऑडिटोरियम नहीं है, इसलिए वहां पर ऑडिटोरियम के निर्माण की व्यवस्था की जाए।

सभापति महोदय, स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में बात हो रही थी। आत्मानंद स्कूल की बात हुई। मैं जानता हूं, मैं प्राईवेट स्कूल चलाता हूं,...।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अटल जी, चंदखुरी की प्रतिमा में आप लिखवा दीजिए कि यह राम भगवान है। अध्यक्ष महोदय का भी निर्देश है। उसके बारे में बताईए, पर्यटन विभाग में बहस चल रही है, कौन बनवाया, कैसे बनवाया, कैसे सलेक्ट हुआ, कैसे लगा ? आपके हिसाब से राम भगवान है या नहीं है। इसमें थोड़ा प्रकाश डालिए ना, दुनियाभर बोलने का क्या फायदा। उसको तो आपने करवाया है।

श्री अटल श्रीवास्तव :- जी। भगवान को देखने के लिए दृष्टि चाहिए। आप भगवान को जिस नजरों से देखेंगे, कण-कण में भगवान हैं। आपकी नजर खराब है इसलिए आपको भगवान राम नहीं दिख रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- नजर खराब कैसे है, उसको ही बताने के लिए खड़ा हुआ हूं। आयोध्या में दुनिया का सबसे बेहतरीन मूर्तिकार श्री रामलला का मूर्ति बनाया है। दिग्विजय सिंह बोलते हैं कि इसमें राम टाईप दिख ही नहीं रहा है। ऐसी ही तो दृष्टिदोष होता है।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन तो जो अरूण कुमार राम के रोल करे हे ओला जान नइ देहा। ओ मठाधीश बने हे तो किंजरे हावए। ओमन पानी धरे हे, ओमन भस्म कर दीही।

श्री अजय चंद्राकर :- दुनिया भर के डॉयलाग मारे के बजाय यह बोल दीजिए कि हैं, किसने बनाया, कैसे बनाया, कितने में बना, जो आपने तय किया है, सब हो गया है या नहीं हुआ है, हम सोशल ऑडिट में चंदखुरी को हटा देंगे।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, मैं इस बात को सच में स्वीकार करता हूं, अगर आपकी दृष्टि अच्छी है, अगर आपकी सोच अच्छी है, आप जिसको जिस नजर से देखेंगे वैसा दिखेगा। वहां की मूर्ति में खामी है, इस बात को पहले ही सूचित कर दिया गया था। मूर्तिकार से कुछ गलतियां हुई, क्योंकि वह मूर्ति 51 फीट की थी, मुझे स्वीकार करने में कोई परेशानी नहीं है कि वह मूर्ति 51 फीट की बनाई गयी थी, कलाकारों से गलती हुई कि उसका प्रपोसन सही नहीं बन पाया और उसी समय यह कहा गया था कि इस मूर्ति को बदलना है, पर कुछ परिस्थितियां ऐसी हुई कि बाद में मूर्तियों की हाईट 21 फीट हो गयी और उसका जो पायडस्टल है वह 10 फीट का बनाया गया।

सभापति महोदय :- अटल भाई थोड़ा समय का ध्यान रखिए।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, मैं स्कूली शिक्षा के बारे में बात कर रहा था। आत्मानंद स्कूल की बात हुई। मैं प्राईवेट स्कूल चलाता हूं। जब आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल शुरू हुई तो मेरी स्कूल का एडमिशन 20 प्रतिशत कम हो गया। मेरी स्कूल की फीस बहुत ज्यादा है। आप लोग आत्मानंद स्कूल के बारे में बात कर रहे थे। हमारी सरकार का यह बहुत ही क्रांतिकारी कदम था। आज 723 स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोले गये हैं। आज कहीं न कहीं गरीब आदमी।

श्री अजय चंद्राकर :- हम इस बात को बिल्कुल मानते हैं कि यह एक क्रांतिकारी कदम था कि उसमें 800 करोड़ रूपये का मेंटनेंस कराया गया और 2,000 रूपये के हिसाब से प्रतिनियुक्ति भत्ता दिया गया।

श्री अटल श्रीवास्तव :- आपको इस बात पर खुशी जाहिर करनी चाहिए कि छत्तीसगढ़ का गरीब बच्चा यह गर्व से कहता है कि मैं एक अच्छे स्कूल में पढ़ता हूं। वह अंग्रेजी माध्यम स्कूल है। वहां की पढ़ाई अच्छी है। वहां पर कम्प्यूटर लैब है। वहां पर प्रयोगशालाएं बनी हैं। हमारी सरकार ने यह कार्य किया है।

श्री गजेन्द्र यादव :- भैया, जब आप लोगों ने सब कुछ अच्छा किया है तो टीचर भी अच्छा देना था। आप किसी को भी उठाकर अपने शहर और परिवार के लोगों को वहां पर भर्ती कर दिये। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- वहां पर बहुत अच्छे टीचर रखे गये हैं। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- वहां के टीचर आपके शहर से ही आये हैं। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तुमन प्राइवेट स्कूल संग मिल गेहों। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- अटल जी, आप एक मिनट में अपनी बात कहें।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, मैं मंत्री जी से केवल एक गुजारिश करता हूं कि यदि सबसे ज्यादा Work Force, Human Resource कहीं पर है तो स्कूल शिक्षा विभाग में है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अटल जी, स्वामी आत्मानंद जी का तो पूरा सम्मान है, लेकिन आत्मानंद जी के चक्कर में हमारे अन्य महापुरूषों के नाम गायब हो गये। आप लोग उसको खा गये।

श्री अजय चंद्राकर :- आप लोग स्वामी आत्मानंद जी के नाम पर महापुरूषों को खाने वाली पार्टी के सदस्य हैं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अच्छा, आप लोग [xx][3] तो वह नहीं चलेगा। माननीय सभापति महोदय, मैं अपनी बात रखना चाहता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, [xx] को विलोपित किया जाए।

सभापति महोदय :- ठीक है। मैं इसको विलोपित करता हूं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- आपने स्वामी आत्मानंद जी के नाम पर कह दिया। क्या आत्मानंद जी महापुरूष नहीं हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैंने उनको महापुरूष कहा है। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- आपको स्वामी आत्मानंद जी वाला भी विलोपित करना पड़ेगा। आप स्वामी आत्मानंद जी को महापुरूष नहीं मानते हैं। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लोग एक-एक करके बोलिये।

[3] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

श्री रामकुमार यादव :- आप यह बताइये कि क्या स्वामी आत्मानंद जी महापुरूष नहीं हैं?

सभापति महोदय :- अटल जी, प्लीज।

श्री अजय चंद्राकर :- आप लोग उस महापुरूष के नाम से बाकी महापुरूषों के नाम को खा गये।

श्री रामकुमार यादव :- स्वामी आत्मानंद जी भी महापुरूष हैं। उनके नाम को भी विलोपित किया जाए। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आपने उनके नाम को बदल दिया और उसके बाद उसी नाम को बार-बार ले रहे हैं कि गौरव की बात है, गौरव की बात है। क्या बाकी महापुरूष नहीं थे?

श्री अटल श्रीवास्तव :- आपके यहां भी तो 3 ही हैं। मेरा माननीय शिक्षा मंत्री जी से एक महत्वपूर्ण निवेदन है कि आपके पास सबसे बड़ा Work Force, सबसे बड़ा Human Resource है। चौथे स्तंभ में विकेंद्रीकरण की भी बात की गई है। स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल कलेक्टर की अध्यक्षता में चलता था, उसको आपने समाप्त करके पुन: स्कूल शिक्षा विभाग में जोड़ दिया है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप 3 Directed बनायें। आत्मानंद स्कूल का प्रायमरी व मीडिल स्कूल तक अलग Directed, नौवीं से लेकर बारहवीं तक अलग Directed बनायें। तभी यह Work Force हो पाएगा। धन्यवाद। जय हिंद।

सभापति महोदय :- डोमनलाल जी।

श्री डोमनलाल कोर्सेवाड़ा (अहिवारा) :- माननीय सभापति महोदय, वित्तीय वर्ष 2024-2025 की अनुदान मांग संख्या - 26, 27, 28, 37, 44 एवं 31 के समर्थन में बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। स्कूल शिक्षा विभाग सबसे महत्वपूर्ण विभाग है। शिक्षा के माध्यम से शिक्षित प्रदेश की कल्पना की जा सकती है। किसी भी क्षेत्र के विकास में शिक्षा का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा से संस्कार मिलता है। शिक्षा विभाग सभी विभागों के रीढ़ के रूप में जाना जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही हमारे बहुत सारे अधिकारियों-कर्मचारियों के द्वारा काम होता है। इस प्रकार से हमारे शिक्षा विभाग के द्वारा इस प्रदेश में राष्ट्रीय नीति लागू होगी। बच्चों और युवाओं को अपनी योग्यता के आधार पर विकास करने का अवसर मिलेगा। शिक्षकों की भर्ती और स्थापना पोस्टल आधारित होनी चाहिए। पिछली सरकार ने उसको नकार दिया था और उस आधार पर काम नहीं किया। शिक्षा पारदर्शी और विश्वसनीय होनी चाहिए और उसकी व्यवस्था भी सुगम होनी चाहिए। जहां पर हमारे शासकीय हाई स्कूल, हायर सेकण्डरी स्कूल भवनविहीन हैं तो ऐसे भवनविहीन स्कूलों का निर्माण करने के लिए इस बजट में प्रावधान किया गया है। मैं माननीय मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि मेरे अहिवारा विधान सभा क्षेत्र के हाई स्कूल, मलपुरीकला का विकास कर धमधा में भवन निर्माण के लिए 75 लाख, 23 हजार रूपए का समावेश इस बजट में किया है । मैं इसके लिए आपकी भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूं । महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर नवीन विषय खोले जाएंगे, इसके लिए प्रावधान किया गया है । प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जाएगी । शासकीय

महाविद्यालय के लिए जो भवन नहीं बन पाए हैं, उन नवीन भवनों के लिए भी राशि का प्रावधान किया गया है । सौभाग्य से छत्तीसगढ़ में संगीत महाविद्यालय की स्थापना की जा रही है । विद्यार्थियों में, आम जनता में विज्ञान के प्रति रूचि को उत्पन्न करने के लिए भी बजट में 34 करोड़, 90 लाख रूपए का प्रावधान किया गया है ।

सभापति महोदय, मैं अपने विधान सभा क्षेत्र की कुछ मांगें रखना चाहता हूं । हमारे अहिवारा विधान सभा क्षेत्र में बारबरद जो नगरी क्षेत्र में आता है, वहां मांघी पूर्णिमा में बहुत बड़ा मेला भरता है । यहां एक कुण्ड है, जिसमें स्नान कर गौ हत्या का जो पाप लगा रहता है, उसको धोने का प्रयास करते हैं और यह बहुत दिनों से प्रचलन में है । ऐसे मेला के सहयोग के लिए शासकीय अनुदान देने की कृपा करें । अकोला में भी शिवरात्रि में मेला भरता है, उसके लिए भी मैं अनुदान की मांग करता हूं ।

सभापति महोदय, भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में अहिवारा में जो अशासकीय महाविद्यालय था, उसका शासकीयकरण किया गया। वहां पर विद्यालय भवन बन गया है, किन्तु अहाता का निर्माण नहीं हो पाया है । इसलिए मैं आपने अहाता के निर्माण के लिए राशि चाहता हूं । साथ-साथ जामुल महाविद्यालय में भी भवन बन गया है, पर उसका बाउन्ड्रीवाल नहीं है । इसलिए आपसे चाहता हूं कि उसके लिए भी राशि प्रदान करने की कृपा करें । सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं ।

श्री जनक ध्रुव (बिन्द्रानवागढ़) :- सभापति महोदय, मैं जिस क्षेत्र से आता हूं, वह वनाच्छादित और दुर्गम क्षेत्र है । वहां की समस्या और मैदानी क्षेत्र की समस्या पृथक होती है । वह जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है, जहां विशेष पिछड़ी जनजाति के लोग जो राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र हैं-कमारभुंजिया, ऐसे लोग निवास करते हैं । इस क्षेत्र में मूलभूत सुविधा का बहुत ही अभाव है, जिसके कारण विकास के लिए निरंतर प्रयास करने की जरूरत है । किसी भी क्षेत्र के समुचित विकास का प्रमुख आधार शिक्षा ही है । इसलिए मैं सभापति जी के माध्यम से अपने क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में माननीय शिक्षा मंत्री जी का ध्यानाकृष्ट कराना चाहता हूं कि हमारे क्षेत्र में लगभग आधा दर्जन ऐसे स्कूल हैं, जो शिक्षक विहीन हैं । पिछले 15 सालों से स्कूल है तो शिक्षक नहीं है और शिक्षक है तो स्कूल नहीं है । चूंकि इस ओर ज्यादा ध्यान रहता है क्योंकि मैं भी उस शिक्षा विभाग में कार्य कर चुका हूं । गरियाबंद जिले के बिन्द्रानवागढ़ विधान सभा क्षेत्र में लगभग आधा दर्जन शाला भवन विहीन है । स्कूल भवन विहीन है तो बच्चे कहीं सामुदायिक भवन में पढ़ते हैं या किसी के मकान में पढ़ते हैं या दो पाली में पढ़ते हैं, ऐसे दर्जनों शालाएं हैं । उसके अलावा चूंकि वह क्षेत्र वनांचल क्षेत्र है, 80 प्रतिशत सेंसेटिव क्षेत्र है, दुर्गम है, पहाड़ों से घिरा हुआ है, आवागमन का साधन नहीं है ।

सभापति महोदय :- जनक भाई, अपने क्षेत्र की मांग फटाफट कर लो तो अच्छा रहेगा ।

श्री जनक ध्रुव :- जी, सभापति महोदय। इसी कारण कहा भी गया है। इस बात पूर्व मुख्यमंत्री जी कहते भी थे कि अमीर धरती के गरीब लोग। क्योंकि यहां हीरे का खदान भी है, दुनिया का बहुमूल्य धातु यही छिपा हुआ है। उसके बावजूद भी उस क्षेत्र का विकास नहीं होना मैं समझता हूं कि बहुत ही सोचने वाली बात होगी। हमारे माननीय देश के माननीय वित्त मंत्री जी आने वाले वर्ष 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में पहुंचाना चाहते हैं तो उसका बड़ा आधार शिक्षा ही होगा। चूंकि शिक्षा ही समग्र उन्नति का मूल स्तम्भ है। कहा भी गया है कि :-

"सूरज तो जग में प्रकाश फैलाता है,

तब भी अज्ञान का अंधेरा रह जाता है,

पर शिक्षा का प्रकाश जीवन में आता है,

तो सारी बाधाएं दूर होती है, उन्नति का सब मार्ग खुल जाता है। "

आदरणीय सभापति महोदय, मैं इसके अलावा आपके माध्यम से पर्यटन के सम्बन्ध में बताना चाहूंगा। चूंकि हमारा क्षेत्र पैरी नदी का उदगम क्षेत्र है। जहां पर मेरा निवास क्षेत्र है, पैरी नदी का उद्गम वहीं से हुआ है। मैं माननीय पर्यटन मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि इसको पर्यटन क्षेत्र के रूप में विशेष रूप से विकसित करने का करें। माननीय सभापति महोदय, इसके साथ ही साथ हमारे यहां सिकासेर डेम है, जो 15 किलोमीटर के दायरे में फैला हुआ है। उसको भी पर्यटन के रूप में विकसित करने की जरूरत है। साथ ही साथ वहां पर उदन्ति अभ्यारण क्षेत्र है, जहां पर टायगर प्रोजेक्ट के नाम से अभी तक वहां के लगभग 30 से 35 गांवों में बिजली नहीं पहुंच पाया है। हम चांद पर जाने की बात करते हैं और हम अभी धरातल पर ही नहीं चल पा रहे हैं। तो मैं चाहूंगा कि ऐसे क्षेत्रों में विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इसके साथ ही मैं माननीय पर्यटन मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कांदाडोंगर अमलीपदक क्षेत्र में है, देवभोग क्षेत्र, जो गरियाबंद मुख्यालय है, वहां से लगभग 130 किलोमीटर क्षेत्र उड़ीसा बार्डर से लगा हुआ है, वहां ऋषिझरन पर्वत है, उसको भी पर्यटन के रूप में विकसित करने की जरूरत है। मैं चाहूंगा कि उसको भी विकसित किया जाये। उस क्षेत्र में लगभग 4 लाख लोग निवासरत हैं।

सभापति महोदय :- जनक भाई, जल्दी करें।

श्री जनक ध्रुव :- सभापति महोदय, वहां से रायपुर की दूरी लगभग 220 कि.मी. है। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, धन्यवाद।

श्री धर्मजीत सिंह (तखतपुर) :- सभापति महोदय, मैं माननीय श्री बृजमोहन जी अग्रवाल मंत्री शालेय शिक्षा, उच्च शिक्षा, पर्यटन, धर्मस्व तथा अन्य-अन्य सभी विभागों के मांग के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय, यह इस प्रदेश का बहुत बड़ा सौभाग्य है कि हमारे सदन के सर्वाधिक बार चुनाव जीते हुए, सर्वाधिक मंत्री के कार्यकाल में कार्य करने वाले श्री बृजमोहन जी अग्रवाल को छत्तीसगढ़ के शिक्षा, शिक्षा की व्यवस्था की कमान सौंपी गई है। सभापति महोदय, शिक्षा विभाग सबसे समस्याग्रस्त विभाग है। क्योंकि इसमें कोई भी मंत्री कितनी भी कोशिश कर लें, कोई बहुत जल्दी खुश नहीं होता है। अधिकांश मंत्रियों और विधायकों के घर में सबसे ज्यादा भीड़ रहती है तो गुरूजी लोगों के ट्रांसफर की समस्या की होती है। यानि आपको 25 कागज मिला तो उसमें 15 कागज गुरूजी के ट्रांसफर का होता है। जहां गुरूजी के ट्रांसफर का कागज मिलता है तो डर लगने लगता है कि आखिर यह कैसे होगा ? क्योंकि पिछला अनुभव बहुत खराब है। पिछला अनुभव तो यह था कि मंत्री जी के बंगले में एक तरफ एक दफ्तर था और दूसरी तरफ एक दफ्तर था। एक मंत्री जी का था और एक मंत्राणी जी का था। आदमी किधर जाये, क्या करे, कैसे करे, किसको दे, किसको ना दे, कई किस्म के लोग थे। अखबारों में छपा है, हम लोग नहीं बोले हैं। इधर हम लोग बैठते थे, हम लोगों ने नहीं कहा था । आपके ही विधायक लोगों ने बयान दिया है कि मंत्री के पी.ए. ने हमसे यह ले लिया, मंत्री के फलाने ने हमसे ए ले लिया, इतना पैसा ले लिया । इस समस्या से निजात के लिये सबसे पहले आप से विनती करता हूँ कि भईया दो-चार-पांच के रिश्तेदार, नातेदार लोग हैं, इधर के भी होंगे, उधर के होंगे । गुरूजी का दो-चार ट्रांसफर कर दीजिए, हमारे घर में दो-चार भीड़ लगता है, मंत्री जी उससे मुक्ति दिलाये । पागल हो गये हैं, परेशान हो गये हैं, गुरूजी के ट्रांसफर में देख लीजिएगा । खाली बैन, समन्वय, यह क्या होता है, हम आज तक समझ नहीं पाये हैं ? हम 5 साल में गुरूजी का ट्रांसफर करा ही नहीं पाये हैं । माननीय मंत्री जी, आप तो कर ही देना । सभापति महोदय, दूसरी बात यह है कि मेरे गांव में गुरूजी नहीं है, नेता लोगों की सिफारिशें आती है, इसे यहां करा दो, इसे वहां अटैच करा दो या तो सब को डिटेक्च कराओ या माननीय मंत्री जी कड़ाई से कोई नियम कायदा लागू कर दो, उसके हिसाब से गुरूजी लोग रहेंगे और पढ़ायें, लिखायें । यहां हम दूसरी भाषा बोलते हैं, वहां जाकर दूसरी भाषा में बात करते हैं । ऐसे मे तो होगा नही ? मंत्री जी, तीसरी बात है कि सिर्फ 10 प्रतिशत तो आपका बजट बढ़ा है ? इतना बड़ा भारी-भरकम विभाग, 10 परशेंट बजट बढ़ने में, इतने बड़े फौज को, इतनी बड़ी व्यवस्था को, संभालना कठिन हो रहा है । हम लोग भी आपकी तरफ से निवेदन करेंगे कि पहली बार बजट हो तो इसका थोड़ा ज्यादा होना चाहिये ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि पहले कलेक्टर को ट्रांसफर करने का 5 परशेंट अधिकार था, उस पर पिछली सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया है । इससे स्थानीय स्तर पर समस्या का वहीं निदान हो सकता है । शिक्षक नहीं है, शिक्षकविहीन है, ज्यादा शिक्षक हैं और कम पढ़ाई होती है, स्कूल में शिक्षक ही नहीं है, इसे निर्धारित लाईन में करेंगे, मैं ऐसी आशा करता हूँ ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, मंत्री जी तो बहुत अनुभवी है और बोलने से कर लेंगे । अगर व्यवस्था होती है तो मुझे कोई तकलीफ नहीं है । कुलमिलाकर गुरूजी लोगों की समस्या का निराकरण करिये, वह बहुत समस्याग्रस्त हो गये हैं, इसलिये हमको भी समस्या से बचाइये । सभापति महोदय, बच्चों के स्कूलों में अहाता निर्माण की बात हर गांव में आती है । विधायक गांवों में जब भी दौरे पर जाता है तो अहाता का निर्माण किया जाये, यह मांग जरूर की जाती है । सभापति महोदय, 3 करोड़ तो मिलता है । अब हम अहाता बनवायें कि नाली बनवायें कि सी.सी. बनवायें, क्या करें ? माननीय मंत्री जी, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप माननीय मुख्यमंत्री जी से मिलकर कोई प्लॉन बनवाईये और पांच साल में चरणबद्ध तरीके से प्रायमरी स्कूल, मिडिल स्कूल, हाई स्कूल, हायर सेकण्डरी स्कूल के अहाते के निर्माण के लिये हर विधान सभा में कुछ-कुछ पैसा दे दीजिए, ताकि हम लोग अपने प्राथमिकता के आधार पर स्कूलों में अहाता निर्माण करा सकें और बच्चों की साथ स्कूलों की भी सुरक्षा भी हो सके । सभापति महोदय, आप अपने तरफ से स्कूल खोल रहे हैं, मिडिल स्कूल नहीं खोल रहे हैं । मिडिल स्कूल कैसे खुलेगा, हमको नहीं मालूम है, लेकिन आप उस पर जरूर विचार करिये ? सभापति महोदय, हायर सेकेण्डरी स्कूल की भी बहुत सी मांग है, मैं आपसे हायर सेकेण्डरी स्कूल की मांग जरूर करूंगा । मैं आपको चिट्ठी दे दूंगा, आप जैसा उचित समझेंगे, उसको जरूर मदद करियेगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, जैसे स्कूल की मांग हो रही है, हमारे जैसे बहुत से सदस्यों ने की है, लेकिन बजट में देखते हैं तो स्कूल प्रिंट ही नहीं हुआ है । क्या सरकार ने ऐसा नीतिगत निर्णय लिया है कि स्कूल खोलना नहीं है कि लिमिट में खोलना है, क्या है ? आप अपने भाषण में इस बात को जरूर बतायेंगे ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, आपके पास उच्च शिक्षा विभाग भी है । मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ कि तखतपुर से पहली बार विधायक बना हूँ। मैं इसके पहले लोरमी से विधायक था, 20 साल विधायक था । पहली बार विधायक बना हूँ तो थोड़ा चिंतित भी हूँ, भयभीत भी हूँ कि कॉलेज कैसे होगा, भवन कहां से लायें, कैसे कॉलेज खुलवायें ? सभापति महोदय, हमारी कॉलेज की बच्चियों को बुलवाया था और उन लोग सत्र के एक-दो दिन बाद ही आये थे । आपके साथ वे फोटो खिंचवाये, कार्यक्रम कितना शुभ रहा है कि बच्चियों के कालेज के लिये आपने पैसा मंजूर कर दिया । उसके लिये मैं आपको, आपके विभाग को और माननीय मुख्यमंत्री जी को बधाई और धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने एक अच्छा काम किया। वह बच्चियां हाई स्कूल के एक जर्जर भवन में पढ़ रही है।

समय :
5.00 बजे

सभापति महोदय, यहां से अटल श्रीवास्तव जी चले गये हैं। वे पूरा बतारहे थे कि आपकी सरकार ने जैत स्तंभ बनाने का काम किया है। लेकिन कहां से किया ? विधायक निधि से किया ? मैं भी तो

विधायक था और विधायक निधि से जैत स्तंभ लिखते थे तो वह पास ही नहीं होता था। वे बोले कि हमने देवगुड़ी बनाया। आप क्या देवगुड़ी बनायेंगे ? देवगुड़ी बनाने का प्रावधान तो आदिम जाति कल्याण विभाग में बहुत पहले से है। जब माननीय राम विचार नेताम जी यहां कई साल पहले आदिम जाति कल्याण मंत्री थे, तब से है।

माननीय सभापति महोदय, गिरौदपुरी में क्या हुआ ? विपक्ष के लोग कहां हैं ? आप लोग यहां ठीक से बैठते भी नहीं, हम किससे बात करें, बताईये ?

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता प्रतिपक्ष कौन है, यह तो बताईये ?

श्री रामकुमार यादव :- लखमा जी, एक अकेले भारी है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति जी, यह हाऊस विपक्षविहीन हो गया है। किसी का मन नहीं लग रहा है। यहां दो मिनट के लिये आते हैं, उसके बाद फिर चले जाते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, हमारे लखेश्वर बघेल जी हैं और दादी कवासी जी भी हैं। लेकिन दादी कवासी, मैं अगर आपसे यह कहूं।

श्री कवासी लखमा :- सभापति महोदय, यह फ्रंट लाईन वाले भी कब से नहीं है, क्या उनकी तरफ ध्यान नहीं जा रहा है। इसलिये मोदी जी ने तीन-तीन मुख्यमंत्री बनायें। वह तीनों गोल हैं। एक उपस्थित नहीं रहेंगे करके तीन मुख्यमंत्री बनाये और चौथा भी बनायेंगे बोल रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, जिसको नहीं बनायेंगे बोल रहे हैं, वह लोग बैठे हैं।

श्री कवासी लखमा :- यहां बैठना उनका काम है। हमारा काम तो केवल मेज बजाना है। हमारा 5 साल का कार्यकाल तो बीत गया अब आप लोगों का कार्यकाल है।

श्री धर्मजीत सिंह :- ये तो काम में गये हैं लेकिन आप लोगों के पास तो कोई काम नहीं है, आप लोग यहां क्यों उपस्थित नहीं है ? यहां तीन दिनों से कोई नहीं है। आप लोग तीन दिन से क्या काम कर रहे हैं ?

श्री लखेश्वर बघेल :- ऐसा नहीं बोलियेगा। हम लोग हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- वे जो वहां घूम रहे हैं, उससे कोई फायदा नहीं होने वाला है। देश की जनता ने रिजेक्ट कर दिया है।

श्री लखेश्वर बघेल :- आपने रिजेक्ट किया होगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- यदि मैं आपसे पूछूं। छत्तीसगढ़ का पर्यटन अभी बलरामपुर में खत्म हो चुका होगा। अब मेरे खयाल से वह दुद्धि की तरफ पहुंच गये होंगे। यह जानेंगे भी नहीं कि दुद्धि क्या है। दुद्धि गांव का नाम है, आप गलत-सलत मत समझियेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या आप लोग उधर ही पर्यटन में गये हैं ?

सभापति महोदय :- धर्मजीत सिंह जी, समय का खयाल रखियेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- पर्यटन खत्म हो गया या चल रहा है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- सर, मैं तो बोल ही रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ में नया पर्यटन आ गया। यह क्या एग्रो, वन वाला पर्यटन बोलते हैं। लेकिन अब छत्तीसगढ़ में राजनीतिक पर्यटन शुरू हो गया।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, उनको एक-आत भ्रमण करवाना था जिन्होंने बोला था कि छत्तीसगढ़ में फूड पार्क बनेगा, वहां जो अपनी सामग्री ले जायेगा, उसको तत्काल भुगतान होगा। बलरामपुर में एक-आत प्रोसेसिंग यूनिट लगा है या नहीं, उनको दिखवा देना था। चलिये कोई बात नहीं।

सभापति महोदय, मैं आपसे पूछू कि गिरौदपुरी धाम में पांच साल में क्या काम हुआ तो अब आप बता नहीं पाओगे क्योंकि आप तो सुकमा बस्तर तरफ ज्यादा ध्यान देते थे। मैं यही कह रहा हूं कि कुछ नहीं बना है।

(श्री कवासी लखमा द्वारा हाथ से ईशारा करने पर)

अरे बाप रे ! गिरौदपुरी धाम के साथ ये वाली बात मत करियेगा। यह बहुत आपत्तिजनक है। यह वाला उधर चलेगा या सरगुजा तरफ चलेगा। आपने बैगा-बैगिन डांस के संरक्षण के लिये कुछ नहीं किया। हमारी जो बैगिन बहनें हैं, जो बिरईन माला, घास की माला पहनती है । जब इनका अधिवेशन हुआ तो यह उस माला को ला कर राजनीति कर लिये। कई लोगों को भ्रम हो गया कि वह सोने का है। वह घास की माला थी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, इन्होंने अपने नेताओं को ही बेवकूफ बनाया कि हम सोने की माला पहना रहे हैं। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- वह भ्रम आप लोगों को हुआ था।

श्री धर्मजीत सिंह :- और वह बिरईन की माला थी ।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- वह सोने की माला आप लोगों को दे देंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह बिरईन माला है। मैं ला दूंगा और आपको तो दूंगा ही। आप हमारे नेता हैं। वहां की बैगिन महिलाएं वह बिरईन माला घास को बुनकर बनाती है। वह सोने के छल्ले के समान दिखता है। वह उसको अपने बालों में लगाती है। वह एक माला नहीं लगाती, सैकड़ों माला लगाती है। उनके पीठ के पीछे वह बाल के समान लगे रहता है। वे उसे पहनकर नृत्य करती हैं। आपने कभी उनके विकास के बारे में सोचा ? आपने कभी उनके नृत्य के लिये कोई ड्रेस दी ? आपने कभी उनका कोई शो कराया ? आप स्थानीय लोगों की बात करते हैं और हर बार करीना कपूर का उदाहरण देते हैं। आप उसे बुलाकर, यहां कार्यक्रम करवाते। हम उनका कार्यक्रम करवायेंगे। हम अपने बैगा-बैगिन भाईयों और बहनों का जो संस्कार और नृत्य है उसको दिखवायेंगे और उससे दुनिया को परिचित करवायेंगे।

श्री रामकुमार यादव :- यहां छत्तीसगढ़ में आदिवासी नृत्य कौन करा रहा था? यहां आदिवासी की संस्कृति को कौन दिखा रहा था। वह हमारी सरकार थी।

श्री धर्मजीत सिंह :- उनको कहां बुलवाये थे मैं वही तो बोल रहा हूँ।

श्री रामकुमार यादव :- उसकी संस्कृति पूरे विश्व के 6 देशों से लोग आए थे।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, उस समय नाइजीरिया से लोग आए थे, आप लोगों को इतने बड़े छत्तीसगढ़ में आदिवासी नहीं मिले। आप लोगों ने नाइजीरिया और युगाण्डा से आदिवासी देखने के लिए बुलाए थे। हमारे यहां आदिवासी नहीं हैं। आपको हमारे यहां के आदिवासियों को देखना चाहिए।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, यहां के भी आदिवासी थे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप युगाण्डा से आदिवासी बुला सकते हैं। अगर हमारे प्रदेश में करीना कपूर आ गई तो वह गई। वह अभिनेत्री है, उसे कौन नहीं देखता। आप लोग यहां भाषण दे रहे हो । अगर मैं यह बता दूंगा कि करीना कपूर सामने पोर्च में खड़ी है तो आप विधान सभा की बैठक छोड़कर, उसे छिपकर देखने चले जाएंगे। आप उनसे खुले तौर पर मिलिए, क्या दिक्कत है ? करीना कपूर बहुत प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं, वह बहुत अच्छी अभिनेत्री हैं।

सभापति महोदय :- वह सीनियर नेता हैं, उनको बोलने दीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आप रूकिए। मैं दो मिनट में अपनी बात कह रहा हूँ। मैं बढ़िया-बढ़िया बात बताने वाला हूँ।

श्री रामविचार नेताम:- माननीय सभापति महोदय, वैसे भी आदरणीय धर्मजीत जी उनकी कोई फिल्म नहीं छोड़ते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- हां। मैं तो उनके पिता रणधीर कपूर से मिला हूँ। गोवा के काली माटी बीच में मैं भी पहुंचा था और वह भी बैठे थे। हम दोनों काली माटी बीच में बैठे थे।

श्री मोतीलाल साहू :- आप लोगों का चेहरा भी मिलता है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मेरा उनसे चेहरा मिले या न मिले, लेकिन हम वहां बीच में बैठे थे।

माननीय सभापति महोदय, यहां अचानकमार के बारे में कहा गया। आप अचानकमार अभ्यारण्य के बारे में क्या बात करेंगे ? मैं वहां से बोल-बोल कर थक गया और अध्यक्ष महोदय मुझे समय दे-दे कर थक गये थे। वाह कांग्रेस सरकार। यह लोग सड़क की मरम्मत तक नहीं करवा पाये। आप टूरिस्ट बढ़ाने की सलाह दे रहे हैं। यह हम बोल रहे हैं कि माननीय मंत्री जी, आप सड़क को बनवाईएगा। अगर टूरिस्ट हब बनाना है आप गोबरीपाट से निकलेंगे तो सीधा केंवची और केंवची से सीधे अमरकंटक आता है, लेकिन अंग्रेजों के जमाने की सड़क है उसे वन विभाग वाले नहीं बनने देते हैं, ऐसे में इस प्रदेश में

पर्यटन कहां से आगे बढ़ेगा ? पर्यटन विभाग के लिए मैं बोल-बोल कर थक गया था कि खुड़िया डेम बहुत सुंदर डेम है उसको वर्ष 1930 में अंग्रेजों ने बनाया था, राहत कार्य मद से बनाया था। मैंने तात्कालीन विधान सभा अध्यक्ष महोदय, माननीय महंत जी को ले जाकर, एक पयर्टन कुटीर का उद्घाटन भी करवाया था, लेकिन वहां पर्यटन विभाग का 2 रूपये नहीं लगा है। पण्डरिया विधान सभा क्षेत्र में एक सारपानी है यह सारपानी सेंदूरखार के पास है। माननीय मंत्री जी, सारपानी गांव के पास पहाड़ी पूरी एकदम खायी है और जो पैरा ग्लाइडिंग और क्या-क्या दौड़ने वाला होता है उसका सर्वे करवा लीजिए। अगर यह होता होगा तो वहीं जाकर कुछ लोग दौड़े, कूदे और फांदे तो यह अच्छा रहेगा। इसमें कोई दिक्कत नहीं है। मेरे विधान सभा क्षेत्र में एक और जगह है, मुझसे नाम थोड़ा स्लीप हो रहा है पंडरिया के जंगल में कुगदूर के पास है वहां आपकी बड़ी से बड़ी गाड़ी, चाहे वह बोलेरो हो, चाहे वह स्कार्पियो हो, चाहे टेक्टर हो, मैं खुद वहां का विधायक रहा हूँ वहां कई बार मैं गया भी हूँ। ऐसा स्लोप है अगर आप नीचे गाड़ी खड़ी करेंगे तो वह गाड़ी को उल्टी दिशा में खिंचता है। वह अपने आप ही खिंचता है। अगर वहां पर हम जाली न लगवाएं तो वह गाड़ी खायी में गिर जाए। मतलब छोटी-मोटी जगह भी हमारे टूरिस्ट लोगों के आने जाने के लिए है तो वहां हमें कुछ करना थोड़ी है आप सिर्फ 2 लाख रूपये का एक शेड बनवा दीजिए। वहां गांव की महिलाएं चाय बिस्किट का इंतजाम कर दें, वहां पर टूरिस्ट जाएं और अपनी गाड़ी को ऊपर नीचे होने का आनंद देखकर आ जाएं। उनकी रोजी रोटी भी चल जाएगी।

श्री गजेन्द्र यादव :- ऐसा ही मैनपाट में भी है। मैनपाट में भी उल्टी दिशा में गाड़ी जाती है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैनपाट में पानी उल्टी दिशा में जाती है।

श्री गजेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, वहां गाड़ी भी उल्टी दिशा में खिंचा जाती है।

श्री प्रबोध मिंज :- माननीय धर्मजीत जी, मैनपाट में पानी उल्टी दिशा में चढ़ान की ओर बहती है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं मैनपाट गया हूँ। हम दलदली में कूदे भी हैं। वहां पर छेद है उसमें मुंह से फूंकों तो शंख टाईप का बजता है। वहां आप रहने का तो इंतजाम करवा दीजिए।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- धर्मजीत जी, आपका एक मिनट समय ले रहा हूं। मैं समझता हूं कि छत्तीसगढ़ में और पूर्व मध्यप्रदेश में जितने लोग उल्टे चलते हैं, चाहे गाड़ी, पानी, घोडा, हाथी हो, मेरे ख्याल से आपकी सबकी दोस्ती रही है, ऐसा लगता है।

श्री धर्मजीत सिंह :- जी सर। धारा के विपरीत चलने का एक अलग आनंद होता है। धारा में बहकर तो बहुत से लोग बड़े-बड़े लक्ष्य हासिल कर लेते हैं, लेकिन उल्टा तैरने का आनंद अलग है और मैं उल्टा ही तैरता हूं। (मेजों की थपथपाहट) इसीलिए बहुत पिछड़ भी गया हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. चरणदास महंत :- इस पर आपको और सुनाता हूं। सभापति महोदय, इजाजत है।

सभापति महोदय :- बिल्कुल।

डॉ. चरणदास महंत :-

लीक-लीक गाड़ी चलै, लीकहि चलै कपूत
लोक छोड़ तीनों चलैं, शायर, सिंह, सपूत।

श्री धर्मजीत सिंह :- धन्यवाद सर। वैसे हमको इस सफर में चलने के लिए आपने भी बहुत सहारा दिया था। क्योंकि आप विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में और वरिष्ठ नेता के रूप में मुझे सहयोग दिये हैं। इस बात को मैं सार्वजनिक रूप से भी बोलने से नहीं हिचक रहा हूं। आप कदर भी करते हैं, इसके लिए भी मैं आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। सर, लेकिन अब क्या करें, हमारी किस्मत में उल्टी दिशा में चलने का लिखा हुआ है तो चलते-चलते यहां तक आये हैं।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, मैं एक शायरी सुना देता हूं। अभी देखवं तो महू ला सुरता आ गये। हालांकि मैं तो पढ़े-लिखे नई हवं। आज हमर धर्मजीत सिंह जी ला, चन्द्राकर जी ला, ये जतका जन बैठे हे, तेरो झन ला देख कर मोला एक पंक्ति याद आथे कि ओमन कैसे हे, कबीरदास जी के दोहा जैसे हे। "जल में रह के मीन प्यासी और मोहि सून-सून आवत हंसी।" ये मन सरकार बनै के बाद भी ये मन ओमा के फायदा नई पावत हे, जैस जल में रहकर मछली हा प्यासी रहथे, उसी प्रकार से कबीरदास जी के दोहा तुमन लागत हे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप जितना जल्दी यहां कविता बोलना शुरू किये न, मैं दो-तीन चुनाव तक बोल ही नहीं पाता था। साहब लोगों का संरक्षण मिला तो थोड़ा बोले। हमारे गुरूजी चौबे जी भी थे, उनके संरक्षण में सीखे। सभापति महोदय, मैं और ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता।

सभापति महोदय :- कृपया, समाप्त करिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय मंत्री जी, मैं आपसे एक छोटा सा निवेदन करना चाहता हूं। तखतपुर विधान सभा में विजयपुर किला करके गांव है। वहां वर्षों पुराना एक मंदिर है, वहां की आस्था का केन्द्र बिन्दु है, लेकिन वहां अभी तक कुछ भी नहीं हुआ है। मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं वहां पर पर्यटन स्थल सरीखे है, नदी भी है, पहाड़ी में मंदिर भी है, आप मुझे वहां 1 करोड़ रुपये पर्यटन शेड के लिए देने की कृपा कर दें। मैं वहां के लोगों के लिये उसमें फिर बड़े-बडे महोत्सव का कार्यक्रम कराने के लिए जनभागीदारी से काम करूंगा। यह महोत्सव कराने के लिए भी 5 लाख रुपये देने की घोषणा कर देंगे तो मैं उसमें बाकी जनसहयोग से वहां पर बड़े से बड़े, अच्छे से अच्छे कार्यक्रम कराने की शुरूआत करता हूं। विजयपुर का बहुत प्रसिद्ध किला है, महंत जी आपसे भी आग्रह करूंगा कि आप कृपा करके वहां जरूर चलें। सिद्धदेवी का मंदिर है, आप उसमें आस्था भी रखते हैं। मंत्री जी, आप तो अत्यन्त ही ज्यादा धार्मिक प्रवृत्ति के आदमी हैं। इस किले को संजाने, संवारने के लिए, आगे बढ़ाने के

लिए अगर आप 1 करोड़ रुपये देंगे तो उस किले का नाम चारो तरफ फैलेगा। हम लोग अभी वहां कुछ भी नहीं है तब भी पूजा करते हैं, कुछ हो जायेगा तभी भी पूजा करेंगे। वहां कुछ हो जायेगा, तब पूजा करेंगे तो आप लोगों को याद रखेंगे। मंहत जी, मैं आपको भी निमंत्रण दे रहा हूं, अध्यक्ष जी को भी दूंगा, मुख्यमंत्री जी को भी दूंगा, पर्यटन मंत्री जी, आपको तो मैं लेकर चल ही दूंगा। सभापति जी, अपनी खुद ही मांग करके 15, 22 लाख रुपये करा ही लिये हैं। वहां बैठे-बैठे आपसे ही तो मेरे को प्रेरणा मिली। मैं आपके भाषण से ही प्रेरणा लेकर यहां पर दौड़ते-दौड़ते आया हूं इसलिए मैं भी कुछ पा जाऊंगा, ऐसी आशा करके बोल रहा हूं। तखतपुर चनाडोगरी में एक हायर सेकेण्डरी स्कूल खोल दीजियेगा। हमारे लोगों की मांग है। आप तो वैसे देते ही हैं। (माननीय सदस्य श्री श्री रिकेश सेन द्वारा बोलने पर कि पूरा बजट धीरे-धीरे खाली कर दिये, अब हम लोगों के लिए कुछ बचेगा।) आपका पूरा बचेगा, आप बोलेंगे तो हम अपना सब बजट विथड्रा कर लेंगे। आपका ठीक रहना चाहिए। क्योंकि आप नये सदस्य हैं, आपका अधिकार पहला है। 1 लाख 47 हजार करोड़ रुपये का बजट है न। मेरे जैसे 15 लोग यहां पर ऐसे ही चिट निकालते रहेंगे तब भी सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि यह सरकार ने 1 लाख 47 हजार करोड़ रुपये का बजट रखी है। आप चिंता मत कीजिए। आप बृजमोहन जी से तो मत डरिये। वह तो देने वाले हैं, जल्दी-जल्दी देंगे। 5-10 ट्रांसफर भी दे देना, वह भी करा देंगे, कोई चिंता की बात नहीं है। सभापति महोदय, आप पर्यटन के लिए बहुत रूचि लेते हैं।

श्री बघेल लखेश्वर :- धर्मजीत जी, भा.ज.पा. वाले नहीं देने वाले हैं। मैंने उनसे उस दिन गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर कहा कि जो स्वीकृत हैं, उसको भी नहीं दे पा रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- किनको?

श्री बघेल लखेश्वर :- मेरे को। मैं कह रहा हूं कि आपके बाजू वाले मुझे हमारे प्राधिकरण के लिए देने वाले नहीं है।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह साहब। (आदिम जाति विकास मंत्री, श्री राम विचार नेताम की ओर इशारा करते हुए) यह दे देंगे। साहब, आप तो ऐसे ही बात कर लेना। आप सीनियर आदमी हैं। वह आपके प्राधिकरण के लिए चिंतित हैं। लेकिन महंत जी, मैं आप सबको निमंत्रण दे दिया हूं। आप मुझे एक करोड़ रूपये दे देना। यह आपसे निवेदन है। साहब, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। आप हमारी थोड़ा इज्जत बचाईये न। हमको भी जाकर बताना पड़ेगा कि हम यह-यह काम करा कर आए हैं।

सभापति महोदय :- श्री ब्यास कश्यप जी।

श्री ब्यास कश्यप (जाजंगीर-चांपा) :- माननीय सभापति महोदय, आज मैं मांग संख्या 26, 27, 28, 37, 44 और 51 पर अपनी बात कहूंगा और मेरे नेता जी ने भी कहा है कि कम समय में भाषण देना है, क्योंकि सब कोई बोले हैं, पर पूरा समय तो अजय भैया और माननीय धर्मजीत सिंह जी ले लेते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके नेता बोले हैं तो पहले आप यह स्पष्ट करिये कि आपके नेता कौन हैं?

श्री ब्यास कश्यप :- मैं जिस दल से आया हूं, वह मेरे नेता हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं, आप नाम लीजिये न कि यह मेरे नेता हैं। आप स्पष्ट करिये।

श्री ब्यास कश्यप :- मैं जिस दल से आया हूं, वह मेरे नेता हैं। मेरे नेता प्रतिपक्ष माननीय डॉ. चरण दास जी बैठे हुए हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- दिल्ली में राहुल जी और कौन-कौन होंगे?

श्री ब्यास कश्यप :- यहां पर वर्तमान में बैठे हैं, मैं उनको स्वीकार करता हूं। उनके नेतृत्व में हम विधान सभा में आए हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप और बाकी लोगों को नेता नहीं मानते हैं?

श्री ब्यास कश्यप :- भाई, वर्तमान में छत्तीसगढ़ विधान सभा में नेता डॉ. चरण दास महंत जी हैं। आप इधर-उधर की बात कर रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- ओला देख लेवा, धोखा से तुंहर पार्टी के कार्यालय में चल दिही ता अमिश शाह आथे कहूक उठ जाहौ तुमन। (हंसी) ओहर अमित शाह जी के ड्युब्लिकेट हे।

सभापति महोदय :- उनको बोलने दीजिए। ब्यास जी अपनी बात को जल्दी से करिये।

श्री ब्यास कश्यप :- जी।

श्री अनुज शर्मा :- ओ पुरन्दर भाई के जुड़वा भाई हे। (हंसी)

श्री ब्यास कश्यप :- हाँ, बिल्कुल-बिल्कुल। सभापति महोदय, वास्तव में शिक्षित प्रदेश और विकसित प्रदेश की बात माननीय शिक्षा मंत्री जी के कलम पर हमारे माननीय वित्त मंत्री जी ने अपने अभिभाषण पर यह कहा है तो निश्चित रूप से शिक्षित प्रदेश और विकसित प्रदेश की परिकल्पना भूपेश बघेल जी की स्वामी आत्मानंद विद्यालय से प्रारंभ हुई थी। ठीक है कि समय की बात है कि जो नीति बनाए हैं, वह आज इधर हैं और आप लोग उधर हैं। उसको आप कलेक्टर से हटाकर शिक्षा विभाग पर ले आये हैं।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- ब्यास जी, यह इसी नीति के तहत हुआ है।

श्री ब्यास कश्यप :- जी। आप मेरी बात सुन लीजिए न, फिर आप बोलियेगा। सभापति महोदय, मैं चाहूंगा कि जिस परिकल्पना को लेकर छत्तीसगढ़ के उन गरीब लोगों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने का उद्देश्य रखा गया था। आप पहले कुछ भी कर लें परंतु शिक्षा व्यवस्था को लगातार आगे बढ़ायें ताकि छत्तीसगढ़ के जो नौजवान हैं, जो होनहार बालक हैं, उनकी शिक्षा पर रूकावट न आए और वह आगे बढ़ते रहें। मैं बात करना चाहूंगा कि अभी के बजट में निश्चित रूप से बढ़ोत्तरी हुई है, परंतु बढ़ोत्तरी छत्तीसगढ़ के समग्र क्षेत्रों पर हो, यह मैं माननीय मंत्री जी से चाहूंगा। चूंकि शिक्षा सबके लिए समान है,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तो सभी क्षेत्रों के लिए बढ़ोत्तरी होनी चाहिए, जहां-जहां पर जिसकी-जिसकी मांग आए। मैं जांजगीर-चांपा विधान सभा क्षेत्र से आता हूं, जोकि बिलासपुर संभाग में बिलासपुर जिला के बाद शिक्षा हब के रूप में जांजगीर की अपनी विशेष पहचान रही है। अब वहां प्राथमिक स्कूल तो पर्याप्त हैं, पर कई माध्यमिक स्कूल अभी जर्जर हालात पर गिर चुके हैं, जिस पर निर्माण कराना आवश्यक है। हाई स्कूल हो, चाहे हायर सेकेण्डरी स्कूल हो। कई ऐसे हायर सेकेण्डरी स्कूल हैं, जो 40 साल हो गये हैं, पर आज भी .. ।

सभापति महोदय :- ब्यास कश्यप जी, आप नाम लेते हुए बात करेंगे तो नोट भी केरेंगे। नाम बताते जाईये।

श्री ब्यास कश्यप :- जी। ऐसे हायर सेकेण्डरी स्कूल हैं, जो भड़ेसर का है, दूसरा धारासींव का है और राछापोड़ी का है। ऐसे हायर सेकेण्डरी की मांग लंबे समय से आ रही है, उसके भवन विहीन हैं । मैं अतिरिक्त कक्ष के बदले में एक नीति की बात करना चाहूंगा कि वर्तमान में लगातार शासन के द्वारा कक्ष की कमी होती है तो अतिरिक्त कक्ष बना दिया जाता है। बल्कि अतिरिक्त कक्ष के बदले अगर स्थायी रूप से कोई माध्यमिक, हाई स्कूल, हायर सेकेण्डरी स्कूल बनाया जाए तो बेहतर स्वरूप में होगा। स्थल की कमी देखकर डबल स्टोरी के भी कक्ष बन जाने चाहिए। हायर सेकेण्डरी के विषय के साथ-साथ मैं कॉलेज की बात करना चाहूंगा। जांजगीर का टी.सी.एल. अग्रणी महाविद्यालय है। जहां वर्तमान में 3200 से अधिक सिर्फ छात्र पढ़ रहे हैं, छात्राओं के लिए वहां अलग से जाज्वल्यदेव कन्या महाविद्यालाय प्रारंभ हो चुका है। वहां 3200 छात्र हैं, स्वीकृत प्राध्यापक 43 हैं, पर मात्र 31 प्राध्यापक हैं और 12 पद रिक्त हैं और मान लीजिए कि भवन विहीन 3200 छात्रों के लिए मात्र कुल 15 कक्ष है, जिसमें 5 कक्ष जर्जर हो गये हैं और चालू मात्र 10 हैं, 5 बंद हैं । मैं आपसे आग्रह करूंगा कि इस महाविद्यालय में अतिरिक्त कक्ष बनने के बदले हमें नया भवन उपलब्ध करा दिया जाये । विशेषकर मैं इस विषय पर बात करना चाहूंगा कि कन्या कॉलेज चांपा की आबादी लगभग 60,000 से ऊपर है और वहां एक भी कन्या महाविद्यालय नहीं है तो चांपा नगर में चूंकि वह नगरीय क्षेत्र है तो वहां कन्या महाविद्यालय प्रारंभ किया जाये । माननीय मंत्री जी, मैं आपसे विशेष रूप से मेरे मन की एक बात कहना चाहूंगा कि जब मैं बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के जिला संयोजक के नाते पूरे क्षेत्र में घूम रहा था तो चाहे वह हाईस्कूल हो या हायर सेकेण्डरी स्कूल हो वहां जब मैं जाता था और जाने के बाद प्राचार्य महोदय अपने कक्ष में बैठाते थे और जब मैं इंडेक्स को देखता था कि विद्यालय में कितनी छात्र-छात्राओं की संख्या उसमें अनुसूचित जाति- अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, सामान्य वर्ग...।

सभापति महोदय :- व्यास जी, आप अपनी थोड़ी मांग रखेंगे तो आपका समय बच जायेगा ।

श्री व्यास कश्यप :- माननीय सभापति महोदय, मैं उसी विषय पर आ रहा हूं। जब मैं देखता था कि सामान्य वर्ग की संख्या नगण्य रहती थी तो वह बालक-बालिकायें, जैसे हम पढ़-लिखकर आकर उनके साथ में रहे तो निश्चित रूप से संगत का असर पड़ता है । उसी संगत के असर के नाम से आज हम

आपके सामने विधानसभा में आये हैं तो संगत का ही असर है तो कम से कम छत्तीसगढ़ के भविष्य के लिये सभी लोग इस बात को देखें कि सभी वर्ग के बच्चे एक-साथ पढ़ें । ऐसी मैं माननीय मंत्री जी से मांग करता हूं । शिक्षा का स्तर आगे होगा तो सभी वर्ग के बच्चे एक-साथ निश्चित रूप से बढ़ेंगे । माननीय मंत्री महोदय, आपके कार्यकाल में एक मड़वा हॉयर सेकेण्डरी स्कूल बना था लेकिन आज तक उसका लोकार्पण नहीं हो पाया है क्योंकि ठेकेदार ने दलदली जमीन पर बना दिया है जो कि लगातार पानी से भरा रहता है । मैं वहां भी उसके बदले में एक नये हॉयर सेकेण्डरी स्कूल की मांग कर रहा हूं ।

माननीय सभापति महोदय, अब पर्यटन की बात आ गयी है तो पर्यटन के लिये मेरा यह कहना है कि पीथमपुर हमारे यहां का धार्मिक पर्यटन क्षेत्र है। जो कि छत्तीसगढ़ में एकमात्र बाबा कालेश्वर नाथ के मंदिर में पूरे भारतवर्ष के नागा साधुओं का जमावड़ा वहां रहता है । नागा साधु वहां पर आते हैं तो उसके विकास के लिये भी थोड़ी सी मदद कीजिये ताकि पीथमपुर भी, जिस प्रकार से आपने राजिम को आगे बढ़ाया । भूपेश बघेल जी ने शिवरीनारायण को आगे बढ़ाया तो मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप भी कृपा करके पीथमपुर को भी अपने अंडर में लेकर पीथमपुर के विकास के लिये भी हमें थोड़ी सी मदद करते ।

सभापति महोदय :- व्यास जी, समाप्त करें ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, क्या है कि वे नागा साधुओं की चिंता कर रहे हैं और नागा साधुओं की चिंता करने वाले इधर बैठे हुए हैं इसलिये आप उन सबको आगे ट्रांसफर कर दो ।

श्री व्यास कश्यप :- भैया, ठीक है न । राजिम के बाद ही पीथमपुर का मेला लगता है । वहां से हमारे यहां पीथमपुर में आते हैं और पीथमपुर के विषय में मेरे से ज्यादा चूंकि हमारे नेता प्रतिपक्ष आदरणीय चरणदास महंत जी बैठे हुए हैं । वे लगातार उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, उनको पूरा पता है । माननीय सभापति महोदय, मैं कुछ बातें कहना चाहूंगा परंतु आपने मना किया है । मैं बात कहूंगा तो इधर की उधर हो जायेगी लेकिन मैंने जिस बिंदु को रखा है । माननीय मंत्री महोदय जी, आपसे कृपया आग्रह है कि मेरी बातों पर आप ध्यान देंगे और हमारे क्षेत्र की समस्याओं को निश्चित रूप से दूर करेंगे । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने हेतु समय प्रदान किया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्रीमती रायमुनि भगत (जशपुर) :- माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार ने शिक्षा एवं स्वास्थ्य को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता में रखा है । हम स्वच्छ विद्यालय, सुनहरे भविष्य के भाव को लेकर कार्य करने में विश्वास रखते हैं ।

माननीय सभापति महोदय, निश्चित रूप से हमारे यशस्वी वित्तमंत्री ओ.पी.चौधरी जी ने सोच-समझकर बजट में शिक्षा के लिये प्रावधान किया है । मैं हमारे शिक्षामंत्री सम्माननीय बड़े भैया बृजमोहन

अग्रवाल जी को भी धन्यवाद देती हूं कि शिक्षा के लिये सर्वस्पर्शी बजट का प्रावधान किये हैं । सभापति महोदय, उच्च शिक्षा के लिए और शालाओं के रख-रखाव के लिए अच्छी गुणवत्ता शिक्षा के लिए, अच्छी सुविधायुक्त शाला भवनों का होना आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बजट में 265 करोड़ रूपये की राशि का प्रावधान किया गया है, मैं इसके लिए भी धन्यवाद देती हूं। सभापति महोदय, निश्चित ही शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हैं तो सरकारी कर्मचारियों के लिए भी कार्यालय और भवन की आवश्यकता होती है। इसके लिए भी 1 करोड़ रूपये के बजट का प्रावधान किये हैं। मैं शिक्षा के क्षेत्र में सम्माननीय तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के समय जितने स्कूल शिक्षा और महाविद्यालय का उन्नयन हुआ है, उसके लिए भी धन्यवाद देती हूं। सभापति महोदय, मैं जशपुर विधान सभा के दूरस्थ वनांचल ग्रामीण क्षेत्र से आती हूं और पिछली जो तत्कालीन भा.ज.पा. की सरकार थी, उस समय संकल्प शिक्षण संस्थान जैसे और प्रयास शिक्षण संस्थान जैसे और नव संकल्प शिक्षण संस्थान जैसी संस्था..।

सभापति महोदय :- बहन रायमुनी जी, अगर अपनी बात रखेंगे तो ज्यादा सार्थक होगा। समय का उपयोग होगा।

श्रीमती रायमुनी भगत :- ठीक है, मांग रख रही हूं। सृजन करके आज मैं सोचती हूं कि संस्थान में पढ़कर हमारे बच्चे दूरस्थ वनांचल में रहने वाले गरीब बच्चे, अनुसूचित जनजाति के बच्चे, आई.आई.टी. जैसे क्षेत्र में जाकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। रही बात आत्मानंद की, आत्मानंद वाली बात कर रहे थे हमारे साथी मित्र, मैं दो शब्द कहना चाहती हूं। चूंकि मुझे जशपुर के लिए पीड़ा है। आत्मानंद स्कूल तो खोला गया है महोदय, लेकिन उस आत्मानंद स्कूल में भर्ती उसी स्कूल के बच्चों को ले रहे हैं, जो बच्चा इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़कर आया है। आज गरीब बच्चों के लिए आत्मानंद स्कूल खोलने वाले..।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- ऐसा नहीं है।

श्रीमती रायमुनी भगत :- मैं जशपुर की बात बता रही हूं। पूरे प्रदेश की बात भी वही होगी जो बच्चा इंग्लिश मीडियम में पढ़ रहा है, वही बच्चा आत्मानंद स्कूल में जा रहा है। यहां सब लोग बैठे हैं, इसमें सुधार होना चाहिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आदरणीया विधायक जी, ऐसा पूरे प्रदेश में नहीं है। आप सदन से जांच करवा लीजिए।

श्रीमती रायमुनी भगत :- आत्मानंद स्कूल आप सबने खोला है, अच्छी बात है और अच्छा है और अच्छा चलना चाहिए, मैं उसका भी समर्थन करती हूं, लेकिन जरा त्रुटि है। जो हिन्दी माध्यम स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे हैं, उसी हिन्दी माध्यम स्कूल को इंग्लिश माध्यम स्कूल में परिवर्तित किया गया। मनोरा जैसे हाई स्कूल और मीडिल स्कूल के बच्चे 20-20 दिन तक बच्चों के माता-पिता धरने पर रहे तब कहीं जाकर स्कूल में जा रहे हैं। 6-6 महीने बच्चे स्कूल में नहीं गये थे। इस आत्मानंद स्कूल के

चक्कर में हमारे पूरे जशपुर क्षेत्र के बच्चे 6-6 महीने स्कूल नहीं गये हैं। बहुत ही तकलीफ हुई है भैया। कल आपकी सरकार थी। आज हमारी सरकार है। सरकार आती है, जाती है, पर सरकार में काम करने वाले लोगों को सही शिक्षा सुनिश्चित करना चाहिए। आज मैं संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री से भी मांग रखना चाहूंगी कि जशपुर जैसे वनांचल से घिरी हुई विधान सभा है, क्षेत्र है। जशपुर में मां खुडियारानी का पर्यटन स्थल और मंदिर है। दनगरी का दराव घाट है। मां खुडियारानी का भी वहां मंदिर है। मैं आदरणीय मंत्री महोदय जी से चाहूंगी कि पर्यटन क्षेत्र में भी जशपुर को बढ़ावा दिया जाये।

सभापति महोदय :- रायमुनी जी, आप थोड़ा सा रूकेंगी।

श्रीमती रायमुनी भगत :- जी।

समय :

5:24 बजे

सदन को सूचना

सदन के समय में वृद्धि

सभापति महोदय :- आज की कार्यसूची के पद क्रमांक 04 के उप पद 01 तक का कार्य पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाये। मैं समझता हूं कि सभा सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

वित्तीय वर्ष 2024 - 2025 की अनुदान मांगों पर चर्चा (क्रमशः)

श्रीमती रायमुनी भगत :- माननीय मंत्री जी, आप जशपुर को बढ़िया से जानते हैं । मैं समझती हूं कि पर्यटन के क्षेत्र में भी आप जशपुर को सहयोग करेंगे और जशपुर में पिछली सरकार के समय मूर्तियां चोरी होने की एक घटना हुई थी । मूर्तियां चोरी हुई हैं और सरकार बनने के साथ ही मूर्तियां वापस भी आई हैं तो अब मैं सोचती हूं कि जशपुर जैसे धार्मिक स्थल, वहां कल्याण आश्रम है, वहां सगुड़ा जैसी बड़ी धार्मिक संस्था है । माननीय मंत्री महोदय से निवेदन है कि पर्यटन और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए जशपुर को भरपूर सहयोग देंगे । इसी आशा और विश्वास के साथ आप सभी को धन्यवाद् देती हूं और अपनी वाणी को विराम देती हूं । जय हिंद, जय छत्तीसगढ़ ।

श्री इंद्रशाह मंडावी (मोहला-मानपुर) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत अनुदान मांग का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं । शिक्षा जगत, शिक्षा मानव समाज के विकास और प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है और शिक्षा का दूसरा नाम अध्यापन भी है । शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला माध्यम है । इसके मुखिया माननीय श्री बृजमोहन अग्रवाल जी, जिनके पास स्कूल शिक्षा एवं उच्च शिक्षा दोनों विभाग है । मैं उनको बधाई देता हूं । मैं ज्यादा इधर-उधर की बातें न करके अपने क्षेत्र की स्कूलों की मांग रख रहा हूं । इसमें जितने भी स्कूल हैं, वहां चतुर्थ वर्ग कर्मचारी की

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

बिल्कुल नियुक्ति नहीं है । दो-चार स्कूलें होंगी, इसलिए वहां बड़ी परेशानी हो रही है । साथ ही साथ हमारे यहां 9 प्राथमिक शालाएं शिक्षक विहीन हैं, इन 9 शालाओं में एक भी शिक्षक नहीं है, अभी दो-चार दिन पहले यह जानकारी विधान सभा के प्रश्न के माध्यम से ही मिली है । मैंने पिछले कार्यकाल में मैंने डीएमएफ से 280 शिक्षकों की नियुक्ति ट्यूटर के रूप में नियुक्ति करवाया था । अभी भी 170 ट्यूटर के रूप में नियुक्ति करवाई गई है उसके बाद भी कम पड़ रहे हैं क्योंकि डीएमएफ को भी रोक दिया गया, जिसकी वजह से परेशानी हो रही है। शिक्षा के क्षेत्र में मिसाल तो बना है । दूसरा, हमारे यहां 7 हाईस्कूल भवन विहीन है बोजटोला, मुकादाह, पेंदाकोड़ो, सीतागांव, हीरागांव, टोहे और मोतीपुर यहां भवन नहीं है । वहां दो पालियों में स्कूल लगती हैं । वैसे ही 6 हायर सेकेंडरी स्कूल कौड़ीकसा, माहुद मचांदुर, मानपुर, औंधी, मोहला और करमरी, जो प्रमुख जगह है, यहां की जनसंख्या बहुत ज्यादा है । महोदय, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि यहां व्यवस्था करने का प्रयास करेंगे । वैसे ही खड़गांव, जो कि माइन्स का क्षेत्र है यहां दल्ली राजहरा से 25 किलोमीटर और वहां से विकासखंड मुख्यालय 25 किलोमीटर, वैसे ही वहां से मोहला जो जिला स्थान है, वह भी 25 किलोमीटर । तीनों क्षेत्रों का केन्द्र बिंदु है लेकिन वहां एक भी महाविद्‌यालय नहीं है । आप उच्च शिक्षा मंत्री जी भी हैं, इस हेतु भी गौर करेंगे । इसके अलावा हाईस्कूल से हायर सेकेंडरी में उन्नयन के लिए, मैंने कल बजट में भी बोला था और आज भी एक निवेदन करने जा रहा हूं, जो विशेष रूप से जरूरी है, जिसमें करमतरा में पिछली सरकार के समय शिक्षा मंत्री जी ने घोषणा की थी लेकिन हो नहीं पाया है । कमरतरा, भोजटोला, वासड़ी, टोहे, सीतागांव, हीरागांव की स्कलों का उन्नयन कर देंगे, ये सभी 20-20 किलोमीटर के क्षेत्र में हैं । शिक्षा, हमारे यहां बच्चों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का माध्यम है, आपके माध्यम से हो जाएगा तो हम लोग समझते हैं कि अच्छा हो जाता। ज्यादा न कहकर, इतने ही निवेदन के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं, धन्यवाद् ।

श्री लखेश्वर बघेल (बस्तर) :- माननीय सभापति महोदय, वित्तीय वर्ष 2024-25 की अनुदान मांगों पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मांग संख्या, 26 संस्कृति विभाग से संबंधित, मांग संख्या 27 स्कूल शिक्षा, मांग संख्या 28 राज्य विधान मण्डल, मांग संख्या 37 पर्यटन, मांग संख्या 44 उच्च शिक्षा, मांग संख्या 51 धार्मिक न्यास और धर्मस्व से संबंधित है। इन सभी विभागों के लिए हमने कटौती प्रस्ताव दिया था और एक रूपए कम करने के लिए बात कही थी। इसके विरोध में मैं कुछ बातें कहना चाहता हूं।

सभापति महोदय, पुरातत्व ऐसे स्थल हैं जिनकी भली-भांति सर्वेक्षण नहीं हुआ है। उन स्थलों से प्राचीन मूर्तियों की चोरी दिनों दिन निरंतर होती जा रही है। इस पर विशेष महत्व देने की आवश्यकता है। इसके लिए प्रस्तावित बजट प्रावधान बहुत ही कम है। आदरणीय मंत्री जी, निवेदन है, थोड़ा सुन लीजिएगा, पुरातत्व विभाग है, संस्कृति विभाग से है। बजट का जो प्रावधान रखा है, वह बहुत कम है।

इतना बड़ा संस्कृति वाला छत्तीसगढ़ है, यहां विभिन्न प्रकार की संस्कृतियां होती हैं, आपने बिल्कुल कम बजट दिया है। इसमें थोड़ा बजट बढ़ाने की आवश्यकता है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस विषय पर गंभीरता से ध्यान दें। उत्खनन तथा कन्वेंशन पर भी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। राज्य निर्माण से 23 वर्ष बाद भी इसमें बहुत पीछे हैं, इसमें जितना विलंब किया जाए, उतनी ही अपूरणीय क्षति होगी। छत्तीसगढ़ के किसी कोने से यदि भगवान राम गुजरे हैं तो पूरे छत्तीसगढ़ को राम वन गमन पथ मानकर विकास का लक्ष्य 2019 से 2023 तक चल रहा था, उसी के तहत् धार्मिक स्थलों में विकास का निर्णय लिया और लगभग 100 करोड़ के निर्माण कार्य किए हैं। आप तो मात्र इतिहास के पन्ने पलटते रहे और हमारे कामों को रोकने की कोशिश किए कि भगवान राम तो आए ही नहीं। हमने तो धरातल में कुछ किया है, आप उसे कागजों में कार्रवाई करते रहे हैं। इस संबंध में मैं कहना चाहूंगा, यहां भगवान राम का नैनिहाल था, नैनिहाल में सबसे ज्यादा हमारे दंडकारण्य क्षेत्र बस्तर में व्यतीत किया, ऐसा बुर्जुगों का कहना है और इतिहास में भी है। सबमें यह प्रमाण मिलता है, जैसे हमारे बस्तर में हो, चाहे पूरे छत्तीसगढ़ में हों, जैसे नाम में बुधराम, सियाराम, राम-राम होता है। हम एक दूसरे से मिलते भी हैं तो राम राम बोलते हैं, आज जय श्री राम की बात कर रहे हैं। हम लोग बचपन से सुनते जानते आ रहे हैं, हम लोग एक दूसरे से मिलते हैं तो राम राम भैया, सीताराम भैया यह बात कहते हैं। खासकर ग्रामीण वनवासी लोगों का नाम राम राम से होता है। जैसे बलिराम नाम है। कई लोगों का नाम राम से रखते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह बात आप अपने नेताओं को क्यों नहीं समझाए जो राम मंदिर का विरोध किए, वहां नहीं गए, समझाना चाहिए ना।

श्री लखेश्वर बघेल :- आप तो समझते हैं। हमारे समझाने से समझने वाले कितने हैं। इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया जाए।

सभापति महोदय, संस्कृति विभाग का संरक्षण और उत्थान हमारी जिम्मेदारी है। सरकार ने संस्कृति विभाग से 200 रामायण मंडलों को 5 हजार रूपये आर्थिक सहायता देने की घोषणा की थी। इसमें 2023 में तीन करोड़ से अधिक की राशि सहायता के रूप में कलेक्टर के माध्यम से भुगतान हुआ है। आपने इस मद में प्रावधान किया है या नहीं किया है, देख लीजिए। मेरा निवेदन है, हमारे बस्तर में बहुत बड़ा मेला मंडई होता है। बस्तर में एक साथ 84 गांव का मंडई होता है, वहां पर 84 गांव के लोग एकत्रित होते हैं, ट्राईवल विभाग द्वारा, इधर उधर से हम लोग पैसा वगैरह मांगकर वहां पर मंडई कराने का प्रयास करते हैं, इस साल कोई पैसा दिया ही नहीं। मेरा निवेदन है, मां गंगादेई के नाम का मेला होता है और 84 परगना के लोग वहां एकत्रित होते हैं। देवी देवता होता है, 2, 3 दिन मेला लगता है। उसमें कुछ राशि का प्रावधान रखते तो अच्छा होता।

संस्कृति मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- कौन सा मेला ?

श्री लखेश्वर बघेल :- माता गंगादेई मंडई बस्तर में होता है। इसी तरह से द्रोणावीर मंदिर 20 गांव के लोग एकत्रित होते हैं। वहां पर 20 परगना के लोग रहते हैं। इस प्रकार करपावन में 12 परगना के लोग एकत्रित होते हैं तो यदि आप उसके लिए भी बजट में कोई प्रावधान रखते तो बहुत अच्छा रहता। मैंने इस पुस्तिका में देखा है कि हमारे बड़े-बड़े मड़ई-मेला के लिए कोई प्रावधान नहीं है। मैंने वर्ष 2013 में पिछली बार भी आपसे निवेदन किया था। हमारे यहां बाली होता है तो आसपास के गांव के लोग 90 दिन की बाली रखते हैं। उस समय आपने उसके लिए 2-2 लाख रूपये दिये थे। इस समय भी हमारे 2-3 गांवों में बाली होने वाला है तो उसके लिए भी आप 2-2 लाख रूपये देने की कष्ट करेंगे।

माननीय सभापति महोदय, मेरा आपसे स्कूल शिक्षा विभाग से संबंधित निवेदन है। आपके स्कूल शिक्षा विभाग में 78 प्रकार की योजनाएं संचालित हैं। सभी पूर्व वक्ताओं ने कहा कि इसके लिए 21 हजार, 604 करोड़ रूपये का प्रावधान बहुत ही कम है। 5 प्रतिशत बढ़ा है। इसमें बजट को बढ़ाने की जरूरत है। हम लोग वित्त मंत्री जी और मुख्यमंत्री जी से निवेदन करेंगे कि आपको शिक्षा के क्षेत्र में आवंटन बढ़ाने की जरूरत है। यदि आप शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में बजट को कम करेंगे तो शिक्षा के स्तर की गुणवत्ता कैसे बदलेगी ? मेरा आपसे निवेदन है कि इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। भा.ज.पा. सरकार के पूर्व कार्यकाल में प्रदेश के स्कूलों में एक वीर सर्वे कराया गया था। जिसमें स्कूलों में शिक्षा के स्तर के आधार पर M.B.B.S. D-4 श्रेणियों में विभक्त किया गया था। उसी श्रेणी के स्कूलों में से प्रत्येक स्कूल में शिक्षा के स्तर में सुधार लाने हेतु 8,000 राजपत्रित अधिकारियों को एक प्रश्नावली लेकर भेजा गया था। परंतु दुर्भाग्य से उसके पश्चात् भी राज्य में शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ। प्रत्येक सरकार अपने-अपने कर्तव्यों की खानापूर्ति करने के लिए नयी-नयी 2-4 योजनाएं लाकर अपनी पीठ थपथपाती है और 5 वर्ष का कार्यकाल पूरा करती है।

सभापति महोदय :- लखेश्वर जी, थोड़ा जल्दी समाप्त करें।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- माननीय सभापति महोदय, यह मेरी तरफ से बोल रहे हैं।

श्री लखेश्वर बघेल :- यह हम दोनों की तरफ से है, इसलिए 1 घण्टा लगेगा।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, एहा मुख्य वक्ता हें। ऐला बोलन दो। का हो जाही ? थोड़ा देर में हमन घर चल देबो।

सभापति महोदय :- एक और बचे हैं।

श्री लखेश्वर बघेल :- माननीय सभापति महोदय, मैं हर समय अपना नाम काट देता हूं और दूसरों को बोलने का मौका देता हूं। मैं आज अपना नाम नहीं काटा हूं, इसलिए बोलते रहूंगा। मैंने नेता प्रतिपक्ष जी का नाम काट दिया।

श्री रामकुमार यादव :- हां, मैं जोड़ने वाला हो।

श्री लखेश्वर बघेल :- माननीय सभापति महोदय, वित्त मंत्री जी ने बजट भाषण में नेल्सन मंडेला जी के वाक्य को कोट करते हुए स्वीकार किया है कि किसी देश को तबाह करने के लिए बम, बारूद और मिसाइल की जरूरत नहीं होती है। शिक्षा की गुणवत्ता को खराब कर देना ही उस देश को बर्बाद कर देने के लिए पर्याप्त है। मोदी जी की गारंटी के लिए उत्थान व्यवस्था के संबंध में सम्मिलित किया है। हमने वर्ष 2023-2024 में 7 प्राथमिक शालाओं का पूर्व माध्यमिक शालाओं में, 8 माध्यमिक शालाओं का हाई स्कूल में और 17 हाई स्कूलों का हायर सेकण्डरी स्कूलों में उन्नयन किया था। लेकिन वर्ष 2024-2025 में एक भी उन्नयन का प्रस्ताव नहीं रखा गया है। यह बड़े दु:ख की बात है। पूरे छत्तीसगढ़ को छोड़िये, मैंने खासकर अपने विधान सभा क्षेत्र के 21 पूर्व माध्यमिक शालाओं और 34 हायर सेकण्डरी स्कूलों के उन्नयन का प्रस्ताव दिया था, लेकिन एक का भी उन्नयन नहीं किया गया। यह बड़े दु:ख की बात है। मंत्री जी, मैं आपको लिखित में इन सबकी जानकारी दे दूंगा। मेरा आपसे निवेदन है कि इस पर विचार किया जाए। वर्ष 2024 की योजनाओं की नकल कर नाम बदल दिये गये हैं। हमारे शिक्षकों के उचित कौशल विकास हेतु नवा रायपुर स्थित राष्ट्रीय स्तर के शिक्षण-प्रशिक्षण संस्था खोलने के लिए 1 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया था। आपने उसी का नाम बदलकर प्रस्तुत कर लवलीहुड सेंटर ऑफ एक्सीलेंस कर दिया है तो हमने वर्ष 2023-2024 में 400 करोड़ रूपये की चाक परियोजना प्रारंभ की। आपने उसी सिस्टम को दिया है।

सभापति महोदय :- लखेश्वर जी, कृपा करके अपनी बात समाप्त करिए।

श्री लखेश्वर बघेल :- सभापति जी, ठीक है, आप अपना फर्ज निभाईए, मैं अपना फर्ज निभा रहा हूं । प्रदेश में उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए निजी क्षेत्र में जो उद्यमी एकाधिकार लिया गया था, उसके कारण स्कूल में प्रवेश पर पिछले 15 साल से गरीब व्यक्ति अपने बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने की आवश्यकता महसूस कर रहे थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- लखेश्वर जी, उस पूरे कागज को मंत्री जी को दे दीजिए, वह सरकारी रिकार्ड में आ जाएगा ।

श्री लखेश्वर बघेल :- बिल्कुल, मैं दे दूंगा, चिन्ता मत करिए ।

श्री रामकुमार यादव :- तुहर मंत्री मन तो घलो वइसने देखके पढ़थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मंत्री जी को देने में संकोच है तो यहां पर टेबल में रख दीजिए । वह पढ़ा हुआ मान लिया जाएगा और हम लोग भी उसको पढ़ लेंगे । खानेदार खाने से सबको वितरित हो जाएगा ।

श्री लखेश्वर बघेल :- आपको टोका-टाका का एवार्ड मिलना चाहिए । कौन सा एवार्ड मिलेगा, यह विधान सभा तय करेगी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आपके बोलने के बाद केवल और केवल दो मंत्री जी उपस्थित हैं । बाकी मंत्री जी कहां हैं ?

श्री लखेश्वर बघेल :- सभापति महोदय, बहुत सी बात आई है । मंत्री जी से मेरा निवेदन है कि हमारे प्रदेश में बहुत सारे प्राईवेट स्कूल चल रहे हैं । उन स्कूलों में मध्याह्न भोजन की व्यवस्था नहीं है । आपके कार्यकाल के समय उनको मध्याह्न भोजन मिलता था, लेकिन पिछले 5 सालों में नहीं मिला । मेरा निवेदन है कि कुछ गरीब बच्चे उन स्कूलों में भी पढ़ते हैं, वहां भी मध्याह्न भोजन की व्यवस्था हो । साथ-साथ आत्मानंद इंग्लिश स्कूलों में भी मध्याह्न भोजन की व्यवस्था नहीं है । तीन-चार महीनों से स्व सहायता की बहिनें उसे चला रही हैं, उनको राशि नहीं मिल रही है । उनके लिए भी बजट की व्यवस्था हो, यही मेरा निवेदन है ।

सभापति महोदय, हमारे क्षेत्र की बहुत सी मांग है, मैं आपको लिखित में दूंगा। आपके पास संसदीय कार्य विभाग भी है । मेरा निवेदन है कि वाहन ऋण के लिए 20 लाख रूपए का प्रावधान है । आजकल सारे विधायक 30, 40, 50 लाख रूपए के वाहन में चलते हैं तो 20 लाख की राशि बहुत कम है । मेरा निवेदन है कि उसको कम से कम 50 लाख रूपए कर दें तो बहुत अच्छा रहेगा । इसी प्रकार गृह निर्माण हेतु ऋण पर 15 लाख रूपए का प्रावधान है । अब 15 लाख रूपए में कौन सा घर बनाएंगे । यह निवेदन है कि गृह ऋण की राशि भी 50-60 लाख रूपये की जाये । सभापति महोदय, यहां जो सचेतक हैं, मैं देखता हूं कि वे बहुत काम करते हैं। आपकी सरकार के समय और जोगी सरकार के समय सचेतकों को सहायता के लिए एक सहायक देते थे । अभी भी सचेतकों के लिए एक सहायक की व्यवस्था हो तो बहुत अच्छा रहेगा, यह मेरा निवेदन है ।

सभापति महोदय, पर्यटन विभाग से संबंधित बहुत सी बातें हैं । मैं पर्यटन विभाग के संबंध में अपने क्षेत्र की बात करूंगा । हमारे क्षेत्र में एक बेंत झरना है, जो बहुत लंबे समय है, वहां कम से कम 40-50 एकड़ में बेंत का झरना है । मैंने वन विभाग एवं पंचायत विभाग की ओर से उसके लिए बहुत प्रयास किया, पर हम उसका घेरा भी नहीं लगा पा रहे हैं, उसको व्यवस्थित नहीं कर पा रहे हैं । वहां पर एक प्राचीन शिव मंदिर भी है । लोगों का कहना है कि जब भगवान राम वनवास आये थे तो उस बेंत झरना में रूके थे और उनके द्वारा पानी पीने के लिए धनुष लगाया गया था। वहां पर शिवलिंग की भी स्थापना हुई थी, वहां पर 10 साल पहले प्राचीन मूर्तियां चोरी हो गईं थी इसलिए उसके संरक्षण संवर्धन की जरूरत है । इस प्रकार वहां भी शिव मंदिर और जहां देखो, वहां शिवलिंग दिखता है । उसके भी संरक्षण संवर्धन की जरूरत है ।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, राम मंदिर के दर्शन कराएबर जावथे । गांव-गांव में श्री कृष्ण भगवान के पुराना मंदिर हे ।

श्री लखेश्वर बघेल :- उच्च शिक्षा में भी शिक्षक की जरूरत है ।

समय :
5:50 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)**

श्री रामकुमार यादव :- एक मिनट, रहा न । तै तो गोठियाओ, तोर मेर दू घंटा हे, रहा ना । अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करहूं कि ये उपमा देवत हे ये हा भगवान के सरकार हे। मोर क्षेत्र मा श्रीकृष्ण भगवान के बहुत सारा मंदिर हे। मैं जेन क्षेत्र में रहथव वहां कम से कम 5 ठन पुराना मंदिर हे। तो आपसे निवेदन है कि श्रीकृष्ण भगवान का जीर्णोद्धार किया जाये। यही मेरा आपके माध्यम से निवेदन हे। बाकी हमर अध्यक्ष बोलही।

अध्यक्षीय दीर्घा में अतिथि

श्री भूपेन्द्र यादव, केन्द्रीय मंत्री, श्रम, रोजगार तथा पर्यावरण, वन, जलवायु परिवर्तन

अध्यक्ष महोदय :- अध्यक्षीय दीर्घा में माननीय श्री भूपेन्द्र यादव, केन्द्रीय मंत्री श्रम, रोजगार तथा पर्यावरण, वन, जलवायु परिवर्तन उपस्थित हैं। मैं सदन की ओर से उनका स्वागत करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

वित्तीय वर्ष 2024-2025 की अनुदान मांगों पर चर्चा (क्रमश:)

श्री लखेश्वर बघेल :- अध्यक्ष महोदय, यह उच्च शिक्षा विभाग से संबंधित है। वहां 1483 करोड़ 37 लाख 60 हजार का प्रावधान किया गया है। यह बहुत ही कम राशि है, इसको थोड़ा बढ़ाया जाये। क्योंकि इसमें 33 योजना है। इतनी योजनाओं में हमारी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता कैसे अच्छी होगी। विशेषकर इसमें बजट देने की जरूरत है। वर्ष 2023-24 में 10 जिलों में अंग्रेजी महाविद्यालय का संचालन किया गया था। आपने अंग्रेजी महाविद्यालय खोलने का बजट में कहीं कोई प्रावधान नहीं किया है। तो मैं इसमें निवेदन करूंगा कि इस पर ध्यान दिया जाये। सरकार ने वर्ष 2023-24 में 6 कन्या महाविद्यालय सहित कुल 50 नवीन महाविद्यालय खोलने का प्रस्ताव था। इसमें शैक्षणिक सत्र हेतु 1990 पद स्वीकृत किए गए थे। आपने वर्ष 2024-24 में एक भी नवीन महाविद्यालय नहीं खोला है, जो चिंता का विषय है। इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है। मैं इसी विभाग से संबंधित एक और निवेदन करना चाहूंगा कि विगत वर्षों में बस्तर में शासकीय नवीन महाविद्यालय खोला गया है, उसमें भवन की आवश्यकता है तो इस पर भी विचार किया जाये। हम लोग विगत कई वर्षों से जयबेल में नवीन महाविद्यालय खोलने हेतु प्रस्ताव देते रहे हैं, इस पर विशेष ध्यान देने का निवेदन करता हूं। साथ ही शासकीय महाविद्यालय बकावंड में 560 बच्चें हैं। लेकिन वहां सिर्फ स्नातक महाविद्यालय ही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता जी, कितना पन्ना और बाकी है, उसको टेबल करवा दीजिये।

श्री लखेश्वर बघेल :- यह कोई बात है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप तो पूरा पढ़ रहे हैं, यह कहा।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर मंत्री मन तो पढ़ के उत्तर देवत हे।

श्री रिकेश सेन :- आदरणीय सदस्य जी, आपके सब समस्या विगत वर्षों से है तो आखिर 5 साल में क्या किये ? आप लोग 5 साल में किये क्या हैं ? अगर विगत वर्षों से समस्या है तो पिछले 5 सालों में कुछ किए हैं क्या ?

श्री लखेश्वर बघेल :- हम लोग तो सिर्फ 5 साल ही काम किये थे। आप लोग 15 साल में नहीं किए तो क्या करोगे ? हमारे 5 साल के कार्यकाल में 2 साल कोरोना में चला गया, एक साल चुनाव में चला गया। हम लोगों ने 2 साल में जितना काम किए हैं, आप 15 साल में नहीं किए हो। फालतू बात मत करो।

श्री सुशांत शुक्ला :- यह तो आपत्ति का विषय है।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- चन्द्राकर जी, आदिवासी लोग हैं, इनको बोलना आता है। यदि नहीं आता है तो सीखने दीजिये। आप तो एक-एक घंटा बोलते हो।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप तीसरी बार के विधायक हैं और मैं बोलने में कहां आपत्ति किया हूं।

श्री धरम लाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, ये लोग इतना ज्यादा काम किए हैं, इतना ज्यादा काम किए हैं कि विपक्ष में आ गये।

श्री लखेश्वर बघेल :- हो गया, क्या करोगे ? आप लोग कैसे आये, आप लोगों को सब मालूम है। कैसे छलकपट हुआ है, मालूम है। आप दो लाख रूपया बोनस देने की बात किए थे, वायरल किये थे, उसके कारण आप लोग सत्ता में आये हो। समझ गये न ? आप लोगों ने कहा था कि 75 लाख लोगों को महतारी योजना का लाभ देंगे, इसके कारण आये हो।

श्री रामकुमार यादव :- आप मन ठग के आय हा।

श्री लखेश्वर बघेल :- आप लोगों ने प्रथम किश्त के रूप में पैसा घर-घर बांटे थे, उसके कारण सरकार में आये हो। हम लोग उस चीज को बतायेंगे नहीं क्या ?

श्री धरम लाल कौशिक :- हम लोगों ने युवाओं को धोखा नहीं दिया था।

श्री लखेश्वर बघेल :- बिलकुल धोखा दिए हो।

श्री धरम लाल कौशिक :- आप लोगों ने युवाओ को धोखा दिए हो, यह उसी का परिणाम है।

श्री लखेश्वर बघेल :- आप लोगों ने बिलकुल धोखा दिया है। ज्यादा बोलने का नहीं है, नहीं तो हम लोग भी बोल सकते हैं, समझ गये न ? हम लोग भी बोल सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- लखेश्वर जी, सबसे अनुशासित सदस्य हैं। सबसे कम समय पर बहुत अच्छी बात बोलते हैं। उनको डिस्टर्ब ना किया जाये।

श्री अजय चन्द्राकर :- मुझे आपके बोलने पर आपत्ति नहीं है। आपके पढ़ने पर आपत्ति है। आप पढ़ रहे हैं, बोल कहां रहे हैं ?

श्री लखेश्वर बघेल :- मैं कहां पढ़ रहा हूं ?

अध्यक्ष महोदय :- आधा पढ़ रहे हैं आधा बोल रहे हैं। आप जारी रखिये।

श्री लखेश्वर बघेल :- मैं आपके जैसा विद्वान थोड़े ही हूं। आप तो हमारे गुरूजी हो। गुरूजी ऐसे बोलेंगे तो कैसे होगा।

अध्यक्ष महोदय :- आप उधर मत देखिये, मेरी तरफ देखिये।

श्री लखेश्वर बघेल :- जी, मैं उधर नहीं देख रहा था। इनको छेड़ने की आदत है।

अध्यक्ष महोदय :- आप उधर मत देखिये।

श्री लखेश्वर बघेल :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी, पिछली सरकार के समय बकावंड में महाविद्यालय खोलने की स्वीकृति भी दे दी गई थी, लेकिन आचार संहिता लगने के कारण नहीं खोला गया। लेकिन आगामी वित्तीय वर्ष में इसके लिए प्रावधान नहीं रखा गया है। इसलिए पर ध्यान देने का विशेष निवेदन है। धार्मिक न्यास संबंधित, इसमें हमारे छत्तीसगढ़ में हर गांव, हर जगह, पुरातात्विक मंदिर, मान्यता प्राप्त मंदिर बहुत सारे हैं, लेकिन उसके मरम्मत के लिये विशेष प्रावधान नहीं रखा गया है । मेरा निवेदन है कि इस पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । अध्यक्ष महोदय, मुझे आपने बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- उत्तरी जांगड़े जी ।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े (सारंगढ) :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं सीधा-सीधा मांग कर रही हूँ । माननीय उच्च शिक्षा मंत्री महोदय जी से मांग करती हूँ कि विकासखंड सारंगढ़ कोसीर में महाविद्यालय के स्थापना की मांग करती हूँ। यह अनुसूचित जाति बाहुल्य क्षेत्र है, यह बहुत गरीब क्षेत्र है, जिस कारण से बारहवी के बाद बच्चे उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से विकासखंड बरमकेला के डोंगरीपाली में महाविद्यालय खोलने की मांग करती हूँ । माननीय अध्यक्ष महोदय जी, विकासखंड सारंगढ़ से शासकीय हाई स्कूल दंडसरा, शासकीय हाई स्कूल छोटेलेंधरा को उन्नयन करने और हायर सेकेण्डरी खोलने की मांग करती हूँ । अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार माध्यमिक शाला रक्शा एवं माध्यमिक शाला गुढियारी को हाई स्कूल में उन्नयन की मांग करती हूँ । धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री बृजमोहन अग्रवाल जी । (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी । एक दो बातें जो छूट गई थी, मैं शुरू किया था, आपके ध्यान में ला देता हूँ । जो मांग है, यह चीजें बजट में है, फिल्म सोसायटी की अपनी भी घोषणा

थी । चाहे उसको सोसायटी बनाये, चाहे इंडस्ट्री बनाये, यह भी उसमें देख लीजिए कि यूनिवर्सिटी के आर्डिनेंस से बन जायेगा कि लेजिसलेशन करना पड़ेगा । दूसरा, जो लोक कला और साहित्य है, उसके संरक्षण के लिये किसी तरह की कोई अकादमी छत्तीसगढ़ में नहीं है । आपके यहां एकमात्र एकादमी कार्यरत है, जिसको हम लोगों ने हिन्दी ग्रन्थ एकादमी बनाई थी । जैसा कि आपने लोक कला के लिये राजनांदगांव में नाचा केन्द्र दिया, आप जाकर देखिये कि राजनांदगांव में उसकी कोई एक्टिविटी नहीं है । जैसे कि यूनिवर्सिटी में पीठ बना है, वह केन्द्र भर हैं । आपसे अनुरोध है कि वह एक्टिव बने, ताकि छत्तीसगढ़ लोक कला के मामले में पूरे हिन्दुस्तान में समृद्ध प्रदेश है, उसमें एक काम हो । तीसरा, भूपेश बघेल जी के राज में एक सांस्कृतिक परिषद बनाई थी । वह ऐसी सांस्कृतिक परिषद थी कि मुख्यमंत्री जी अध्यक्ष थे और उसकी कभी बैठक नहीं हुई । बैठक नहीं होने के कारण उसको अधिकार प्रत्यायोजित किये गये थे और कोई निर्णय पांच साल में किसी तरह का नहीं हुआ है । वह संस्कृति मंत्री के अंडर में बने और छोटे निर्णय तुरन्त हो । यदि माननीय मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में मानलो कोई पॉवर कमेटी बनती है तो उसकी बैठक नियमित हो, ताकि छोटे-छोटे फैसले हों । उस परिषद में फैसले नहीं हुये, इसलिये सांस्कृतिक, साहित्यिक क्षेत्र में कोई भी काम छत्तीसगढ़ में पांच साल में नहीं हुआ है । अध्यक्ष महोदय, मैं यह उस समय आपके ध्यान में नहीं ला पाया था, इसलिये आपसे आग्रह करता हूँ कि इसमें ध्यान देंगे ।

श्री अनुज शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी के विषय में एक बात और ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा कि फिल्म विकास निगम की घोषणा की गई, लेकिन उसको ठण्डे बस्ते पर डाल दिया गया । ना उसके अध्यक्ष की घोषणा की गई और न जो पालिसी बनाई गई थी कि फिल्मों को सब्सीडी दी जायेगी, लोगों को प्रोत्साहित किया जायेगा, नये थियेटर्स को प्रोत्साहित किया जायेगा । माननीय मंत्री जी, कृपया इसका भी ध्यान रखेंगे ।

स्कूल शिक्षा मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बसंत पंचमी है । आज मॉ सरस्वती जो शिक्षा की देवी है, ज्ञान की देवी है, बुद्धि की देवी है, उनकी हम सब पूजा करते हैं । अध्यक्ष महोदय, शिक्षा विभाग ने यह भी घोषित किया है कि अगर हम इस प्रदेश के नौनिहालों के भविष्य को गढ़ना है, हमें उनके भविष्य को बनाना है तो उसके लिये हमें उनको संस्कार देना है, उनको हमारी संस्कृति की शिक्षा देना है। उन्हें अपने माता-पिता का आदर, सम्मान करना है। इसलिये हमने आज घोषणा की कि सभी विद्यालयों में आज का दिन मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में मनाया जायेगा। (मेजों की थपथपाहट)

समय :
6.00 बजे

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी को बधाई देता हूं कि उनको याद आ गया कि आज बसंत पंचमी है। उनको यह भी याद आना चाहिए था कि आज पीला वस्त्र धारण करते हैं और आपके कितने सदस्य पीला वस्त्र धारण करके आये हैं और इधर के कितने सदस्य पीला वस्त्र धारण करके आये हैं, उस पर भी ध्यान दे दीजियेगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, महंत जी तो सोमवार, मंगलवार, बुधवार के हिसाब से रोज ड्रेस बदलते हैं। आप प्रतिदिन के हिसाब से उनका ड्रेस मिला लीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- बसंत इन्हीं पर छाया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके ड्रेस में तो पीला रंग है और वह त्यौहार से मिल रहा है, उसके लिये आप बधाई लीजिये। हम इसका ध्यान रखते हैं परंतु इधर तो विपक्ष को पीलिया हो गया है (हंसी)

श्री रामविचार नेताम :- अध्यक्ष महोदय, यह तो अच्छी बात है कि आप पीला ड्रेस लगाकर बाकी को संकेत दे रहे हैं। हम तो वह भी देखना चाह रहे हैं कि आप गेरूआ कब धारण करेंगे। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. चरणदास महंत :- गेरूआ रंग भी अपना ही है। आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं मां सरस्वती से कामना करता हूं कि छत्तीसगढ़ राज्य के विकास का सूर्य इस संसार में दैदीप्यमान होकर चमकता रहे। इसी के साथ शिक्षा, धर्म, संस्कृति, पर्यटन, संसदीय कार्य, इन सब विभागों के बजट के ऊपर बाकी सदस्यों ने जो अपनी बात कही है, मैं उसके बारे में चर्चा करने के लिये यहां पर उपस्थित हुआ हूं। इस चर्चा में माननीय विधायक कुंवर सिंह निषाद जी, श्री अजय चन्द्राकर जी, श्री दलेश्वर साहू जी, श्रीमती उद्धेश्वरी पैकरा जी, श्रीमती अनिला भेंडिया जी, श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते जी, श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी जी, श्रीमती भावना बोहरा जी, श्री द्वारिकाधीश यादव जी, श्री गजेन्द्र यादव जी, श्री भोलाराम साहू जी, श्री प्रणव कुमार मरपची जी, श्रीमती चातुरी नंद जी, श्री अनुज शर्मा जी, श्रीमती अंबिका मरकाम जी, श्री राम कुमार टोप्पो जी, श्री अटल श्रीवास्तव जी, श्री डोमनलाल कोर्सेवाड़ा जी, श्री जनक ध्रुव जी, श्री धर्मजीत सिंह जी, श्री ब्यास कश्यप जी, श्रीमती रायमुनी भगत जी, श्री इंद्रशाह मण्डावी जी, श्री लखेश्वर बघेल जी और श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े जी, ऐसे 25 सदस्यों ने अपनी बातों को यहां पर रखा है। मुझे मालूम है कि शिक्षा विभाग के प्रति सब लोग चिंतित भी है, सब लोगों के मन में बहुत सारे सुझाव भी है, सब की अपेक्षा भी है, सब की उम्मीद भी है। निश्चित रूप से आने वाले 05 सालों में हमारे इस देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का जो सपना है, वह पूरा होगा। आपके नेता तो अभी-भी आरक्षण और पिछड़ा वर्ग की बात कर रहे हैं परंतु मोदी जी, चाहे वह हिन्दू हो, चाहे मुस्लिम हो, चाहे सिख हो, चाहे ईसाई हो, चाहे अनुसूचित जनजाति

का हो, चाहे अनुसूचित जाति का हो, किसी भी वर्ग का हो, अगर उसकी कोई जाति है तो वह युवा है, (मेजों की थपथपाहट) यदि उसकी कोई जाति है तो वह महिला है, (मेजों की थपथपाहट) यदि उसकी कोई जाति है तो वह किसान है, यदि उसकी कोई जाति है तो वह गरीब है, (मेजों की थपथपाहट) इन चार वर्ग के लोग सभी जातियों में हैं। आप लोगों ने कभी उसकी चिंता नहीं की।

श्री कवासी लखमा :- माननीय मंत्री जी, दिल्ली में किसानों का आंदोलन हो रहा है। क्या आप उसे देख रहे हैं ? आप थोड़ा उधर भी देख लीजिये। हर साल ऐसे ही होता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मोदी जी ने पहली बार इन चार वर्गों की चिंता की और माननीय विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में जो बजट प्रस्तुत हुआ, वह बजट भी इन चार वर्गों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत हुआ। यह जो बजट है, आज छत्तीसगढ़ की 6वीं विधान सभा में विभागीय बजट में पहले विभागीय बजट को प्रस्तुत करने का मुझे अवसर मिल रहा है, इसके लिये मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को, विधान सभा अध्यक्ष जी को और सभी सदस्यों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यहां पर स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, संस्कृति विभाग, धार्मिक एवं धर्मस्व विभाग, पर्यटन विभाग और संसदीय कार्य विभाग का बजट चर्चा में भाग ले रहा हूं। माननीय नेता जी, आप एक बार सुन तो लीजिये कि हम क्या करने वाले हैं :-

"आप एक बार सुन तो लो हम क्या करने वाले हैं
हम पांच शक्तिपीठ की परियोजना लाने वाले हैं
हम अपनी संस्कृति और परम्परा को दोहराने वाले हैं
हम फिर से राजिम कुम्भ करवाने वाले हैं
हम छत्तीसगढ़ आदि भाषा परिषद बनाने वाले हैं
समय कम है नहीं तो मैं आपको और बतलाता कि हम क्या-क्या करने वाले हैं।
हम छत्तीसगढ़ की माटी को चंदन और उस चंदन से विकास का वंदन करने वाले हैं।
अपनी छत्तीसगढ़ी महतारी के विकास का दर्पण करने वाले हैं
जिसने हमको सब कुछ दिया, अब उस पर अपना सब कुछ अर्पण करने वाले हैं
क्योंकि हम छत्तीसगढ़वासी भोले-भाले हैं।" (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्यों को सुन रहा था। हमारे पर्यटन मण्डल के अध्यक्ष बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप बताईये कि पूरे देश में पुन्नी मेले कितने होते हैं? इस देश में 10 हजार स्थानों पर पुन्नी मेले भरते हैं । किसी सरकार की इतनी छोटी सोच होगी। पूरे विश्व, देश में कुम्भ मेले के माध्यम से छत्तीसगढ़ के लोगों की पहचान बनी थी। छत्तीसगढ़ की आध्यात्मिक पहचान बनी थी। छत्तीसगढ़ की धार्मिक पहचान बनी थी। यहां प्रभु राम का वनगमन मार्ग है यह लोगों को मालूम पड़ा था। यहां मां कौशल्या की जन्मभूमि है, यह मालूम पड़ा था, यहां प्रभु

राम का वन गमन मार्ग है, यह लोगों को मालूम पड़ा था। किसी सरकार की इतनी छोटी सोच हो सकती है। पूरे देश में 5 कुम्भ मेले होते हैं, वह 12 सालों में एक बार होते हैं । पूरे देश में पहली बार हमने कुम्भ कल्प मेले की शुरूआत की। आपकी सरकार की इतनी छोटी सोच थी कि आपने उसे समाप्त कर दिया। आप छत्तीसगढ़ की संस्कृति की बात करते हैं। आप छत्तीसगढ़ की पहचान बनाने की बात करते हैं। आप कैसे पहचान बनायेंगे ? आपने छत्तीसगढ़ की क्या पहचान बनायी ? स्कूलों के शिक्षकों के ट्रांसफर में 25 करोड़ रूपये। यही पहचान थी। शराब का घोटाला, क्या यही पहचान थी। गौठान घोटाला, क्या यही पहचान थी। छत्तीसगढ़ के लोग गोबर का पैसा भी खा जाते हैं क्या यही पहचान थी। आप छत्तीसगढ़ को कौन सी पहचान देना चाहते थे। आपने कौन सी आध्यात्मिक पहचान दी। हमारे विद्वान सदस्य माननीय अजय चन्द्रकार जी कह रहे थे कि आप ठीक से प्रभु रामलला की मूर्ति नहीं बनवा सकते तो आप इस प्रदेश में क्या काम करेंगे। माननीय अध्यक्ष जी ने कहा कि उस मूर्ति के नीचे यह लगवा देना चाहिए कि यह प्रभु रामलला की मूर्ति है। क्या आप ऐसे ही पहचान बनायेंगे ? हम छत्तीसगढ़ को एक नई पहचान देना चाहते हैं। हम छत्तीसगढ़ को राजिम कुम्भ मेले के माध्यम से पूरे विश्व में एक स्थान देना चाहते हैं। हम छत्तीसगढ़ की देश और दुनिया में पहचान बनाना चाहते हैं। हमारे छत्तीसगढ़ के लोग देश के पांचों कुम्भ मेले में नहीं जा पाते हैं। यहीं पर आकर साधु, संत, महात्मा, महामण्डलेश्वर, शंकराचार्य, एक स्थान पर सबका दर्शन हो जाता था। हमारा दादी तो नागा बाबा के डण्डों पर चढ़ता था। दादी, आप डण्डों पर चढ़े हो या नहीं ? आप याद करिये, आप मेरे साथ में गये थे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपने ठीक से आग्रह नहीं किया। नहीं तो यह नागा बाबा खुद बन जाते। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धार्मिक धर्मस्व विभाग, यह छोटा विभाग जरूर है, परन्तु राजिम अपने भौतिक और सांस्कृतिक स्वरूप में ही नहीं, यह उद्गम का स्त्रोत है। भक्ति, अध्यात्म, जन आस्थाएं, व्याख्यान, लोक विश्वास, विरासत, शिल्प स्थापत्य, नृत्य, संगीत और पर्यटन अगर इन समग्र रूपों का कहीं आकार लेता है तो यह राजिम कुंभ मेले का है। (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ की एक पहचान 7 वीं सदी का वह मंदिर है, आप मुझे यह बताएं कि आप 5 साल सत्ता में रहे तो यहां कितने साधु संत, महात्मा आएं। जो 13 सालों में 15 दिनों में 25 लाख लोग आते थे, आपने उस कुंभ की महिमा को समाप्त कर दिया। जो साधु-संत छत्तीसगढ़ के लोगों को आशीर्वाद देकर जाते थे, उनको आपने नाराज कर दिया।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय मंत्री जी, कांग्रेस के अधिवेशन में प्रमोद कृष्णन जी आये थे, उनको भी पार्टी से निकाल दिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, हम धर्मस्व विभाग के माध्यम से आने वाले समय में "कल्चर कनेक्ट योजना" लायेंगे। उसके अंतर्गत हम अयोध्या में भी प्रभु राम, कौशल्या माता धाम बनायेंगे। छत्तीसगढ़ के लोग वहां जायेंगे तो वहां रूक पायें। (मेजों की थपथपाहट) हम तिरूपति में, जगन्नाथ पुरी में छत्तीसगढ़ धाम बनायेंगे जिससे कि सांस्कृतिक कल्चर के माध्यम से हम आपस में एक साथ जुड़ सकें और पूरे देश में एकात्म की भावना पैदा हो सके।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने कैलाश मानसरोवर की सबसे कठिन यात्रा शुरू की थी। इस सरकार ने उस यात्रा को भी समाप्त कर दिया। लोगों को पैसा देना बंद कर दिया। उसके लिए हम 50 हजार रुपये प्रति यात्री देते थे, अब हम नये वर्ष से, क्योंकि पूरे देश में रामलला के मंदिर बनने के बाद एक अध्यात्म का जागरण हो रहा है, अब मानसरोवर यात्रा पर जो यात्री जायेंगे, उनको 01 लाख रुपये की सहायता दी जायेगी। (मेजों की थपथपाहट) या जो उनकी यात्रा का खर्च होगा, उसका आधा पैसा दिया जायेगा। हमने सिंधु दर्शन यात्रा शुरू की थी, उस यात्रा को भी उन्होंने समाप्त कर दिया। हम सिंधु दर्शन यात्रा पर जो लोग जायेंगे, उनको हम 25 हजार रुपये की सहायता देंगे और जो उनका आधा खर्च होगा, वह हम उनको उपलब्ध करवायेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, बस्तर का दशहरा उत्सव 90 दिनों तक चलता है, जो विश्वविख्यात है। उस दशहरे की भी गरिमा और गौरव को इन्होंने कम कर दिया था। वह एक छत्तीसगढ़ की पहचान है। पूरे विश्व के लोग उस दशहरे को देखने के लिए आते हैं। हम बस्तर में इस दशहरे में जो मांझी, चालकी हैं, मांझियों की सम्मान निधि जो 2000 रुपये थी, उसको मैं 2500 रुपये देने की घोषणा करता हूं। चालकियों को 1500 रुपये मिलता था, उसको 2000 रुपये देने की घोषणा करता हूं। (मेजों की थपथपाहट) जो इसके लिए मेंबरीन हैं, उनका प्रतिमाह मानदेय 1000 रुपये था, उसको 1500 रुपये देने की घोषणा करता हूं। जो मेंबरेनों के 50 साधारण सदस्य हैं, उनको 1500 रुपये मिलता था, उनको 2000 रुपये देने की घोषणा करता हूं। (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ के बस्तर दशहरा में 80 परगना और 50 चालकी, 80 चालकी मेंबर, काछनदेवी, रैलादेवी, गुडमाएं दस के सदस्य, कोठी पुजारी के 06 सदस्य, मुंडा बाजा वादा के 30 सदस्य, रथ संचालनालय संवाहक के 07 सदस्य हेतु 1500 रुपये उनको वार्षिक सम्मान देने की घोषणा करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, मेरे पास में संस्कृति विभाग भी है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति, इसकी सुगंध के बारे में हमारे अजय चन्द्राकर जी अच्छे से बताते हैं कि क्या छत्तीसगढ़ की संस्कृति खाली सोटा खाना है, भंवरा चलाना है, गिल्ली-डंडा खेलना है? छत्तीसगढ़ की संस्कृति सिरपुर की संस्कृति है, रामगढ़ की संस्कृति है, राजिम की संस्कृति है, चंपारण्य की संस्कृति है। आपने इन 05 सालों में कुछ किया? यह संस्कृति पूरे देश भर में फैले, इसके लिए आपने कुछ किया? छत्तीसगढ़ की संस्कृति बस्तरिया, जशपुरिया, अंबिकापुरिया, सरगुजिया संस्कृति है। हमारे वित्त मंत्री जी जब बजट प्रस्तुत कर

रहे थे उन्होंने बताया कि बस्तर और सरगुजा हमारे लिए फोकस है। हमारे अजय चन्द्राकर जी अपने भाषणों में कहते हैं कि जहां पर असंतुलन है, वहां के विकास के बारे में हमको सोचना चाहिए। विष्णुदेव साय जी की सरकार का यही संकल्प है कि जो असंतुलन है, जो यहां पर नक्सलवाद है, अगर उसको समाप्त करना है तो ऐसे क्षेत्रों का हमको विकास करना पड़ेगा। विष्णुदेव साय जी की सरकार का बजट उस क्षेत्रों के विकास के ऊपर में फोकस करता है। जब मैं हमारे शिक्षा विभाग का बजट रखूंगा, तब मैं आपको इसकी जानकारी दूंगा। हमने तय किया है कि जो 05 शक्तिपीठ हैं, इन 05 शक्तिपीठों का विकास किया जायेगा, एक कारीडोर बनाया जायेगा। यह पांचो शक्तिपीठ दंतेवाड़ा का शक्तिपीठ है, डोंगरगढ़ की शक्तिपीठ है, महामाया की शक्तिपीठ है, चन्द्रहासिनी की शक्तिपीठ है। हम इसको डेव्हलप करेंगे और जैसे पूरे देश में चार धाम यात्रा होती है वैसे छत्तीसगढ़ में पांच शक्तिपीठ धाम की यात्रा होगी और हम इसको एक कॉरिडोर के रूप में विकसित करेंगे, यह हमारे घोषणा-पत्र की घोषणा है। (मेजों की थपथपाहट) गिरौधपुरी और छाता पहाड़। यहां हमारे माननीय पुन्नूलाल मोहले जी बैठे हैं और हमारे अनुसूचित जाति के और भी सदस्य बैठे हैं। अगर वहां पर कुतुब मिनार से ऊंचा जैतखाम बना तो भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में बना है। (मेजों की थपथपाहट) गिरौधपुरी धाम और छाता पहाड़ के विकास के लिए हम संस्कृति विकास के बजट में 01 करोड़ रूपये देते हैं। (मेजों की थपथपाहट) गुरू बालकदास के शहादत स्थल को बांधा मुंगेली के तीर्थस्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। (मेजों की थपथपाहट) आप लोग स्वामी आत्मानंद स्कूल की तो बड़ी-बड़ी बात करते हैं। स्वामी आत्मानंद जी के गुरू स्वामी विवेकानंद होते थे। रायपुर में उनका निवास स्थल है, जहां पर वह ढाई साल तक रहें। स्वामी विवेकानंद जी अगर पूरे देश में कलकत्ता के बाद सबसे ज्यादा कहीं रहे हैं तो छत्तीसगढ़ में रहे हैं। हमने तय किया है, हमने इस बजट में 05 करोड़ रूपये रखा है, जिससे उस 'डे भवन' को हम विवेकानंद स्मारक के रूप में विकसित करेंगे। (मेजों की थपथपाहट) अभी तक हमारे छत्तीसगढ़ के जो दस्तावेज हैं, वह मध्यप्रदेश से नहीं आए हैं, वह नागपुर से नहीं आए हैं, सी.पी. एंड बरार के दस्तावेज नहीं आए हैं। पांच साल में आपने कोई कोशिश नहीं की। हम उसका डिजिटलाईजेशन करेंगे। छत्तीसगढ़ के इतिहास के बारे में जब आने वाले समय पर कोई खोज करें तो उसको छत्तीसगढ़ की पूरी जानकारी मिल सकें, इसके लिए हमने तीन करोड़ रूपये का प्रावधान रखा है और हम इसकी व्यवस्था करेंगे। (मेजों की थपथपाहट) माननीय लखेश्वर जी, आप गोंडी भाषा, हल्बी भाषा की विकास की बात कर थे, इसके विकास के लिए भी हमने बजट में 02 करोड़ 50 लाख रूपये रखा है कि हम इसको विकसित करेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री बघेल लखेश्वर :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, हमने तो यह भी तय किया है कि छत्तीसगढ़ की पहचान पूरे देश में एक सांस्कृतिक रूप से बने, हम इसके लिए आने वाले समय पर रायपुर में, सिरपुर

में, चक्रधर महाराज के भूमि रायगढ़ में, इन तीन स्थानों पर हम ऐसे बड़े महोत्सव का आयोजन करेंगे, जिसमें देशभर और विश्वभर के कलाकार आए और जिसके माध्यम से छत्तीसगढ़ की पहचान बने। हमने इसका नाम प्रधानमंत्री अंतर्राष्ट्रीय लोक कला महोत्सव नाम दिया है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, एक कलाकारों की कल्याण की योजना होती थी। अगर उनकी मृत्यु हो जाती थी, उनको अर्थाभाव हो जाता था, वह बीमार पड़ जाते थे तो उनको 25 हजार रूपये की सहायता दी जाती थी, अब हम वह 50 हजार रूपये की सहायता देंगे। अगर उनकी मृत्यु हो जाएगी तो हम उनको एक हजार रूपये की सहायता देंगे और साथ में अगर वह कलाकार आर्थिक रूप से कमजोर है और हमारे यहां पद्मश्री 15-20 लोग होंगे। उनमें से ऐसे गरीब पद्मश्री हैं। जैसे पद्मश्री पुनाराम निषाद थे, जिनके पास अंतिम में उनके पास खाने के लिए पैसे नहीं थे। जो ऐसे पद्मश्री कलाकार हैं, उनको हम 25 हजार रूपये मासिक पेंशन देंगे, इस बात का हमने निर्णय लिया है। (मेजों की थपथपाहट) जो हमारे कलाकार हैं, साहित्यकार हैं। ऐसे कलाकार, साहित्यकारों को जो अर्थाभाव में जीते हैं, उनको विभाग के द्वारा पेंशन दी जाती है। उनको दो हजार रूपये पेंशन दी जाती है और वह दो हजार रूपये उनके लिए कोई काम नहीं आता है। अब उनका पेंशन बढ़ाकर उनको पांच हजार रूपये दी जाएगी, इस बात का हमने निर्णय लिया है। (मेजों की थपथपाहट) गढ़ कलेवा के नाम से हमने शुरूआत की थी। छत्तीसगढ़ी व्यंजनों को लोग जानने-पहचानने लगे थे। आने वाले समय में छत्तीसगढ़ में जितने भी पर्यटन सथल हैं, उन सब स्थलों पर गढ़ कलेवा की स्थापना की जायेगी, जिससे कि छत्तीसगढ़ के व्यंजनों को पहचान मिले, इस बात का हमने निर्णय लिया है। छत्तीसगढ़ के इतिहास के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है इसलिये हमने इस बात का निर्णय लिया है कि हम एक छत्तीसगढ़ इतिहास संग्रहालय बनायेंगे । इसके माध्यम से छत्तीसगढ़ के इतिहास के बारे में लोग अगर जानना चाहें तो वहां पर आकर देख सकते हैं । मध्यप्रदेश में जिस प्रकार से मानव संग्रहालय है, हम एक ऐसा मानव संग्रहालय स्थापित करेंगे ताकि उसके माध्यम से छत्तीसगढ़ की एक पहचान बने । राज्य के अभिलेखागार को भी हम सुदृढ़ करेंगे । हमने इस बात का निर्णय लिया है । अभी हमारे अनुज शर्मा जी कह रहे थे कि भारत भवन के जैसा एक स्थान यहां पर होना चाहिए जिससे सभी प्रकार की कलाओं को महत्व मिल सके तो अनुज शर्मा जी हम भारत भवन का निर्माण भी छत्तीसगढ़ में करेंगे, इस बात का हमने निर्णय लिया है । (मेजों की थपथपाहट)

श्री अनुज शर्मा :- माननीय मंत्री जी, आपने पद्म श्री एवार्डियों को जो पेंशन शुरू किया है उसके लिये आभार व्यक्त करता हूं और भारत भवन जैसा संस्थान बनाने के लिये आपको बहुत-बहुत बधाई और आभार देता हूं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदस्यों ने अगर सबसे ज्यादा किसी विषय में बोला तो स्कूल शिक्षा विभाग के बारे में बोला । विद्या यानी जो हमें विनम्रता प्रदान करती है । विनम्रता से ही योग्यता आती है और योग्यता से ही हमें धन प्राप्त होता है और जिससे हम धर्म के

कार्य करते हैं, हमें उससे सुख मिलता है । हम लोग धर्म की बात करते हैं तो आप लोगों को तो मिर्ची लग जाती है कि आप लोग केवल धर्म की राजनीति करते हो । विद्या एक ऐसा धन है, जिसे चुराया नहीं जा सकता, जिसे कोई भी छीन नहीं सकता । जिसका भाईयों के बीच बंटवारा नहीं किया जा सकता, जिसे संभालना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है और जो खर्च करने पर और अधिक बढ़ता है और वह धन विद्या है, विद्या सबसे श्रेष्ठ धन है । आपने इस विद्या को बाजार बनाने की कोशिश की । इस विद्या पर आपने वोट की राजनीति करने की कोशिश की । अभी बड़ी-बड़ी बात कर रहे थे कि स्वामी आत्मानंद स्कूल, आप शिक्षा को कितने भागों में बांटना चाहते हैं ? क्या शिक्षा विभाग आत्मानंद स्कूलों को नहीं चला सकता था ? उतनी केपेसिटी नहीं है । आपने 800 करोड़ रूपये खर्च कर दिये । आपने 800 करोड़ रूपये कितनी बिल्डिंगों में खर्च किये ? 721 स्कूल खोले गये हैं परंतु 251 बिल्डिंगों में 800 करोड़ रूपये खर्च किये गये हैं और वह भी नयी बिल्डिंग नहीं बनायी गयी है, पुरानी बिल्डिंगों को रिपेयर किया गया है । उनके जो शासकीय टीचर थे, जिनको ट्रेजरी से पेमेंट मिलता था । उनको कलेक्टर के अंडर में कर दिया गया है, उनके भविष्य को खराब कर दिया गया है । परमानेंट टीचर्स की व्यवस्था नहीं की गयी । आपने डी.एम.एफ. से उनको कांटेक्ट सर्विस में रखकर तन्ख्वाह देने का काम किया । शिक्षा विभाग का कंट्रोल खत्म हो गया । अब हमने निर्णय लिया है । मैं आत्मानंद स्कूल की आलोचना नहीं कर रहा हूं । आपने जिस प्रकार से वोट की राजनीति के कारण आत्मानंद स्कूलों को चलाने की कोशिश की, हमने निर्णय लिया है कि आने वाले समय में हम 5 सालों में 25,000 स्कूलों में एक सेक्शन, पहली से लेकर बारहवीं तक का इंग्लिश मीडियम में होगा । (मेजों की थपथपाहट) आपने तो 700 स्कूल खोले हैं, हम 25,000 स्कूलों में इंग्लिश में पढ़ाई शुरू करेंगे । कोई अलग से पैसा खर्च करने की आवश्यकता नहीं है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय मंत्री जी, नया-नया काम है । हमने सिखाया, अब आप अच्छे से सुधारिये । उसमें कौन सी दिक्कत है ? आप उसको और अच्छा करेंगे तो उसमें सबका नाम होगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप यह कर सकते थे ।

श्री कवासी लखमा :- कम समय था, 2-3 साल ही तो हुए थे । अभी 5 साल में आप भिड़ जाना, उसमें क्या है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप उधर बैठ गये हैं तो अभी 2 साल हुआ है ।

श्री कवासी लखमा :- 2 साल नहीं हुआ है क्या ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- दादी, आप बड़ी-बड़ी बात करते थे ।

श्री कवासी लखमा :- कोरोना में सब कैसे बंद करके बैठे थे, क्या आपने उसको नहीं देखा था ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हां, आप यह कोरोना के बारे में बोल रहे हैं न ।

नींद भी खुली न थी, हाय धूप ढ़ल गयी ।
आंच जब तलक उठे तो जिंदगी फिसल गयी ।

और तुम लूटे-लूटे वक्त से पिटे-पिटे ।

शराब का खूमार देते रहे । कारवां गुजर गया, गुबार देते रहे । (मेजों की थपथपाहट)

अब तो आप ऐसे ही बोलेंगे । 2 साल था, 3 साल था । अगर हम 5 साल में 25,000 स्कूलों के एक-एक सेक्शन को इंग्लिश मीडियम बना सकते हैं तो सरकारी स्कूलों में आप अंग्रेजी की पढ़ाई क्यों नहीं करवा सकते थे ? क्या आत्मानंद स्कूल पैसा खाने के लिये खोली गयी हैं ? क्या भ्रष्टाचार करने के लिये खोला है ? (शेम-शेम की आवाज)

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय मंत्री जी, आप इन्हीं चीजों को पहले 15 सालों में क्यों नहीं कर पाये ? आप 15 साल आप मंत्री थे, तब आप क्यों नहीं कर पाये?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय, ऐसा है अगर मैं 15 सालों का बखान करने लगूंगा न, मैं वर्ष 2013 से वर्ष 2018 तक शिक्षा मंत्री रहा हूं। 30 हजार स्कूलें थीं।

श्री कवासी लखमा :- फिर क्यों बंद हुआ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व में स्कूलें 60 हजार हो गयीं।

श्री विक्रम मंडावी :- बस्तर में कितने स्कूल बंद हुए थे?

श्री रामकुमार यादव :- 3 हजार स्कूलें बंद हुईं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- डॉ. रमन सिंह जी जब मुख्यमंत्री थे तो 15 साल में 30 हजार स्कूलें 60 हजार हो गयीं। 30 हजार स्कूलें हमने खोली हैं। (मेजों की थपथपाहट) डी.ए.वी. स्कूल किसने खोली? केन्द्रीय विद्यालय किसने खोला? उसके लिए सहायता किसने उपलब्ध करवाई? अंग्रेजी स्कूलें हमने भी खोली थीं।

श्री कवासी लखमा :- बस्तर में अभी भी 3 हजार स्कूलें बंद पड़ी हैं। हम लोग पिछले समय ले देकर स्कूल खोले थे। अभी 3 हजार स्कूलें अभी भी बंद हैं। आपके जमाने में आप लोगों ने किया है।

श्री रामकुमार यादव :- हमर मुख्यमंत्री जी खोलवाये अउ ओ समय ए मन बंद करा देवय।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- का बंद करवाये?

श्री रामकुमार यादव :- 3 हजार स्कूल बंद नहीं होये हे का? बंद होही ओला तुमन नहीं समझो। चालू ला समझथव।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म-शताब्दी वर्ष में हम हर कॉलेज में अटल यूथ सेंटर खोलेंगे, जिसमें छात्रों को संस्कृति, धर्म, व्यक्तित्व निर्माण का केन्द्र वह बनेगा। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, जब रामलला प्रतिष्ठित हुए उस समय 16 साल की उम्र में उन्होंने विश्वामित्र के साथ में रहकर ताड़का और सुबाहु जैसे राक्षस का वध कर धर्म की शिक्षा और संस्कारों की रक्षा की थी। हम हमारे युवाओं को भी धर्म से संस्कारित करेंगे। हम हमारे युवाओं को भी संस्कारों से संस्कारित करेंगे और

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

हमारे स्कूल और कॉलेज के बच्चों को जवाबदेह बनायेंगे। आपके जैसे गली-गली में अफीम, गांजा, चरस, कोकीन..।

श्री कवासी लखमा :- अभी भी चल रहा है। बंद हुआ है क्या?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इसके लिए हम कम्प्यूटर एज्यूकेशन एप तैयार करेंगे और कम्प्यूटर एज्यूकेशन एप तैयार करके छत्तीसगढ़ की संस्कृति, पुरातन भारतीय संस्कृति, आदर्श एवं पौराणिक पात्रों की कृतियों को व्यावहारिक स्तर पर धरातल पर उतारेंगे। बच्चे आजकल क्यों रास्ते से भटक रहे हैं? क्योंकि हमने उन्हें संस्कारों की शिक्षा नहीं दी। हमने उन्हें संस्कृति की शिक्षा नहीं दी।

श्री कवासी लखमा :- 15 साल भूल गये थे क्या?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- भारतीय इतिहास की शिक्षा नहीं दी। अपने पूर्वजों का सम्मान करने की शिक्षा नहीं दी और ये 21वीं सदी के औद्योगिक क्रांति के समय पर हम स्कूलों में उच्च शिक्षा में अनुसंधान प्रशिक्षण और नवाचार को अनिवार्य करेंगे, जिससे कि हमारे बच्चे नये-नये क्षेत्र में आगे बढ़ सकें। माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी हमारे बहुत से सदस्य बात कर रहे थे कि स्कूल भवनों का निर्माण करना चाहिए। मैं आपकी जानकारी के लिए नवीन प्राथमिक शाला के 16 भवन, प्राथमिक से माध्यमिक शाला के उन्नयन के 50 भवन, 50 स्कूलें, माध्यमिक से हाई स्कूल उन्नयन में 25 और हाई स्कूल से हायर सेकेण्डरी स्कूल 25, ये बजट में छपना रह गया है, परंतु इसकी स्वीकृति वित्त विभाग ने हमें दे दी है। (मेजों की थपथपाहट) ये स्कूलें खोली जायेंगी। हाई स्कूल भवन, इस वर्ग के 50 भवन और हायर सेकेण्डरी भवन इस वर्ग के 50 भवन। दादी, ये हम एक साल में कर रहे है। आपने इसे 50 साल में नहीं किया है। 5 साल में नहीं किया है। आने वाले 5 साल में और भी अलग-अलग काम होगा।

श्री कवासी लखमा :- उधर ही दे स्कूल दे रहे हो। मैं थोड़ा-थोड़ा इधर ही दिख रहे थे। इधर बस्तर तरफ तो स्कूल नहीं दिख रहा है। इतने दिन तक कहां थे। पहले सौंप देना था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी मैं आने वाला हूं। आपको बताउंगा। 57 हाई स्कूल, 39 हायर सेकेण्डरी स्कूल के नवीन भवन का निर्माण किया जायेगा। आपने कभी 5 साल में इतना स्कूल दिया है?

श्री कवासी लखमा :- चन्द्राकर साहब, जब हमारा एक वक्ता बोल रहा था तो क्यों कागज देख के पढ़ रहे हो, यहां जमा करो, वहां जमा करो। मंत्री जी को बोल दीजिए कि वहां जमा कर दे। अभी आपका मुंह चुप है। (हंसी) क्यों चुप है भाई ? सबको इसमें बोलिए।

श्री रामकुमार यादव :- मोर ददा पढ़े नहीं हे ओइसने बोलथे ओहा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लोक शिक्षण संचालनालय, समग्र शिक्षा, संस्कृत विद्या मंडलम्, मदरसा बोर्ड, शिक्षा आयोग, पाठ्य पुस्तक निगम, माध्यमिक शिक्षा मंडल के लिए एक प्रशासनिक भवन बिल्डिंग बनाई जाएगी और उसके माध्यम से सभी पूरे शिक्षा विभाग की व्यवस्थाओं को दुरूस्त किया जाएगा । अध्यक्ष महोदय, इन्होंने 5 साल में कुल मिलाकर 13 हजार पदों

पर भर्ती की है । हम इस साल में 33 हजार से ज्यादा पदों पर भर्ती करने वाले हैं । (मेजो की थपथपाहट) व्याख्याता के 2524 पद, शिक्षक के 8184 पद और सहायक शिक्षक के 22,341 पदों पर हम भर्ती करने वाले हैं । इतना आपने 5 सालों में नहीं किया है । मैं तो माननीय मुख्यमंत्री जी को, माननीय वित्त मंत्री जी को धन्यवाद् दूंगा कि उन्होंने 33 हजार शिक्षकों की भर्ती की परमीशन दी है ।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक छोटी से जानकारी । यह जितनी भर्ती कर रहे हैं, लोक सभा चुनाव के पहले करेंगे या बाद में करेंगे, इतना बता दीजिए ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमारी कोशिश है कि विज्ञापन लोक सभा चुनाव के पहले निकल जाए और भर्ती । और मैं आपको इस बात का विश्वास दिलाता हूं कि अगले शिक्षा सत्र में हमारे लगभग 75 प्रतिशत शिक्षकों की पूर्ति हो जाएगी और ऐसा कोई स्कूल नहीं रहेगा जिस स्कूल में एक भी शिक्षक नहीं हो । अगले शिक्षा सत्र तक एक भी स्कूल ऐसा नहीं बचेगा जिसमें एक भी शिक्षक न हो । ऐसी हमारी योजना है।

श्री कवासी लखमा :- नेता प्रतिपक्ष जी का शक सही साबित हुआ है । लोक सभा चुनाव के पहले पेपर में छपेगा लेकिन भर्ती नहीं होगी । जैसे कहा गया था कि 15 लाख मिलेगा, लेकिन बाद में अमित शाह ने कहा कि जुमला था । ये सिर्फ लेने के लिए हैं, देने का काम नही है । मोदी को दुनिया का बड़ा नेता बोलते हो, दो करोड़ भर्ती की बात की थी, लेकिन कहां भर्ती हुई ? अभी तुम भी उसी लाईन में जा रहे हो।

श्री धर्मजीत सिंह :- हमने आपसे कितनी बड़ी चुनौती ली है बताइए । आपका विज्ञापन छपता था कि छत्तीसगढ़ में बेरोजगार हैं ही नहीं । उसके बाद भी हम 33 हजार लोगों को रोजगार देने के लिए तैयार हैं ।

श्री कवासी लखमा :- देश का इतना बड़ा देता, दुनिया के लोग देख रहे हैं । हमें भी खुशी है कि देश का प्रधान मंत्री अच्छा है, अच्छा बोलता है, अच्छा वक्ता है, [xx] लेकिन दो करोड़ रोजगार कहां है, 15 लाख कहां है ?

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष जी, पिछली बार दादी भाला बड़ा तेज फेंककर दौड़े थे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- तुम्हारा [xx]

श्री धर्मजीत सिंह :- दो करोड़ में कितना शून्य रहता है । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय, वह चौकीदार के गोड़ के नीचे ले नीरव मोदी भाग गे, वो गम्मे नइ पाइस । अइसनहो चौकीदार । चौकीदार वइसने होही का । वो बैंक ला लूटकर भाग गे, [xx]

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, इन्होंने तो शिक्षकों की भर्ती में इतना बंटाढार किया कि विषय के शिक्षकों की भर्ती नहीं की, सब सहायक शिक्षकों की भर्ती कर ली । आज हमारे सदस्य

भाषण में बोल रहे थे कि साइंस के शिक्षक नहीं हैं, बायोलॉजी के शिक्षक नहीं हैं, गणित के शिक्षक नहीं हैं । अरे, आप लोग करते क्या थे । मंत्रिमंडल में बैठकर कैसा निर्णय लेते थे ?

श्री सुशांत शुक्ला :- सिर्फ बटोरते थे, भाई साहब ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, मेरा उद्‌देश्य प्रश्न करना नहीं है । आप बहुत वरिष्ठ हो, लगातार विधान सभा चुनाव जीतने वाले हो, इस बात की बधाई । लेकिन इसी विधान सभा में, हम भर्ती में क्यों लेट हुए, आरक्षण का लफड़ा था कि 32 परसेंट आदिवासी को देना है, 27 परसेंट देना है । ये यहां पर हाथ उठाकर बोले और राजयपाल के पास फाइल रूकवा दिए । उस फाइल को निकालो ना भाई ।

श्री सुशांत शुक्ला :- ये आरक्षण की व्यवस्था भी इन्हीं के दल के लोग लेकर गए थे । आरक्षण की विसंगति भी इन्हीं के दल के लोग हाईकोर्ट लेकर गए थे । वह भी बताइए दादी ।

श्री कवासी लखमा :- तुम अभी नए नए आए हो, तुमको पता नहीं है । वो हाई कोर्ट का जमाना पहले का है, हमारे समय 2012-13 का है । तुम उस समय वार्ड मेम्बर थे या नहीं, यह पता नहीं ।

श्री सुशांत शुक्ला :- कुणाल शुक्ला और खांडे जी किस दल के थे, यह भी स्पष्ट कर दीजिए ना, जो लेकर गए थे ।

श्री कवासी लखमा :- मेरा राजनीतिक जीवन तुम्हारी उम्र के बराबर है ।

श्री सुशांत शुक्ला :- असत्य बोल रहे हैं ना, आप सदन में असत्य बोल रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप उधर देखकर बात करते हैं, आपको कुछ बात करना है तो इधर देखकर कीजिए । अब मंत्री जी जवाब देने खड़े है ।

श्री कवासी लखमा :- सर, भूल गया। मैं इतना ही निवेदन करना चाहता हूं, ज्यादा व्यवधान नहीं करूंगा। अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मेरा यही निवेदन है। इसी विधान सभा में सब लोगों ने हाथ उठाकर सर्व सम्मति से पास करके राज्यपाल के पास फाईल भेजा है, उसी को निकालकर चालू कर देना। हम लोग मानेंगे कि यह सरकार अच्छी चल रही है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए बैठ जाईए।

श्री अजय चंद्राकर :- दादी, सुप्रीम कोर्ट जो बोला है, उसको मानेंगे। सुप्रीम कोर्ट ने जितने का परमिशन दिया है, उसमें भर्ती करेंगे, चिंता मत करिए, कोई नहीं छूटेगा।

अध्यक्ष महोदय :- दादी को टोकिए मत। मंत्री जी पढ़िए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन लोगों ने कैसा मजाक किया। इनको मालूम था, 57 प्रतिशत आरक्षण नहीं हो सकता। इनको मालूम था कि हमारे पास पैसा नहीं है।

श्री रामकुमार यादव :- कर्नाटक में 68 प्रतिशत है। कर्नाटक में जा के देखो, 68 प्रतिशत आरक्षण हे। ये सिर्फ छत्तीसगढ़ में नई देना हे करके आप मन अड़ंगा डाले हो, आप मन वहां देख सकथव, वहां ज्यादा आरक्षण हे। (व्यवधान)

श्री विक्रम मंडावी :- राजस्थान में भी हुआ।

श्री कवासी लखमा :- हमारा 32 प्रतिशत देने का राज्यपाल ने किया है। (व्यवधान) हमारे राज्यपाल बड़े हैं, इसलिए नहीं गए। आपकी पार्टी का राज्यपाल है, जाकर पास कराईए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- 57 नहीं 76 प्रतिशत। क्या मजाक है। हाईकोर्ट में आरक्षण का केस चल रहा है। इनका खजाना खाली है, लोन पर लोन ले रहे हैं। इनको यह मालूम है कि कैसे भी करिए, खाली जनता को भुलावे में रखना है, भर्ती तो करना नहीं है। हमको बच्चों के भविष्य की चिंता नहीं है। आरक्षण के नाम पर छत्तीसगढ़ के नौजवानों के साथ अगर किसी ने विश्वासघात किया है तो आपकी पार्टी कांग्रेस पार्टी ने किया है, भूपेश बघेल की सरकार ने किया है। (शेम-शेम की आवाज) माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सहायक शिक्षक विज्ञान के 11510 पद भर रहे हैं, सहायक शिक्षक कला के 7619 पद भर रहे हैं, हम सहायक शिक्षक प्रयोगशाला के 3212 पद भर रहे हैं, हम पूर्व माध्यमिक शाला के लिए शिक्षा भाषा समूह के 2186 पद भर रहे हैं, हम विज्ञान समूह के 2685 पद भर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) आज पूरे छत्तीसगढ़ का नौजवान खुश होगा कि छत्तीसगढ़ की विधान सभा में यह घोषणा की गयी है कि विज्ञान के भी शिक्षक के पद भरे जाएंगे। प्रयोगशाला के शिक्षक के पद भी भरे जाएंगे। पूर्व माध्यमिक शाला के लिए भाषा समूह के पद भी भरे जाएंगे। कला समूह के पद भी भरे जाएंगे। वे बेचारे बच्चे ग्रेजवेशन कर साईंस में, मैथेमैटिक्स में, कैमेस्ट्री में...।

श्री जनकराम ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहूंगा, क्योंकि हेल्थ इज वेल्थ बोलते हैं, स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है। इसमें व्यायाम शिक्षक का भी पद भरेंगे क्या ? मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- निश्चित रूप से। हमने निर्णय लिया है कि हर स्कूल में पहला पीरयड आधा घंटा का योग का होगा, प्राणायाम का होगा। आध्यात्मिक शिक्षा का होगा, धार्मिक शिक्षा का होगा। (मेजों की थपथपाहट)

(श्री कवासी लखमा, सदस्य द्वारा बैठे-बैठे बोलने पर)

अध्यक्ष महोदय :- बैठे-बैठे नहीं। आपको बोलना है तो अनुमति लेकर, खड़े होकर बोलिए। यह आदत छोड़िए।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, बाकी लोग तो योगा करेंगे। आपका, मेरा इन दो लोगों का क्या होगा ? इन लोग योगा करेंगे या नहीं करेंगे। योगा नहीं होगा तो टिकट नहीं मिलेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको और बता दूं, अभी आने वाले समय पर वोकेशनल एजुकेशन होगा। हम 164 पद कृषि शिक्षा के भी भर रहे हैं। कला समूह के 1205 पद भर रहे हैं, व्यायाम पी.टी.आई. के 108 पद भर रहे हैं। लंबे समय से नौजवान इंतजार में थे, 1844 पद ग्रंथपाल के लिए भर रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री ब्यास कश्यप :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कृषि शिक्षा की बात आई है, छत्तीसगढ़ में आपके शासनकाल के पहले से ही यहां कृषि महाविद्यालय बहुत सारे जगह पर खुल गये हैं। बेरोजगारों की संख्या, कृषि स्नातक और स्नातकोत्तर करके बहुत सारे बेरोजगार युवक हैं। 100, 150 पद से नहीं होगा, मैं चाहूंगा कृपा करके उन पदों की संख्या बढ़ाई जाए। यह कृषि प्रधान राज्य है, उनको भी लाभ हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा समग्र शिक्षा के अंतर्गत भी हम 1086 पद भरने वाले हैं, जिसमें प्राचार्य के 37 पद, प्रधान पाठक का 1 पद, अधीक्षक का 69 पद, व्याख्याता के 507 पद, उच्च श्रेणी शिक्षक के 24 पद, व्यायाम शिक्षक के 70 पद, सहायक शिक्षक विज्ञान के 111 पद, लेखापाल के 29 पद, ग्रंथपाल के 8 पद, सहायक ग्रेड 03 के लिए 41 पद, भृत्य के 54 पद, इसी तरह लेखापाल के 10 पद, पार्ट टाइम शिक्षक के 30 पद और मुख्य रसोइया के 20 पद, सहायक स्टाफ चौकीदार के 20 पद, स्वीपर (कलेक्टर दर पर) 38 पद, स्वीपर (मानदेय पर) के 4 पद हैं। अब आप इससे समझ लीजिए कि हम छत्तीसगढ़ की शिक्षा को किस ऊंचाइयों तक ले जाने वाले हैं। हम सभी खाली पदों को भरकर स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था को अच्छी बनाने वाले हैं। आपने 5 साल में शिक्षकों की पदोन्नति नहीं की। उन्हें सहायक शिक्षक से शिक्षक बनाना है, शिक्षक से लेक्चरर बनाना है और लेक्चरर से प्राचार्य बनाना है। एक साल के अंदर शिक्षा विभाग में ऐसा कोई नहीं बचेगा, जो योग्यता रखता हो और उसका प्रमोशन नहीं हुआ हो। हम 1 साल में सब कमियों को दूर कर देंगे। मुझे मालूम है, धर्मजीत जी और बाकी विधायक बोल रहे थे कि दिन भर यदि विधायकों के पास भीड़ होती है तो उन 20 लोगों में से 15 लोग शिक्षा विभाग के होते हैं। क्यों होते हैं ? क्योंकि हमारी वेतन विसंगति है। क्यों विसंगति है? क्योंकि हमारा प्रमोशन नहीं हुआ। मेरा तो लगभग सुबह 10 बजे से लेकर रात को 2 बजे तक एक ही काम है - शिक्षकों से मिलना। मैंने जब शिक्षा विभाग से जानकारी मांगी तो मुझे ज्ञात हुआ कि बड़ी संख्या में शिक्षकों की पदोन्नति नहीं हुई है, उनके वेतनमान की विसंगति दूर नहीं हुई है। हम 1 साल के अंदर उसको पूरी तरह से दूर करेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लंबे समय से शिक्षकों का प्रमोशन नहीं होने का जिम्मेदार इनकी 15 साल की सरकार है। अभी ऊपर से मोदी जी और अमित शाह जी देख रहे हैं तो थोड़ा ठीक हो गये हैं। पहले तो 15 साल तक यह कुछ नहीं करते थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे छत्तीसगढ़ के बच्चों के लिए I.T. और लाइब्रेरी के माध्यम से सभी परीक्षाओं की तैयारी के लिए हमारी पं. दीनदयाल उपाध्याय सेंट्रल लाइब्रेरी की स्थापना शंकर नगर में की गई है। वर्तमान में उसमें 4 हजार बच्चे पढ़ते हैं। हम उस लाइब्रेरी को भी अपग्रेड करेंगे। अभी तक उसमें पद स्वीकृत नहीं हुए थे, उसके लिए 18 नवीन पद स्वीकृत किये गये हैं। जिसके लिए बजट में 1 करोड़ रूपये की व्यवस्था की गई है। हमारी सरकार डिजीटल और A.I. (Artificial Intelligence) सिस्टम के माध्यम पूरी शिक्षा व्यवस्था को दुरूस्त करेगी। पूरे छत्तीसगढ़ में बच्चों की संख्या 50 लाख से ऊपर है और स्कूलों की संख्या 50 हजार से ऊपर है। उस पूरे सिस्टम की मॉनिटरिंग करने के लिए हम एक ऐसा केन्द्र बनाएंगे, जिसमें real time मॉनिटरिंग होगी। जिसमें कम्प्यूटर में 50 लोग बैठकर बच्चों, शिक्षकों और स्कूलों की स्थिति की मॉनिटरिंग करेंगे। आज तो हमें यह मालूम ही नहीं होता है कि कौन कहां पर पदस्थ है। हमारे पास उनके real time data हों, इसके लिए एक विद्या ऑपरेटिंग सिस्टम बनाया जाएगा, जिसमें 50 कम्प्यूटर लगे होंगे। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिला सूरजपुर एवं गरियाबंद में जिला प्रशिक्षण संस्थान (DIET) की स्थापना की जाएगी। जिला कोंडागांव, सुकमा, बलरामपुर, विकासखण्ड-कुसमी में DIET को उन्नत कर जिला प्रशिक्षण संस्थान के रूप में प्रावधान किया जाएगा। इसके लिए 3 करोड़ रूपये की व्यवस्था की गई है।

श्री अजय चंद्राकर :- दादी, आप ताली बजाइये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने 3 साल पहले एक तुगलकी ऑर्डर जारी कर दिया था कि जिनको तृतीय श्रेणी में बाबू के पद पर भर्ती होना है उनको टाइपिंग परीक्षा पास होना जरूरी है। परंतु पिछले 3 सालों से छत्तीसगढ़ में टाइपिंग परीक्षा नहीं हुई है। टाइपिंग परीक्षा पास किये बिना बच्चों की भर्ती नहीं हो रही थी। हमने यह तय किया है कि अब हर साल टाइपिंग की परीक्षा आयोजित होगी और उसमें लगभग 50 हजार बच्चे शामिल होंगे। हम 27 फरवरी से इसमें ऑनलाइन आवेदन लेना शुरू कर देंगे। जिससे यहां के बच्चों को उसमें कोई तकलीफ न हो।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले बताया कि प्रथम कालखण्ड योग, नैतिक शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा का होगा। बच्चे घर से अपनी परेशानियां लेकर आते हैं, जिसके कारण स्कूल में उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता है। यदि वह प्राणायाम और योगा करेंगे और स्कूलों में आध्यात्मिक शिक्षा दी जाएगी तो वह स्कूल में शांत मन से पढ़ पाएंगे। हर शनिवार को हर स्कूल में 1 घण्टे के खेल का आयोजन होगा। पहले जब खेल की सामग्रियां खरीदी जाती थीं तो वह खेल की सामग्रियां अखबारों में छपती थीं कि फुटबॉल फूटा हुआ है, बैडमिंटन टूटा हुआ है, बैट तड़का हुआ है, हॉकी जो है, वह मालूम नहीं कि वह हॉकी है या कुटेला है । ऐसी सामग्री प्रदाय की गई । अब हमारे यहां के बच्चे अग्निवीर बनें, हमारे यहां के बच्चे सैनिक बने, हमारे यहां के बच्चे पुलिस में भर्ती हों, इसके लिए हम स्कूलों में

व्यवस्था करेंगे । जब हम बचपन में थे तो लोहे के बार होते थे, जब हम बचपन में थे तो उसमें उल्टा लटकते थे । हमारे यहां छत्तीसगढ़ के बच्चों का कंधा कमजोर होने के कारण पुलिस में, अग्निवीर नहीं बन पाते हैं । अब हमारे जो उच्च शिक्षा के केन्द्र हैं, हायर सेकेण्डरी स्कूल हैं, वे बच्चों में देशभक्ति की भावना पैदा करें । अधिक से अधिक बच्चे एन.सी.सी. में जाएं, अधिक से अधिक बच्चे एन.एस.एस. में जाएं । अधिक से अधिक बच्चे स्काउट गाईड में, रेड क्रॉस में जाएं । कोई न कोई बच्चा इनमें से किसी में भी रहे, जिससे देशभक्ति की भावना और देश के प्रति यूनिफार्म के लिए जो सम्मान पैदा होता है, वह सम्मान पैदा हो सके । दादी, मैं जो बातें कर रहा हूं, वह आपको बोर लग सकती है, परन्तु यह आने वाले समय में हमारे छत्तीसगढ़ की नींव रखने का काम हो रहा है ।

श्री कवासी लखमा :- जल्दी खतम करो, बोर तो लग रहा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, हमारे बहुत से विधायक भाषण दे रहे थे कि स्कूल शिक्षा छत्तीसगढ़ की नींव है और जब नींव बनाते हैं, मकान ऊपर उठता है तो हमें अच्छा लगता है । जब नींव में समय लगता है तो हमको बोरियत लगती है, परन्तु यह जो एक साल का निर्णय है, विष्णु देव सरकार का निर्णय है कि छत्तीसगढ़ के बच्चों के भविष्य को बनाया जाएगा, उसमें एक मजबूत भवन खड़ा करेगा । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, हम यह भी कोशिश करेंगे, माननीय मुख्यमंत्री जी यहां पर बैठे हुए हैं । हमारे यहां बड़े-बड़े उद्योग है, बड़े-बड़े सार्वजनिक उपक्रम हैं, वह छत्तीसगढ़ से पैसा कमाते हैं, परन्तु छत्तीसगढ़ के विकास में उनका जो योगदान होना चाहिए, वह योगदान नहीं होता है । आने वाले समय में उनकी जो पब्लिक रिस्पांसिबिलिटी है, उसके अंतर्गत हम उनसे सहयोग मांगेंगे कि उनके जिले में जो फैक्ट्री है, उनके संभाग में जो फैक्ट्री है, उस फैक्ट्री के माध्यम से वे 100 स्कूलों को, 200 स्कूलों को, 500 स्कूलों को गोद लें और गोद लेकर वहां के स्कूलों की जो व्यवस्थाओं को सुधारें । मैं चाहूंगा कि सभी विधायकों को इसमें सहयोग करना होगा। जो सी.एस.आर. मद का पैसा होता है, वह पैसा हमारे यहां खर्च नहीं होता है। उस पैसे के माध्यम से हम हमारी शिक्षा व्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं, स्कूलों एवं कॉलेजों को मजबूत कर सकते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, जो हमारे यहां अनुसूचित जाति के छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है, उस छात्रवृत्ति का नाम हम गुरू घासीदास छात्रवृत्ति करने की घोषणा करते हैं (मेजों की थपथपाहट) अनुसूचित जनजाति के छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है, उसको गुंडाधूर छात्र योजना के नाम से हम घोषित करते हैं । (मेजों की थपथपाहट) हमारी जो पाठ्य पुस्तकें हैं, वह अभी तक 10वीं तक के बच्चों को मुफ्त में दी जाती है । आने वाले समय में हम 11वीं और 12वीं के बच्चों को भी पाठ्यपुस्तकें मुफ्त में उपलब्ध करवाएंगे ।

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय, साईकिल वितरण । अभी तक साईकिल वितरण सिर्फ गरीबी रेखा से नीचे और अनुसूचित जाति, जनजाति की लड़कियों को साईकिल दी जाती है, परन्तु आने वाले समय में छात्राओं में आपस में भेदभाव नहीं हों, इसलिए सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली सभी छात्राओं को हम साईकिल उपलब्ध करवाएंगे । (मेजों की थपथपाहट) अभी हमारे कुछ सदस्य बोल रहे थे, सराईपाली की विधायक बोल रही थीं कि प्रायमरी स्कूल में बच्चे नंगे पैर जाते हैं, पन्नी में किताबें लेकर जाते हैं । हमने यह भी निर्णय लिया है कि अभी हम प्रायमरी स्कूल के बच्चों को मुफ्त में जूता मोजा और स्कूल बैग उपलब्ध करवाएंगे (मेजों की थपथपाहट) क्योंकि पिछली सरकार बजट का खजाना खाली करके गई है । हमारी बाकी योजनाओं को पूरा करने में बहुत पैसा लग रहा है, परन्तु आने वाले समय में हम मीडिल स्कूल के बच्चों को भी जूता-मोजा और उनको बैग उपलब्ध करवाएंगे, जिससे उनको भी लगे कि हम अच्छे स्कूल में पढ़ते हैं ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, अगर जूता-मोजा की व्यवस्था करते हो तो अच्छी बात है, लेकिन तेंदूपत्ता के समय जो जूता दिया गया था, वह किसी को 12 नम्बर वाले को 10 नम्बर का जूता दिया गया था । आपकी योजना अच्छी थी, लेकिन वे बांटने वाले लोग 10 नम्बर वाले तो 8 नम्बर का जूता और 8 नम्बर वाले को 12 नम्बर का जूता दे दिए थे । ऐसा नहीं होना चाहिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्कूल शिक्षा विभाग में बोलने के लिए तो बहुत कुछ है, पर स्कूल शिक्षा विभाग में हमारी यह कोशिश होगी कि आने वाले समय में हमारा स्कूल शिक्षा विभाग बच्चों के भविष्य को संवारे, जब हमारे अजय चन्द्राकर जी बोल रहे थे। हमारा प्रायमरी स्कूल से मीडिल स्कूल में ड्रापआऊट बहुत है। मीडिल स्कूल से हाई स्कूल में ड्रापआऊ बहुत है। हाई स्कूल से हायर सेकेण्डरी स्कूल में ड्रापआऊट बहुत है। हाई स्कूल से कालेज में तो लगभग 25 प्रतिशत बच्चे ही पढ़ते हैं। हमारी यह कोशिश होगी कि आने वाले समय में भारत का जो मानक है, उस मानक स्तर तक पहुंच पाये और हम पांच साल बाद अपनी उपलब्धि आपके बीच बता पाये। मोदी जी के बताय रस्ता ला अपनाना हे, छत्तीसगढ़ ला ज्ञान-गुरू अउ भारत ला विश्व गुरू बनाना हे। इही संकल्प के साथ मैं स्कूल शिक्षा विभाग के बजट ला इहां प्रस्तुत करत हंव। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास उच्च शिक्षा विभाग भी है।

"हम दरियां हैं, हमें अपना हुनर मालूम है

जिस तरफ भी चल पड़ेंगे, रास्ता हो जायेगा।"

आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है कि हम कैसे करेंगे, क्या करेंगे, कहां से करेंगे आपको इसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम जितनी बातें कहते हैं, करते हैं। हमने अभी तक मोदी जी की गारण्टी के तहत सब करके दिखाया है। चाहे वह 18 लाख घरों का मामला हो, चाहे वह नारी वंदन का मामला हो, चाहे 2 साल के बोनस देने का मामला हो, चाहे वह 500 रूपये मे गैस सिलेण्डर देने का

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिए नहीं

मामला हो, चाहे धान को 21 सौ रूपये, 31 सौ रूपये में खरीदने का मामला हो, हमने किया है। माननीय नेता जी, आप पांच साल में जो नहीं कर पाये, विष्णुदेव साय की सरकार ने दो महीने में करके दिखा दिया है। (मेजों की थपथपाहट) हम अभी जो कह रहे हैं, हम उसको भी करके दिखायेंगे।

अध्यक्ष महोदय, हमारे बहुत से सदस्य विषय खोलने बात कर रहे थे। स्नातक में 15 कालेजों में विषय खोले जायेंगे। शासकीय महाविद्यालय राजपुर, भैरमगढ़, कन्या महाविद्यालय बेमेतरा, कन्या महाविद्यालय दुर्ग, कन्या महाविद्यालय जामुल, शासकीय महाविद्यालय ठेलकाडीह, शासकीय महाविद्यालय पिपरिया, शासकीय महाविद्यालय गुढियारी, शासकीय महाविद्यालय लोरमी, डॉ. राधाबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शासकीय महाविद्यालय तखतपुर, शासकीय महाविद्यालय बेरला, शासकीय महाविद्यालय भिलाई, शासकीय महाविद्यालय भाटागांव एवं शासकीय महाविद्यालय जैजेपुर में स्नातक स्तर पर नवीन विषय खोलने का हमने निर्णय लिया है। इसके लिए बजट में 130 लाख रूपये रखे गये हैं।

श्री लखेश्वर बघेल :- आदरणीय मंत्री जी, बकावंड भी जोड़ दीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, शासकीय महाविद्यालय भाटागांव, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दंतेवाड़ा, शासकीय महाविद्यालय सीतापुर, शासकीय महाविद्यालय साल्हेवारा, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चिरमिरी, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़, शासकीय महाविद्यालय भैसमा, शासकीय महाविद्यालय पामगढ़ में स्नातकोत्तर की कक्षाएं खोली जायेंगी। हमने इन सब कक्षाओं के लिए बजट में व्यवस्था की है।

श्री लखेश्वर बघेल :- बकावंड का भी कर दीजिये। बहुत दिनों से मांग है, मेरा निवेदन है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, शासकीय महाविद्यालय राजपुर, शासकीय महाविद्यालय अंतागढ़, शासकीय महाविद्यालय कुनकुरी, शासकीय महाविद्यालय विश्रामपुर, शासकीय महाविद्यालय केशकाल, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामानुजगंज, शासकीय महाविद्यालय सनावल, शासकीय महाविद्यालय खड़गंवा, शासकीय कन्या महाविद्यालय कवर्धा, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग, शासकीय महाविद्यालय जामुल, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय राजनांदगांव, शासकीय महाविद्यालय आमदी, शासकीय महाविद्यालय लोरमी और शासकीय महाविद्यालय भिलाई, इस प्रकार लगभग 38 महाविद्यालय, आपका (श्री लखेश्वर बघेल सदस्य) भी हो जायेगा। आप निश्चिंत रहिये। बाकी जो सदस्य के रह गये हैं हम अगले अनुपूरक में, क्योंकि हम उच्च शिक्षा को महत्व देना चाहते हैं, ताकि उसके माध्यम से हमारे बच्चें बाहर ना जायें। इसके लिए हमारी कोशिश है कि इस वर्ष के बजट में जितने विधायकों ने लिखकर दिया था, हमने कोशिश की कि एडजस्ट कर सकें। परन्तु जिन विधायकों का एडजस्ट नहीं हुआ है, उनका आने वाले समय में हम यह कोशिश करेंगे।

श्री लखेश्वर बघेल :- बकावंड वाली घोषणा हुई थी, स्वीकृत हुआ था। लेकिन किसी कारणवश चालू नहीं हो पाया था। मेरा निवेदन है कि इसी शिक्षा सत्र में हो जाये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, शासकीय महाविद्यालय के नवीन भवनों के लिए भी शासकीय महाविद्यालय गुढ़ियारी जिला रायपुर, शासकीय महाविद्यालय नवागांव सेक्टर-28 नवा रायपुर, शासकीय महाविद्यालय विश्रामपुरी, शासकीय महाविद्यालय माकड़ी, शासकीय महाविद्यालय जावंगा गीदम जिला-दन्तेवाड़ा, शासकीय महाविद्यालय आवापल्ली जिला-बीजापुर, शासकीय महाविद्यालय लखनपुर, जिला सरगुजा, शासकीय महाविद्यालय रघुनाथपुर, जिला बलरामपुर, रामानुजगंज शासकीय महाविद्यालय छोटे डोंगर, जिला नारायणपुर, हैं नारायणपुर के ? शासकीय महाविद्यालय चिल्हाटी, शासकीय महाविद्यालय रामपुर, जिला कोरबा, शासकीय टी.सी.एल. स्नातकोत्तर महाविद्यालय जांजगीर जिला, जांजगीर चांपा, इस प्रकार 12 महाविद्यालयों के भवन निर्माण के लिये हमने 12 करोड़ की व्यवस्था इस बजट में की है । (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, 9 महाविद्यालयों में अतिरिक्त कक्ष के निर्माण के लिये भी 4 करोड़ की व्यवस्था की गई है । इसमें स्नातकोत्तर महाविद्यालय बालोद, शासकीय महाविद्यालय भखारा, शासकीय महाविद्यालय नगरी, धमतरी, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर, शासकीय दूधाधारी महिला महाविद्यालय रायपुर, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय अंबिकापुर, शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर, शासकीय महाविद्यालय जिला बलरामपुर, शासकीय महाविद्यालय भोपालपट्नम, जिला बीजापुर, इस प्रकार 9 महाविद्यालयों में अतिरिक्त भवन के निर्माण के लिये भी 4 करोड़ रूपये की व्यवस्था हमने की है । अध्यक्ष महोदय, हमारे बहुत से विधायक छात्रावास और बाऊंड्रीवाल की मांग कर रहे थे । शासकीय महाविद्यालय दुर्गकोंदल, जिला कांकेर और शासकीय महाविद्यालय भोपालपट्नम, जिला बीजापुर इन दो महाविद्यालयों में छात्रावास भवन के निर्माण करने का भी हमने निर्णय लिया है । शासकीय महाविद्यालय सरिया, शासकीय शहीद वीरनारायण सिंह महाविद्यालय बिलाईगढ़, सारंगढ़, शासकीय नवीन महाविद्यालय कोंटा, जिला सुकमा..।

श्री रामकुमार यादव :- मंत्री जी, पिरीत में बहुत जरूरी है साहब । हाता ला कर दो । गरीब हिम्मत करके खड़ा होईच गे त ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हो जाही न चिंता मत कर ।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन वोती हव, लेकिन अपन मानथन । बड़का दिल वाला आदमी अव । गरीब खड़ा होगे हे । अतका बड़ आदमी अव । एक ठन ला नई कर सकथव । बताओ तो ? अतके बड़े सदन ए । बड़े दिल वाला अव, कर दो सर ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- रामकुमार यादव जी, जो मांग कर रहे हैं, हम उसको पूरा करेंगे । (मेजों की थपथपाहट)

श्री रामकुमार यादव :- धन्यवाद ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से 3 महाविद्यालयों में बाऊंड्रीवॉल, 50 महाविद्यालयों में शौचालय निर्माण के लिये हमने इस बजट में प्रोविजन किया है । (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, शैक्षणिक संस्थान जो है, हमारा जो जी.ई.आर. है, अभी जो अजय चन्द्राकर जी बात कर रहे थे, हमारा जी.ई.आर. अभी हायर एजूकेशन में 19.6 है और पूरे देश का जो जी.ई.आर. है, वह 27.1 है, हमारी कोशिश होगी कि अगले पांच सालों में हमारे छत्तीसगढ़ के उच्च शिक्षा का जो जी.ई.आर. है, वह भारत के जी.ई.आर. के बराबर हो सके । यह हमारी कोशिश होगी और हम इसको करने की कोशिश करेंगे । अध्यक्ष महोदय, देश की उच्च शिक्षा के बराबर छत्तीसगढ़ की भी उच्च शिक्षा व्यवस्था होगी । यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि वर्ष 2020 में नई शिक्षा नीति आ गई, परन्तु सामने बैठे हुये लोगों ने छत्तीसगढ़ के बच्चों को दोयम दर्जे का माना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति को यहां पर एडाप्ट नहीं किये । आज हम इस बात की घोषणा करते हैं कि अगले शिक्षा सत्र से राष्ट्रीय शिक्षा नीति यहां पर लागू होगी । (मेजों की थपथपाहट) देश के उच्च शिक्षा संस्थानों के बराबर हमारे शिक्षा संस्थान पहुंचेंगे, मैं इस बात की यहां पर घोषणा करता हूँ । अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से नैतिक शिक्षा और स्काऊट गाईड, हमारी एन.सी.सी. रेड क्रास, एन.एस.एस. इसको सभी शासकीय, अशासकीय कॉलेजों में लागू किया जायेगा । (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, बस्तर और सरगुजा के सभी कॉलेजों में रक्षा विभाग से बात करके एन.सी.सी. की सीट कम से कम 100-100 रहे । आप इसके लिये विशेष प्रयास कीजिए । बस्तर, सरगुजा, जशपुर के सभी कालेजों में एन.सी.सी. की सीटें हों ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, घोष्णा ये करते हैं, काम हमको करना पड़ता है । जो कालेज में ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने वाले बच्चे हैं, हमारे यहां छत्तीसगढ़ ट्रैवल्स की बस नहीं चलती है, इसलिये उन बच्चों को जो ग्रामीण क्षेत्रों में कालेज में पढ़ते हैं, उनको हम 6 हजार रूपये साल का ट्रैवल्स एलाऊन्स देंगे, जिससे कि आने जाने में पेट्रोल के लिये दिक्कत न हो । माननीय अध्यक्ष महोदय, केन्द्र की सरकार उच्च शिक्षा को लगातार महत्व दे रही है, उसके तहत पी.एम. उषा योजना है, जिसका नाम पहले रूसा योजना था, उसके अंतर्गत हमारे बस्तर के महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय को 100 करोड़ मिलने की संभावना है । (मेजों की थपथपाहट

समय :
7.00 बजे

यह बस्तर के बारे में पूछ रहे थे। इसके माध्यम से उसका डेव्हलपमेंट होगा। रविशंकर विश्वविद्यालय को 30 करोड़ रूपये मिलने की संभावना है और सरगुजा विश्वविद्यालय को 20 करोड़ रूपये मिलने की संभावना है। (मेजों की थपथपाहट) हमारे छत्तीसगढ़ के 10 कॉलेजों को, क्योंकि मैं अभी

दिल्ली गया था, हमारे जो केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री हैं, उनके साथ मेरी मीटिंग हुई और जो पोर्टल बंद हो गये थे, उन्होंने उसको खोलने के निर्देश दिये और उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के बस्तर और सरगुजा के विकास के लिये उच्च शिक्षा के विकास में जो भी आवश्यकता होगी, हम सहयोग करेंगे (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, अभी तक हमारे यहां के बच्चों को अगर बैंक की परीक्षा देनी होती है, रेलवे की परीक्षा देनी होती है, सी.ए. की कोचिंग लेनी होती है, पी.ई.टी., पी.एम.टी. के साथ अन्य कॉम्पिटिटिव एग्जाम की कोचिंग लेनी होती है, इसके लिये हम सभी महाविद्यालयों में कोचिंग की व्यवस्था भी करेंगे। जिससे हमारे यहां के बच्चे किसी भी कॉम्पिटिशन एग्जाम के लिये पैसों के अभाव में कोचिंग से वंचित न हो और सरकार इसके लिये व्यवस्था करेगी। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, दादी, हमने शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय बस्तर के अंतर्गत 20 नवीन शिक्षण विभाग और 33 नवीन स्नातक, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का निर्णय लिया है। (मेजों की थपथपाहट) क्या बस्तर के लोगों के लिये भी आपकी टेबल नहीं बजती, ताली नहीं बजती ? बताईये।

श्री कवासी लखमा :- सुकमा भी है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बस्तर में सुकमा भी आयेगा।

श्री कवासी लखमा :- चलिये टेबल बजा देता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, हम शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय में एक साथ 200 शैक्षणिक एवं 165 अशैक्षणिक, कुल 365 पदों को भरने की अनुमति दे रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) आपने तो भले दुर्भावनापूर्वक उसका नाम बदल दिया। वह बलिराम जी के नाम पर था, आपने उसका नाम शहीद महेन्द्र कर्मा कर दिया। हम यह दुर्भावना नहीं रखते। वह चाहे महेन्द्र कर्मा जी के नाम पर हो, वह चाहे बलिराम कश्यप जी के नाम पर हो, उसमें पढ़ने वाले हमारे छत्तीसगढ़ के बच्चे हैं, उन बच्चों के साथ खिलवाड़ नहीं होना चाहिए । (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ की तत्कालीन सरकार के जमाने में बस्तर विश्वविद्यालय को सिर्फ 04 करोड़ रूपये अनुदान मिलता था, अब हम हर साल 10 करोड़ रूपये अनुदान देंगे, यह हमने निर्णय लिया है (मेजों की थपथपाहट) । हमने जो कहा न कि बस्तर और सरगुजा को फोकस करके पूरा बजट बनाया गया है, वह यही है।

श्री कवासी लखमा :- उनको राशि मिले तब तो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप चिंता मत करिये। मैं भी यही हूं और आप भी यहीं हैं। हम रविशंकर विश्वविद्यालय में एक स्टार्ट-अप इनोवेशन एवं रिसर्च, अपग्रेडेशन ऑफ सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन फेसिलिटी के लिये वहां पर एक अच्छी प्रयोगशाला बनायेंगे। जिस प्रयोगशाला के माध्यम से हमारे छत्तीसगढ़ के बच्चों को जो नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, उसके बारे में जानकारी मिल सके। उसके साथ में छत्तीसगढ़ में फॉरेंसिक विज्ञान के लिये कोई पढ़ाई नहीं होती है। इसलिये छत्तीसगढ़ के रविशंकर

विश्वविद्यालय में फॉरेंसिक विज्ञान अध्ययन शाला खोली जायेगी। (मेजों की थपथपाहट) अभी तक रविशंकर विश्वविद्यालय में यू.टी.डी. में वाणिजय विषय की पढ़ाई नहीं होती है, हमने उसके लिये भी पद स्वीकृत किये हैं और वह भी खोला जायेगा। (मेजों की थपथपाहट) रविशंकर विश्वविद्यालय को जो वार्षिक अनुदान 39 करोड़ रूपये मिलता था, अब वह 44 करोड़ रूपये दिया जायेगा। (मेजों की थपथपाहट) बिलासपुर में जो अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय का वार्षिक अनुदान 2 करोड़ 27 लाख रूपये था, अब उसको बढ़ाकर 10 करोड़ रूपये कर दिया गया है (मेजों की थपथपाहट)। हम हेमचंद विश्वविद्यालय दुर्ग में 10 अशैक्षणिक पदों के सृजन के लिये 50 लाख रूपये स्वीकृत कर रहे हैं। विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों में रिक्त प्राध्यापक के 595 पद, सहायक प्राध्यापक के 2150 पद, क्रीडा अधिकारी के 130 पद, ग्रंथपाल के 130 पद, तृतीय श्रेणी के 350 पद, चतुर्थ श्रेणी के 930 पद, इस प्रकार से हम लगभग 02 हजार पदों को विश्वविद्यालय में भरने की अनुमति दे रहे हैं। हमारे अजय चन्द्राकर जी हमेशा इस बात की चिंता करते हैं कि जो उच्च शिक्षा है, वह उच्च शिक्षा कोई एक इंस्टीट्यूशन, एक कॉलेज नहीं होती, एक विश्वविद्यालय नहीं होती, वह पीढ़ियों का निर्माण करती है (मेजों की थपथपाहट) और अगर पीढ़ियों का निर्माण करने वाली संस्था को हम सुदृढ़ नहीं करेंगे, अगर उसको हम मजबूत नहीं करेंगे, अगर वहां बच्चों के लिये अच्छी व्यवस्था नहीं होगी तो हम पीढ़ियों का निर्माण नहीं कर पायेंगे। छत्तीसगढ़ के लाखों बच्चे पढ़ने के लिये छत्तीसगढ़ से बाहर जाते हैं। हमको उन्हें छत्तीसगढ़ में रोकना है। यहां की जवानी को हमको छत्तीसगढ़ की ताकत बनाना है और इसके लिये हम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी कोई कमी नहीं कर रहे हैं और सेटअप का अनुमोदन कर रहे हैं (मेजों की थपथपाहट) हम महाविद्यालयों में छात्रावास का भी निर्माण कर रहे हैं। अभी हमारे बहुत से सदस्य बात कर रहे थे। हम बेन्द्री विकासखण्ड अभनपुर जिला रायपुर नवा रायपुर अटल नगर रायपुर में संगीत महाविद्यालय की स्थापना करेंगे। (मेजों की थपथपाहट) शासकीय महाविद्यालय भैरमगढ़, बीजापुर, शासकीय महाविद्यालय जवांगा, जिला दंतेवाड़ा, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय बिलासपुर, जिला बिलासपुर, शासकीय महाविद्यालय राजिम, जिला गरियाबंद, शासकीय महाविद्यालय लैलूंगा, जिला रायगढ़, शासकीय दूधाधारी महाविद्यालय रायपुर, जिला रायपुर में छात्रावास के संचालन के लिए 30 पदों का सृजन कर रहे हैं जिससे वहां छात्रावास ठीक तरीके से चल सके। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में तेजी लायी जायेगी। विद्यार्थियों के शैक्षणिक, मानसिक, शारीरिक विकास पर फोकस करते हुए, युवाओं के व्यक्तित्व विकास के समग्र अवसर उपलब्ध कराये जाएंगे। अंत में मैं कहना चाहता हूँ कि हमारी सरकार द्वारा Access इक्विटी, Quality, Affordability तथा क्वांटिबिलिटी के मूल मंत्र के साथ युवाओं तक उच्च शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया जायेगा। चाणक्य ने अपनी नीति में लिखा है कि "अशिक्षित को शिक्षा दो, अज्ञानी को ज्ञान।

शिक्षा से ही बन सकता है भारत देश महान।"

हमारे भारत देश को महान बनाने में छत्तीसगढ़ का योगदान हो, यह हमारी मूल कल्पना है और इसी के साथ हम उच्च शिक्षा के विकास के लिए भी बात कर, काम करेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे कुछ सदस्यों ने विधायकों की सुविधाओं के बारे में बात की। यहां पर सामान्यत: संसदीय कार्य विभाग की चर्चा नहीं होती है, परन्तु मैं आपको यह बता दूं कि आपने जो चर्चा की है कि गाड़ी के लिए भत्ता कम है, मकान के लिए भत्ता कम है, आपने यह भी चर्चा की हमें हवाई जहाज में First Class में जाने नहीं मिलता है, हमको रेलवे में First Class में जाने नहीं मिलता है। हमारा जो डेली एलाउंस है वह एक हजार रूपये है, वह बढ़ना चाहिए। जो हमारे आश्रित हैं किसी विधायक की मृत्यु हो जाती है तो उसके आश्रित को पेंशन मिलनी चाहिए। हमने लगभग सभी बातों का निर्णय ले लिया है और आने वाले समय में इस सदन में सदस्य आता है तो वह बिना परेशानी के निर्भिक होकर, समस्या के विहीन होकर आएं और वह ठीक तरीके से अपनी जनता की सेवा कर सके। इसके लिए संसदीय कार्य विभाग लगातार सजग है और विशेष रूप से इसकी सबसे ज्यादा चिन्ता करने वाले कोई हैं तो वह अजय चन्द्राकर जी हैं। उन्होंने माननीय विधान सभा अध्यक्ष जी और माननीय मुख्यमंत्री जी के साथ में एक उच्च स्तरीय बैठक करवायी है और उस बैठक के माध्मय से आने वाले समय पर हमारे जो विधायक साथी गण हैं वह इस सदन के सदस्य हैं, वह हमारे साथी हैं उनको किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो, मुझे लगता है कि लोकसभा के चुनाव के बाद तक हमारी यह जो समस्याएं हैं इनका समाधान हो जाएगा ।

श्री कवासी लखममा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी कह रहे थे कि सबसे ज्यादा चिंतित अजय चन्द्राकर जी हैं दोनों चिन्तित हैं क्योंकि वह उधर की लाईन में नहीं बैठे। इसलिए वह चिन्तित रहेंगे, आप तो फायदे में हो। आप इन लोगों को भी उधर ले जाएंगे तो उनकी चिन्ता खत्म हो जाएगी। आप उन्हें उधर ले जाईये। अगर वह इधर रहेंगे तो चिन्तित नहीं रहेंगे क्या?

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी मैं आपके लिए चिन्तित हूँ। आपकी सुविधा बढ़े। जो आपके पैसे लेकर फरार है, वह पकड़ में आए। आप समझ रहे हैं न ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय चन्द्राकर जी, आप चलिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब आप ज्यादा बोलेंगे तो मैं दूसरा विषय बोलूंगा।

श्री राममविचार नेताम :- नहीं। जो फरार हैं, माननीय अध्यक्ष महोदय, उसे खोजने की लिए आपकी अनुमति दें। इनको खोजने के लिए यह बैगा के पास गये थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय बृजमोहन जी, आपने मेरा नाम कई बार लिया, लेकिन मेरे क्षेत्र का उल्लेख एक बार भी नहीं किया। आज मेरे साथ यह जोरदार कॉमेडी हो गई। (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट माननीय मंत्री महोदय जी से कुछ चर्चा करना चाहती हूँ। अभी माननीय मंत्री जी का भाषण अंतिम नहीं हुआ है। मैं बहुत देर से उनकी बातें सुन रही थी। चूंकि खैरागढ़ नया जिला बना है। खैरागढ़ को इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। मैंने माननीय मंत्री महोदय जी को अपने लेटर पैड से हाईस्कूल उन्नयन के लिए 11 स्कूलों का नाम दिया था, जो भवनविहीन हैं। चूंकि वहां कन्या महाविद्यालय खुला है। हमारे पूर्व में हमारे मुख्यमंत्री रहे माननीय भूपेश बघेल जी ने महाविद्यालय खुलवायें है। बाजार अतरिया में, जालबांधा में महाविद्यालय खुलवायें हैं। उसके भवन के लिए मैंने आपको लेटर पैड में दिया था। लेकिन यहां पर उसके बारे में कोई चर्चा नहीं हुई। मेरे खैरागढ़ विधान सभा के लिए आपने क्या सौगात दी है ? आप शिक्षा मंत्री हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्या ने अपनी जो भी मांग है, उन्होंने मुझे अभी लिखकर दिया है। निश्चित रूप से आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम स्कूल भी खोलेंगे, स्कूल की बिल्डिंग भी देंगे। आप 02 महीने के लिए नहीं बनी हैं, आप 05 साल के लिए विधायक बनी हैं।

श्रीमती यशोदा नीलाम्बर वर्मा :- धन्यवाद।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमारे अजय चन्द्राकर जी ने नेक मूल्यांकन के बारे में कहा कि हमारे कॉलेजों को सुदृढ़ किया जाये, इसके लिए हम कमेटी बनायेंगे जिससे कि नेक के मूल्यांकन में हमारे कॉलेज अपग्रेड हो सकें। इस बात की हमारी कोशिश होगी। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, क्योंकि धर्मस्व विभाग मेरे पास है। आने वाले समय पर हम धर्म स्वातंत्र्य विधेयक लायेंगे जिससे कि छत्तीसगढ़ में धर्मांतरण को रोका जा सके। (मेजों की थपथपाहट) क्योंकि यह धर्मांतरण नहीं है, राष्ट्रांतरण है। छत्तीसगढ़ की इकोलॉजी को, डेमोग्राफी को धर्मांतरण के माध्यम से चेंज करने की कोशिश की जा रही है तो आने वाले समय पर इसको रोकने के लिए हम धर्म स्वातंत्र्य विधेयक लायेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी हमने बीच में सुना था कि हमारी 9 यूनिवर्सिटी को डिफाल्टर घोषित किया गया क्योंकि वहां पर लोकपाल नियुक्त नहीं हुआ। हमारी यह कोशिश होगी कि कॉलेज के उच्च शिक्षा में पढ़ने वाले बच्चों के लिए सिर्फ विश्वविद्यालय में नहीं, वहां के एक लेक्चरर, प्रोफेसर या किसी टीचर को हम लोकपाल के रूप में नियुक्त करेंगे, जिससे कि वहां के बच्चों की समस्याओं का समाधान किया जा सके।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी माननीय सदस्या चातुरी नंद जी ने सुंदरदायी को पर्यटन स्थल घोषित करने की मांग की है तो सुंदरदायी के विकास के लिए हम पर्यटन विभाग की तरफ से राशि स्वीकृत करेंगे, इस बात का मैं उनको विश्वास दिलाता हूं। हमारे माननीय सदस्य अनुज शर्मा जी ने कुर्रा

महोत्सव की मांग की है, कुर्रा महोत्सव के आयोजन के लिए भी पर्यटन विभाग के द्वारा सुविधा उपलब्ध करवाई जायेगी।

श्री अनुज शर्मा :- बहुत-बहुत आभार।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अंबिका मरकाम जी ने जिन स्कूलों में बिजली नहीं है, उन स्कूलों में सौर ऊर्जा के माध्यम से बिजली की व्यवस्था की जाये, इसके लिए भी हमारा प्रयास होगा। कर्णेश्वर महादेव मंदिर और गणेश घाट इन दोनों के विकास के लिए भी पर्यटन विभाग के माध्यम से उनको विकसित किया जायेगा। रामकुमार टोप्पो जी ने इस बात की मांग की है कि वहां पर होने वाला मैनपाट महोत्सव है, वहां का जो विकास है। निश्चित रूप से मैनपाट छत्तीसगढ़ का कुल्लू मनाली है, छत्तीसगढ़ का शिमला है। हमने पहले भी उसको विकसित करने की कोशिश की है। आने वाले समय पर मैनपाट हिल स्टेशन के रूप में पूरे छत्तीसगढ़ में, पूरे देश में जाना जाये, इसके लिए हम काम करेंगे। (मेजों की थपथपाहट) अटल श्रीवास्तव जी तो नहीं हैं।

श्री जनक ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि मैनपुर जो पैरी नदी का उद्गम क्षेत्र है, माननीय मंत्री जी से निवेदन है।

श्री डोमनलाल कोर्सेवाड़ा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मंत्री जी से मांग की थी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे डोमनलाल कोर्सेवाड़ा जी ने अकोला में मेला भरता है, उसके लिए संस्कृति विभाग से सहायता की मांग की है, निश्चित रूप से हम उसको भी स्वीकृत करेंगे।

श्री डोमनलाल कोर्सेवाड़ा :- धन्यवाद।

श्री भोलाराम साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मोक्षधाम साकरदहरा राजनांदगांव जिले में है, वहां महाशिवरात्रि के मेला का आयोजन किया जाता है और वहां बहुत बड़ा मेला लगता है। मोक्षधाम छत्तीसगढ़ में दूसरे नंबर का अस्थि विसर्जन का केन्द्र है। वहां के मेला के लिए 1 लाख रुपये दिया जाता है, मैं आपसे 5 लाख रुपये की मांग किया था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- चलिये, वहां के मेला के लिये 1 लाख रुपये की जगह 2 लाख रुपये देंगे। ठीक है, 2 लाख रुपये देंगे।

श्री भोलाराम साहू :- 5 लाख।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी की सहृदयता और उदारता को नमन करता ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जनक ध्रुव जी ने पैरी के उद्गम स्थल और सिकाशेर को विकसित करने की मांग की है। निश्चित रूप से पर्यटन की दृष्टि से हम उसको भी विकसित करेंगे।

श्री जनक ध्रुव :- धन्यवाद, मंत्री महोदय।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- धर्मजीत सिंह जी ने सरायपानी, खुड़ियापानी और विजयपुर मंदिर किले में शेड के निर्माण के लिए एक रोड़ रूपये की मांग की है, परंतु हम 50 लाख रूपये स्वीकृत करते हैं कि वहां पर शेड बनाया जाएगा और वहां पर उत्सव को मनाने के लिए हम 5 लाख रूपये देने की घोषणा करते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मंत्री जी, सेतगंगा और अमोरा के लिए भी कुछ घोषणा कर दीजिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय बृजमोहन भैया, मैंने मेरे यहां के लिए पांच-पांच ऐतिहासिक स्थल के लिए बात किया था। हमारे यहां कल्चुरी वंश का गौरैया मेला लगता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मेरे पास में बजट लिमिटेड है, उस बजट में घोषणा कर सकता हूं।

श्री कुंवर सिंह निषाद:- बालोद जिला के लिए एक भी प्रावधान नहीं है। इसलिए मैं कह रहा हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपकी बातें मुख्यमंत्री जी सुन रहे हैं। मैं आपके प्रस्ताव वहां भेज दूंगा। मुझे जितनी राशि मिलेगी, उसमें वह काम हो जाएगा।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, मुझे दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि बालोद जिला में कहीं भी आज तक स्वीकृति नहीं आई है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- आपने हर चीज में बालोद जिला को एकदम से अलग क्यों कर दिया है?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं आपकी भी घोषणा कर रहा हूं। आप बैठिये। सब सुन लेने के बाद कह रहा हूं कि हमारे पास जो अनटाइड फंड है, जिसमें हम मेले, महोत्सव या पर्यटन स्थलों के विकास के लिए पैसा दे सकते हैं। आप आवेदन दे दीजियेगा। आप इस बात की चिंता मत करिये। यह भूपेश बघेल की सरकार नहीं है, यह विष्णु देव साय की सरकार है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आदरणीय, भूपेश बघेल की सरकार ने लगातार दिया है, लेकिन इधर से कटौती हो रही है। इसके संबंध में चिंता है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- आपने हमारे जिले में न ही कॉलेज बनाया है, न ही नई बिल्डिंग दिया है, इसलिए हमको बोलना पड़ रहा है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- उस सरकार ने तो हर साल दिया है, लेकिन इस बार कटौती कर दिया है, इसलिए हमें चिंता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ब्यास कश्यप जी ने पीथमपुर मेला तक जाने के लिए सड़क निर्माण की बात की है। उस सड़क के निर्माण के लिए हम पी.डब्ल्यू.डी. विभाग से बात करके उस मेले की सड़क का निर्माण करवायेंगे। रायमुनी भगत जी ने खुड़ियारानी, जशपुर की बात की। हमने खुड़ियारानी में विकास का पहले ही निर्णय ले लिया और हमने केन्द्र सरकार को योजना भेजी है। निश्चित रूप से उसका भी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

विकास होगा। लखेश्वर बघेल जी ने माता गंगा देवी मड़ई मेला के लिए सहायता की मांग की है, उसके लिए भी हम 2 लाख रूपये उपलब्ध करवायेंगे, इस बात का मैं आश्वासत देता हूं। उत्तरी जांगड़े जी ने भी महाविद्यालय की मांग की है।

श्रीमती उत्तर गनपत जांगड़े :- महोदय जी, कोसीर, डोंगरीपाली और एक चन्द्रपुर, जहां नाथलदाई मंदिर है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कलार महोत्सव ग्राम सोरर बालोद में पहले चार लाख रूपये मिलता था, अब उसको मैं 8 लाख रूपये देने की घोषणा करता हूं। (मेजों की थपथपाहट) राजा मोरध्वज महोत्सव, आरंग के लिए मैं पांच लाख रूपये देने की घोषणा करता हूं। (मेजों की थपथपाहट) अब मोरध्वज उत्सव के लिए पांच लाख दिया जाएगा। माननीय भेंडिया जी ने इस बात की मांग की है कि वहां पर ..।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी से आग्रह है कि चन्द्रपुर में नाथल दाई मंदिर का जगह है, वहां पर भी पर्यटन स्थल के रूप में कुछ घोषणा कर दीजियेगा।

श्री रामकुमार यादव :- साहब, तुंहर कस मंत्री धरती मा नई मिलय। तुंहला धन्यवाद हे। अतका जबर मंत्री हमन धरती मा नई देखे रहे हन। आपला बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुंगेली में सेतगंगा को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। मैं उसके लिए 25 लाख रूपये स्वीकृत करता हूं कि उसको पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। ग्राम अमोरा में राधा कृष्ण मंदिर और धर्मशाला में मेला स्थल के विकास के लिए भी मैं 25 लाख रूपये देने की घोषणा करता हूं। मुझे लगता है कि मुझे जितने लोगों ने अपने भाषण में जिन बातों का उल्लेख किया है, मैंने लगभग कोशिश की है कि हमारा अनटाइड बजट है और उसमें हम जितनी राशि दे सकते हैं, परंतु आने वाले समय पर आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। यह वर्ष हमारे लिए कठिनाई का वर्ष था। जिस वर्ष में मोदी जी की गारंटी को पूरा करने के लिए, क्योंकि आपने खजाना खाली कर दिया था, उसके कारण हमने इसको स्वीकृत किया है। आने वाले पांच सालों में हमारी यह कोशिश होगी कि पूरे छत्तीसगढ़ का चाहे पर्यटन की दृष्टि से हो, चाहे संस्कृति की दृष्टि से हो, चाहे धर्मस्व की दृष्टि हो, चाहे स्कूल शिक्षा विभाग की दृष्टि से हो, चाहे हमारे हायर एजुकेशन की दृष्टि से हो, हम समन्वित विकास कर पायें। चाहे वह बस्तर हो, चाहे वह सरगुजा हो, चाहे हमारे बीच का क्षेत्र हो । सभी क्षेत्रों का समन्वित विकास होगा । मैं आप सबसे आग्रह करूंगा कि इन विभागों के बजट को आप सर्वसम्मति से पारित करें । धन्यवाद । जय हिंद, जय-जय श्री राम । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- मैं पहले कटौती प्रस्तावों पर मत लूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि मांग संख्या - 26, 27, 37, 44 एवं 51 पर प्रस्तुत कटौती प्रस्ताव स्वीकृत किये जायें ।

कटौती प्रस्ताव अस्वीकृत हुए ।

अध्यक्ष महोदय - अब मैं, मांगों पर मत लूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि- दिनांक 31 मार्च, 2025 को समाप्त होने वाले वर्ष में राज्य की संचित निधि में से प्रस्तावित व्यय के निमित्त राज्यपाल महोदय को -

मांग संख्या - 26 **संस्कृति विभाग से संबंधित व्यय के लिए**-नब्बे करोड़, पचास लाख, उनतालीस हजार रूपये,

मांग संख्या - 27 **स्कूल शिक्षा के लिए** - सात हजार तीन सौ सतासी करोड़, छियासठ लाख, बत्तीस हजार रूपये,

मांग संख्या - 28 **राज्य विधान मण्डल के लिए** - चौरासी करोड़, इंक्वायन लाख,अठारह हजार रूपये,

मांग संख्या - 37 **पर्यटन के लिए** - दो सौ अठारह करोड़, चार लाख, चालीस हजार रूपये,

मांग संख्या - 44 **उच्च शिक्षा के लिए** - एक हजार उनचास करोड़, आठ लाख नब्बे हजार रूपये तथा

मांग संख्या - 51 **धार्मिक न्यास और धर्मस्व के लिए** - उनचास करोड़, बीस लाख रूपये तक की राशि दी जाये ।

मांगों का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

(मेजों की थपथपाहट)

<u>माननीय अध्यक्ष महोदय का विनिश्चय</u>

अध्यक्ष महोदय :- श्री देवेन्द्र यादव, सदस्य, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 65, भिलाई नगर द्वारा फरवरी-मार्च, 2024 सत्र में अपरिहार्य कारण से दिनांक 5 फरवरी, 2024 से दिनांक 1 मार्च, 2024 तक सभा की बैठकों से अनुपस्थित रहने की अनुज्ञा चाही गई थी ।

दिनांक 8 फरवरी, 2024 को उनकी अनुपस्थिति का कारण पर्याप्त न होने के कारण अनुपस्थिति की अनुज्ञा पर विचार नहीं किया गया था । इसके संबंध में आसंदी द्वारा पश्चात् विनिश्चय करने को कहा गया था ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

चूंकि श्री देवेन्द्र यादव, सदस्य दिनांक 9 फरवरी, 2024 को सभा में उपस्थित हो गये थे तथा आज भी उपस्थित हुए हैं अत: अब उनकी सभा की बैठकों में अनुपस्थिति की अनुज्ञा की आवश्यकता नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही गुरूवार, दिनांक 15 फरवरी 2024 को 11.00 बजे दिन तक के लिये स्थगित ।

(सायं 7 बजकर 23 मिनट पर विधानसभा की कार्यवाही गुरूवार, दिनांक 15 फरवरी, 2024 (माघ 26, शक संवत् 1945) के पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई)

दिनेश शर्मा

सचिव

छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छत्तीसगढ़)

दिनांक : 14 फरवरी, 2024

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं